विषय-सूची

खण्ड १

व्याकरण

पृष्ठाङ्क

प्रथम अध्याय

संक्षिप्त व्याकरण परिचय ३
संस्कृत "
व्याकरण "
भाषा "
वाक्य ४
शब्द "
शब्द-विचार "
संज्ञा "
सर्वनाम "
विषेषण "
क्रिया "
अव्यय ५
वर्णविचार "
वर्णों के भेद "
स्वर-व्यञ्जन "
स्वर के भेद "
अन्तस्थ "
ऊष्म वर्ण "
अनुस्वार "
अनुनासिक "
व्यञ्जनों की जातियाँ "
स्पर्श वर्ण "
अन्तस्थ वर्ण "

पृष्ठाङ्क

ऊष्म वर्ण ६
वर्णों के उच्चारण स्थान "
लिंग विचार ७
पुल्लिंग "
स्त्रीलिङ्ग ८
नपुंसकलिङ्ग "
वचन विचार ९
पुरुष विचार "
वाक्य विग्रह १०
क्रिया के पूरक ११
क्रिया की वृत्तियाँ "
क्रियाओं के पद "
परस्मैपद और आत्मनेपद का भेद १२
उभयपदी क्रियाओं के प्रयोग "
वाच्य विमर्श "
कर्तृवाच्य "
कर्मवाच्य "
भाववाच्य १३
क्रियाओं के गण "

द्वितीय अध्याय

संज्ञा-प्रकरण १४
सुप् प्रत्यय "
विभक्ति "
संज्ञाओं के विभाग १५

स्वरान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्द १६
अकारान्त „
आकारान्त „
इकारान्त „
ईकारान्त १७
उकारान्त „
ऋकारान्त „
ऐकारान्त „
ओकारान्त „
औकारान्त „
स्वरान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्द „
अकारान्त „
इकारान्त „
उकारान्त „
ऋकारान्त १८
स्वरान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द „
आकारान्त „
इकारान्त „
ईकारान्त „
उकारान्त „
ऊकारान्त „
ऋकारान्त १९
व्यञ्जनान्त संज्ञा शब्द „
चकारान्त शब्द „
पुल्लिंग „
स्त्रीलिंग „
जकारान्त शब्द „
पुल्लिंग „
स्त्रीलिंग „
नपुंसकलिंग „
तकारान्त शब्द २०
पुल्लिंग „
स्त्रीलिङ्ग „
नपुंसक लिङ्ग २०
दकारान्त शब्द „
पुल्लिङ्ग „
स्त्रीलिङ्ग „
धकारान्त शब्द २१
नकारान्त शब्द „
पुल्लिङ्ग „
स्त्रीलिङ्ग „
नपुंसकलिंग „
पकारान्त शब्द २२
भकारान्त शब्द „
रेफान्त शब्द „
वकारान्त शब्द „
शकारान्त शब्द „
षकारान्त शब्द „
सकारान्त शब्द „
हकारान्त शब्द २३
संज्ञा शब्दों की रूप-साधनिका २४
अजन्त पुल्लिंग शब्द „
'राम' शब्द „
'विश्वपा' „
'हाहा' २५
'हरि' „
'पति' २६
'सखि' „
'पपी' „
'बहुश्रेयसी' २७
'प्रधी' „
'गुरु' २८
'कर्तृ' „
'पितृ' २९
'धातृ' „
'क्रोष्टु'

'गो' ३०
अजन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द "
'रमा' "
'मति' ३१
'नदी' ३२
'स्त्री' "
'लक्ष्मी' ३३
'श्री' "
'धेनु' ३४
'वधू' "
'मातृ' ३५
अजन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द "
'फल' "
'गृह' ३६
'वारि' "
'दधि' ३७
'मधु' "
हलन्त पुल्लिङ्ग शब्द ३८
'भूभृत्' "
'भगवत्' "
'करिन्' ३९
'आत्मन्' "
'राजन्' "
'युवन्' ४०
'श्वन्' "
'विद्वस्' "
'चन्द्रमस्' ४१
'लिह्' "
'ब्रह्मन्' ४२
'वृत्रहन्' "
'मघवन्' "
'पथिन्' ४३
'ऋत्विज्' "
'भवत्' "
'पिपठिस्' ४४
हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द "
'वाच्' "
'सरित्' ४५
'अप्' "
हलन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द "
'जगत्' "
'नामन्' ४६
'शर्मन्' "
'ब्रह्मन्' ४७
'पयस्' "
'मनस्' "
'धनुष्' ४८

तृतीय : अध्याय ४९

सर्वनाम-प्रकरण

उत्तम पुरुष "
अस्मद् "
मध्यम पुरुष ५०
युष्मद् "
अन्य पुरुष ५१
इदम् "
एतद् "

सर्वनाम शब्दों की रूप-साधनिका

सर्व-पुल्लिङ्ग ५२
स्त्रीलिङ्ग "
नपुंसकलिङ्ग ५३
पूर्व-पुलिङ्ग "
पूर्व-स्त्रीलिङ्ग "
पूर्व-नपुंसकलिंग ५४
तद् (=वह) पुलिङ्ग "
तद् (=वह) स्त्रीलिङ्ग "
तद् (=वह) नपुंसकलिङ्ग "

यद् (=जो) पुल्लिङ्ग ५५
यद् (=जो) स्त्रीलिङ्ग ,,
यद् (=जो) नपुंसकलिङ्ग ,,
किम् (=कौन) पुल्लिङ्ग ,,
किम् (=कौन) स्त्रीलिङ्ग ५६
किम् (=कौन) नपुंसकलिङ्ग ,,
इदम् (=यह) पुल्लिङ्ग ,,
इदम् (=यह) स्त्रीलिङ्ग ५७
इदम् (=यह) नपुंसकलिङ्ग ,,
अस्मद् (=मैं) ,,
युष्मद् (=तुम) ५८
भवत् (=आप) पुल्लिङ्ग ,,
भवत् (=आप) स्त्रीलिङ्ग ५९
भवत् (=आप) नपुंसकलिङ्ग ,,
अदस् (=यह, वह) पुल्लिङ्ग ,,
अदस् (=यह, वह) स्त्रीलिङ्ग ६०
अदस् (=यह, वह) नपुंसकलिङ्ग ,,
एतद् (=यह) पुलिङ्ग ,,
एतद् (=यह) स्त्रीलिङ्ग ६१
एतद् (=यह) नपुंसक ,,
उभ (=दोनों) शब्द ,,
उभय (=दोनों) शब्द ६२

चतुर्थ : अध्याय ६३

विशेषण-प्रकरण ,,
सार्वनामिक विशेषण ,,
संख्यायें ६७
पूरणवाची संख्या शब्द ७१
क्रमवाची विशेषण शब्द ७५
विशेषणों की तुलना प्रक्रिया ,,
विशेषण शब्दों की रूप-साधनिका ७६
महत् (=बड़ा) पुलिङ्ग ७७
महत् (=बड़ा) स्त्रीलिङ्ग ,,
महत् (=बड़ा) नपुंसकलिङ्ग ,,
कति (=कितने) शब्द ७८
तादृश् (=उसके समान) पुल्लिङ्ग ,,
तादृश् (=उसके समान) स्त्रीलिङ्ग ,,
तादृश् (उसके जैसा) नपुंसकलिङ्ग ७९

संख्यावाचक विशेषण शब्द ,,

एक शब्द ,,
द्वि (=दो) शब्द ,,
त्रि (=तीन) शब्द ८०
चतुर (=चार) शब्द ,,
पंचन् ,,
षष्ठ ,,
सप्तन् ,,
अष्टन् ८१
नवन् ,,
दशन् ,,

पञ्चमोऽध्यायः ८२

क्रिया-प्रकरण ,,

क्रियाओं के प्रकार ,,
सकर्मक ,,
अकर्मक ,,
द्विकर्मक ,,
कर्तृवाच्य ,,
कर्मवाच्य ,,
क्रियाओं के काल ८३
वर्तमान ,,
भूत ,,
परोक्षभूत ,,
अनद्यतनभूत ,,
सामान्य भूत ,,
भविष्य ,,
अनद्यतन ,,
सामान्य ८४

विधि	८४
आशीर्वाद	"
हेतुहेतुमद्भाव	"
दस लकार	"
धातुओं के तीन भेद	"
क्रियाओं (धातुओं) की संख्या	"
धातुओं के दस विभाग (गण)	८५
पद विचार	"
परस्मैपद	"
आत्मनेपद	"
उभयपद	"
वाच्य विचार	८६
कर्तृवाच्य	"
कर्मवाच्य	"
भाववाच्य	"
गण और उनकी धातुयें	"
प्रत्ययान्त धातुयें	"
णिजन्त	"
सन्नन्त	"
यङन्त	८७
नामधातु	"
णिजन्त धातुयें	"
प्रेरणार्थक	"
सन्नन्त धातुयें	८८
यङन्त धातु	"
नाम धातुयें	८९
धातुरूप-साधनिका	९०
(१) भ्वादिगण	"
भू	"
लट्	"
लृट्	"
लोट्	"
लङ्	"
(२) हस्—हँसना	९०
लट्	"
लृट् (सामान्य भविष्य)	९१
लङ् (अनद्यतन भूत)	"
लोट् (आज्ञा आदि)	"
विधिलिङ् (आज्ञा आदि)	"
(३) पठ—पढ़ना (लट्)	"
(४) रच—रचा करना (लट्)	"
लृट्	"
लङ्	"
लोट्	९२
विधिलिङ्	"
(५) वद् (बोलना)	"
(६) पा–पीना	"
(७) नम् झुकना, प्रणाम करना	"
(८) गम् जाना	"
(९) दृश्—देखना	"
(१०) सीद्—दुःखी होना इत्यादि	"
स्था—ठहरना	९४
स्मृ—स्मरण करना	"
ज़ि—जीतना	९५
लभ्—प्राप्त करना	"
सेव—सेवा करना	९६
मुद्—आनन्दित होना	"
वृध्—वृद्धि को प्राप्त होना	"
सह्—सहन करना	"
पच्—पकाना	९७
याच्—याचना करना, माँगना	९८
नी—ले जाना, पहुँचाना	"
हृ—हरण करना	९९
२—अदादिगण	
अद्—खाना	१००
अस्—होना	"

रुद्—रोना १०१
स्वप्—सोना ,,
हन्—मारना ,,
इ—जाना ,,
आस्—बैठना १०२
शी—शयन करना ,,
अधि-इ—अध्ययन करना १०३
दुह्—दुहना ,,
ब्रू—स्पष्ट बोलना १०४

३—जुहोत्यादिगण

हु—हवन करना; खाना लेना ,,
भी=डरना ,,
दा—देना १०५

४-दिवादिगण

दिव्-जुआ खेलना, चमकना आदि १०६
भ्रम्—भ्रान्त होना, घूमना ,,
युध्—युद्ध करना १०७
जन्—प्रादुर्भूत होना ,,
नश्—नष्ट होना १०८
नृत्—नाचना ,,

५—स्वादिगण

सु—स्नान करना, रस निचोड़ना आदि १०९
आप्—प्राप्त करना ११०
शक्—शक्त होना ,,

६—तुदादिगण

तुद्—व्यथा पहुँचाना, कष्ट देना ,,
मुच्—मोचन करना, छोड़ना १११
स्पृश्—छूना ११२
प्रच्छ्—पूछना ,,
इष्—इच्छा करना ११३
मृ—मरना ,,

७—रुधादिगण

रुध्-आवरण करना, रोकना ११४
भुज्-पालन करना, खाना ११५

८—तनादिगण

तन्-विस्तार करना, फैलाना ,,
कृ-करना ११६

९—क्रयादिगण

क्री-खरीदना ११७
ग्रह्-ग्रहण करना, लेना ११८
ज्ञा-जानना ११९

१०—चुरादिगण

चुर्-चुराना १२०
चिन्त् ,,
भक्ष् १२१
कथ् १२२

षष्ठोऽध्यायः

अव्यय-प्रकरण १२३
लक्षण ,,
प्रकार ,,
क्रिया-विशेषण ,,
क्रिया-विशेषण के प्रकार १२४
सामान्य क्रिया-विशेषण शब्द ,,
समयवाची ,,
स्थानवाची ,,
संख्यावाची ,,
विधिवाची ,,
अङ्गीकार या निषेधवाची ,,
प्रश्नवाचक क्रिया-विशेषण शब्द ,,
सम्बन्धवाची क्रिया-विशेषण शब्द ,,
क्रिया-विशेषण शब्दों के स्रोत १२५
मुख्य-मुख्य प्रचलित क्रिया-विशेषण ,,
समुच्चय बोधक शब्द १२५
प्रकार ,,
स्वायत्त ,,
परायत्त १२६

स्वायत्त समुच्चय बोधक शब्दों के उपभेद १३६
संयोगवाची ,,
विरोधवाची ,,
निष्कर्षवाची ,,
परायत्त समुच्चय बोधक शब्दों के उपभेद ,,
कालवाची ,,
स्थानवाची ,,
समयवाची ,,
कारणवाची ,,
तुलनावाची ,,
विरोधवाची ,,
कुछ मुख्य-मुख्य समुच्चय बोधक शब्द ,,
विस्मय बोधक शब्द १३८
उपसर्ग १४०
उपसर्गों की संख्या ,,
उपसर्गों का महत्त्व ,,
उपसर्गों के काम ,,
सादृश्य का बोध १४४
अभाव का बोध ,,
भिन्न प्रकारता का बोध ,,
अल्पता का बोध ,,
बुराई ,,
विरोध ,,
तद्धित ,,
कृदन्त १४५
समास ,,

सप्तमोऽध्याय

कारक-प्रकरण १४६
लक्षण ,,
कारक के प्रकार ,,
सम्बन्ध कारक क्यों नहीं १४७
'सम्बोधन' कारक क्यों नहीं ,,
कर्त्ताकारक (प्रथमा विभक्ति) १४८
सम्बोधन ,,
कर्मकारक ,,
करण कारक १५१
सम्प्रदान कारक १५३
अपादान कारक १५६
सम्बन्ध कारक १५९
अधिकरण कारक १६२

अष्टमोऽध्यायः

सन्धि-प्रकरण १६५
लक्षण ,,
महत्त्व ,,
प्रकार ,,
कुछ संकेत (=प्रत्याहार) ,,
स्वर-सन्धि १६७
नियम ,,
दीर्घसन्धि ,,
गुणसन्धि ,,
(वृद्धिसंधि) १६८
यण् सन्धि १६९
पूर्वरूपसन्धि १७०
व्यञ्जन-सन्धि १७१
नियम ,,
(स्तोश्चुनाश्चुः) ,,
(ष्टुना ष्टुः) ,,
विसर्ग-सन्धि १७६

नवमोऽध्यायः

समास-प्रकरण १८०
समास के मुख्य भेद ,,
केवल समास ,,
अव्ययीभाव समास ,,

तत्पुरुष समास	१८०
कर्मधारय समास	”
द्विगु समास	”
बहुव्रीहि समास	”
द्वन्द्व समास	”
अव्ययीभाव समास	१८१
तत्पुरुष समास	१८३
तत्पुरुष के अन्य भेद	१८४
द्विगु समास	१८५
उत्तरपदलोपी समास	”
नञ् समास	”
कु-गति-प्रादि समास	”
उपपद समास	१८६
बहुव्रीहि समास	”
द्वन्द्व समास	१८८

दशमोऽध्यायः

कृदन्त-प्रकरण	१९१
लक्षण	”
कृदन्त और तद्धित का भेद	”
कृदन्तों के भेद	”
कृत्य-प्रत्यय	”
तव्यत् तव्य	”
अनीयर्	१९२
यत्	”
क्यप्	”
ण्यत्	१९३
कृत् प्रत्यय	”
पूर्व कृदन्त	१९४
ण्वुल	”
तृच्	”
ल्यु	”
णिनि	”
अच्	”
क	१९४
अण्	१९५
ट	”
खश्	”
खच्	”
क्वनिप्	१९६
ड	”
भूतकालिक कृत् प्रत्यय	”
क्त	”
क्तवतु	१९७
वर्तमान कालिक कृत् प्रत्यय	”
शतृ और शानच्	”
भविष्य कालिक कृत् प्रत्यय	”
शील, धर्म, साधुकारिता वाचक कृत् प्रत्यय	”
षाकन्	”
उ	”
क्विप्	१९८
इत्र	”

उत्तर कृदन्त

तुमुन् और ण्वुल	१९९
घञ्	”
एरच्	”
अप्	”
क्त्रि	”
अथुच्	२००
नङ्	”
क्तिन्	”
खल्	”
युच्	”
क्त्वा	२०१
णमुल्	”

उणादि-प्रत्यय

उण् २०१

एकादशोऽध्यायः

तद्धित-प्रकरण २०३
अण् "
ण्य "
ईकक् "
यत् "
इञ् "
तल् "
क २०४
अण् "
वुन् "
अण् "
घ "
ख "
छ २०५
ञ् "
एण्य "
यत् "
मयट् "
यत् "
ठञ् २०६
ष्यञ् "
इमनिच् "
अण् "
ष्यञ् २०६
य "
इतच् "
इनि "
मतुप् "
उरच् "
तसिल् २०७
त्रल् "
दा "
थाल् "
तमप् इष्ठन् "
तरप् ईयसुन् "
डतरच् "
डतमच् २०८
अण् "
च्वि "
डाच् "

द्वादशोऽध्यायः

स्त्री-प्रत्यय-प्रकरण
टाप् २०९
डाप् २१०
चाप् "
ङीप् "
ङीष् २१२
ङीन् २१५
ऊङ् २१६
ति "

खण्ड २

अनुवाद

अध्याय १

अनुवादोपयोगी कुछ सूचनायें २१९
वचन "
लिंग २२४
विभक्ति २२५
पुल्लिंग २३०

स्त्रीलिङ्ग २३०
पुल्लिंग २३६
नपुंसकलिंग २३८
कुछ क्त प्रत्ययान्त शब्द २४३
कुछ क्तवतु प्रत्ययान्त शब्द २४४
कुछ क्त्वा प्रत्ययान्त शब्द २४५
कुछ तुमन् प्रत्ययान्त शब्द २४६
कुछ तव्यत् और अनीयर् प्रत्ययान्त शब्द २४८
अनुवादोपयोगी २४९
कुछ कारक-नियम "
कर्ता कारक (प्रथम विभक्ति) "
कर्मकारक (द्वितीया विभक्ति) "
करण कारक (तृतीया विभक्ति) २५४
सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति) २५७
अपादान कारक पञ्चमी विभक्ति २६१
सम्बन्ध कारक २६५
अधिकरण कारक २६८

द्वितीयोऽध्यायः

संस्कृत में अनूदित कुछ आदर्श वाक्य २७१

अभ्यास १

लट् लकार वर्तमान काल "
लङ् लकार भूतकाल २७२
लृट् लकार भविष्यत् काल २७३
लोट् लकार आज्ञावाचक "
विधिलिङ्=चाहिये २७४
सर्वनाम "
रहा-रहे-रही २७५
बालक शब्द के रूप "
कर्त्ता "
कर्म २७६
करण "
सम्प्रदान २७६
अपादान "
सम्बन्ध २७७
अधिकरण "
सम्बोधन "
कुछ धातुयें "

अभ्यास १०

कुछ धातुएँ २७८

अभ्यास ११

संज्ञा-जनित क्रियाओं के कुछ प्रयोग २८०

अभ्यास १२

प्रेरणार्थक क्रियायें २८१

अभ्यास १३

क्त प्रत्यय २८२

अभ्यास १४

क्त प्रत्यय सम्बन्धी वाक्य "

अभ्यास १५

प्रत्यय सम्बन्धी वाक्य २८३
क्त, क्तवतु, तुमुन् "

अभ्यास १६

मुहावरेदार प्रयोग २८४

अभ्यास १७

मुहावरेदार प्रयोग २८५

अभ्यास १८

मुहावरेदार प्रयोग २८६

अभ्यास १९

विविध "

अभ्यास २०

विविध २८७

अभ्यास २१

विविध "

अभ्यास २२

विविध २८८

अभ्यास २३

विविध ,,

अभ्यास १

संस्कृत में अनूदित कुछ आदर्श वाक्य २९०

कारक-नियम सम्बन्धी कुछ वाक्य ,,

अभ्यास २

कुछ धातुयें २९२

अभ्यास ३

कुछ धातुयें २९३

अभ्यास ४

संज्ञा-जनित क्रियाओं के कुछ प्रयोग २९४

अभ्यास ५

संज्ञा-जनित क्रियाओं के कुछ प्रयोग २९५

अभ्यास ६

प्रेरणार्थक क्रियायें २९७

अभ्यास ७

लट् लकार—वर्तमानकाल २९७

अभ्यास ८

लट् लकार—वर्तमानकाल २९८

आत्मनेपद ,,

अभ्यास ९

लङ् लकार—भूतकाल ,,

अभ्यास १०

लोट् लकार ३००

अभ्यास ११

लृट् लकार—भविष्यकाल ,,

अभ्यास १२

विधिलिङ् ३०१

अभ्यास १३

पठ् धातु के सभी रूप ३०२

लट् लकार ,,

अभ्यास १४

लिट् लकार ३०३

अभ्यास १५

लुट् लकार ,,

अभ्यास १६

लृट् लकार ,,

अभ्यास १७

लोट् लकार ,,

अभ्यास १८

लङ् लकार ,,

अभ्यास १९

लृङ् लकार ३०५

अभ्यास २०

विधिलिङ् ३०६

अभ्यास २१

आशीर्लिङ् ,,

अभ्यास २२

सर्वनाम ३०७

अभ्यास २३

संख्यावाचक ३०८

अभ्यास २४

पूरणार्थक संख्या शब्द ३०९

अभ्यास २५

विशेषण का तर-तम भाव ३१०

अभ्यास २६

सम्बन्ध सूचक प्रत्यय ३११

अभ्यास २७

'का' बोधक शब्द प्रयोग ३१२

अभ्यास २८

सम शब्द का प्रयोग ३१३

अभ्यास २९

समानवाची शब्द ,,

अभ्यास ३०

रहा-रहे-रही ३१४

अभ्यास ३१

क्त प्रत्यय ,,

अभ्यास ३२

क्तवतु प्रत्यय ३१५

अभ्यास ३३

तव्यत् प्रत्यय ३१६

अभ्यास ३४

अनीयर् प्रत्यय ३१७

अभ्यास ३५

वाच्य सम्बन्धी ,,

तृतीयोऽध्यायः

हिन्दी से ३१८

संस्कृत में अनुवाद करो ,,

अभ्यास १

लट् लकार ,,

अभ्यास २

लट् लकार ,,

अभ्यास ३

लट् लकार ३२१

अभ्यास ४

लट् लकार ,,

अभ्यास ५

लङ् लकार ३२२

अभ्यास ६

लङ् लकार ,,

अभ्यास ७

लृट् लकार ३२३

अभ्यास ८

लृट् लकार ,,

अभ्यास ९

लोट् लकार ३२४

अभ्यास १०

लोट् लकार ,,

अभ्यास ११

विधि लिङ् ३२५

अभ्यास १२

विधिलिङ् ,,

अभ्यास १३

कर्त्ता कारक ३२६

अभ्यास १४

कर्म कारक ,,

अभ्यास १५

करण कारक ३२७

अभ्यास १६

सम्प्रदान कारक ३२८

अभ्यास १७

अपादान कारक ,,

अभ्यास १८

सम्बन्ध कारक ३२९

अभ्यास १९

अधिकरण कारक ,,

अभ्यास २०

उपपद विभक्तियाँ ३३०

अभ्यास २१

उपपद विभक्तियाँ ,,

अभ्यास २२

सर्वनाम ३३१

अभ्यास २३
विशेषण ३३२
अभ्यास २४
संख्यावाची विशेषण ”
अभ्यास २५
अव्यय शब्द ३३३
अभ्यास २६
प्रेरणार्थक धातुयें ३३४
अभ्यास २७
उपसर्ग युक्त धातुयें ३३५
अभ्यास २८
शतृ और शानच् प्रत्यय ३३६
अभ्यास २९
प्रत्यय सम्बन्धी वाक्य ”
क्त, क्तवतु, तुमुन् ”
अभ्यास ३०
विविध शब्द (हिन्दी से संस्कृत) ३३७
अभ्यास ३१
विविध शब्द ” ३३८
अभ्यास ३२
विविध शब्द ” ३३
अभ्यास ३३
विविध शब्द ” ३४०
अभ्यास ३४
विविध शब्द ” ३४१
अभ्यास ३५
विविध शब्द ” ३४२
अभ्यास ३६
विविध शब्द ” ३४३
अभ्यास ३७
विविध शब्द ” ३४५
अभ्यास ३८
विविध शब्द (हिन्दी से संस्कृत) ३४६
अभ्यास ३९
विविध शब्द ” ३४७
अभ्यास ४०
विविध शब्द ” ३४८
अभ्यास ४१
छीछालेदर ” ३४९
अभ्यास ४२
उस्ताद जी ” ३५०
अभ्यास ४३
दो मुसाफिर ” ३५१
अभ्यास ४४
दुष्ट भेड़िया ” ”
अभ्यास ४५
शठ के साथ शठता ” ३५२
अभ्यास ४६
वोपदेव ” ३५३
अभ्यास ४७
मीरा (हिन्दी से संस्कृत) ”
अभ्यास ४८
एक सरल सम्वाद ३५४
अभ्यास ४९
प्रातःकाल का उपयोग ३५५
अभ्यास ५०
रामचरितमानस ”
[ख] हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करो ३५७
अभ्यास १
लट् लकार—वर्तमान काल ”
अभ्यास २
लट् लकार—वर्तमान काल ३५८

अभ्यास ३

लट् लकार=वर्तमान काल ३५९

अभ्यास ४

लट् लकार=वर्तमान काल „

अभ्यास ५

लङ् लकार=अनद्यतन भूतकाल ३६०

अभ्यास ६

लङ् लकार=अनद्यतन भूतकाल ३६१

अभ्यास ७

लृट् लकार=भविष्यत् काल ३६२

अभ्यास ८

लृट् लकार=भविष्यत् काल ३६३

अभ्यास ९

लोट् लकार=आज्ञा „

अभ्यास १०

लोट् लकार आज्ञा ३६४

अभ्यास ११

विधिलिङ्=चाहिये ३६५

अभ्यास १२

विधिलिङ्=चाहिये „

अभ्यास १३

लुङ् लकार=सामान्य भूतकाल ३६६

अभ्यास १४

लुङ् लकार=सामान्य भूतकाल ३६७

अभ्यास १५

लिट् लकार=परोक्ष भूतकाल ३६८

अभ्यास १६

लिट् लकार परोक्ष भूतकाल ३६९

अभ्यास १७

आशीर्लिङ्=आशीर्वाद ३७७

अभ्यास १८

लुट् लकार=अनद्यतन भविष्यत् ३७१

अभ्यास १९

लृङ् लकार=हेतुहेतुमद् भविष्यत् काल ३७२

अभ्यास २०

कर्ता कारक ३७३

अभ्यास २१

कर्म कारक „

अभ्यास २२

करण कारक ३७४

अभ्यास २३

सम्प्रदान कारक ३७५

अभ्यास २४

सम्प्रदान कारक ३७६

अभ्यास २५

अपादान कारक „

अभ्यास २६

सम्बन्ध कारक ३७७

अभ्यास २७

अधिकरण कारक ३७८

अभ्यास २८

कर्ता और कर्म कारक ३७९

अभ्यास २९

करण और सम्प्रदान कारक ३८०

अभ्यास ३०

अपादान और सम्बन्ध कारक ३८१

अभ्तास ३१

अधिकरण और सम्बोधन कारक ३८२

अभ्यास ३२

उपपद विभक्तियाँ ३८३

अभ्यास ३३

उपपद विभक्तियाँ ३८४

अभ्यास ३४
सर्वनाम ३८५
अभ्यास ३५
विशेषण ३८६
अभ्यास ३६
विशेषण का तर-तम भाव ”
अभ्यास ३७
संख्यावाचक शब्द ३८७
अभ्यास ३८
पूरणार्थक संख्या शब्द ३८८
अभ्यास ३९
अव्यय शब्द ३८९
अभ्यास ४०
प्रेरणार्थक क्रियायें ”
अभ्यास ४१
प्रेरणार्थक क्रियायें ३९०
अभ्यास ४२
उपसर्ग युक्त धातुयें ३९१
अभ्यास ४३
शतृ और शानच् प्रत्यय ३९३
अभ्यास ४४
शतृ और शानच् प्रत्यय ३९४
अभ्यास ४५
क्त प्रत्यय ”
अभ्यास ४६
क्तवतु प्रत्यय ३९५
अभ्यास ४७
तुमुन् प्रत्यय ३९६
अभ्यास ४८
क्त्वा प्रत्यय ३९७
अभ्यास ४९
तव्यत् प्रत्यय ३९८

अभ्यास ५०
विविध शब्द ३९९
अभ्यास ५१
दो कुत्ते ४००
अभ्यास ५२
दो बकरे ४०१
अभ्यास ५३
असली मजाक ४०२
अभ्यास ५४
पेट ४०३
अभ्यास ५५
दिलीप ४०४
अभ्यास ५६
राजा नल ४०४
अभ्यास ५७
रणजीतसिंह ४०५
अभ्यास ५८
सदुपदेश ४०६
अभ्यास ५९
कविता ४०७
अभ्यास ६०
बुद्धि और स्वास्थ्य ”
अभ्यास ६१
महाश्वेता और पुण्डरीक ४०८
अभ्यास ६२
चन्द्रापीड और वैशम्पायन ४०९
अभ्यास ६३
शाप का अन्त ४१०
चतुर्थोऽध्यायः
[ख] संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद करो ४१२

अभ्यास १
कारक चिह्न ४१२
अभ्यास २
कुछ धातुयें ४१३
अभ्यास ३
कर्ता और क्रिया का साम्य ४१३
अभ्यास ४
सर्वनाम ''
अभ्यास ५
कारक-कर्ता और कर्म ४१४
अभ्यास ६
कारक-करण और सम्प्रदान ''
अभ्यास ७
कारक-अपादान और सम्बन्ध ४१५
अभ्यास ८
कारक-अधिकरण और सम्बोधन ''
अभ्यास ९
लट् लकार ४१६
अभ्यास १०
लङ् लकार ''
अभ्यास ११
लृट् लकार ४१७
अभ्यास १२
लोट् लकार ''
अभ्यास १३
विधिलिङ् ४१८
अभ्यास १४
विद्या ''
अभ्यास १५
सदाचारः ४१९
अभ्यास १६
सत्सङ्गतिः ४२०
अभ्यास १७
परस्परं प्रीतिः ४२०
अभ्यास १८
परोपकाराय सतां विभूतयः ४२१
अभ्यास १९
ग्रीष्मः ४२२
अभ्यास २०
मूर्खाणां नेता महामूर्खः ''
अभ्यास २१
धर्मबुद्धिः पापबुद्धिश्च ४२३
अभ्यास २२
कृतघ्नतायाः फलम् ४२४
अभ्यास २३ ४२५
अभ्यास २४ ४२६
अभ्यास २५ ४२७
[ख] संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद करो
अभ्यास १
कुछ धातुयें ४२९
अभ्यास २
कर्ता और क्रिया का साम्य ''
अभ्यास ३
सर्वनाम ४३०
अभ्यास ४
लट् लकार ''
अभ्यास ५
लङ् लकार ४३१
अभ्यास ६
लृट् लकार ''
अभ्यास ७
लोट् लकार ४३२

अभ्यास ८
विधिलिङ् ४३२
अभ्यास ९
वाच्य सम्बन्धी ४३३
अभ्यास १०
प्रत्यय ,,
अभ्यास ११
कृदन्त ४३४
अभ्यास १२
प्रेरणार्थक धातुयें ४३५
अभ्यास १३
उपसर्ग धातुयें ४३६
अभ्यास १४
उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः ४३७
अभ्यास १५
न हि सत्यात् परो धर्मः ४३८
अभ्यास १६
दीपावली: ,,
अभ्यास १७
ब्रह्मचर्यम् ४३९
अभ्यास १८
निद्रा ४४०
अभ्यास १९
ईश्वरः ४४०
अभ्यास २०
मूर्खसेवकः ४४१
अभ्यास २१
महाश्वेतावृत्तान्तः ,,
अभ्यास २२
दुष्यन्तः शकुन्तला च ४४२
अभ्यास २३
चञ्चला लक्ष्मीः ४४३
अभ्यास २४ ४४४
अभ्यास २५ ४४४
अभ्यास २६ ४४५
पञ्चमोऽध्यायः
[क] अशुद्धि-संशोधन ४४७
[ख] अशुद्धि-संशोधन ५५४
अभ्यास १–१५
षष्ठोऽध्यायः
लोकोक्तियाँ ४४५
सप्तमोऽध्यायः
हिन्दी में प्रचलित कुछ अशुद्ध प्रयोग ४८६

खण्ड ३

रचना

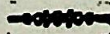
निबन्ध और पत्र-लेखन ४८९
[क] निबन्ध
निबन्धों के प्रकार ४९१
वर्णन-प्रधान ,,
चरित-प्रधान ,,
साहित्यिक ,,
भावात्मक ४९१
समस्या-प्रधान ,,
उपदेश-प्रधान ,,
विज्ञान-सम्बन्धी ४९२
निबन्ध-कला
निबन्ध-लेखन विधि ,,

अच्छे अंक प्राप्त करने की युक्तियाँ ४९३

कुछ निबन्ध

गौ २९५
अस्माकं विद्यालयः ४९६
आदर्शभूतः अध्यापकः ,,
छात्र-जीवनम् ४९७
विद्या ४९८
गंगानदी ५००
हिमालयः ५०१
भारतदेशः ५०२
उद्योगः ५०३
परोपकारः ५०४
सत्सङ्गतिः ५०६
सदाचारः ५०७
अहिंसा ५०८
व्यायामः ५१०
वसन्तर्तु ,,
वर्षर्तु (वर्षा-ऋतु) ५१२
इन्दिरागांधी ५१३
कश्चन महापुरुषः (महात्मा बुद्धः) ५१५
कश्चन संस्कृतकविः (कालिदासः) ५१६
संस्कृत-भाषायाः महत्त्वम् ५१८
संस्कृतस्यावनतेः कारणानि ५१९
भवितव्यता ५२१
सत्यम् ५२२
सन्तोषः ५२३
सन्मित्रम् ,,
धनम् (सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति) ५२४
गीता उपदेशामृतम् ५२५
एकता (संघे शक्तिः कलौ युगे) ५२६
उपमा कालिदासस्य ,,
गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः ५२७
न निश्चितार्थाद् विरमन्ति धीराः ५२८
निबन्धलेखनार्थं कुछ अन्य शीर्षक

[ख] पत्र-लेखन ५३१
प्रधानाचार्य को प्रार्थना-पत्र ,,
प्रधानाचार्य को पत्र ,,
पिता को पत्र ५३२
प्रकाशक को पत्र ५३३
मित्र को पत्र ,,
निमन्त्रणपत्रम् ५३५
संस्कृत-परिषद् की सूचना ,,



नूतन

अनुवाद-चन्द्रिका

खण्ड १

व्याकरण



प्रथम अध्याय

संक्षिप्त व्याकरण परिचय

संस्कृत—संस्कृत शब्द का अर्थ है 'संस्कार की हुई, परिमार्जित, शुद्ध वस्तु'। आजकल इससे आर्यों की साहित्यिक भाषा का बोध होता है। पहले जनसाधारण की भाषा 'प्राकृत' थी और आर्यपण्डितों की भाषा—'संस्कृत'।

व्याकरण—किसी भाषा विशेष के टुकड़े-टुकड़े करके उसके शुद्ध रूप को दिखाना ही व्याकरण कहलाता है। इसकी सहायता से हमें शुद्ध लिखना, बोलना और समझना आ जाता है।

भाषा—"विचार की अभिव्यक्ति के लिये व्यक्त ध्वनि संकेतों के व्यवहार को भाषा कहते हैं।"—डॉ० श्याम सुन्दर दास। "भाषा वह साधन है जिसके द्वारा एक प्राणी दूसरे प्राणी पर अपने विचार, भाव या इच्छा प्रकट करता है।"—डॉ० बाबूराम सक्सेना। "भाषा मनुष्य की चेष्टाओं, मनुष्यकृत चित्रों और अन्ततोगत्वा सर्वोपम साधन श्रवणीय ध्वनियों द्वारा अभिव्यक्त किये गये भावों के प्रकाशन का साधन है।"—डॉ० मंगल देव शास्त्री।

इससे प्रकट होता है कि—

१. स्व-इतर भाषा-भाषी से मिलने पर वस्तुओं के परिचय में अपनी इच्छा और बुद्धि का आदान-प्रदान करने के लिये **संकेतों** का प्रयोग किया जाता है।

२. गर्व, घृणा, क्रोध, लज्जा आदि को व्यक्त करने के लिये **मुख विकृति** देखने में आती है।

३. वाक्यों के भिन्न-भिन्न अर्थ प्रतीत कराने के लिये **स्वर भेद**। यथा—घड़ी आवाज, भरी आवाज, भर्राये और टूटे स्वर आदि का आश्रय लिया जाता है।

४. उच्चारण का वेग अर्थात् **प्रवाह** भी भाषा का प्रधान अंग है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि इंगित मुखविकार, काकु, स्वर, बल और प्रवाह—ये छः अंग अशिक्षित जातियों में भाषा को व्यक्त करने के प्रधान साधन हैं। किन्तु शिक्षितों की भाषा वाक्यमयी होती है। वस्तुतः वाक्य ही भाषा का आधार है।

वाक्य—सार्थक शब्दों के समूह को वाक्य और वर्णों के **समूह** को **शब्द** कहते हैं।

शब्द विचार—भाषा व्याकरण के अनुसार शब्द पाँच प्रकार के होते हैं—

१. संज्ञा—किसी के नाम को संज्ञा कहते हैं। यथा—राम, मनुष्य, कलम, घोड़ा, सोना, कानपुर, हिमालय, गंगा, जर्मनी, सुन्दरता, ललाई आदि।

२. सर्वनाम—जिन शब्दों का प्रयोग संज्ञा के बदले में होता है, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। जैसे—मैं, जो, तुम, कौन आदि।

वाक्यों को सुगढ़ और सुन्दर बनाने में सर्वनामों का बड़ा हाथ है। यथा—'राम राम के घर गया और राम ने राम की बहन से टीका लगवाया।' इस नीरस वाक्य का सुन्दर रूप इस प्रकार होगा—'राम **अपने** घर गया और **उसने अपनी** बहन से टीका लगवाया।'

३. विशेषण—जो शब्द संज्ञा और सर्वनाम शब्दों की विशेषता बतलावें उन्हें विशेषण कहते हैं। यथा—बड़ा, छोटा, सुन्दर, मोटी, काली, चपटा, मैला, गरम, बिगड़ैल आदि। कोई बिशेषण शब्द जिस किसी शब्द की विशेषता बतलावें उसे **'विशेष्य'** कहते हैं। 'विशेषण' के लिङ्ग, वचन और कारक का निर्धारण उसके 'विशेष्य' के अनुसार ही होता है। यथा—अच्छा लड़का, अच्छी किताब। अच्छा तोता, अच्छे तोते। घना जंगल, घने जंगल में।

४. क्रिया—जिन शब्दों से किसी काम का करना या होना जाना जाता है, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे—गया, जाता है, पढ़ेगा, सो रहा था आदि। संस्कृत में क्रिया को 'धातु' कहते हैं।

५. **अव्यय**—जिन शब्दों के रूप सदा एक ही बने रहते हैं। वचन, लिङ्ग, पुरुष, कारक आदि के कारण जिनमें कभी कोई परिवर्तन नहीं आता, उन्हें अव्यय कहते हैं। यथा—आज, कल, अभी, हाय, धीरे-धीरे; कब, कैसे, कहाँ आदि इन शब्दों में क्रियाविशेषण शब्द, समुच्चयबोधक शब्द, विस्मयादिबोधक शब्द आदि होते हैं।

वर्णविचार—वर्ण—इन्हें ही अक्षर भी कहते हैं। वर्ण या अक्षर उन कल्पित चिह्नों का नाम है जो लिखने की भाषा में मान लिये गये हैं।

वर्णों के दो भेद— (१) स्वर—जिनका उच्चारण बिना दूसरे वर्णों की सहायता के स्वयं हो सकता है। (२) **व्यञ्जन**—जिनका उच्चारण बिना स्वर की सहायता के न हो सके।

स्वर—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ए, ऐ, ओ, औ।

स्वर के दो भेद—(१) ह्रस्व—अ, इ, उ, ऋ, ऌ। (२) **दीर्घ**—आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ।

व्यञ्जन—इनकी संख्या ३६ है—

कवर्ग—क् ख् ग् घ् ङ्

चवर्ग—च् छ् ज् झ् ञ्

टवर्ग—ट् ठ् ड् ढ् ण्

तवर्ग—त् थ् द् ध् न्

पवर्ग—प् फ् ब् भ् म्

अन्तस्थ—य् र् ल् व्

ऊष्म वर्ण—श् ष् स् ह्

अनुस्वार—ं

अनुनासिक—ँ

विसर्ग—ः

व्यञ्जनों की जातियाँ—

स्पर्श वर्ण—इसमें क् से लेकर म् तक के अक्षर आते हैं।

अन्तस्थ वर्ण—य् र् ल् व्—ये स्वर और व्यञ्जन के बीच के हैं।

ऊष्म वर्ण—श् ष् स् ह्—इनका उच्चारण करने के लिये भीतर से जरा अधिक जोर से श्वास लानी पड़ती है।

इसी प्रकार पाँचों वर्गों के प्रथम और द्वितीय अक्षर (क्, ख्, च्, छ्, ट्, ठ्, त्; थ्, प्, फ्) तथा ऊष्म वर्णों (श्, ष्, स्, ह्) को **पुरुष व्यञ्जन** और शेष को **मृदु व्यञ्जन** कहते हैं।

इसी प्रकार एक ही स्थान से निकलने वाले वर्ण **सवर्ण** और भिन्न स्थानों से उच्चारण किये हुये वर्ण परस्पर **असवर्ण** कहलाते हैं।

नोट—क्ष्, त्र्, ज्ञ्—ये शुद्ध वर्ण नहीं हैं वरन् दो अक्षरों के मेल हैं। यथा—क्ष् = क् + ष्, त्र् = त् + र्, ज्ञ् = ज् + ञ्।

वर्णों के उच्चारण स्थान—

१. अकुह विसर्जनीयानां कण्ठः—अ, आ, कवर्ग और विसर्ग—इनका उच्चारण स्थान कण्ठ है।

२. इ चु यशानां तालु—इ, ई, चवर्ग, य्, श्—इनका उच्चारण स्थान तालु है।

३. ऋ टु रषाणां मूर्धाः—ऋ, टवर्ग, र्, ष्—इनका उच्चारण स्थान मूर्धा है।

४. लृ तु लसानां दन्ताः—लृ, तवर्ग, ल्, स्—इनका उच्चारण स्थान दन्त है।

५. उ-पु-उपध्मानीयानामोष्ठौ—उ, ऊ, पवर्ग और उपध्मानीय—इनका उच्चारण स्थान ओष्ठ है।

६. ओदौतोः कण्ठोष्ठम्—ओ, औ—इनका उच्चारण स्थान कण्ठ और ओष्ठ हैं।

७. एदैतोः कण्ठतालु—ए, ऐ—इनका उच्चारण स्थान कण्ठ और तालु हैं।

८. वकारस्य दन्तौष्ठम्—व का उच्चारण स्थान दन्त और ओष्ठ हैं।

९. नासिका अनुस्वारस्य—अनुस्वार का उच्चारण स्थान नासिका है।

१०. ञमङणनानां नासिका च—ङ, ञ, ण, न और म् का उच्चारण स्थान नासिका भी है।

लिंग विचार—संस्कृत भाषा में लिंग तीन हैं—पुल्लिग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग।

संस्कृत में लिंग निर्धारण एक समस्या है। एक ही वस्तु का बोध कराने वाला कोई शब्द पुल्लिग में है तो कोई स्त्रीलिंग अथवा नपुंसकलिंग में। यथा—तनुः (स्त्रीलिंग) देहः (पुल्लिग) और शरीरम् (नपुंसकलिंग)—ये सभी शब्द शरीरवाची हैं। ईसी प्रकार 'दाराः' शब्द पुल्लिग का होते हुये भी स्त्री का अर्थ बताता है। और 'देवता' शब्द स्त्रीलिंग का होते हुये भी देव (पुरुष) वाची है।

लिंग का यथार्थ ज्ञान तो कोषों से ही हो सकता है। तथापि लिंग परिज्ञानार्थ कुछ मोटे-मोटे नियम दिये जाते हैं।

पुल्लिग—

(क) वे शब्द जिनके अन्त में घञ्, अप्, घ, अच्, नङ् और कि प्रत्यय हो—वे प्रायः पुल्लिग में होते हैं। यथा—

घञन्त—पाकः, त्यागः, व्यायामः आदि।

अबन्त—करः, गरः, हरः आदि।

घान्त—विस्तरः, गोचरः आदि।

अजन्त—चयः, जयः आदि।

नङन्त—यज्ञः, यत्नः आदि।

क्यन्त—जलधिः, निधिः, आधिः आदि।

(ख) न् तथा उ में अन्त होने वाले शब्द भी प्रायः पुल्लिग के होते हैं। यथा—

राजन्, तक्षन् आदि।

प्रभुः, इक्षुः आदि।

(ग) जिन अकारान्त शब्दों की उपधा में घ्, ट्, ण्, न्, प्, भ्, म्, य्, र्, ष्, स् में से कोई अक्षर हो—वे प्रायः पुल्लिग के होते हैं। यथा—

स्तबकः, कल्कः, घटः, पटः, गुणः, गणः, पाषाणः, इनः, फेनः, यूपः, दीपः, स्तम्भः, कुम्भः, सोमः, भीमः, समयः, हयः, क्षुरः, अङ्कुरः, वृषः, वृक्षः, वत्सः, वायसः, महानसः आदि।

(घ) देव, असुर, आत्म, स्वर्ग, गिरि, समुद्र, नख, केश, दन्त, स्तन, भुज, कण्ठ, खड्ग, शर, पङ्क; ऋतु, पुरुष, कपोल, गुल्फ; मेघ, रश्मि, दिवस और एतदर्थक अन्य शब्द भी प्रायः पुल्लिग के ही होते हैं।

(ङ) दार, अक्षत, लाज, असु—ये पुल्लिग में और सदा बहुवचन में होते हैं। यथा—दाराः, अक्षताः, लाजाः, असवः।

स्त्रीलिङ्ग—(क) अनि, ऊ, मि, नि, क्तिन (ति) और ई प्रत्ययों में अन्त होने वाले शब्द प्रायः स्त्रीलिंग में होते हैं। क्रम से उदाहरण—अवनिः, चमूः, भूमिः, ग्लानिः, कृतिः, लक्ष्मीः आदि।

(ख) टाप् (आ) प्रत्यय में अन्त होने वाले सभी शब्द स्त्रीलिंग के हैं। यथा—विद्या, अजा, कन्या आदि।

(ग) एकाक्षर ईकारान्त और ऊकारान्त शब्द भी स्त्रीलिंग में होते हैं। यथा—श्रीः, भूः आदि।

(घ) तल् (ता) प्रत्यय में अन्त होने वाले शब्द स्त्रीलिंग के हैं। यथा—पवित्रता, जनता, मान्यता आदि।

(ङ) एकोनविंशतिः (१९) से लेकर नवनवतिः (९९) तक के सभी संख्यावाची शब्द स्त्रीलिंग के होते हैं।

(च) भूमि, विद्युत्, सरित्, लता और वनिता तथा तदर्थक अन्य शब्द भी प्रायः स्त्रीलिंग में ही होते हैं। यथा—पृथिवी, तडित्, नदी, वल्ली, स्त्री आदि।

(छ) ऋकारान्त शब्दों में केवल मातृ, दुहितृ, स्वसृ, पोतृ और नवान्तृ ही स्त्रीलिंग के हैं।

नपुंसकलिङ्ग—(क) भावार्थक ल्युट्, क्त और त्व प्रत्ययों तथा कर्मार्थक ष्यञ्, यत्, य, ढक्, यक्, अञ्, अण्, वुञ् और छः प्रत्ययों से युक्त शब्द प्रायः नपुंसकलिंग में होते हैं। यथा—

ल्युट—हसनम्; **क्त**—गतम्; वातम्; **त्व**—शुक्लत्वम्।

ष्यञ्—चातुर्यम्; ब्राह्मण्यम्; **यत्**—स्तेयम्, **य**—संख्यम्; **ढक्**—कापेयम्; **यक्**—आधिपत्यम्; **अञ्**—औष्ट्रम्; **अण्**—द्वैहायनम्; **वुञ्**—पैत्रापुत्रकम्; **छः**—अच्छा वा कीयम्।

(ख) अव्ययीभाव समास, एक वचनान्त द्वन्द्व समास सर्वदा नपुंसकलिंग में होते हैं तथा द्विगु समास विकल्प से—यथा—**अव्ययीभाव**—अधिस्त्रि, यथाशक्ति ; **द्वन्द्व**—पाणिपादम्; **द्विगु**—त्रिभुवनम् ।

(ग) इस्, उस् में अन्त होने वाले शब्द नपुंसकलिंग के हैं। यथा—**इस्**—हविः, **उस्** = धनुः ।

(घ) अस् में अन्त होने वाले दो स्वरों वाले शब्द नपुंसकलिंग के हैं। यथा—मनः, यशः, तपः आदि ।

(ङ) त्र में अन्त होने वाले शब्द प्रायः नपुंसक होते हैं। यथा—छत्रम्, पत्रम् आदि ।

(च) जिन शब्दों की उपधा में 'ल' हो वे प्रायः नपुंसक होते हैं। यथा—कुलम्, स्थलम्, कूलम् आदि ।

(छ) 'शत' से आरम्भ करके ऊपर की संख्या नपुंसक होती है।

(ज) मुख, नयन, लोह, वन, मांस, रुधिर, कार्मुक, विवर, जल, हल, धन, अन्न, वल, कुसुम, शुल्क, पत्तन, रण और एतदर्थक अन्य शब्द प्रायः नपुंसकलिंग में होते हैं।

(झ) फलों की जाति बताने वाले शब्द नपुंसक होते हैं। यथा—आम्रम्, आमलकम् ।

वचन विचार—हिन्दी में केवल एकवचन और बहुवचन—ये दो ही वचन होते हैं, किन्तु संस्कृत में तीन वचन हुआ करते हैं।

१. **एकवचन**—जिस शब्द में एक वस्तु का बोध होता है, उसे एक वचन कहते हैं। यथा—रामः, नरः, अश्वः, नदी, फलम् आदि ।

२. **द्विवचन**—जिससे दो वस्तुओं का बोध होता है, उसे द्विवचन कहते हैं। यथा—नरौ, अश्वौ, नद्यौ, फले—आदि ।

३. **बहुवचन**—जिससे दो से अधिक वस्तुओं का बोध हो। यथा—नराः, अश्वाः, नद्यः, फलानि आदि ।

पुरुष विचार—पुरुष तीन होते हैं—(१) उत्तम पुरुष, (२) मध्यम पुरुष, (३) अन्य पुरुष (प्रथम पुरुष)।

जब कोई किसी से कोई बात कहता है या किसी को कुछ लिखता है तो उसमें तीन तरह के लोग होते हैं—(१) कहने या लिखने वाला, (२) जिससे कहा जाय या जिसे लिखा जाय, (३) कोई और जिसके विषय में बात की जाय या लिखी जाय।

कहने या लिखने वाला अपने आपको 'मैं' या 'हम' कहता है। 'मैं' और 'हम' **उत्तम पुरुष सर्वनाम** कहे जाते हैं।

जिससे कहा जाता है या जिसे लिखा जाता है, उसे 'तू' या 'तुम' कहते हैं इसलिये 'तू' और तुम **मध्यम पुरुष सर्वनाम** कहलाते हैं।

बात में या लेख में जिस अन्य किसी का नाम या सर्वनाम आता है उसे **अन्य पुरुष** कहते हैं। इसे ही **प्रथम पुरुष** भी कहते हैं यथा— **राम** वहाँ गया था। **वह** बड़ा अच्छा आदमी है। **वे** मूर्ख हैं।—यहाँ पर राम, वह और वे **प्रथम पुरुष सर्वनाम** हैं।

नोट—ऊपर के वर्णन से स्पष्ट है कि उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष केवल सर्वनाम के ही होते हैं। किन्तु अन्य पुरुष (प्रथम पुरुष) संज्ञा का भी होता है और सर्वनाम का भी।

वाक्य विग्रह—प्रत्येक वाक्य के दो भाग होते हैं—

(१) उद्देश्य—जिसके विषय में कुछ कहा जाय।

(२) विधेय—किसी के विषय में जो कुछ भी कहा जाय।

उदाहरण—'रामः गृहं गच्छति'—इस वाक्य में 'राम' के विषय में कुछ कहा जा रहा है। इसलिये 'राम' उद्देश्य हुआ। राम के विषय में कहा गया कि वह घर जाता है। इसलिये 'गृहं गच्छति' विधेय हुआ। इसी प्रकार—

रामस्य स्वसा / गीतं गायति।

इदं फलं / अतिमधुरं अस्ति।

राजा / सैन्यसहितं सघने वने अटति।

आज्ञा वाचक वाक्यों में कभी-कभी उद्देश्य नहीं भी होता है, किन्तु छिपा अवश्य रहता है। यथा—'अत्रागच्छ'—इस वाक्य में उद्देश्यभूत 'त्वम्' छिपा हुआ है। शेष 'अत्रागच्छ' पद विधेय है।

क्रिया के पूरक—क्रिया की पूर्ति में जो सहायक बने, उन्हें **'कारक'** कहते हैं। यथा—'गच्छति' क्रिया अधूरी है, जब तक कि उसमें 'रामः' की पूर्व योजना न हो। अस्तु 'रामः गच्छति' में रामः कारक है। कारक आठ होते हैं—

१. कर्ता—काम का करने वाला (बालकः)
२. कर्म—क्रिया का आधारभूत कर्म (बालकम्)
३. करण—जिससे क्रिया की जाय (बालकेन)
४. सम्प्रदान—जिसके लिये कुछ किया जाय (बालकाय)
५. अपादान—जिससे कोई वस्तु अलग हो (बालकात्)
६. सम्बन्ध—जिससे किसी का सम्बन्ध हो (बालकस्य)
७. अधिकरण—जहाँ पर कोई कार्य हो (बालके)
८. सम्बोधन—जिससे किसी को बुलाया या संकेत किया जाय (हे बालक !)

क्रिया की वृत्तियाँ—किसी क्रिया के करने में जो समय लगता है, उसे काल कहते हैं। यही क्रिया की वृत्ति है। क्रिया की १० वृत्तियाँ हैं, जिन्हें कि **'लकार'** कहते हैं—

१. लट्—वर्तमान
२. लङ्—अनद्यतनभूत
३. विधिलिङ्—विधि
४. लोट्—आज्ञा
५. लृट्—सामान्य भविष्य
६. लृङ्—क्रियातिपत्ति (हेतुहेतुमद्भविस्य)
७. लिट्—परोक्षभूत
८. लुङ्—सामान्यभूत
९. लुट्—अनद्यतन भविष्य
१०. आशीर्लिङ्—आशीर्वाद ।

क्रियाओं के पद—क्रियाओं के तीन पद होते हैं—

१. परस्मैपद—यथा—गच्छति, गच्छतः, गच्छन्ति—आदि।

२. आत्मनेपद—यथा—लभते, लभेते, लभन्ते—आदि।

३. उभयपद—यथा—पचति, पचतः, पचन्ति और पचते, पचेते, पचन्ते—आदि।

परस्मैपद और आत्मनेपद का भेद—परस्मैपद का प्रयोग केवल कर्तृवाच्य की क्रियाओं में होता है, जबकि आत्मनेपद का प्रयोग कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य तीनों की ही क्रियाओं में होता है।

उभयपदी क्रियाओं के किस रूप का प्रयोग किया जाय—उभयपद की क्रियाओं के दो रूप होते हैं—परस्मैपद का रूप और आत्मनेपद का रूप। जहाँ कोई काम स्वयं के लिये किया जाय वहाँ आत्मनेपद और जहाँ दूसरों के लिये किया जाय वहाँ परस्मैपद के रूप का प्रयोग करना चाहिये। यथा—

१. ब्राह्मणः भोजनं **पचते** (स्वयं खाने के लिये)।

२. सूपकारः भोजनं **पचति** (घर के सभी लोगों के लिये)।

वाच्य विमर्श—वाच्य तीन होते हैं—

(१) कर्तृवाच्य (२) कर्मवाच्य (३) भाववाच्य।

कर्तृवाच्य—कर्तृवाच्यप्रयोगे तु प्रथमा कर्तृकारके।
द्वितीयान्तं भवेत्कर्म कर्त्रधीनं क्रियापदम्॥

अर्थात्—कर्तृवाच्य में कर्ता में प्रथमा विभक्ति और कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। क्रिया कर्ता के अनुसार होती है। यथा—

रामः गृहं गच्छति।

कर्मवाच्य—

कर्मवाच्यप्रयोगे तु तृतीया कर्तृकारके।
प्रथमान्तं भवेत्कर्मं कर्माधीनं क्रियापदम्॥

अर्थात्—जब सकर्मक धातुओं का कर्त्ता तृतीया विभक्ति में और कर्म प्रथमा विभक्ति में होता है तथा क्रिया सर्वथा कर्म के अनुसार होती है, तब वह कर्मवाच्य कहलाता है। जैसे—

कुम्भकारेण घटः क्रियते।

भाव वाच्य—

कर्माभावे भाववाच्ये तृतीया कर्तृकारके।
क्रिया प्रथमे पुरुषे वचनैकानुसारिणी॥

अर्थात्—जब अकर्मक धातुओं का कर्ता तृतीया बिभक्ति में हो और क्रिया प्रथम पुरुष (अन्य पुरुष) एकवचनान्त हो तो भाववाच्य होता है। अकर्मक धातुओं का ही भाववाच्य होता है। यथा—

कृष्णेन सुप्यते।

क्रियाओं के गण—संस्कृत धातुयें १० गणों में विभक्त हैं—

१. भ्वादिगण
२. अदादिगण
३. जुहोत्यादिगण
४. दिवादिगण
५. स्वादिगण
६. तुदादिगण
७. रुधादिगण
८. तनादिगण
९. क्र्यादिगण
१०. चुरादिगण



द्वितीय अध्याय

संज्ञा-प्रकरण

हिन्दी में कर्ता, कर्मादि सम्बन्ध दिखाने के लिये 'ने' 'को' आदि शब्द जोड़ कर संज्ञा शब्दों का बेधड़क प्रयोग किया जाता है, किन्तु संस्कृत में संज्ञा शब्दों में कारक (=विभक्ति) सूचक प्रत्यय लगा कर यथेष्ट रूप सिद्ध कर लेते हैं। उक्त प्रत्ययों को 'सुप्' कहते हैं इसीलिये जिन शब्दों में ये प्रत्यय लगते हैं उन्हें 'सुपन्त' कहते हैं।

सुप् प्रत्यय

विभक्ति	अर्थ	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ने	सु	औ	जस्
द्वितीया	को	अम्	औट्	शस्
तृतीया	से, के द्वारा	टा	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	के लिये, को	ङे	भ्याम्	भ्यस्
पंचमी	से	ङसि	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	का, की, के	ङस्	ओस्	आम्
सप्तमी	में, पै, पर	ङि	ओस	सुप्

सम्बोधन के लिये अलग प्रत्यय नहीं दिये हैं, क्योंकि इसके रूप प्रथमा विभक्ति के अनुसार ही चलते हैं। केवल कहीं-कहीं एक वचन में अन्तर पड़ जाता है।

शब्दों में उक्त २१ प्रत्ययों का जोड़ना एक जटिल प्रक्रिया है। अस्तु जब तक पाणिनीय व्याकरण (तत्सम्बन्धी सूत्रों) का अच्छा ज्ञान नहीं हो जाता, तब तक प्रातिपदिकों[1] में सुप् प्रत्यय जोड़ कर रूप सिद्ध करना दुःसाध्य कर्म है। यथा--राम + सु = रामस् ('उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र

---

१. अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्।
कृत्तद्धितसमासाश्च ॥

से 'सु' के उकार का लोप) = रामः ('ससजुषो रुः' से अन्त्य' 'स्' को 'रु' हुआ; उपदेशेऽजनुनासिक इत्" से पुनः 'स' के उकार का लोप होकर 'र्' बना, 'स्वरवसानयोः विसर्जनीयः' सूत्र से उस 'र्' को विसर्ग हुआ)। इस प्रकार 'रामः' पद की सिद्धि होती है।

किन्तु कहीं-कहीं प्रथमा एक वचन उस 'सु' प्रत्यय का सर्वथा लोप हो जाता है, अर्थात् उसके लगने से भी मूल शब्द में कोई परिवर्तन नहीं हुआ करता। यथा—विद्या + सु = विद्या (हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से 'सु' में अवशिष्ट रहने वाले 'स्' का लोप हो गया है।

इसी प्रकार एक उदाहरण और देखिये। नर + टा (= तृतीया एक वचन का प्रत्यय) = नर + इन ('टाङसिङसामिनात्स्याः' सूत्र से 'टा' को 'इन' हुआ) = नरेण ('आद्गुणः' सूत्र से अ + इ मिलकर एकार गुणादेश हुआ तथा 'अट्कुप्वाङ् नुम् व्यवायेऽपि' सूत्र से रेफ के संयोग से नकार को णकार हो गया)।

किन्तु 'भगवत् + टा' में उक्त प्रक्रिया नहीं लगती। यहाँ तो मात्र 'चुट्' सूत्र से 'टा' के टकार का लोप होने पर 'आ' बचता है, जिसे पूर्वस्थित 'भगवत्' प्रातिपदिक शब्द में जोड़ देने से भगवत् + आ = भगवता रूप सिद्ध होता है।

इसी प्रकार पाणिनि के सम्बन्धित सूत्रों का परिज्ञान हो जाने पर संख्यातीत शब्दों में उक्त सुप् प्रत्यय जोड़-जोड़ कर उनकी रूपसिद्धि की जाती है। विस्तार के भय से (अथ च इस पुस्तक-विशेष की प्राकरणिकता को ध्यान में रख कर) हम यहाँ उक्त प्रक्रिया का विवेचन नहीं कर रहे हैं।

संज्ञाओं के दो विभाग—(१) स्वरान्त संज्ञा शब्द, (२) व्यञ्जनान्त संज्ञा शब्द।

स्वरान्त में (१) अकारान्त शब्द प्रायः सभी पुल्लिग अथवा नपुंसक लिंग में होते हैं।

(२) आकारान्त शब्द प्रायः स्त्रीलिंग में होते हैं। थोड़े से ही पुल्लिग में होते हैं।

(३) इकारान्त शब्द कोई पुल्लिग में कोई स्त्रीलिंग में और कोई नपुंसकलिंग में होते हैं।

(४) ईकारान्त शब्द प्रायः स्त्रीलिंग में, कुछ-कुछ पुल्लिग में भी होते हैं।

(५) उकारान्त शब्द प्रायः तीनों चिह्नों में होते हैं।

(६) ऊकारान्त शब्द प्रायः स्त्रीलिंग, पुल्लिग दोनों में होते हैं।

(७) ऋकारान्त शब्द प्रायः सबके सब पुल्लिग में होते हैं।

(८) ऐकारान्त, ओकारान्त और औकारान्त शब्द बहुत कम।

(९) शेष स्वरों में अन्त होने वाले प्रातिपदिक शब्द प्रायः नहीं के बराबर हैं।

स्वरान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्द—

१. **अकारान्त**—यथा—राम, वृक्ष, अश्व, सूर्य, चन्द्र, नर, पुत्र, सुर, देव, रथ, सुत, गज, रासभ (गधा), मनुष्य, जन, दन्त, लोक, ईश्वर, पाद, भक्त, मास, शठ, दुष्ट, कुक्कुर, वृक (भेड़िया), व्याघ्र, सिंह आदि। इसी प्रकार यादृश, तादृश, भवादृश, मादृश, त्वादृश, एतादृश आदि—**इन सभी के रूप बालक की तरह चलते हैं।**

२. **आकारान्त**—विश्वपा (संसारपालक), गोपा (गायरक्षक), शंखध्मा (शंख बजाने वाला), सोमपा (सोमरस पीने वाला), धूम्रपा, बलदा (बल देने वाला, इन्द्र) **आदि के रूप समान चलते हैं।**

३. **इकारान्त**—हरि, मुनि, ऋषि, कपि, यति, विधि, विरञ्चि, जलधि, गिरि, सप्ति (घोड़ा), रवि, वह्नि, अग्नि—**आदि के रूप 'कवि' शब्द की तरह चलते हैं।**

४. इकारान्त—'पति' शब्द के रूप सर्वथा भिन्न प्रकार के होते हैं। किन्तु जब 'पति' शब्द किसी शब्द के साथ समास के अन्त में आते हैं **तो उसके रूप कवि के समान चलते हैं।** यथा—भूपति, महीपति, गृहपति, नरपति, लोकपति, अधिपति, सुरपति, गजपति, गणपति, यूथपति, जगत्पति, बृहस्पति, पृथ्वीपति आदि।

५. सखि (= मित्र) शब्द के रूप भी बिलकुल भिन्न प्रकार के होते हैं।

६. **ईकारान्त**—प्रधी (= अच्छा ध्यान करने वाला), वेगी (फुर्ती से जाने वाला), जलपी (जल पीने वाला) आदि के रूप **'प्रधी' के समान ही चलते हैं।**

७. ईकारान्त 'सुधी' शब्द के रूप कुछ भिन्न प्रकार से चलते हैं और शुष्की, पक्वी, सुश्री, शुद्धधी, परमधी के रूप भी चलते हैं।

८. **उकारान्त**—शत्रु, रिपु, विष्णु, गुरु, उरु (जाँघ), जन्तु, प्रभु, शिशु, विधु (चन्द्रमा), पशु, शम्भु, वेणु (बाँस) **आदि के रूप 'भानु' की तरह चलते हैं।**

९. सुभ्रू (सुन्दर भौं वाला), स्वभू (स्वयं पैदा हुआ), प्रतिभू (जामिन) के रूप **'स्वयंभू' (ब्रह्मा) शब्द के समान चलते हैं।**

१०. **ऋकारान्त**—भ्रातृ, देवृ (देवर), जामातृ (दामाद) आदि के रूप 'पितृ' शब्द की तरह चलते हैं।

११. किन्तु 'दातृ' (देने वाला) शब्द के रूप कुछ भिन्न होते हैं और धातृ (ब्रह्मा), कर्तृ (करने वाला), गन्तृ (जाने वाला), नेतृ (ले जाने वाला), नप्तृ (पोता) के रूप भी उसी तरह चलते हैं।

१२. **ऐकारान्त**—रै (धन)।

१३. **ओकारान्त**—गो (साँड़, बैल)।

१४. **औकारान्त**—ग्लौ (चन्द्रमा)।

स्वरान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्द—

१. **अकारान्त**—मित्र, वन, अरण्य, मुख, कमल, कुसुम, पुष्प, पर्ण, नक्षत्र, पत्र, बीज, जल, तृण, गगन, शरीर, पुस्तक, ज्ञान **आदि के रूप 'फल' शब्द की तरह चलेंगे।**

२. **इकारान्त**—अस्थि, दधि, सक्थि (जाँघ), अक्षि (आँख) को छोड़ कर शेष सभी इकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के रूप **वारि (जल के समान चलते हैं।**

३. **उकारान्त**—दारु (काठ), जानु (घुटना); जतु (लाख), तालु, मधु (शहद); सानु (पर्वत की चोटी) **आदि के रूप 'वस्तु' शब्द के समान होते हैं।**

४. ऊकारान्त विशेषण शब्दों के रूप चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी विभक्तियों के एक वचन में तथा षष्ठी व सप्तमी के द्विवचन में उकारान्त पुल्लिंग शब्द के समान विकल्प करके होते हैं।

५. **ऋकारान्त**—कर्तृ, नेतृ, धातृ, रक्षितृ आदि शब्द विशेषण हैं, इसलिये इनका प्रयोग तीनों लिंगों में होता है। इसलिये नपुंसक लिंग में भी इसके रूप 'कर्तृ, कर्तृणी, कर्तृणि' आदि की तरह चलते हैं।

स्वरान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द—

१. **आकारान्त**—रमा, बाला, निशा, कन्या, ललना, भार्या, बडवा (घोड़ी), राधा, सुमित्रा, तारा, कौसल्या, कला **आदि के रूप 'विद्या' शब्द के समान चलेंगे।**

२. **इकारान्त**—रुचि, धूलि, बुद्धि, गति, शुद्धि, भक्ति, शक्ति, श्रुति, स्मृति, शान्ति, नीति, रीति, रात्रि, जाति, पंक्ति, गीति **आदि के रूप 'मति' शब्द की तरह चलेंगे।**

३. **ईकारान्त**—राज्ञी (रानी), गौरी (पार्वती), जानकी, अरुन्धती, नटी, पृथ्वी, नन्दिनी, द्रौपदी, कैकेयी, देवी, पाञ्चाली, त्रिलोकी, पञ्चवटी, अटवी (जंगल), गान्धारी, कादम्बरी, कौमुदी (चाँदनी), कुन्ती, देवकी, सावित्री, गायत्री, कमलिनी, नलिनी **आदि के रूप 'नदी' शब्द की तरह चलते हैं।**

लक्ष्मी, श्री और स्त्री के रूप 'नदी' से कुछ भिन्न होते हैं। भी (डर), ह्री (लज्जा), धी (बुद्धि), सुश्री आदि के रूप भी 'श्री' शब्द की ही तरह चलते हैं।

४. **उकारान्त**—तनु (शरीर), रेणु (धूल), हनु (ठुड्डी) **आदि के रूप 'धेनु' शब्द की तरह चलते हैं।**

५. **ऊकारान्त**—चमू (सेना), रज्जू (रस्सी), श्वश्रू (सास), कर्कन्धू (बेर) **आदि के रूप 'वधू' शब्द की तरह चलते हैं।**

६. भू (पृथ्वी) के रूप 'वधू' से कुछ भिन्न है। 'भ्रू' के रूप भी ऐसे ही है।

७. **ऋकारान्त**—मातृ, यातृ (देवरानी), दुहितृ (लड़की) **के रूप मातृ शब्द की तरह ही चलते हैं।**

८. ऐकारान्त, ओकारान्त (गो आदि) और औकारान्त (नौ = नाव; द्यौ = आकाश आदि) शब्दों के रूप क्रमशः ऐकारान्त, ओकारान्त और औकारान्त पुल्लिग शब्दों की तरह ही चलते हैं।

व्यञ्जनान्त संज्ञा शब्द

व्यञ्जनान्त संज्ञायें सभी लिंगों में प्रायः एक सी चलती हैं, इसलिये यहाँ पर वर्णक्रम से दी जा रही हैं।

चकारान्त शब्द

१. **पुल्लिंग**—सत्यवाच्, पयोमुच् आदि **सभी चकारान्त पुल्लिग शब्दों के रूप जलमुच् (बादल) की तरह चलते हैं।** केवल प्राञ्च् (पूर्वी), प्रत्यञ्च (पश्चिमी), उदञ्च् (उत्तरी) और तिर्यञ्च (तिरछा जाने वाला) आदि अञ्च् (जाना) धातुओं से बने शब्दों के रूपों में कुछ भेद होता है।

२. **स्त्रीलिंग**—रुच्, त्वच् (चमड़ा, पेड़ की छाल), शुच् (सोच; शोक), ऋच् (ऋग्वेद के मन्त्र) **आदि सभी चकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप वाच् (वाणी) की तरह होते हैं।**

जकारान्त शब्द

१. **पुल्लिंग**—भूभुज् (राजा), हुतभुज् (अग्नि); भिजग् (वैद्य); वणिज् (बनिया) **आदि जकारान्त पुल्लिग शब्दों के रूप ऋत्विज् (पुजारी) की तरह चलते हैं।** केवल परिव्राज् (संन्यासी) के रूपों में थोड़ा भेद होता है। सम्राज् (महाराज), विश्वसृज् (संसार का रचने वाला), **विराज् (बड़ा) के रूप भी परिव्राज् के समान ही चलते हैं।**

२. **स्त्रीलिंग**—रुज् (रोग) **आदि जकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप स्रज् (माला) के समान होते हैं।**

३. **नपुंसक लिंग**—सभी जकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के रूप **असृज् (खून) के समान होते हैं।**

तकारान्त शब्द

१. पुल्लिंग—महीभृत् (राजा, पहाड़), दिनकृत् (सूर्य), शशभृत् (चन्द्रमा). परभृत् (कोयल), मरुत् (वायु), विश्वजित् (विश्व को जीतने वाला, एक प्रकार का यज्ञ) **आदि के रूप भूभृत् (राजा, पहाड़) के समान चलते हैं।**

२. पुल्लिंग—धीमत् (बुद्धिमान्), बुद्धिमत्, भानुमत् (चमकनेवाला) सानुमत् (पहाड़), धनुष्मत् (धनुर्धारी), अंशुमत् (सूर्य), विद्यावत् (विद्वान्), बलवत् (बलवान्), भगवत् (पूज्य), भाग्यवत्, गतवत् (गया हुआ) उक्तवत् (बोल चुका हुआ), श्रुतवत् (सुन चुका हुआ) **आदि के रूप श्रीमत् शब्द की तरह चलते हैं।**

३. पुल्लिंग—पठत् (पढ़ता हुआ), धावत्, गच्छत्, वदत्, पश्यत्, गृह्णत्, पतत्, शोचत् (सोचता हुआ), पिवत्, भवत् **सभी शतृ प्रत्ययान्त पुल्लिंग शब्दों के रूप तथा महत् (बड़ा) के रूप भवत् (आप) के समान होते हैं।**

४. स्त्रीलिंग—विद्युत् (बिजली), योषित्, (स्त्री) आदि तकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप सरित् (नदी) की तरह चलते हैं।

५. नपुंसक लिंग—प्रायः सभी तकारान्त नपुंसक लिंग शब्दों के रूप जगत् (संसार) के समान होते हैं। केवल महत् (बड़ा) का रूप प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के बहुवचन में 'महन्ति' न होकर 'महान्ति' होता है।

दकारान्त शब्द

१. पुल्लिंग—हृदयच्छिद् (हृदय को छेदने वाला), मर्मभिद् (मर्मस्थल को पीड़ा पहुँचाने वाला), सभासद् (सभा में बैठने वाला), तमोनुद् (सूर्य), धर्मविद् (धर्म को जानने वाला)। हृदयन्तुद् (हृदय को पीड़ित करने वाला) **आदि दकारान्त पुल्लिंग शब्दों के रूप सुहृद् (मित्र) के समान होते हैं।**

२. स्त्रीलिंग—शरद्, आपद्, सम्पद्, संसद् (सभा), दृषद् (चट्टान, पत्थर) **आदि दकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप 'विपद्' के समान होते हैं।**

धकारान्त शब्द

धकारान्त शब्द प्रायः स्त्रीलिंग के ही होते हैं। वीरुध् (लता), क्षुध् (भूख), कुध् (क्रोध), युध् (युद्ध) **आदि के रूप समिध् (यज्ञ की लकड़ी) के समान होते हैं।**

नकारान्त शब्द

१. पुल्लिग—अध्वन् (मार्ग), अश्मन् (पत्थर), यज्वन् (यज्ञ करने वाला), ब्रह्मन् (ब्रह्मा) **आदि के रूप आत्मन् (आत्मा) के समान होते हैं।** राजन् (राजा), युवन् (जवान), श्वन् (कुत्ता), ऊर्वम् (घोड़ा, इन्द्र) मघवन् (इन्द्र) और पूषन् (सूर्य) के रूप कुछ भिन्नता लिये हुये होते हैं।

२. पुल्लिग—मूर्धन् (शिर) गरिमन् (बड़प्पन) लघिमन् (छोटापन) अणिमन् (छोटापन), शुक्लमन् (सफेदी), कालिमन् (कालापन), द्रढिमन् (मजबूती) आदि समस्त अन्नन्त पुल्लिग शब्दों के रूप **महिमन् (महिमा बड़प्पन के समान चला करते हैं।**

३. पुल्लिगं—स्वामिन्, करिन् (हाथी), गुणिन् (गुणी), मन्त्रिन्, (मंत्री), शशिन्, पक्षिन् (चिड़िया), धनिन्, वाजिन् (घोड़ा), तपस्विन्, एकाकिन्, (अकेला), बलिन् (ताकतवर), सुखिन् (सुखी), सत्यवादिन् (सत्य बोलने वाला) **आदि इन्नन्त शब्दों के रूप हस्तिन् (हाथी) की तरह चलेंगे।** केवल पथिन् (मार्ग) शब्द के रूपों में थोड़ा भेद होता है।

४. स्त्रीलिंग—सीमन् (सीमा, चौहद्दी) शब्द के रूप पुल्लिग शब्द महिमन् के समान ही होते हैं।

५. नपुंसकलिंग—धामन् (घर, चमक), ब्योमन् (आकाश), सामन् (सामवेद का मंत्र), प्रेमन् (प्यार), दामन् (रस्सी) **के रूप नामन् (नाम) के समान चलते हैं।**

६. नपुंसकलिंग—पर्वन् (पूर्णमासी, त्योहार), ब्रह्मन् (ब्रह्मा), वर्मन् (कवच), जन्मन् (जन्म), वर्त्मन् (रास्ता), शर्मन् (सुख) शब्दों के रूप चर्मन् (चमड़ा) की तरह होते हैं। **किन्तु अहन् (दिन) के रूप इससे कुछ भिन्न होते हैं।**

पकारान्त शब्द

१. **स्त्रीलिंग**—अप् (पानी) शब्द के रूप केवल बहुवचन में चलते हैं।

भकारान्त शब्द

१. **स्त्रीलिंग**—ककुभ् (दिशा) के समान ही अन्य **भकारान्त शब्दों के रूप भी चलते हैं।**

रेफान्त शब्द

१. **स्त्रीलिंग**—इरन्त शब्दों के रूप 'गिर्' (वाणी) और उरन्त शब्दों के रूप **'पुर' नगर के समान चलते हैं।**

वकारान्त शब्द

१. **स्त्रीलिंग**—वकारान्त शब्दों के रूप **दिव् (आकाश, स्वर्ग) शब्द के समान चलते हैं।**

शकारान्त शब्द

१. **पुल्लिंग**—शकारान्त पुल्लिंग शब्दों के रूप **विश् (बनिया) के समान होते हैं।**

२. **स्त्रीलिंग**—शकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप दिश् (दिशा) की तरह चलते हैं। निश् (रात) शब्द के रूप भिन्न होते हैं। उसके पहले पांच रूप नहीं हुआ करते।

षकारान्त शब्द

१. **पुल्लिंग**—षकारान्त पुल्लिंग शब्दों के रूप द्विष् (शत्रु) की तरह चलते हैं।

२. **स्त्रीलिंग**—षकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप **प्रावृष् (वर्षा ऋतु) की तरह होते हैं।**

सकारान्त शब्द

१. **पुल्लिंग**—दिवौकस् (देवता), महौजस् (बड़ा तेजस्वी), वेधस् (ब्रह्मा), सुमनस् (अच्छे चित्त वाला), महायशस् (बड़ा यशस्वी), महातेजस् (बड़ी कान्ति वाला), विशालवक्षस् (बड़ी छाती वाला),

दुर्वासस्, दुर्वासा, बुरे कपड़ों वाला, प्रचेतस् **आदि सकारान्त पुल्लिंग शब्दों के रूप चन्द्रमस् (चन्द्रमा) के समान चलाये जाते हैं।**

२. **पुल्लिंग**—वस् में अन्त होने वाले शब्दों के रूप विद्वस् (विद्वान्) की तरह चलते हैं।

३. **पुल्लिंग**—श्रेयस् (अधिक अच्छा), गरीयस् (अधिक बड़ा), द्रढीयस् (अधिक मजबूत), द्राघीयस् (अधिक लम्बा), प्रथीयस् (अधिक मोटा) आदि ई स् प्रत्यय से बने पुल्लिग शब्दों के रूप लघीयस् (उससे छोटा) के समान चलते हैं।

४. **पुल्लिंग**—दोस् (भुजा) शब्द के रूप सर्वथा भिन्न हैं।

५. **स्त्रीलिंग**—सकारान्त अप्सरस् (अप्सरा) और आशिस् (आशीर्वाद) आदि शब्दों के रूप लगभग समान होते हैं।

६. **नपुंसकलिंग**—अम्भस् (पानी), नभस् (आकाश), आगस् (पाप), उरस् (छाती), मनस् (मन), वयस् (उम्र), रजस् (धूल), वक्षस् (छाती), तमस् (अंधेरा), अयस् (लोहा), वचस् (वचन, बात), यशस् (यश, कीर्ति), सरस् (तालाब), तपस् (तपस्या), शिरस् (शिर), **आदि असन्त नपुंसकलिंग शब्दों के रूप पयस् (दूध, पानी) की तरह चलते हैं।**

७. **नपुंसकलिंग**—इसन्त नपुंसकलिंग शब्दों के रूप हविस् (हवन सामग्री) की भाँति चलते हैं।

८. **नपुंसकलिंग**—उसन्त नपुंसकलिंग शब्दों के रूप चक्षुस् (आँख) की तरह चलेंगे। जैसे कि—धनुस् (धनुष), वपुस् (शरीर), आयुस् (उम्र), यजुस् (यजुर्वेद) आदि।

हकारान्त शब्द

१. **पुल्लिग**—इहन्त पुल्लिग शब्दों के रूप **मधुलिह् (शहद की मक्खी, भौंरा) की तरह चलते हैं।**

२. **पुल्लिग**—उहन्त पुल्लिग शब्दों के रूप **अनडुह् (बैल) की तरह होते हैं।**

३. **स्त्रीलिंग**—अहन्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप **उपानह् (जूता) के समान चलाये जाते हैं।**

संज्ञा शब्दों की रूप-साधनिका

[अजन्त पुल्लिंग शब्द]

(१) अकारान्त 'राम' शब्द—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पञ्चमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे राम !	हे रामौ !	हे रामाः !

निम्नलिखित शब्दों के रूप 'राम' की तरह चलते हैं—

नर, शिव, कृष्ण, नट, छात्र, शिक्षक, नृप, चौर, गज, अश्व, मृग, नकुल, मयूर, सर्प, मूषक, कुक्कुर, बिडाल, मीन, कर, वृक्ष, मेघ, खल, कूप, आम्र—आदि ।

२. आकारान्त 'विश्वपा' (=देवता, सूर्य, चन्द्रमा, संसार का रक्षक) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	विश्वपाः	विश्वपौ	विश्वपाः
द्वि०	विश्वपाम्	विश्वपौ	विश्वपः
तृ०	विश्वपा	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभिः
च०	विश्वपे	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः
पं०	विश्वपः	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः
ष०	विश्वपः	विश्वपोः	विश्वपाम्
स०	विश्वपि	विश्वपोः	विश्वपासु
सम्बो०	हे विश्वपाः !	हे विश्वपौ !	हे विश्वपाः !

निम्नलिखित शब्दों के रूप 'विश्वपा' की तरह चलते हैं—

गोपा, सोमपा, धूम्रपा, बलदा, शंखध्मा—आदि ।

३. आकारान्त 'हा हा' (= गन्धर्व विशेष) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	हाहा	हाहौ	हाहाः
द्वि०	हाहाम्	हाहौ	हाहाः
तृ०	हाहा	हाहाभ्याम्	हाहाभिः
च०	हाहे	हाहाभ्याम्	हाहाभ्यः
पं०	हाहाः	हाहाभ्याम्	हाहाभ्यः
ष०	हाहाः	हाहोः	हाहाम्
स०	हाहे	हाहोः	हाहासु
सम्बो०	हे हाहाः !	हे हाहौ !	हे हाहाः !

४. इकारान्त 'हरि' (= विष्णु, सिंह, बन्दर आदि) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	हरिः	हरी	हरयः
द्वि०	हरिम्	हरी	हरीन्
तृ०	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
च०	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पं०	हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
ष०	हरेः	हर्योः	हरीणाम्
स०	हरौ	हर्योः	हरिषु
सम्बो०	हे हरे !	हे हरी !	हे हरयः !

निम्नलिखित शब्दों के रूप 'हरि' के समान चलते हैं—

मुनि, अरि, कवि, अलि, असि, अतिथि, ऋषि, गिरि, ध्वनि, निधि, पाणि, यति, रवि, रश्मि, व्याधि, सारथि—आदि ।

५. इकारान्त 'पति' शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	पतिः	पती	पतयः
द्वि०	पतिम्	पती	पतीन्
तृ०	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
च०	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पं०	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
ष०	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
स०	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बो०	हे पते !	हे पती !	हे पतयः !

यदि 'पति' शब्द अन्य शब्दों के साथ समास युक्त होकर आता है तो उसके रूप 'हरि' के समान चलते हैं। यथा—

भूपति, श्रीपति, महीपति, नृपति, सेनापति—आदि।

६. इकारान्त 'सखि' (= मित्र) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	सखा	सखायौ	सखायः
द्वि०	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृ०	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
च०	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पं०	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
ष०	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
स०	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सम्बो०	हे सखे !	हे सखायौ !	हे सखायः !

७. ईकारान्त 'पपी' (= सूर्य) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	पपी	पप्यौ	पप्यः
द्वि०	पपीम्	पप्यौ	पपीन्

तृ०	पप्या	पपीभ्याम्	पपीभिः
च०	पप्ये	पपीभ्याम्	पपीभ्यः
पं०	पप्यः	पपीभ्याम्	पपीभ्यः
ष०	पप्यः	पप्योः	पप्याम्
स०	पपी	पप्योः	पपीषु
सम्बो०	हे पपीः !	हे पप्यौ !	हे पप्यः !

वातप्रमी आदि शब्दों के रूप 'पपी' के समान ही चलेंगे।

८. ईकारान्त 'बहुश्रेयसी' (= बहुत सी 'कल्याण-कारिणी वस्तुयें' जिसके पास हों) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	बहुश्रेयसी	बहुश्रेयस्यौ	बहुश्रेयस्यः
द्वि०	बहुश्रेयसीम्	बहुश्रेयस्यौ	बहुश्रेयसीन्
तृ०	बहुश्रेयस्या	बहुश्रेयसीभ्याम्	बहुश्रेयसीभिः
च०	बहुश्रेयस्यै	बहुश्रेयसीभ्याम्	बहुश्रेयसीभ्यः
पं०	बहुश्रेयस्याः	बहुश्रेयसीभ्याम्	बहुश्रेयसीभ्यः
ष०	बहुश्रेयस्याः	बहुश्रेयस्योः	बहुश्रेयसीनाम्
स०	बहुश्रेयस्याम्	बहुश्रेयस्योः	बहुश्रेयसीषु
सम्बो०	हे बहुश्रेयसि !	हे बहुश्रेयस्यौ !	हे बहुश्रेयस्यः !

९. ईकारान्त 'प्रधी' (बुद्धिमान्) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	प्रधीः	प्रध्यौ	प्रध्यः
द्वि०	प्रध्यम्	प्रध्यौ	प्रध्यः
तृ०	प्रध्या	प्रधीभ्याम्	प्रधीभिः
च०	प्रध्ये	प्रधीभ्याम्	प्रधीभ्यः
पं०	प्रध्यः	प्रधीभ्याम्	प्रधीभ्यः
ष०	प्रध्यः	प्रध्योः	प्रध्याम्
स०	प्रध्यि	प्रध्योः	प्रधीषु
सम्बो०	हे प्रधीः !	हे प्रध्यौ !	हे प्रध्यः !

१०. उकारान्त 'गुरु' (= पूज्य, बड़ा, शिक्षक) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	गुरुः	गुरू	गुरवः
द्वि०	गुरुम्	गुरू	गुरून्
तृ०	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
च०	गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
पं०	गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
ष०	गुरोः	गुर्वोः	गुरूणाम्
स०	गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु
सम्बो०	हे गुरो !	हे गुरू !	हे गुरवः !

निम्नलिखित शब्दों के रूप 'गुरु' के समान चलेंगे—

भानु, अणु, ऋतु, जन्तु, तरु, धातु, पशु, प्रभु, बन्धु, साधु, भिक्षु, मृत्यु, बाहु, विष्णु, शत्रु, सूनु, हेतु, केतु—आदि।

११. ऋकारान्त 'कर्तृ' (= करने वाला) शब्द—

	एक व०	द्वि व०	बहु व०
प्र०	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः
द्वि०	कर्तारम्	कर्तारौ	कर्तॄन्
तृ०	कर्त्रा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः
च०	कर्त्रे	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
पं०	कर्तुः	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
ष०	कर्तुः	कर्त्रोः	कर्तृणाम्
स०	कर्तरि	कर्त्रोः	कर्तृषु
सम्बो०	हे कर्तः !	हे कर्तारौ !	हे कर्तारः !

निम्नलिखित शब्दों के रूप 'कर्तृ' की तरह चलते हैं :—

वक्तृ (= बोलने वाला), भर्तृ (= स्वामी), नेतृ (= नेता), सवितृ (= सूर्य), नप्तृ (= नाती), गन्तृ (= जाने वाला), जेतृ (= विजेता), श्रोतृ (= सुनने वाला), रक्षितृ (= रक्षक), अधिष्ठातृ (= स्वामी), क्रेतृ (= खरीदने वाला), ज्ञातृ (= जानकार), दातृ (= देने वाला)—आदि।

१२. ऋकारान्त 'पितृ' (= पिता) शब्द—

	ए० व०	द्वि व०	व० व०
प्र०	पिता	पितरौ	पितरः
द्वि०	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृ०	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
च०	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पं०	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
ष०	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
स०	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बो०	हे पितः !	हे पितरौ !	हे पितरः !

निम्नलिखित शब्दों के रूप भी 'पितृ' की तरह चलते हैं :—

भ्रातृ (= भाई), जामातृ (= दामाद), देवृ (= देवर), नृ (= मनुष्य)—आदि ।

ऋकारान्त 'धातृ' (= ब्रह्मा) शब्द—

	ए० व०	द्वि व०	व० व०
प्र०	धाता	धातारौ	धातारः
द्वि०	धातारम्	धातारौ	धातॄन्
तृ०	धात्रा	धातृभ्याम्	धातृभिः
च०	धात्रे	धातृभ्याम्	धातृभ्यः
पं०	धातुः	धातृभ्याम्	धातृभ्यः
ष०	धातुः	धात्रोः	धातृणाम्
स०	धातरि	धात्रोः	धातृषु
सम्बो०	हे धातः !	हे धातारौ !	हे धातारः !

प्रस्तुत 'धातृ' शब्द के रूप पूर्वोक्त 'कर्तृ' शब्द के रूपों से अभिन्न हैं ।

१४. ऋकारान्त 'क्रोष्टृ' (= सियार) शब्द—

	ए० व०	द्वि व०	व० व०
प्र०	क्रोष्टा	क्रोष्टारौ	क्रोष्टारः
द्वि०	क्रोष्टारम्	क्रोष्टारौ	क्रोष्टॄन्

तृ०	क्रोष्ट्रा / क्रोष्टुना	क्रोष्टुभ्याम्	क्रोष्टुभिः
च०	क्रोष्ट्रे / क्रोष्टवे	क्रोष्टुभ्याम्	क्रोष्टुभ्यः
पं०	क्रोष्टुः / क्रोष्टोः	क्रोष्टुभ्याम्	क्रोष्टुभ्यः
ष०	क्रोष्टुः / क्रोष्टोः	क्रोष्ट्रोः / क्रोष्ट्वोः	क्रोष्टूनाम्
स०	क्रोष्टरि / क्रोष्टौ	क्रोष्ट्रोः / क्रोष्ट्वोः	क्रोष्टुषु
सम्बो०	हे क्रोष्टो !	हे क्रोष्टारौ !	हे क्रोष्टारः !

१५. ओकारान्त 'गो' (=गाय, पृथ्वी) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	गौः	गावौ	गावः
द्वि०	गाम्	गावौ	गाः
तृ०	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
च०	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
पं०	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
ष०	गोः	गवोः	गवाम्
स०	गवि	गवोः	गोषु
सम्बो०	हे गौः ।	हे गावौ !	हे गावः !

[अजन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द]

१६. आकारान्त 'रमा' (=लक्ष्मी) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	रमा	रमे	रमाः
द्वि०	रमाम्	रमे	रमाः
तृ०	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
च०	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः

पं०	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
ष०	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
स०	रमायाम्	रमयोः	रमासु
सम्बो०	हे रमे !	हे रमे !	हे रमाः !

निम्नलिखित शब्दों के रूप भी 'रमा' की तरह चलेंगे—

लता, विद्या, गङ्गा, कन्या, कान्ता, निद्रा; प्रमदा, भार्या, कथा, अम्बा, आशा, आज्ञा, इच्छा, कविता, कृपा, क्षुधा, गणिका, चिन्ता, जिह्वा, प्रभा, बालिका, महिला, माला, वसुधा, वासना, शिखा, सुधा—आदि ।

१७. इकारान्त 'मति' (=बुद्धि) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	मतिः	मती	मतयः
द्वि०	मतिम्	मती	मतीः
तृ०	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
च०	मत्यै / मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पं०	मत्याः / मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
ष०	मत्याः / मतेः	मत्योः	मतीनाम्
स०	मत्याम् / मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बो०	हे मते !	हे मती !	हे मतयः !

निम्नलिखित शब्दों के रूप 'मति' की तरह चलते हैं—

अंगुलि, अवनति, उन्नति, कान्ति, कीर्ति, केलि, गति, छवि, जाति, तिथि, द्युति, धरणि, धूलि, नीति, पंक्ति, प्रकृति, भूमि, मुक्ति, मूर्ति, युवति, रात्रि, रीति, रुचि, विपत्ति, वृष्टि, शक्ति, स्मृति, सृष्टि, हानि—आदि ।

१८. ईकारान्त 'नदी' (= सरिता) शब्द—

	ए० व०	द्वि व०	ब० व०
प्र०	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वि०	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृ०	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
च०	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पं०	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
ष०	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
स०	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बो०	हे नदि !	हे नद्यौ !	हे नद्यः !

निम्नलिखित शब्दों के रूप भी 'नदी' की तरह चलते हैं—

जननी, पुत्री, रजनी, राज्ञी, कुमारी, पत्नी, देवी, भगिनी, गौरी, गृहिणी, दासी, धरणी, नगरी, पुरी, पृथ्वी, महिषी, युवती, लेखनी, वाणी, विभावरी, श्रेणी—आदि।

१९. ईकारान्त 'स्त्री' शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रीयः
द्वि०	स्त्रियम् स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रियः स्त्रीः
तृ०	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
च०	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
पं०	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
ष०	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
स०	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सम्बो०	हे स्त्रि !	हे स्त्रियौ !	हे स्त्रियः !

टिप्पणी—'स्त्री' शब्द के रूप केवल द्वितीया विभक्ति को छोड़कर शेष विभक्तियों में 'नदी' के समान चलते हैं। द्वितीया विभक्ति में इसके विकल्प से दो-दो रूप होते हैं।

२०. ईकारान्त 'लक्ष्मी' शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	लक्ष्मीः	लक्ष्म्यौ	लक्ष्म्यः
द्वि०	लक्ष्मीम्	लक्ष्म्यौ	लक्ष्मीः
तृ०	लक्ष्म्या	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभिः
च०	लक्ष्म्यै	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभ्यः
पं०	लक्ष्म्याः	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभ्यः
ष०	लक्ष्म्याः	लक्ष्म्योः	लक्ष्मीणाम्
स०	लक्ष्म्याम्	लक्ष्म्योः	लक्ष्मीषु
सम्बो०	हे लक्ष्मि !	हे लक्ष्म्यौ !	हे लक्ष्म्यः !

निम्नलिखित सात शब्दों के रूप 'लक्ष्मी' की ही तरह चलते हैं—

अवी (= रजस्वला स्त्री), तन्त्री (= सितार, वीणा), तरी (= नौका), लक्ष्मी (= विष्णु पत्नी), धी (= बुद्धि), ह्री (= लज्जा), और श्री (लक्ष्मी, सम्पत्ति)। इन सभी के प्रथमा एक वचन के प्रत्यय 'सु' का लोप नहीं होता।

२१. ईकारान्त 'श्री' (= लक्ष्मी, शोभा) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वि०	श्रियम्	श्रियौ	श्रियः
तृ०	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
च०	श्रियै / श्रिये	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
पं०	श्रियाः / श्रियः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
ष०	श्रियाः / श्रियः	श्रियोः	श्रीणाम् / श्रियाम्
स०	श्रियाम् / श्रियि	श्रियोः	श्रीषु
सम्बो०	हे श्रीः !	हे श्रियौ !	हे श्रियः !

२२. उकारान्त 'धेनु' (= गाय) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वि०	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृ०	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
च०	धेन्वै / धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पं०	धेन्वाः / धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
ष०	धेन्वाः / धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
स०	धेन्वाम् / धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बो०	हे धेनो !	हे धेनू !	हे धेनवः !

निम्नलिखित शब्दों के रूप भी 'धेनु' की तरह चलते हैं—

उडु (= नक्षत्र), चञ्चु (= चोंच), तनु (= शरीर), रज्जु (= रस्सी), रेणु (धूलि), स्नायु (= नसें), हनु (ठोढ़ी)—आदि।

२३. ऊकारान्त 'वधू' (= बहू) शब्द—

	ए० व०	द्वि व०	ब० व०
प्र०	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वि०	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृ०	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
च०	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पं०	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
ष०	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
स०	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बो०	हे वधु !	हे वध्वौ !	हे वध्वः !

निम्नलिखित शब्दों के रूप भी 'वधू' की तरह चलते हैं :—

चमू (= सेना), तनू (= शरीर), जम्बू (= जामुन का वृक्ष), प्रसू (= जननी), पुनर्भू (= पुनर्विवाहित विधवा), श्वश्रू (= सास) और वीरसू (= वीर उत्पन्न करने वाली)—आदि।

टिप्पणी—उपर्युक्त सभी शब्दों के प्रथमा एकवचन में 'वधूः' के समान विसर्ग लगेंगे।

२४. ऋकारान्त 'मातृ' (= माता) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	माता	मातरौ	मातरः
द्वि०	मातरम्	मातरौ	मातॄः
तृ०	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
च०	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पं०	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
ष०	मातुः	मात्रोः	मातॄणाम्
स०	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बो०	हे मातः !	हे मातरौ !	हे मातरः !

टिप्पणी—'मातृ' शब्द के रूप भी 'पितृ' की ही तरह चलते हैं। अन्तर केवल द्वितीया के बहुवचन में आता है। दे०—पितॄन्, मातॄः।

[अजन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द]

२५. अकारान्त 'फल' शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	फलम्	फले	फलानि
द्वि०	फलम्	फले	फलानि
तृ०	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
च०	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पं०	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः

ष०	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
स०	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बो०	हे फल !	हे फले !	हे फलानि !

टिप्पणी—प्रथमा और द्वितीया को छोड़कर अकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के रूप शेष विभक्तियों में 'राम' के समान चलते हैं।

निम्नलिखित शब्दों के रूप 'फल' के समान चलेंगे :—

अङ्क, अज्ञान, अपत्य, अमृत, आसन, इन्द्रिय, इन्धन, उत्तरीय, उदर, उद्यान, ऋण, कमल, कानन, धन, रत्न, पुष्प, पुस्तक, वस्त्र, गृह, विष, अस्त्र, व्याकरण, व्रत, शस्य—आदि।

२६. अकारान्त 'गृह' (= घर) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	गृहम्	गृहे	गृहाणि
द्वि०	गृहम्	गृहे	गृहाणि
तृ०	गृहेण	गृहाभ्याम्	गृहैः
च०	गृहाय	गृहाभ्याम्	गृहेभ्यः
पं०	गृहात्	गृहाभ्याम्	गृहेभ्यः
ष०	गृहस्य	गृहयोः	गृहाणाम्
स०	गृहे	गृहयोः	गृहेषु
सम्बो०	हे गृह !	हे गृहे !	हे गृहाणि ।

टिप्पणी—'गृह' शब्द के रूप पूर्वोक्त 'फल' शब्द की तरह ही चलते हैं। केवल प्रथमा, द्वितीया के बहुवचन, तृतीया के एकवचन और षष्ठी के बहुवचन में 'अट्कुप्वाङ्नुम् व्यवायेऽपि' सूत्रानुसार 'गृह' के ऋकार के योग से नकार को णकार हो गया है।

२७. इकारान्त 'वारि' (= जल) शब्द—

	एक व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वि०	वारि	वारिणी	वारीणि

तृ०	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
च०	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पं०	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
ष०	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
स०	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बो०	हे वारे !	हे वारिणी !	हे वारीणि !

टिप्पणी—दधि, अस्थि, सक्थि और अक्षि शब्दों को छोड़ कर शेष सभी इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप 'वारि' की ही तरह चलते हैं।

२८. **इकारान्त 'दधि' (=दही) शब्द—**

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वि०	दधि	दधिनी	दधीनि
तृ०	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
च०	दध्ने	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
पं०	दध्नः	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
ष०	दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्
स०	दध्नि	दध्नोः	दधिषु
सम्बो०	हे दधि !	हे दधिनी !	हे दधीनि !

निम्नलिखित शब्दों के रूप 'दधि' की ही तरह चलते हैं—

अक्षि (= आँख), अस्थि (= हड्डी) और सक्थि (= जांघ) आदि।

२९. **उकारान्त 'मधु' (= शहद, मदिरा) शब्द—**

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वि०	मधु	मधुनी	मधूनि
तृ०	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
च०	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पं०	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः

ष०	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
स०	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बो०	हे मधु !	हे मधुनी !	हे मधूनि !

निम्नलिखित शब्दों के रूप भी 'मधु' की तरह चलते हैं—

अश्रु (= आँसू), अम्बु (= पानी), जानु (घुटना), जतु (= लाख), तालु, त्रपु (राँगा), दारु (= लकड़ी), वस्तु (= चीज), वसु (= धन)—आदि।

[हलन्त पुल्लिंग शब्द]

३०. तकारान्त 'भूभृत्' (= राजा) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	भूभृत्–द्	भूभृतौ	भूभृतः
द्वि०	भूभृतम्	भूभृतौ	भूभृतः
तृ०	भूभृता	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भिः
च०	भूभृते	भूभृद्भ्याम्	भूभृदभ्यः
पं०	भूभृतः	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
ष०	भूभृतः	भूभृतोः	भूभृताम्
स०	भूभृति	भूभृतोः	भूभृत्सु
सम्बो०	हे भूभृत्-द् !	हे भूभृतौ !	हे भूभृतः !

३१. तकारान्त 'भगवत्' (= भगवान्) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	भगवान्	भगवन्तौ	भगवन्तः
द्वि०	भगवन्तम्	भगवन्तौ	भगवतः
तृ०	भगवता	भगवद्भ्याम्	भगवद्भिः
च०	भगवते	भगवद्भ्याम्	भगवद्भ्यः
पं०	भगवतः	भगवद्भ्याम्	भगवद्भ्यः
ष०	भगवतः	भगवतोः	भगवताम्
स०	भगवति	भगवतोः	भगवत्सु
सम्बो०	हे भगवान् !	हे भगवन्तौ	हे भगवन्तः !

३२. नकारान्त 'करिन्' (= हाथी) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	करी	करिणौ	करिणः
द्वि०	करिणम्	करिणौ	करिणः
तृ०	करिणा	करिभ्याम्	करिभिः
च०	करिणे	करिभ्याम्	करिभ्यः
पं०	करिणः	करिभ्याम्	करिभ्यः
ष०	करिणः	करिणोः	करिणाम्
स०	करिणि	करिणोः	करिषु
सम्बो०	हे करिन्!	हे करिणौ !	हे करिणः !

३३. नकारान्त 'आत्मन्' (= आत्मा) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वि०	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृ०	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
च०	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पं०	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
ष०	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
स०	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सम्बो०	हे आत्मन् !	हे आत्मानौ !	हे आत्मानः !

३४. नकारान्त 'राजन्' (= राजा) शब्द—

	ए० व०	द्वि व०	ब० व०
प्र०	राजा	राजानौ	राजानः
द्वि०	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृ०	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
च०	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पं०	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
ष०	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्

स०	राज्ञि / राजनि	राज्ञोः	राजसु
सम्बो०	हे राजन् !	हे राजानौ !	हे राजानः !

३५. नकारान्त 'युवन्' (= जवान) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	युवा	युवानौ	युवानः
द्वि०	युवानम्	युवानौ	यूनः
तृ०	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
च०	यूने	युवभ्याम्	युवभ्यः
पं०	यूनः	युवभ्याम्	युवभ्यः
ष०	यूनः	यूनोः	यूनाम्
स०	यूनि	यूनोः	युवसु
सम्बो०	हे युवन् !	हे युवानौ !	हे युवानः !

३६. नकारान्त 'श्वन्' (= कुत्ता) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	श्वा	श्वानौ	श्वानः
द्वि०	श्वानम्	श्वानौ	शुनः
तृ०	शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः
च०	शुने	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
पं०	शुनः	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
ष०	शुनः	शुनोः	शुनाम्
स०	शुनि	शुनोः	श्वसु
सम्बो०	हे श्वन् !	हे श्वानौ !	हे श्वानः !

३७. सकारान्त 'विद्वस्' (= विद्वान्) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वि०	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः

तृ०	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
च०	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पं०	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
ष०	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
स०	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सम्बो०	हे विद्वन् !	विद्वांसौ !	हे विद्वांसः !

३८. सकारान्त 'चन्द्रमस्' (= चन्द्रमा) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
द्वि०	चन्द्रमसम्	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
तृ०	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः
च०	चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
पं०	चन्द्रमसः	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
ष०	चन्द्रमसः	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
स०	चन्द्रमसि	चन्द्रमसोः	चन्द्रमःसु / चन्द्रमस्सु
सम्बो०	हे चन्द्रमः !	हे चन्द्रमसौ !	हे चन्द्रमसः !

३९. हकारान्त 'लिह्' (= चाटने वाला) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	लिट्—ड्	लिहौ	लिहः
द्वि०	लिहम्	लिहौ	लिहः
तृ०	लिहा	लिड्भ्याम्	लिड्भिः
च०	लिहे	लिड्भ्याम्	लिड्भ्यः
पं०	लिहः	लिड्भ्याम्	लिड्भ्यः
ष०	लिहः	लिहोः	लिहाम्
स०	लिहि	लिहोः	लिट्त्सु / लिट्सु
सम्बो०	हे लिट् !	हे लिहौ !	हे लिहः !

४०. नकारान्त 'ब्रह्मन्' (= ब्रह्मा) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	ब्रह्मा	ब्रह्माणौ	ब्रह्माणः
द्वि०	ब्रह्माणम्	ब्रह्माणौ	ब्रह्मणः
तृ०	ब्रह्मणा	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभिः
च०	ब्रह्मणे	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभ्यः
पं०	ब्रह्मणः	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभ्यः
ष०	ब्रह्मणः	ब्रह्मणोः	ब्रह्मणाम्
स०	ब्रह्मणि	ब्रह्मणोः	ब्रह्मसु
सम्बो०	हे ब्रह्मन् !	हे ब्रह्माणौ !	हे ब्रह्माणः !

४१. नकारान्त 'वृत्रहन्' (= इन्द्र) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	वृत्रहा	वृत्रहणौ	वृत्रघ्नः
द्वि०	वृत्रहणम्	वृत्रहणौ	वृत्रहनः
तृ०	वृत्रहघ्ना	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभिः
च०	वृत्रघ्ने	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभ्यः
पं०	वृत्रघ्नः	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभ्यः
ष०	वृत्रघ्नः	वृत्रघ्नोः	वृत्रघ्नाम्
स०	वृत्रघ्नि, वृत्तहणि	वृत्रघ्नोः	वृत्रहसु
सम्बो०	हे वृत्रहन् !	हे वृत्रहणौ !	हे वृत्रहणः

४२. नकारान्त 'मघवन्' (= इन्द्र) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	मघवा	मघवानौ	मघवानः
द्वि०	वघवानम्	मघवानौ	मघोनः
तृ०	मघोना	मघवहभ्याम्	मघवभिः
च०	मघोने	मघवभ्याम्	मघवभ्यः
पं०	मघोनः	मघवभ्याम्	मघवभ्यः

ष०	मघोनः	मघोनोः	मघोनाम्
स०	मघोनि	मघोनोः	मघवसु
सम्बो०	हे मघवन् !	हे मघवानौ !	हे मघवानः !

४३. नकारान्त 'पथिन्' (=मार्ग) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः
द्वि०	पन्थानम्	पन्थानौ	पथः
तृ०	पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः
च०	पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
पं०	पथः	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
ष०	पथः	पथोः	पथाम्
स०	पथि	पथोः	पथिषु
सम्बो०	हे पथिन् !	हे पन्थानौ	हे पन्थानः !

४४. जकारान्त 'ऋत्विज्' (=हवन करने वाला) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	ऋत्विक्-ग्	ऋत्विजौ	ऋत्विजः
द्वि०	ऋत्विजम्	ऋत्विजौ	ऋत्विजः
तृ०	ऋत्विजा	ऋत्विग्भ्याम्	ऋत्विग्भिः
च०	ऋत्विजे	ऋत्विग्भ्याम्	ऋत्विग्भ्यः
पं०	ऋत्विजः	ऋत्विग्भ्याम्	ऋत्विग्भ्यः
ष०	ऋत्विजः	ऋत्विजोः	ऋत्विजाम्
स०	ऋत्विजि	ऋत्विजोः	ऋत्विक्षु
सम्बो०	हे ऋत्विक्-ग् !	हे ऋत्विजौ !	हे ऋत्विजः !

४५. तकारान्त 'भवत्' (=आप) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
द्वि०	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः

तृ०	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
च०	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
पं०	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
ष०	भवतः	भवतोः	भवताम्
स०	भवति	भवतोः	भवत्सु
सम्बो०	हे भवन् !	हे भवन्तौ !	हे भवन्तः !

४६. सकारान्त 'पिपठिस्' (= पढ़ने का इच्छुक) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	पिपठीः	पिपठिषौ	पिपठिषः
द्वि०	पिपठिषम्	पिपठिषौ	पिपठिषः
तृ०	पिपठिषा	पिपठीर्भ्याम्	पिपठीर्भिः
च०	पिपठिषे	पिपठीर्भ्याम्	पिपठीर्भ्यः
पं०	पिपठिषः	पिपठीर्भ्याम्	पिपठीर्भ्यः
ष०	पिपठिषः	पिपठिषोः	पिपठिषाम्
स०	पिपठिषि	पिपठिषोः	पिपठीःषु / पिपठीष्षु
सम्बो०	हे पिपठीः !	हे पिपठिषौ !	हे पिपठिषः !

[हलन्त स्त्रीलिंग शब्द]

४७. चकारान्त 'वाच्' (वाणी) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	वाक्	वाचौ	वाचः
द्वि०	वाचम्	वाचौ	वाचः
तृ०	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
च०	वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
पं०	वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
ष०	वाचः	वाचोः	वाचाम्
स०	वाचि	वाचोः	वाक्षु
सम्बो०	हे वाक् !	हे वाचौ !	हे वाचः !

४८. तकारान्त 'सरित्' (= नदी) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	सरित्	सरितौ	सरितः
द्वि०	सरितम्	सरितौ	सरितः
तृ०	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
च०	सरिते	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
पं०	सरितः	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
ष०	सरितः	सरितोः	सरिताम्
स०	सरिति	सरितोः	सरित्सु
सम्बो०	हे सरित् !	हे सरितौ !	हे सरितः !

४९. पकारान्त 'अप्' (= जल) शब्द—

	ब० व०
प्र०	आपः
द्वि०	अपः
तृ०	अद्भिः
च०	अद्भ्यः
पं०	अद्भ्यः
ष०	अपाम्
स०	अप्सु
सम्बो०	हे आपः !

टिप्पणी—'अप्' शब्द नित्य बहुवचनात्मक है। इसलिये उसके रूप केवल बहुवचन में चलते हैं।

(हलन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द]

५०. तकारान्त 'जगत्' (= संसार) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	जगत्	जगती	जगन्ति
द्वि०	जगत्	जगती	जगन्ति

तृ०	जगता	जगद्भ्याम्	जगद्भिः
च०	जगते	जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः
पं०	जगतः	जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः
ष०	जगतः	जगतोः	जगताम्
स०	जगति	जगतोः	जगत्सु
सम्बो०	हे जगत् !	हे जगती !	हे जगन्ति !

५१. नकारान्त 'नामन्' (= नाम) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	नाम	नामनी	नामानि
द्वि०	नाम	नामनी	नामानि
तृ०	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः
च०	नाम्ने	नामभ्याम्	नामभ्यः
पं०	नाम्नः	नामभ्याम्	नामभ्यः
ष०	नाम्नः	नाम्नोः	नाम्नाम्
स०	नामनि	नाम्नोः	नामसु
सम्बो०	हे नाम !	हे नामनी !	हे नामानि !

५२. नकारान्त 'शर्मन्' (= आनन्द, कल्याण) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	शर्म	शर्मणी	शर्माणि
द्वि०	शर्म	शर्मणी	शर्माणि
तृ०	शर्मणा	शर्मभ्याम्	शर्मभिः
च०	शर्मणे	शर्मभ्याम्	शर्मभ्यः
पं०	शर्मणः	शर्मभ्याम्	शर्मभ्यः
ष०	शर्मणः	शर्मणोः	शर्मणाम्
स०	शर्मणि	शर्मणोः	शर्मसु
सम्बो०	हे शर्म !	हे शर्मणी !	हे शर्माणि !

५३. नकारान्त 'ब्रह्मन्' (= परमात्मा) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	ब्रह्म	ब्रह्मणी	ब्रह्माणि
द्वि०	ब्रह्म	ब्रह्मणी	ब्रह्माणि
तृ०	ब्रह्मणा	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभिः
च०	ब्रह्मणे	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभ्यः
पं०	ब्रह्मणः	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभ्यः
ष०	ब्रह्मणः	ब्रह्मणोः	ब्रह्मणाम्
स०	ब्रह्मणि	ब्रह्मणोः	ब्रह्मसु
सम्बो०	हे ब्रह्म !	हे ब्रह्मणी !	हे ब्रह्माणि !

५४. सकारान्त 'पयस्' (= पानी, दूध) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	पयः	पयसी	पयांसि
द्वि०	पयः	पयसी	पयांसि
तृ०	पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः
च०	पयसे	पयोभ्याम्	पयोभ्यः
पं०	पयसः	पयोभ्याम्	पयोभ्यः
ष०	पयसः	पयसोः	पयसाम्
स०	पयसि	पयसोः	पयस्सु
सम्बो०	हे पयः !	हे पयसी !	हे पयांसि !

५५. सकारान्त 'मनस्' (= मन) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	मनः	मनसी	मनांसि
द्वि०	मनः	मनसी	मनांसि
तृ०	मनसा	मनोभ्याम्	मनोभिः
च०	मनसे	मनोभ्याम्	मनोभ्यः
पं०	मनसः	मनोभ्याम्	मनोभ्यः

ष०	मनसः	मनसोः	मनसाम्
स०	मनसि	मनसोः	मनस्सु
सम्बो०	हे मनः !	हे मनसी !	हे मनांसि !

५६. षकारान्त 'धनुष्' (= धनुष) शब्द—

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	धनुः	धनुषी	धनूंषि
द्वि०	धनुः	धनुषी	धनूंषि
तृ०	धनुषा	धनुर्भ्याम्	धनुर्भिः
च०	धनुषे	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्यः
पं०	धनुषः	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्यः
ष०	धनुषः	धनुषोः	धनुषाम्
स०	धनुषि	धनुषोः	धनुष्षु
सम्बो०	हे० धनुः !	हे धनुषी !	हे धनूंषि !



तृतीय अध्यायः

सर्वनाम-प्रकरण

हिन्दी में सर्वनाम उन शब्दों को मानते हैं जो कि किसी संज्ञा के स्थान पर आते हैं। किन्तु संस्कृत में 'सर्वनाम' शब्द से सर्व आदि ३५ शब्दों का बोध होता है। वे शब्द इस प्रकार हैं—

(१) सर्व, (२) विश्व, (३) उभ, (४) उभय, (५) इतर (अर्थात् इतर जोड़ कर बनाये गये शब्द यथा कतर, इतर आदि), (६) इतम (अर्थात् इतम जोड़ कर बनाये गये कतम, यतम आदि शब्द), (७) अन्य, (८) अन्यतर, (९) इतर, (१०) त्वत्, (११) त्व, (१२) नेम, (१३) सम, (१४) सिम, (१५) पूर्व, (१६) पर, (१७) अवर, (१८) दक्षिण, (१९) उत्तर, (२०) अपर, (२१) अधर, (२२) स्व, (२३) अन्तर, (२४) त्यद्, (२५) तद्, (२६) यद्, (२७) एतद्, (२८) इदम्, (२९) अदस्, (३०) एक, (३१) द्वि, (३२) युष्मद्, (३३) अस्मद्, (३४) भवत्, (३५) किम्।

इनमें से कुछ तो उस अर्थ के सर्वनाम हैं जिस अर्थ में हिन्दी में सर्वनाम शब्द आता है, कुछ विशेषण शब्द हैं और कुछ संख्यावाची।

इस अध्याय में केवल उन्हीं शब्दों पर विचार करना है जो कि किसी संज्ञा की जगह आते हैं। ऐसे शब्दों को तीन कोटियों में बाँट देते हैं—

१. उत्तम पुरुष के सर्वनाम
२. मध्यम पुरुष के सर्वनाम
३. अन्य पुरुष के सर्वनाम

उत्तम पुरुष—उत्तम पुरुष वाची शब्द 'अस्मद्' है। इसके रूप लिंग के अनुसार नहीं बदलते। वक्ता चाहे पुरुष हो या स्त्री—अहं, आवां या वयम् आदि का ही प्रयोग करेगा।

'अस्मद्' के रूप द्वितीया में—'मा नौ नः' चतुर्थी में—'मे नौ नः' और षष्ठी विभक्ति में—'मे नौ नः' भी विकल्प से होते हैं। किन्तु इनका प्रयोग हर जगह नहीं किया जाता। निम्नस्थ स्थितियों में इनका प्रयोग वर्जित है—

१. वाक्य के आरम्भ में
२. पद्य के किसी चरण में
३. च, वा, ह, हा, अह, एव—इन अव्ययों के ठीक पहले
४. किसी सम्बोधन शब्द के ठीक बाद।

मध्यम पुरुष—मध्यम पुरुष वाची 'युष्मद्' के रूप भी लिंग के अनुसार नहीं बदलते। इसके रूप भी द्वितीया में—'त्वा वां वः' चतुर्थी में—'ते वां वः, और षष्ठी में—'ते वां वः' विकल्प से होते हैं। इसके प्रयोग में भी वही नियम है, जो अस्मद् के वैकल्पिक रूपों के साथ है।

मध्यम पुरुष वाची शब्द 'भवत् (= आप) भी है। पुल्लिंग में इसके रूप 'भवान् भवन्तौ भवन्तः' आदि 'भगवत्' के समान; स्त्रीलिंग में 'भवती भवत्यौ भवत्यः ! आदि 'नदी' के समान और नपुंसकलिंग में 'भवत् भवती भवन्ति' आदि जगत् शब्द के समान चलते हैं।

'भवत्' शब्द की विशेषता यह है कि यह मध्यम पुरुष का होकर भी अन्य पुरुष की क्रियायें लेता है। यथा—

भवान् गच्छति = आप जाते हैं।
भवन्तौ गच्छतः = आप दोनों जाते हैं।
भवन्तः गच्छन्ति = आप सब जाते हैं।

'भवत्' शब्द के पूर्व कभी-कभी 'अत्र' और 'तत्र' जोड़ कर 'अत्रभवत्' और 'तत्रभवत्' रूप बना लेते हैं। इनके रूप भी पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग में 'भवत्' के समान ही चलेंगे। इन दोनों में अन्तर केवल इतना ही है कि 'अत्रभवत्' का प्रयोग निकटवर्ती किसी मान्य पुरुष के लिये और 'तत्रभवत्' का प्रयोग दूरवर्ती किसी मान्य व्यक्ति के लिये किया जाता है। यथा—

१. अत्रभवान् आचार्यः अस्मान् आज्ञापयति।
२. तत्रभवान् भवभूतिः महान् कविरासीत्।

अन्य पुरुष—

१. इदम्, एतद्, अदस्, तद्—'**इदम्**' शब्द के रूपों का प्रयोग तब करना चाहिए जब किसी निकटस्थ वस्तु का बोध कराना हो। यदि उससे भी निकट की किसी वस्तु का बोध कराना हो तो '**एतद्**' शब्द के रूपों का प्रयोग करना चाहिये। यदि दूरस्थ वस्तु का बोध कराना हो तो 'अदस्' शब्द के रूपों का प्रयोग करना चाहिये। 'तद्' शब्द के रूपों का प्रयोग परोक्ष वस्तुओं के लिये करना चाहिये। इन चारों शब्दों के रूप तीनों लिंगों में अलग-अलग होते हैं।

२. सम्बन्ध सूचक 'जो' शब्द के लिये संस्कृत में 'यद्' शब्द है। इसके रूप भी तीनों लिंगों में भिन्न-भिन्न होते हैं। इसके साथ के 'सो' शब्द के लिये 'अदस्' अथवा 'तद्' शब्द के रूप आवश्यकता के अनुसार प्रयोग में आते हैं। यथा—

ये परीक्षायां उत्तीर्णाः **ते** पारितोषिकं लप्स्यन्ते **यद्यद्** अग्नौ पतितं **तत्तद्** भस्मी भूतम्।

३. प्रश्नवाची सर्वनाम 'कौन' और 'क्या' के लिये 'किम्' शब्द है। इसके रूप भी तीनों लिंगों में अलग-अलग हैं। यथा—कः, का, किम् आदि।

'किम्' शब्द के रूपों के साथ ही यदि 'अपि' 'चित्' अथवा 'चन' जोड़ देने से हिन्दी के 'किसी' 'कोई' 'कुछ' आदि अनिश्चय वाचक सर्वनामों का बोध होता है। यथा—

कोऽपि आगतोऽस्ति = कोई आया है।

काचन आगताऽस्ति = कोई आई है।

किञ्चिदस्ति = कुछ है।

४. निजवाचक 'आत्मन्' और 'स्व' शब्द हैं। '**आत्मन्**' शब्द के रूप सर्वनाम के अर्थ में केवल पुल्लिंग एक वचन में ही चलते हैं और उसी से सभी लिंगों और सभी वचनों का निजवाचकता का अर्थ निकल आता है। यथा—

सः **आत्मानं** प्रशंसितवान्।

सा **आत्मानं** निन्दितवती।

सः सा वा **आत्मनि** कमपि दोषं नाद्राक्षीत् ।

तत् शरीरं **आत्मनैव** विनष्टम् । —आदि ।

'स्व' शब्द के रूप सर्वनाम के अर्थ में 'सर्व' शब्द की तरह तीनों लिंगों में चलते हैं ।

५. परस्परवाची सर्वनाम तीन हैं— परस्पर, अन्योन्य और इतरेतर । इनके रूप 'बालक' के समान और केवल एक वचन में चलते हैं । यथा—

परस्परः कलहं कृतवान् ।

अन्योन्येन मिलितम् ।

इतरेतरस्य भाग्यं प्रशंसितवान् ।

सर्वनाम शब्दों की रूप-साधनिका

सर्व (= सब) पुल्लिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वि०	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृ०	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
च०	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पं०	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
ष०	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
स०	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

सर्व (= सब) स्त्रीलिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वि०	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृ०	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
च०	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पं०	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
ष०	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
स०	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

सर्व (= सब) नपुंसक लिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वि०	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

शेष विभक्तियों में 'सर्व' पुल्लिग शब्द के समान रूप चलते हैं।

पूर्व (= पहले का) पुल्लिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	पूर्वः	पूर्वौ	पूर्वे, पूर्वाः
द्वि०	पूर्वम्	पूर्वौ	पूर्वान्
तृ०	पूर्वेण	पूर्वाभ्याम्	पूर्वैः
च०	पूर्वस्मै, पूर्वाय	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेभ्यः
पं०	पूर्वस्मात्, पूर्वात्	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेभ्यः
ष०	पूर्वस्य	पूर्वयोः	पूर्वेषाम्
स०	पूर्वस्मिन्, पूर्वे	पूर्वयोः	पूर्वेषु

पूर्व (= पहले की) स्त्रीलिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	पूर्वा	पूर्वे	पूर्वाः
द्वि०	पूर्वाम्	पूर्वे	पूर्वाः
तृ०	पूर्वया	पूर्वाभ्याम्	पूर्वाभिः
च०	पूर्वस्यै, पूर्वायै	पूर्वाभ्याम्	पूर्वाभ्यः
पं०	पूर्वस्याः, पूर्वायाः	पूर्वाभ्याम्	पूर्वाभ्यः
ष०	पूर्वस्याः	पूर्वयोः	पूर्वासाम्
स०	पूर्वस्याम्, पूर्वायाम्	पूर्वयोः	पूर्वासु

पूर्व (= पहले की) नपुंसकलिङ्ग

	ए० व०	द्वि व०	ब० व०
प्र०	पूर्वम्	पूर्वे	पूर्वाणि
द्वि०	पूर्वम्	पूर्वे	पूर्वाणि

शेष विभक्तियों में रूप 'पूर्व' पुल्लिंग शब्द की तरह चलेंगे।

तद् (= वह) पुल्लिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	सः	तौ	ते
द्वि०	तम्	तौ	तान्
तृ०	तेन	ताभ्याम्	तैः
च०	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पं०	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
ष०	तस्य	तयोः	तेषाम्
स०	तस्मिन्	तयोः	तेषु

तद् (= वह) स्त्रीलिङ्ग

	ए० व०	द्वि व०	ब० व०
प्र०	सा	ते	ताः
द्वि०	ताम्	ते	ताः
तृ०	तया	ताभ्याम्	ताभिः
च०	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पं०	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
ष०	तस्याः	तयोः	तासाम्
स०	तस्याम्	तयोः	तासु

तद् (= वह) नपुंसकलिङ्ग

	ए० व०	द्वि व०	ब० व०
प्र०	तत्-द्	ते	तानि
द्वि०	तत्-द्	ते	तानि

शेष विभक्तियों में इसके रूप 'तद्' पुल्लिंग की तरह चलेंगे।

यद् (= जो) पुल्लिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	यः	यौ	ये
द्वि०	यम्	यौ	यान्
तृ०	येन	याभ्याम्	यैः
च०	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पं०	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
ष०	यस्य	ययोः	येषाम्
स०	यस्मिन्	ययोः	येषु

यद् (= जो) स्त्रीलिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	या	ये	याः
द्वि०	याम्	ये	याः
तृ०	यया	याभ्याम्	याभिः
च०	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पं०	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
ष०	यस्याः	ययोः	यासाम्
स०	यस्याम्	ययोः	यासु

यद् (= जो) नपुंसकलिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	यत्-द्	ये	यानि
द्वि०	यत्-द्	ये	यानि

शेष विभक्तियों में इसके रूप 'यद्' पुल्लिंग शब्द की तरह चलेंगे।

किम् (= कौन) पुल्लिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	कः	कौ	के
द्वि०	कम्	कौ	कान्

तृ०	केन	काभ्याम्	कैः
च०	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पं०	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
ष०	कस्य	कयोः	केषाम्
स०	कस्मिन्	कयोः	केषु

किम् (=कौन) स्त्रीलिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	का	के	काः
द्वि०	काम्	के	काः
तृ०	कया	काभ्याम्	काभिः
च०	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पं०	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
ष०	कस्याः	कयोः	कासाम्
स०	कस्याम्	कयोः	कासु

किम् (=कौन) नपुंसकलिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	किम्	के	कानि
द्वि०	किम्	के	कानि

शेष विभक्तियों में इसके रूप 'किम्' पुल्लिग की तरह चलते हैं।

इदम् (=यह) पुल्लिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	अयम्	इमौ	इमे
द्वि०	इमम्, एनम्	इमौ, एनौ	इमान्, एनान्
तृ०	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः
च०	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पं०	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
ष०	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्
स०	अस्मिन्	अनयोः, एनयोः	एषु

इदम् (= यह) स्त्रीलिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	इयम्	इमे	इमाः
द्वि०	इमाम्, एनाम्	इमे, एने	इमाः, एनाः
तृ०	अनया, एनया	आभ्याम्	आभिः
च०	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पं०	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
ष०	अस्याः	अनयोः, एनयोः	आसाम्
स०	अस्याम्	अनयोः, एनयोः	आसु

इदम् (= यह) नपुंसकलिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	इदम्	इमे	इमानि
द्वि०	इदम्	इमे	इमानि

शेष विभक्तियों में इसके रूप 'इदम्' पुल्लिंग शब्द की तरह चलते हैं।

अस्मद् (= मैं)

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वि०	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृ०	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
च०	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पं०	मत्-द्	आवाभ्याम्	अस्मत्

ष०	मम / मे	आवयोः / नौ	अस्माकम् / नः
स०	मयि	आवयोः	अस्मासु

'अस्मद्' शब्द के रूप तीनों लिङ्गों में एक समान चलते हैं।

युष्मद् (= तुम)

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वि०	त्वाम् / त्वा	युवाम् / वाम्	युष्मान् / वः
तृ०	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
च०	तुभ्यम् / ते	युवाभ्याम् / वाम्	युष्मभ्यम् / वः
पं०	त्वत्–द्	युवाभ्याम्	युष्मत्
ष०	तव / ते	युवयोः / वाम्	युष्माकम् / वः
स०	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

'युष्मद्' शब्द के रूप भी तीनों लिङ्गों में एक समान चलते हैं।

भवत् (= आप) पुल्लिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
द्वि०	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः
तृ०	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
च०	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
पं०	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
ष०	भवतः	भवतोः	भवताम्
स०	भवति	भवतोः	भवत्सु

इसके रूप 'भगवत्' पुल्लिङ्ग के समान चलते हैं।

भवत् (= आप) स्त्रीलिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	भवती	भवत्यौ	भवत्यः
द्वि०	भवतीम्	भवत्यौ	भवतीः
तृ०	भवत्या	भवतीभ्याम्	भवतीभिः
च०	भवत्यै	भवतीभ्याम्	भवतीभ्यः
पं०	भवत्याः	भवतीभ्याम्	भवतीभ्यः
ष०	भवत्याः	भवत्योः	भवतीनाम्
स०	भवत्याम्	भवत्योः	भवतीषु

इसके रूप 'नदी' स्त्रीलिंग शब्द की तरह चलते हैं।

भवत् (= आप) नपुंसकलिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	भवत्–द्	भवती	भवन्ति
द्वि०	भवत्–द्	भवती	भवन्ति

शेष विभक्तियों में इसके रूप 'भवत्' पुंल्लिग की तरह चलते हैं। वैसे इसके सम्पूर्ण रूप 'जगत्' नपुंसकलिंग शब्द के समान होते हैं।

अदस् (= यह, वह) पुल्लिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	असौ	अमू	अमी
द्वि०	अमुम्	अमू	अमून्
तृ०	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
च०	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पं०	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
ष०	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
स०	अमुस्मिन्	अमुयोः	अमीषु

अदस् (= यह, वह) स्त्रीलिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	असौ	अमू	अमूः
द्वि०	अमूम्	अमू	अमूः
तृ०	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
च०	अमुस्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
पं०	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
ष०	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषान्
स०	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

अदस् (= यह, वह) नपुंसकलिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	अदः	अमू	अमूनि
द्वि०	अदः	अमू	अमूनि

शेष विभक्तियों में इसके रूप 'अदस्' पुल्लिग शब्द की तरह चलते हैं।

एतद् (= यह) पुलिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	एषः	एतौ	एते
द्वि०	एतम्, एनम्	एतौ, एनौ	एतान्, एनान्
तृ०	एतेन, एनेन	एताभ्याम्	एतैः
च०	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पं०	एतस्मात्–द्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
ष०	एतस्य	एतयोः, एनयोः	एतेषाम्
स०	एतस्मिन्	एतयोः, एनयोः	एतेषु

एतद् (= यह) स्त्रीलिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	एषा	एते	एताः
द्वि०	एताम्, एनाम्	एते, एने	एताः
तृ०	एतया, एनया	एताभ्याम्	एताभिः
च०	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पं०	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
ष०	एतस्याः	एतयोः, एनयोः	एतासाम्
स०	एतस्याम्	एतयोः, एनयोः	एतासु

एतद् (= यह) नपुंसकलिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	एतत्–द्	एते	एतानि
द्वि०	एतत्–द्, एनत्–द्	एते, एने	एतानि, एनानि

शेष विभक्तियों में इसके रूप 'एतद्' पुल्लिग शब्द के समान चलते हैं।

'उभ' (= दोनों) शब्द

[नित्य द्विवचनान्त]

	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्र०	उभौ	उभे	उभे
द्वि०	उभौ	उभे	उभे
तृ०	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
च०	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
पं०	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
ष०	उभयोः	उभयोः	उभयोः
स०	उभयोः	उभयोः	उभयोः

उभय (= दोनों) शब्द

[इसमें केवल द्विवचन नहीं होता]

पुल्लिङ्ग

	ए० व०	ब० व०
प्र०	उभयः	उभये
द्वि०	उभयम्	उभयान्
तृ०	उभयेन	उभयैः
च०	उभयस्मै	उभयेभ्यः
पं०	उभयस्मात्	उभयेभ्यः
ष०	उभयस्य	उभयेषाम्
स०	उभयस्मिन्	उभयेषु

स्त्रीलिङ्ग

	ए० व०	ब० व०
प्र०	उभया	उभयाः
द्वि०	उभयाम्	उभयाः
तृ०	उभयया	उभयाभिः
च०	उभयस्यै	उभयाभ्यः
पं०	उभयस्याः	उभयाभ्यः
ष०	उभयस्याः	उभयासाम्
स०	उभयस्याम्	उभयासु

नपुंसकलिङ्ग

	ए० व०	ब० व०
प्र०	उभयम्	उभयानि
द्वि०	उभयम्	उभयानि

शेष विभक्तियों में पुल्लिङ्ग के समान।

चतुर्थ अध्यायः

विशेषण-प्रकरण

हिन्दी में **विशेष्य और विशेषण** के पारस्परिक सम्बन्ध के विषय में कोई निश्चित विधान नहीं है। यथा—अच्छा आदमी, अच्छे आदमी, अच्छी लड़की आदि में 'विशेषण' की योजना 'विशेष्य' के अनुसार ही की गई है। किन्तु—'लाल घोड़ा, लाल घोड़ी, लाल कपड़े' आदि में ऐसा नहीं है।

संस्कृत में यह नियम है कि 'विशेषण' शब्द 'विशेष्य' के अनुसार ही रक्खे जाते हैं। अर्थात्—जिस लिंग, जिस वचन और जिस विभक्ति का 'विशेष्य' हो, उसी लिंग, उसी वचन और उसी विभक्ति का विशेषण भी होना चाहिये। यथा—

पक्वं फलम् = पका फल।
पक्वानि फलानि = पके फल।
हरिता शाटी = हरी साड़ी।
हरितं धौतम् = हरी धोती।

धर्मशीलेन रामेण हतो बालिः = धर्मशील राम के द्वारा बालि मारा गया।

इतना ही नहीं, ऐसे 'विशेष्यों' के साथ भी 'विशेषण' बदलता है जो लिंग के लिये भिन्न रूप नहीं रखते, किन्तु जिनका प्रकरण आदि से लिंग अवगत हो जाता है। यथा—'मैं सुन्दर हूँ' की संस्कृत यदि लड़का बोलेगा तो 'अहं सुन्दरोऽस्मि' और यदि लड़की बोलेगी तो 'अहं सुन्दरी अस्मि' होगा।

विशेषण—

१. सार्वनामिक विशेषण—इदम्, एतद्, तद्; अदस्, यद्, किम् तथा विविध निश्चय और अनिश्चयवाची सर्वनामों का प्रयोग विशेषण के रूप में भी होता है। यथा—अयं वानरः। इयं कन्या। इदं फलम्।

(१) **एषः** नकुलः। **एषा** वानरी। **एतत्** गृहम्।
(२) **सः** नरः। **सा** नारी। **तत्** जलम्।
(३) **असौ** नृपः। **अमूः** कन्यकाः। **अमूनि** पुष्पाणि।
(४) **यो** भूपतिः। **या** देवी। **यत्** मित्रम्।
(५) **कौ** बालकौ। **काः** स्त्रियः। **कानि** पत्राणि।
(६) **कोऽपि** देवः। **काऽपि** बाला। **किमपि** फलम्।
(७) **स एव** विद्वान्। **सा एव** विदुषी। **तदेव** गृहम्।

२. उसका, हमारा, किसी का आदि सम्बन्ध सूचक भाव दिखाने के के लिये—(i) तद्, अस्मद्, किम् आदि के षष्ठी विभक्ति के रूपों का प्रयोग किया जाता है। यथा—तस्य, मम, कस्य आदि। या फिर (ii) इसी शब्दों में छ, अण् और खञ् प्रत्यय जोड़ कर नये विशेषण बना कर प्रयोग में लाना। यथा—

अस्मद् शब्द से—

अस्मद् + छ = मदीयः (पु०), मदीया (स्त्री०), मदीयम् (नपुं०)।
अस्मद् + अण् = मामकः (पु०), मामिका (स्त्री०), मामकम् (नपुं०)।
अस्मद् + खञ् = मामकीनः (पु०), मामकीना (स्त्री०), मामकीनम् (नपुं०)।

युष्मद् शब्द से—

युष्मद् + छ = त्वदीयः, त्वदीया, त्वदीयम्।
,, + अण् = तावकः, तावकी, तावकम्।
,, + खञ् = तावकीनः, तावकीना, तावकीनम्।

तद् शब्द से—

तद् + छ = तदीयः, तदीया, तदीयम्।

एतद् शब्द से—

एतद् + छ = एतदीयः, एतदीया, एतदीयम्।

यद् शब्द से—

यद् + छ = यदीयः, यदीया, यदीयम्।

उक्त विशेषण शब्दों के लिंग वचन और विभक्ति भी अन्य विशेषणों की भाँति ही विशेष्य के अनुसार होते हैं।

३. वैसा, जैसा, ऐसा आदि अर्थ सूचित करने के लिये अस्मद्, युष्मद् आदि शब्दों में क्विन् और कञ् प्रत्यय जोड़ कर नये विशेषण बना लेते हैं। यथा—

अस्मद् + क्विन् अथवा कञ् = मादृशः (=मेरे जैसा, मुझ-सा), मादृशी (=मेरे जैसी), मादृशम् (=मेरे जैसा)।

युष्मद् + क्विन् या कञ् = त्वादृशः, त्वादृशी, त्वादृशम्।

तद् + क्विन् या कञ् = तादृशः, तादृशी, तादृशम्।

इदम् + क्विन् या कञ् = ईदृशः, ईदृशी, ईदृशम्।

एतद् से—एतादृशः, एतादृशी, एतादृशम्।

यद् से—यादृशः, यादृशी, यादृशम्।

किम् से—कीदृशः, कीदृशी, कीदृशम्।

भवत् से—भवादृशः, भवादृशी, भवादृशम्।

४. परिमाण सूचक 'इतना, कितना' आदि का अर्थ दिखाने के लिये 'इदम्' आदि से विशेषण बन जाते हैं। यथा—

इदम् से—इयत् (इतना), इयती (इतनी)।

तद् से—तावती (उतनी), तावत् (उतना)।

यद् से—यावत् (जितना), यावती (जितनी)।

एतद् से—एतावत् (इतना), एतावती (इतनी)।

किम् से—कियत् (कितना), कियती (कितनी)।

नोट—परिमाण के अर्थ में इन शब्दों का प्रयोग केवल एकवचन में ही हो सकता है।

५. संख्या सूचक 'इतने', 'कितने' आदि अर्थ दिखाने के लिये दो उपाय हैं—

(i) ऊपर (नं० ४) के शब्दों को बहुवचन में प्रयोग करना। यथा—

कियन्तः पुरुषाः, कियत्यः स्त्रियः ? = कितने आदमी, कितनी औरतें?

यावन्तः पुरुषाः, तावत्यः स्त्रियः = जितने आदमी उतनी ही औरतें।

(ii) किं, यद् , तद् आदि से बने हुये शब्दों का प्रयोग—
किम् से—कति (कितने)।
यद् से— यति (जितने)।
तद् से— तति (उतने)।

ये शब्द सब लिंगों में प्रयुक्त होते हैं और नित्य बहुवचनान्त हैं। इनके रूप केवल बहुवचन में ही चलते हैं।

६. सर्व (सब) शब्द के रूप भी तीनों लिंगों में अलग-अलग होते हैं। 'सर्व' शब्द के एकवचन के रूप परिमाणवाची होते हैं, द्विवचन के रूपों का प्रयोग प्रायः नहीं के बराबर है, बहुवचन का प्रयोग संख्यावाची है।

७. परिमाणवाची अल्प (थोड़ा), अर्ध (आधा), नेम (आधा), सम (बराबर) शब्द तीनों लिंगों में अलग-अलग रूप रखते हैं। अल्प, अर्ध और नेम के पुल्लिग में प्रथमा के बहुवचन में दो रूप होते हैं—अल्पे अल्पाः, अर्धे अर्धाः; नेमे नेमाः।

८. पूरक संख्यावाची 'प्रथम' और 'चरम' शब्दों के रूप भी तीनों लिंगों में अलग-अलग चलते हैं। इनके भी पुल्लिग के प्रथमा बहुवचन के दो रूप मिलते हैं—प्रथमे प्रथमाः, चरमे चरमाः।

९. 'तीय' प्रत्ययान्त 'द्वितीय' और 'तृतीय' शब्दों के रूप 'सर्व' शब्द के समान ही होते हैं। चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी और सप्तमी के एकवचन में संज्ञा शब्दों (बालक, विद्या, फल) के समान रूप भी विकल्प से होते हैं। यथा—(i) द्वितीयाय, द्वितीयात् , द्वितीयस्य, द्वितीये। (ii) द्वितीयायै, द्वितीयायाः, द्वितीयायाः, द्वितीयायाम्।

१०. उभ (दोनों) शब्द के रूप भी तीनों लिंगों में अलग-अलग होते हैं। किन्तु केवल द्विवचन में।

नोट—यदि 'उभ' (उभय) शब्द के रूप एकवचन में चलाये जायें तो वे "दो के जोड़े" का बोध कराते हैं और यदि इसका बहुवचन में प्रयोग किया जाय तो दो-दो के बहुत से जोड़ों का परिज्ञान होगा।

११. पूर्व (पहला, पूर्वी), अवर (बाद वाला, पश्चिमी); दक्षिण (दक्षिणी), उत्तर (उत्तरी), पर (दूसरा), अपर (दूसरा), अधर (नीचे वाला)—इन शब्दों के रूप एक समान चलते हैं और तीनों लिंगों में होते हैं।

संख्यायें

१. एकः, एका, एकम्
२. द्वि, द्वे, द्वे
३. त्रयः, तिस्रः, त्रीणि
४. चत्वारः, चतस्रः, चत्वारि
५. पञ्च
६. षट्
७. सप्त
८. अष्ट
९. नव
१०. दश
११. एकादश
१२. द्वादश
१३. त्रयोदश
१४. चतुर्दश
१५. पञ्चदश
१६. षोडश
१७. सप्तदश
१८. अष्टादश
१९. नवदश / एकोनविंशतिः
२०. विंशतिः
२१. एकविंशतिः
२२. द्वाविंशतिः
२३. त्रयोविंशतिः
२४. चतुर्विंशतिः
२५. पञ्चविंशतिः
२६. षड्विंशतिः
२७. सप्तविंशतिः
२८. अष्टाविंशतिः
२९. नवविंशतिः / एकोनत्रिंशत्
३०. त्रिंशत्
३१. एकत्रिंशत्
३२. द्वात्रिंशत्
३३. त्रयस्त्रिंशत्
३४. चतुस्त्रिंशत्
३५. पञ्चत्रिंशत्
३६. षट्त्रिंशत्
३७. सप्तत्रिंशत्
३८. अष्टात्रिंशत्
३९. नवत्रिंशत् / एकोनचत्वारिंशत्
४०. चत्वारिंशत्
४१. एकचत्वारिंशत्
४२. द्वाचत्वारिंशत् / द्विचत्वारिंशत्

४३. त्रयश्चत्वारिंशत्
    त्रिचत्वारिंशत्
४४. चतुश्चत्वारिंशत्
४५. पञ्चचत्वारिंशत्
४६. षट्चत्वारिंशत्
४७. सप्तचत्वारिंशत्
४८. अष्टाचत्वारिंशत्
    अष्टचत्वारिंशत्
४९. नवचत्वारिंशत्
    एकोनपञ्चाशत्
५०. पञ्चाशत्
५१. एकपञ्चाशत्
५२. द्वापञ्चाशत्
    द्विपञ्चाशत्
५३. त्रयःपञ्चाशत्
    त्रिपञ्चाशत्
५४. चतुःपञ्चाशत्
५५. पञ्चपञ्चाशत्
५६. षट्पञ्चाशत्
५७. सप्तपञ्चाशत्
५८. अष्टापञ्चाशत्
    अष्टपञ्चाशत्
५९. नवपञ्चाशत्
    एकोनषष्टिः
६०. षष्टिः
६१. एकषष्टिः
६२. द्वाषष्टिः
    द्विषष्टिः
६३. त्रयःषष्टिः
    त्रिषष्टिः
६४. चतुष्षष्टिः
६५. पञ्चषष्टिः
६६. षट्षष्टिः
६७. सप्तषष्टिः
६८. अष्टाषष्टिः
    अष्टषष्टिः
६९. नवषष्टिः
    एकोनसप्ततिः
७०. सप्ततिः
७१. एकसप्ततिः
७२. द्वासप्ततिः
    द्विसप्ततिः
७३. त्रयस्सप्ततिः
    त्रिसप्ततिः
७४. चतुस्सप्ततिः
७५. पञ्चसप्ततिः
७६. षट्सप्ततिः
७७. सप्तसप्ततिः
७८. अष्टासप्ततिः
    अष्टसप्ततिः
७९. नवसप्ततिः
    एकोनाशीतिः
८०. अशीतिः
८१. एकाशीतिः
८२. द्व्यशीतिः
८३. त्र्यशीतिः
८४. चतुरशीतिः
८५. पञ्चाशीतिः
८६. षडशीतिः
८७. सप्ताशीतिः

८८. अष्टाशीतिः

८९. नवाशीतिः / एकोननवतिः

९०. नवतिः

९१. एकनवतिः

९२. द्वानवतिः / द्विनवतिः

९३. त्रयोनवतिः / त्रिनवतिः

९४. चतुर्नवतिः

९५. पञ्चनवतिः

९६. षण्णवतिः

९७. सप्तनवतिः

९८. अष्टानवतिः / अष्टनवतिः

९९. नवनवतिः / एकोनशतम्

१००. शतम्

१०१. एकाधिकशतम् / एकोत्तरशतम्

१०२. द्व्यधिकशतम् / द्व्युत्तरशतम्

१०३. त्र्यधिकशतम् / त्र्युत्तरशतम्

१०४. चतुरधिकशतम् / चतुरुत्तरशतम् आदि

---

१०० शतम् (न०)
२०० द्विशतम् (न०)
३०० त्रिशतम् (न०)
४०० चतुश्शतम् (न०)
५०० पञ्चशतम् (न०)
१००० सहस्रम् (न०)
दस हजार अयुतम् (न०)
लाख लक्षः (पु०) लक्षा (स्त्री०)
दस लाख प्रयुतम् (न०)
करोड़ कोटिः (स्त्री०)
दस करोड़ अर्बुदम् (न०)
अरब अब्जम् (न०)
दस अरब — खर्वः (पु०) खर्वम् (न०)
खरब निखर्वः (पु०) निखर्वम् (न०)
दस खरब — महापद्मम् (न०)

नील — शङ्कुः (पु०)
दस नील — जलधिः (पु०)
पद्म — अन्त्यम् (न०)
दस पद्म — मध्यमं (न०)
शङ्ख — परार्धम् (न०)

नोट—(१) एक, द्वि, त्रि और चतुर् शब्दों के रूप तीनों लिंगो में अलग-अलग चलते हैं। 'एक' के रूप एक वचन में 'द्वि' के द्विवचन में और 'त्रि' तथा 'चतुर्' के बहु वचन में रूप चलते हैं।

(२) पञ्चन् और इसके आगे अष्टन् तक के संख्यावाची शब्दों के रूप तीनों लिंगों में समान होते हैं और केवल बहुवचन में होते हैं।

(३) नवन्, दशन् तथा उसके आगे नवदशन् तक के शब्दों के रूप पञ्चन् के ही समान तीनों लिगों में एक से होते हैं।

(४) एकोनविंशतिः से लेकर आगे के जितने भी संख्यावाची शब्द हैं उनके रूप केवल एक वचन में ही होते हैं।

(५) एकोनविंशतिः से लेकर नवविंशतिः तक की सभी संख्यायों के रूप 'रुचि' शब्द के समान होते हैं। ये सभी संख्यायें स्त्रीलिंग की हैं।

(६) त्रिंशत्, चत्वारिंशत् और पञ्चाशत् में अन्त होनें वाले सभी संख्यावाची शब्द स्त्रीलिंग के हैं और उनके रूप 'सरित्' की तरह चलते हैं।

(७) षष्टिः, सप्ततिः, अशीतिः, और नवतिः में अन्त होने वाले सभी संख्यावाची शब्द स्त्रीलिंग के हैं और उनके रूप भी 'विंशतिः' की ही तरह 'रुचि' के समान होते हैं।

(८) शत, सहस्र, अयुत, लक्ष, प्रयुत, अर्बुद, अब्ज, खर्व, निखर्व, महापद्म, अन्त्य, मध्य, परार्ध—ये सभी शब्द नपुंसकलिंग के हैं और इनके रूप 'फल' के अनुसार तीनों वचनों में चलते हैं।

(९) 'लक्षा' शब्द स्त्रीलिंग है, उसके रूप विद्या के समान और स्त्री-वाची 'कोटि' के रूप 'रुचि' के समान होते हैं।

(१०) खर्व और निखर्व पुंल्लिग शब्द है; इनके रूप बालक के समान चलते हैं।

(११) 'जलधि' शब्द भी पुंल्लिग है, इसके रूप कवि के समान और पुंल्लिगवाची 'शंकु' के रूप 'भानु' की तरह चलते हैं।

पूरणवाची संख्या शब्द

१. प्रथम
२. द्वितीय
३. तृतीय
४. चतुर्थ
५. पञ्चम
६. षष्ठ
७. सप्तम
८. अष्टम
९. नवम
१०. दशम
११. एकादश
१२. द्वादश
१३. त्रयोदश
१४. चतुर्दश
१५. पञ्चदश
१६. षोडश
१७. सप्तदश
१८. अष्टादश
१९. नवदश / एकोनविंश / एकोनविंशतितम
२०. विंश, विंशतितम
२१. एकविंश, एकविंशतितम
२२. द्वाविंश, द्वाविंशतितम
२३. त्रयोविंश, त्रयोविंशतितम
२४. चतुर्विंश, चतुर्विंशतितम
२५. पञ्चविंश, पञ्चविंशतितम
२६. षड्विंश, षड्विंशतितम
२७. सप्तविंश, सप्तविंशतितम
२८. अष्टाविंष, अष्टाविंशतितम
२९. नवविंश, नवविंशतितम / एकोनत्रिंश, एकोनत्रिंशततम
३०. त्रिंश, त्रिंशत्तम्
३१. एकत्रिंश, एकत्रिंशत्तम
३२. द्वात्रिंशत, द्वात्रिंशत्तम
३३. त्रयस्त्रिंश, त्रयस्त्रिंशत्तम
३४. चतुस्त्रिंश, चतुस्त्रिंशत्तम
३५. पञ्चत्रिंश, पञ्चत्रिंशत्तम
३६. षट्त्रिंश; षट्त्रिंशत्तम
३७. सप्तत्रिंश, सप्तत्रिंशत्तम
३८. अष्टात्रिंश, अष्टात्रिंशत्तम

३९.	नवत्रिंश, एकोनचत्वारिंश,	नवत्रिंशत्तम एकोनचत्वारिंशत्तम
४०.	चत्वारिंश,	चत्वारिंशत्तम
४१.	एकचत्वारिंश.	एकचत्वारिंशत्तम
४२.	द्वाचत्वारिंश, द्विचत्वारिंश,	द्वाचत्वारिंशत्तम द्विचत्वारिंशत्तम
४३.	त्रयश्चत्वारिंश, त्रिचत्वारिंश,	त्रयश्चत्वारिंशत्तम त्रिचत्वारिंशत्तम
४४.	चतुश्चत्वारिंश,	चतुश्चत्वारिंशत्तम
४५.	पञ्चचत्वारिंश,	पञ्चचत्वारिंशत्तम
४६.	षट्चत्वारिंश,	षट्चत्वारिंशत्तम
४७.	सप्तचत्वारिंश,	सप्तचत्वारिंशत्तम
४८.	अष्टाचत्वारिंश, अष्टचत्वारिंश,	अष्टाचत्वारिंशत्तम अष्टचत्वारिंशत्तम
४९.	नवचत्वारिंश,	नवचत्वारिंशत्तम
	एकोनपञ्चाश,	एकोनपञ्चाशत्तम
५०.	पञ्चाश,	पञ्चाशत्तम
५१.	एकपञ्चाश,	एकपञ्चाशत्तम
५२.	द्वापञ्चाश, द्विपञ्चाश,	द्वापञ्चाशत्तम द्विपञ्चाशत्तम
५३.	त्रयःपञ्चाश, त्रिपञ्चाश	त्रयःपञ्चाशत्तम त्रिपञ्चाशत्तम
५४.	चतुःपञ्चाश,	चतुःपञ्चाशत्तम
५५.	पञ्चपञ्चाश,	पञ्चपञ्चाशत्तम
५६.	षट्पञ्चाश,	षट्पञ्चाशत्तम
५७.	सप्ततपञ्चाश,	सप्तपञ्चाशत्तम
५८.	अष्टापञ्चास,	अष्टापञ्चाशत्तम
	अष्टपञ्चाश,	अष्टपञ्चाशत्तम
५९.	नवपञ्चाश, एकोनषष्ट,	नवपञ्चाशत्तम एकोनषष्टितम

६०.	षष्ट,	षष्टितम
६१.	एकषष्ट,	एकषष्टितम
६२.	द्वाषष्ट,	द्वाषष्टितम
	द्विष्ट,	द्विषष्टितम
६३.	त्रयःषष्ट,	त्रयःषष्टितम
	त्रिषष्ट	त्रिषष्टितम
६४.	चतुष्षष्ट,	चतुष्षष्टितम
६५.	पञ्चषष्ट,	पञ्चषष्टितम
६६.	षट्षष्ट,	षट्षष्टितम
६७.	सप्तषष्ट	सप्तषष्टितम
६८.	अष्टाषष्ट,	अष्टाषष्टितम
	अष्टषष्ट	अष्टषष्टितम
६९.	नवषष्ट,	नवषष्टितम
	एकोनसप्तत,	एकोनसप्ततितम
७०.	सप्तत,	सप्ततितम
७१.	एकसप्तत	एकसप्ततितम
७२.	द्वासप्तत,	द्वासप्ततितम
	द्विसप्तत,	द्विसप्ततितम
७३.	त्रयस्सप्तत,	त्रयस्सप्ततितम
	त्रिसप्तत,	त्रिसप्ततितम
७४.	चतुस्सप्तत,	चतुस्सप्ततितम
७५.	पञ्चसप्तत,	पञ्चसप्ततितम
७६.	षट्सप्तत,	षट्सप्ततितम
७७.	सप्तसप्तत,	सप्तसप्ततितम
७८.	अष्टासप्तत,	अष्टासप्ततितम
	अष्टसप्तत,	अष्टसप्ततितम
७९.	नवसप्तत,	नवसप्ततितम
	एकोनाशीत,	एकोनाशीतितम
८०.	अशीतितम,	

८१.	एकाशीत,	एकाशीतितम
८२.	द्व्यशीत,	द्व्यशीतितम
८३.	त्र्यशीत,	त्र्यशीतितम
८४.	चतुरशीत,	चतुरशीतितम
८५.	पञ्चाशीत,	पञ्चाशीतितम
८६.	षडशीत,	षडशीतितम
८७.	सप्ताशीत,	सप्ताशीतितम
८८.	अष्टाशीत,	अष्टाशीतितम
८९.	नवाशीत,	नवाशीतितम
	एकोननवत,	एकोननवतितम
९०.	नवत,	नवतितम
९१.	एकनवत,	एकनवतितम
९२.	द्वानवत,	द्वनवतितम
	द्विनवत,	द्विनवतितम
९३.	त्रयोनवत,	त्रयोनवतितम
	त्रिनवत,	त्रिनवतितम
९४.	चतुर्नवत,	चतुर्नवतितम
९५.	पञ्चनवत,	पञ्चनवतितम
९६.	षण्णवत,	षण्णवतितम
९७.	सप्तनवत,	सप्तनवतितम
९८.	अष्टानवत,	अष्टानवतितम
	अष्टनवत,	अष्टनवतितम
९९.	नवनवत,	नवनवतितम
	एकोनशततम,	एकोनशततम
१००.	शततम,	

नोट—उक्त पूरणवाची संख्या शब्दों के मूल रूप ही दिये गये हैं। आवश्यकतानुसार इनके पुल्लिग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग के रूप बना लेना चाहिये।

क्रमवाची विशेषण शब्द—

मुख्य क्रमवाची विशेष ये हैं—

अन्यत् —(दूसरा)

अन्यतर—किन्हीं दो वस्तुओं में एक को छोड़कर दूसरे के लिये इसका प्रयोग होता है।

इतर— दूसरा

कतर—दो में से कौन सा

कतम—दो से अधिक में से कौन सा

यतर— दो में से जो सा

यतम— दो से अधिक में से जो सा

ततर— दो में से वह सा

ततम— दो से अधिक में से कौन सा

नोट—इनके रूप भी तीनों लिंगों में चलते हैं और एक समान होते हैं।

विशेषणों की तुलना प्रक्रिया

विशेषणों की तुलना करने के लिये हिन्दी में अधिक, कम आदि शब्द विशेषणो में जोड़ दिये जाते हैं, उनका रूप परिवर्तन नहीं होता। यथा—राम श्याम से अधिक नटखट है। मेरी बहन तुम्हारी बहन से कम सुन्दर नहीं है। आदि।

किन्तु संस्कृत में विशेषणों की तुलना करने के लिये यह विधि है—

(१) सबसे सरल उपाय यह है कि विशेषणों में तरप् (तर) और तमप् (तम) प्रत्यय जोड़ दीजिये। जब दो के बीच में तुलना करनी हो तो 'तर' लगाइये और जब दो से अधिक के बीच में तुलना करानी हो तो 'तम' जोड़िये। उदाहरण के लिये—

प्रिय	—	प्रियतर	—	प्रियतम
चतुर	—	चतुरतर	—	चतुरतम
महत्	—	महत्तर	—	महत्तम
लघु	—	लघुतर	—	लघुतम

गुरु	—	गुरुतर	—	गुरुतम
विद्वस्	—	विद्वत्तर	—	विद्वत्तम
कुशल	—	कुशलतर	—	कुशलतम
			—	आदि ।

(२) गुणवाची विशेषण शब्दों में या तो तरप् और तमप् प्रत्यय जुड़ते हैं या फिर ईयसुन् और इष्ठन् प्रत्यय । जहाँ पर दोनों के ही जुड़ने का विधान हो, वहाँ भी ईयसुन् और इष्ठन् प्रत्ययों को ही प्राथमिकता दी जाती है । ईयसुन् और इष्ठन् प्रत्ययों के कुछ उदाहरण—

गुरु	—	गरीयस्	—	गरिष्ठ
अल्प	—	अल्पीयस्	—	कनिष्ठ
लघु	—	लघीयस्	—	लघिष्ठ
निकट	—	नेदीयस्	—	नेदिष्ठ
दूर	—	दवीयस्	—	दविष्ठ
प्रिय	—	प्रेयस्	—	प्रेष्ठ
दृढ	—	द्रढीयस्	—	द्रढिष्ठ
बहु	—	भूयस्	—	भूयिष्ठ
वृद्ध	—	ज्यायस्	—	ज्येष्ठ
			—	आदि ।

विशेषण शब्दों की रूप-साधनिका

विशेषण शब्दों के रूप अपने विशेष्य-भूत शब्दों के आधार पर ही निर्धारित किये जाते हैं । विद्यार्थी अपने सामान्य विवेक से उनके रूप 'संज्ञा-प्रकरण' और 'सर्वनाम प्रकरण' में प्रदत्त शब्द-रूपों की सहायता से बना लेंगे ऐसी आशा है । उदाहरणं के लिये—सुन्दरः बालकः, सुन्दरं बालकं सुन्दरेण बालकेन; सुन्दराय बालकाय—आदि । इसी प्रकार—सुन्दरी बालिका, सुन्दरीं बालिकां, सुन्दर्या बालिकया, सुन्दर्यै बालिकायै—आदि । इसी प्रकार—सुन्दरं वनं (प्र० और द्वि० दोनों में), सुन्दरेण वनेन—आदि ।

दिशा-निर्देश के लिये यहाँ हम कुछ गुणवाचक तथा संख्यावाचक विशेषणों के रूप दे रहे हैं ।

'महत्' (= बड़ा) पुलिङ्ग

	ए० व०	द्वि व०	ब० व०
प्र०	महान	महान्तौ	महान्तः
द्वि०	महान्तम्	महान्तौ	महतः
तृ०	महता	महद्भ्याम्	महद्भिः
च०	महते	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
पं०	महतः	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
ष०	महतः	महतोः	महताम्
स०	महति	महतोः	महत्सु
सम्बो०	हे महत् !	हे महान्तौ !	हे महान्तः !

महत् (= बड़ा) स्त्रीलिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	महती	महत्यौ	महत्यः
द्वि०	महतीं	महत्यौ	महतीः
तृ०	महत्या	महतीभ्याम्	महतीभिः
च०	महत्यै	महतीभ्याम्	महतीभ्यः
पं०	महत्याः	महतीभ्याम्	महतीभ्यः
ष०	महत्याः	महत्योः	महतीनाम्
स०	महत्याम्	महत्योः	महतीषु
सम्बो०	हे महति !	हे महत्यौ !	हे महत्यः !

महत् (= बड़ा) नपुंसकलिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	महत्	महती	महन्ति
द्वि०	महत्	महती	महन्ति

शेष विभक्तियों में इसके रूप 'महत्' पुल्लिंग शब्द की तरह चलेंगे।

'कति' (= कितने) शब्द—

(नित्य बहुवचनान्त)

प्र०	कति
द्वि०	कति
तृ०	कतिभिः
च०	कतिभ्यः
पं०	कतिभ्यः
ष०	कतीनाम्
स०	कतिषु

'तादृश्' (= उसके समान) पुल्लिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	तादृक्	तादृशौ	तादृशः
द्वि०	तादृशम्	तादृशौ	तादृशः
तृ०	तादृशा	तादृग्भ्याम्	तादृग्भिः
च०	तादृशे	तादृग्भ्याम्	तादृग्भ्यः
पं०	तादृशः	तादृग्भ्याम्	तादृग्भ्यः
ष०	तादृशः	तादृशोः	तादृशाम्
स०	तादृशि	तादृशोः	तादृक्षु
सम्बो०	हे तादृक् !	हे तादृशौ !	हे तादृशः !

तादृश् (= उसके समान) स्त्रीलिङ्ग

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	तादृशी	तादृश्यौ	तादृश्यः
द्वि०	तादृशीं	तादृश्यौ	तादृशीः
तृ०	तादृश्या	तादृशीभ्याम्	तादृशीभिः
च०	तादृश्यै	तादृशीभ्याम्	तादृशीभ्यः
पं०	तादृश्याः	तादृशीभ्याम्	तादृशीभ्यः
ष०	तादृश्याः	तादृश्योः	तादृशीनाम्
स०	तादृश्याम्	तादृश्योः	तादृशीषु
सम्बो०	हे तादृशि !	हे तादृश्यौ !	हे तादृश्यः !

तादृश् (उसके जैसा) नपुंसकलिङ्ग

	एक व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	तादृशं	तादृशे	तादृशानि
द्वि०	तादृशं	तादृशे	तादृशानि

शेष विभक्तियों में इसके रूप 'तादृश्' पुल्लिग शब्द की तरह चलेंगे।

यादृश् (=जैसा), मादृश् (=मेरे जैसा), भवादृश् (=आपके जैसा), त्वादृश् (=तुम्हारे जैसा), एतादृश् (=इसके जैसा)—आदि के रूप भी इसी तरह अलग-अलग तीनों लिङ्गों में चलेंगे।

संख्यावाचक विशेषण शब्द

'एक' शब्द

	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्र०	एकः	एका	एकम्
द्वि०	एकम्	एकाम्	एकम्
तृ०	एकेन	एकया	एकेन
च०	एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै
पं०	एकस्मात्	एकस्याः	एकस्मात्
ष०	एकस्य	एकस्याः	एकस्य
स०	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

टिप्पणी—'एक' शब्द के रूप केवल एकवचन में चलते हैं।

'द्वि' (=दो) शब्द

	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्र०	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वि०	द्वौ	द्वे	द्वे
तृ०	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
च०	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पं०	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
ष०	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
स०	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः

टिप्पणी—'द्वि' शब्द के रूप केवल द्विवचन में चलते हैं।

त्रि (=तीन) शब्द—

	पुलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्र०	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
द्वि०	त्रीन्	तिस्रः	त्रीणि
तृ०	त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः
च०	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
पं०	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
ष०	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
स०	त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु

टिप्पणी—'त्रि' शब्द के रूप केवल बहुवचन में चलते हैं।

चतुर् (=चार) शब्द

	पुलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्र०	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वि०	चतुरः	चतस्रः	चत्वारि
तृ०	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
च०	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
पं०	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
ष०	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
स०	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

टिप्पणी—(१) 'चतुर्' शब्द के रूप केवल बहुवचन में चलते हैं।

(२) पंचन् (=पांच) से लेकर आगे के सभी संख्यावाची शब्द नित्य बहुवचन में तथा सभी लिङ्गों में एक समान होते हैं।

	पंचन् (=पांच)	षष् (=छः)	सप्तन् (=सात)
प्र०	पञ्च	षट्-ड्	सप्त
द्वि०	पञ्च	षट्-ड्	सप्त
तृ०	पञ्चभिः	षड्भिः	सप्तभिः
च०	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः

पं०	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः
ष०	पञ्चानाम्	षण्णाम्	सप्तानाम्
स०	पञ्चसु	षट्सु	सप्तसु

	अष्टन् (= आठ)	नवन् (= नव)	दशन् (= दश)
प्र०	अष्ट, अष्टौ	नव	दश
द्वि०	अष्ट, अष्टौ	नव	दश
तृ०	अष्टभिः, अष्टाभिः	नवभिः	दशभिः
च०	अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः
पं०	अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः
ष०	अष्टानाम्	नवानाम्	दशानाम्
स०	अष्टसु, अष्टासु	नवसु	दशसु

पञ्चमोऽध्यायः

क्रिया-प्रकरण

जिससे किसी काम का करना या होना पाया जाय, उसे क्रिया कहते हैं। क्रिया का सम्बन्ध काल, पुरुष और वचन से होता है। संस्कृत में क्रिया के लिये 'धातु' शब्द का प्रयोग मिलता है।

क्रियाओं के प्रकार—

क्रियायें तीन प्रकार की होती हैं—

१. **सकर्मक**—जिन क्रियाओं को कर्म की आवश्यकता होती है। यथा—गुरुः शिष्यं **उपदिशति,** रमेशः पाठं **पठति**—आदि।

२. **अकर्मक**—जिन क्रियाओं को कर्म की जरूरत नहीं होती। यथा—रामः **क्रीडति,** बालिका **शेते**—आदि।

३. **द्विकर्मक**—जिन क्रियाओं को दो कर्मों की आवश्यकता होती है। यथा—याचकः राजानं अन्नं **याचते**।

ऐसी द्विकर्मक क्रियायें केवल १६ हैं—

(१) दुह्, (२) याच्, (३) पच्, (४) दण्ड्, (५) रुध्, (६) पृच्छ्, (७) चि, (८) ब्रू, (९) शास्, (१०) जि, (११) मन्थ्, (१२) मृष्, (१३) नी, (१४) हृ, (१५) कृष् और (१६) वह्।

सकर्मक धातुओं के पुनः दो भेद होते हैं—

(१) कर्तृवाच्य की सकर्मक क्रिया।

(२) कर्मवाच्य की सकर्मक क्रिया।

उदाहरण के लिये—

कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**
रामः पुस्तकं **पठति,**	रामेण पुस्तकं **पठ्यते**
रमा पत्रं **लिखति,**	रमया पत्रं **लिख्यते**
सः विद्यां **पठति,**	तेन विद्यां **पठ्यते**

क्रियाओं के काल

क्रिया के करने में जो समय लगता है, उसे काल कहते हैं। इसके मुख्य भेद ३ हैं—

(क) वर्तमान, (ख) भूत, (ग) भविष्य

वर्तमान—जिस काल में क्रिया का आरम्भ हो चुका हो, पर समाप्ति न हुई हो, उसे वर्तमान काल कहते हैं और इस अर्थ में धातु में 'लट्' लकार होता है। यथा—

पर्णं **पतति** = पत्ता गिरता है।

अश्वाः **धावन्ति** = घोड़े दौड़ते हैं—आदि।

भूत—जिस काल में क्रिया की समाप्ति हो चुकी हो, उसे भूत काल कहते हैं। इसके तीन भेद हैं—

१. **परोक्षभूत**—जो अपनी आँखों के सामने न हुआ हो किन्तु श्रुति परम्परा से सुना जाता हो उसे परोक्षभूत कहते हैं और इस अर्थ में धातु में 'लिट् लकार' लगता है। यथा—शूद्रको नाम राजा **बभूव** = शूद्रक नाम के कोई राजा थे।

२. **अनद्यतनभूत**—जो आज न हुआ हो, किन्तु आज के पहले हुआ हो उसे अनद्यतनभूत कहते हैं और इस अर्थ में धातु में 'लङ्' लकार होता है। यथा—अहं ह्यः तत्र **अगच्छम्** = मैं कल वहाँ गया था।

३. जो सामान्य प्रकार से व्यतीत हो चुका हो 'चाहे वह अद्यतन हो या अनद्यतन' उसे **सामान्य भूत** कहते हैं और इस अर्थ में धातु के साथ 'लुङ्' लकार लगता है। यथा—मत्तः पुरा ते **अभूवन्** = मुझसे पहले वे हुये थे।

भविष्य—जो काम अभी न हो, आगे होवे या होने की सम्भावना हो उसे भविष्यत् काल कहते हैं। इसके दो भेद होते हैं—

१. **अनद्यतन**—आज के बाद किन्तु समीप काल में जो होगा वह अनद्यतन भविष्य कहलाता है और इस अर्थ में धातु में 'लुट्' लकार होता है। यथा—अहं परेद्युः तत्र **गन्तास्मि** = मैं परसों वहाँ जाऊंगा।

२. **सामान्य**—जो सामान्य प्रकार से होने वाला हो, उसे सामान्य भविष्य कहते हैं और इस अर्थ में धातु में लृट् लकार होता है। यथा—अहं तत्र न **गमिष्यामि** = मैं वहां नहीं जाऊँगा।

इनके अतिरिक्त निम्नलिखित के अर्थ में भी धातुओं में लकार लगते हैं—

१. **विधि**—आज्ञा अथवा प्रेरणा को 'विधि' कहते हैं। आज्ञा अर्थ में लोट् लकार धातु में लगता है। यथा—सः तत्र **गच्छतु** = वह वहाँ जाय। प्रेरणा अर्थ में धातु में लिङ् लकार (विधिलिङ्) लगता है। यथा—सः तत्र **गच्छेत्** = वह वहाँ जावे या उसे वहाँ जाना चाहिये।

२. **आशीर्वाद**—इस अर्थ में धातु में आशीर्लिङ् लगता है। यथा—स्वस्ति ते **भूयात्** = तुम्हारा कल्याण हो।

३. **हेतुहेतुमद्भाव**—'कारण' को 'हेतु' और 'कार्य' को 'हेतुमान्' (हेतुमत्) कहते हैं। ये दोनों जहाँ साथ-साथ रहें उसे हेतुहेतुमद्भाव कहते हैं और इस अर्थ में धातु में 'लृङ्' लकार होता है। यथा—यः अपठिष्यत् सः उत्तीर्णोऽभविष्यत् = जो पढ़ेगा, वह पास होगा।

दस लकार—

(१) लट्, (२) लङ्, (३) विधिलिङ्, (४) लोट्, (५) लृट्, (६) लृङ्, (७) लिट्, (८) लुङ्, (९) लुट्, (१०) आशीर्लिङ्।

धातुओं के तीन भेद—

(१) सेट् धातुयें, (२) अनिट् धातुयें, (३) वेट् धातुयें।

जिन धातुओं में वलादि आर्धधातुक अर्थात् लृङ्, लुङ्, लुट्, लिट् लकारों की प्रत्यय के आदि में 'इट्' का आगम होता है वे सेट्, जिसमें नहीं होता वे 'अनिट्' और जिनमें विकल्प से होता है वे 'वेट्' कहलाती हैं। इस प्रकार का विभाग कर लेने से रूप चलाने में बड़ी सुविधा हो जाती है।

क्रियाओं (धातुओं) की संख्या—

संस्कृत के 'धातुपाठ' में १८८० और कुछ लोगों के विचार से २००० धातुओं का निर्देश पाया जाता है। इन्हीं में प्रत्यय आदि जोड़ कर संस्कृत के शब्द बनाये जाते हैं। संस्कृत के प्रायः सभी शब्द धातुओं से ही बने हैं—

क्या संज्ञा, क्या विशेषण, क्या क्रिया, क्या अव्यय आदि। कुछ शब्द ऐसे भी हैं जो धातु रचित नहीं लगते, किन्तु वैयाकरण लोग उन्हें भी धातुओं से निर्मित सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं इस प्रकार धातुओं का महत्त्व स्पष्ट है।

धातुओं के दस विभाग (गण)—

१. भ्वादि, २. अदादि, ३. जुहोत्यादि, ४. दिवादि, ५. स्वादि, ६. तुदादि, ७. रुधादि, ८. तनादि, ९. क्र्यादि, १०. चुरादि। इनको ही क्रम से प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम और दशम गण भी कहते हैं।

पद विचार—

संस्कृत भाषा में तीन पद होते हैं—

(१) **परस्मैपद**—वह पद जो दूसरे के लिये हो।

(२) **आत्मनेपद**—वह पद जो अपने लिये ही हो।

(३) **उभयपद**—वह पद जो दूसरे के लिये भी हो और अपने लिए भी। वस्तुतः उभयपद में परस्मैपद और आत्मनेपद दोनों का ही समावेश है।

वे क्रियायें जिनका फल दूसरे के लिए हो परस्मैपद में होनी चाहिये और वे क्रियायें जिनका फल अपने लिये हो आत्मनेपद में होनी चाहिये। उदाहरण—

(१) ब्राह्मणः ओदनं **पचते**।

(२) माता ओदनं **पचति**।

पहले वाक्य में 'पचते' क्रिया आत्मनेपदी है। इससे पता लगता है कि ब्राह्मण अपने खाने के लियें चावल पका रहा है। किन्तु दूसरे वाक्य में 'पचति' क्रिया परस्मैपदी है। इससे पता लगता है कि माँ अपने ही लिये नहीं प्रत्युत् सारे परिवार के लिये चावल पका रही है।

ध्यान रहे कि क्रिया के रूपों को इस दृष्टि से प्रयोग करने का नियम केवल व्याकरण ग्रन्थों में ही दिखाया गया है, संस्कृत के साहित्यकार

प्रायः इस नियम का उल्लंघन करते आये हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि यह नियम तो अवश्य है किन्तु इसमें व्यावहारिकता कम है।

वाच्य विचार—संस्कृत धातुओं के रूप वाच्यों से भी प्रभावित होते हैं। इसीलिये वाच्यों के अनुसार ही क्रिया के 'कर्त्तरिप्रयोग', 'कर्मणिप्रयोग' और 'भावे प्रयोग' मिलते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि वाच्य तीन होते हैं—

(१) **कर्तृवाच्य**—यथा—अहं पुस्तकं **पठामि**।
(२) **कर्मवाच्य**—यथा—मया पुस्तकं **पठ्यते**।
(३) **भाववाच्य**—यथा—मया न **अट्यते**।

सकर्मक क्रियाओं में कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य के प्रयोग पाये जाते हैं। इसी प्रकार अकर्मक क्रियाओं में कर्तृवाच्य और भाववाच्य के प्रयोग पाये जाते हैं।

गण और उनकी धातुयें—

किस गण के अन्तर्गत कौन-कौन सी धातुयें आती हैं; इस बात की जानकारी के लिये 'परिशिष्ट' के अन्तर्गत 'धातुकोष' को देखिये।

उक्त १० गणों के अन्तर्गत सभी धातुओं के रूप सभी लकारों में चलते हैं। जो धातुयें परस्मैपदी हैं उनमें परस्मैपद के प्रत्यय, जो आत्मनेपदी हैं उनमें आत्मनेपद के प्रत्यय और जो उभयपदी हैं उनमें परस्मैपद और आत्मनेपद दोनों के प्रत्यय जुड़ते हैं। प्रत्येक धातु के रूप तीनों पुरुष और तीनों वचनों में चलते हैं। संस्कृत में धातुओं पर लिंग का कोई असर नहीं पड़ता। सभी लिंगों के लिये समान क्रिया प्रयोग में आती है।

प्रत्ययान्त धातुयें

संस्कृत धातुओं में कुछ प्रत्यय विशेष जोड़कर अन्य अर्थों का भी बोध हो जाता है। यथा—अहं **गच्छामि** = मैं जाता हूँ।

अहं **जिगमिषामि** = मैं जाना चाहता हूँ। प्रत्ययान्त धातुयें चार प्रकार की होती हैं—

१. **णिजन्त**—णिच् प्रत्यय में अन्त होने वाली।
२. **सन्नन्त**—सन् प्रत्यय में अन्त होने वाली।

३. **यङन्त**—यङ् प्रत्यय में अन्त होने वाली।

४. **नामधातु**—किसी संज्ञा को धातु का रूप देकर बनाई हुई धातु।

णिजन्त धातुयें

प्रेरणा के अर्थ में धातुओं में णिच् प्रत्यय लगाया जाता है। यथा—करोति = करता है। कारयति = कराता है।

नोट—१. णिजन्त धातुओं के रूप चुरादि गण की धातुओं के समान चलते हैं।

२. धातु और तिङ् प्रत्ययों के बीच में 'अय्' जोड़ दिया जाता है।

धातु	प्रेरणार्थक
चुर् (चोरयति)	चोरयति
अश् (अश्नाति)	आशयति
तन् (तनोति)	तानयति
रुध् (रुणद्धि)	रोधयति
तुद् (तुदति)	तोदयति
सु (सुनोति)	सावयति
दिव् (दीव्यति)	देवयति
हु (जुहोति)	हावयति
अद् (अत्ति)	आदयति
बुध् (बोधति)	बोधयति

इसी प्रकार—

हन् (मारना) — घातयति

रुह् (उगना) — रोहयति-ते, रोपयति-ते

प्री (प्रसन्न होना) — प्रीणयति

जागृ (जागना) — जागरयति

चि (इकट्ठा करना) — चाययति-ते, चापयति-ते

नोट—प्रेरणार्थक धातुओं के रूप चुरादिगण की धातुओं के समान दसों लकारों, तीनों वाच्यों और दोनों पदों में पुरुष और वचन के अनुसार चलते हैं।

सन्नन्त धातुयें

कोई काम करने की अर्थ वाली जो क्रिया हो उसमें 'वह काम करने की इच्छा' इस अर्थ में सन् प्रत्यय लगता है। यथा—

जाना = गम्, जाने की इच्छा करना =
गम् + सन् = जिगमिष्।

नोट—सन् प्रत्यय या काम इष् और अभिलष् आदि चाहने का अर्थ बतलाने वाली क्रियाओं के प्रयोग से भी चल सकता है। यथा—

मैं जाना चाहता हूँ = अहं जिगमिषामि =
अहं गन्तुमिच्छामि = अहं गन्तुमभिलषामि—आदि।

कुछ सन्नन्त धातुओं के रूप—

गम् + सन् = जिगमिषति
पृच्छ् + सन् = पिपृच्छिषति
हन् + सन् = जिघांसति
इण् + सन् = जिगमिषति
पठ् + सन् = पिपठिष्यति
गुह् + सन् = जिघृक्षति—आदि।

इसी प्रकार—

पा + सन् = पिपासते
भू + सन् = बुभूषते
दृश् + सन् = दिदृक्षते
श्रु + सन् = शुश्रूषते
ज्ञा + सन् = जिज्ञासते—आदि।

यङन्त धातु

किसी व्यञ्जन से आरम्भ होने वाली एकाच् धातुओं में 'किसी क्रिया का बार-बार करना या खूब करना'—यह अर्थ प्रकाशित करने के लिये यङ् प्रत्यय लगाया जाता है। यह प्रत्यय प्रथम नौ गण की धातुओं में ही प्रायः लगता है। उदाहरण—

नेनीयते = बार-बार ले जाता है।
देदीयते = खूब देता है।

वोबुध्यते = खूब या भली प्रकार जानता है।

वावृज्यते = बार-बार जाता है।

बोभूयते = बार-बार होता है।—आदि।

नोट—गत्यर्थक धातुओं में कुटिलता (टेढ़ापन) के अर्थ में भी यङ् प्रत्यय लगता है। यथा—कुटिलं व्रजति इति वाव्रजते।

२. उन्हीं धातुओं में गर्हित (निन्दित) अर्थ में भी यङ् प्रत्यय लगता है। यथा—गर्हितं लुम्पति इति लोलुप्यते।

नाम धातुयें

यदि किसी सुबन्त के आगे कोई प्रत्यय जोड़ कर उसे धातु बना लेते हैं तो वह नाम धातु कहलाती है। यथा—पुत्र + क्यच् प्रत्यय = पुत्रीयति = पुत्र की इच्छा करता है।

इसी प्रकार—

वधू + क्यच् = वधूयति = अपने लिये बहू की इच्छा करता है।

गो + क्यच् = गव्यति = अपने लिये गाय की इच्छा करता है।

किन्तु — गुरुः छात्रं पुत्रीयति = गुरु विद्यार्थी को पुत्र के समान मानता है।

कृष्ण + क्यङ् = कृष्णायते = कृष्ण के समान आचरण करता है।

अप्सरस् + क्यङ् = अप्सरायते = अप्सरा के समान आचरण करती है।

कुमारी + क्यङ् = कुमारायते = कुमारी का सा आचरण करती है।

रोमन्थ् + क्यङ् = रोमन्थायते = जुगाली सा करता है।

किन्तु —कलह + क्यङ् = कलहायते = झगड़ा करता है।

शब्द + क्यङ् = शब्दायते = शब्द करता है।

सुख + क्यङ् = सुखायते = सुख का अनुभव करता है।

फेन + क्यङ् = फेनायते = फेना निकालता या निकलवाता है।

वाष्प + क्यङ् = वाष्पायते = भाप निकालता है।

कृष्ण + क्विप् = कृष्णति = कृष्ण के समान आचरण करता है।

मुण्ड + णिच् = मुण्डयति = मूड़ता है।

धातुरूप—साधनिका

१. भ्वादिगण

भू—होना (परस्मै०, प०)[1]

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

लृट्

अ० पु०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म० पु०	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ० पु०	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट्

अ० पु०	भवतु भवतात्	भवताम्	भवन्तु
म० पु०	भव	भवतम्	भवत
उ० पु०	भवानि	भवाव	भवाम

लङ्

अ० पु०	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
म० पु०	अभवः	अभवतम्	अभवत
उ० पु०	अभवम्	अभवाव	अभवाम

हस्—हँसना

लट् (वर्तमान)

अ० पु०	हसति	हसतः	हसन्ति
म० पु०	हससि	हसथः	हसथ
उ० पु०	हसामि	हसावः	हसामः

---

१. प०, परस्मै० = परस्मैपदी धातुयें।
आ०, आत्मने० = आत्मनेपदी धातुयें।
उ०, उभय० = उभयपदी धातुयें।

लृट् (सामान्य भविष्य)

भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लङ् (अनद्यतन भूत)

अभवत्	अभवताम्	अभवन्
अभवः	अभवतम्	अभवत
अभवम्	अभवाव	अभवाम

लोट् (आज्ञा आदि)

हसतु	हसताम्	हसन्तु
हस	हसतम्	हसत
हसानि	हसाव	हसाम

विधिलिङ् (आज्ञा आदि)

हसेत्	हसेताम्	हसेयुः
हसेः	हसेतम्	हसेत
हसेयम्	हसेव	हसेम

(३) पठ—पढ़ना (लट्)

पठति, पठतः, पठन्ति
पठसि, पठथः, पठथ
पठामि, पठावः, पठामः

लृट्

पठिष्यति, पठिष्यतः, पठिष्यन्ति
पठिष्यसि, पठिष्यथः, पठिष्यथ
पठिष्यामि, पठिष्यावः पठिष्यामः

लङ्

अपठत्, अपठताम्, अपठन्
अपठः, अपठतम्, अपठत
अपठम्, अपठाव, अपठाम

(४) रक्ष—रक्षा करना (लट्)

रक्षति, रक्षतः, रक्षन्ति
रक्षसि; रक्षथः, रक्षथ
रक्षामि, रक्षावः, रक्षामः

लृट्

रक्षिष्यति, रक्षिष्यतः, रक्षिष्यन्ति
रक्षिष्यसि, रक्षिष्यथः, रक्षिष्यथ
रक्षिष्यामि, रक्षिस्यावः, रक्षिष्यामः

लङ्

अरक्षत्, अरक्षताम्, अरक्षन्
अरक्षः, अरक्षतम्, अरक्षत
अरक्षम्, अरक्षाव, अरक्षाम

लोट्

पठतु, पठताम्, पठन्तु
पठ, पठतम्, पठत
पठानि, पठाव, पठाम

विधिलिङ्

पठेत्, पठेताम्, पठेयुः
पठेः, पठेतम्, पठेत
पठेयम्, पठेव, पठेम

(५) वद् (बोलना)

लट्

वदति, वदतः, वदन्ति
वदसि, वदथः, वदथ
वदामि, वदावः, वदामः

लृट्

वदिष्यति, वदिष्यतः, वदिष्यन्ति
वदिष्यसि, वदिष्यथः, वदिष्यथ
वदिष्यामि, वदिष्यावः, वदिष्यामः

लङ्

अवदत्, अवदताम्, अवदन्
अवदः, अवदतम्, अवदत
अवदम्, अवदाव, अवदाम

लोट्

वदतु, वदताम्, वदन्तु
वद, वदतम्, वदत
वदानि, वदाव, वदाम

विधिलिङ्

वदेत्, वदेताम्, वदेयुः
वदेः, वदेतम्, वदेत
वदेयम्, वदेव, वदेम

लोट्

रक्षतु, रक्षताम्, रक्षन्तु
रक्ष, रक्षतम्, रक्षत
रक्षाणि, रक्षाव, रक्षाम

विधिलिङ्

रक्षेत्, रक्षेताम्, रक्षेयुः
रक्षेः, रक्षेतम्, रक्षेत
रक्षेयम्, रक्षेव, रक्षेम

(६) पा—पीना

लट्

पिबति, पिबतः, पिबन्ति
पिबसि, पिबथः पिबथ
पिबामि, पिबावः, पिबामः

लृट्

पास्यति, पास्यतः, पास्यन्ति
पास्यसि, पास्यथः, पास्यथ
पास्यामि, पास्यावः, पास्यामः

लङ्

अपिबत्, अपिबताम्, अपिबन्
अपिबः, अपिबतम्, अपिबत
अपिबम्, अपिबाव, अपिबाम

लोट्

पिबतु, पिबताम्, पिबन्तु
पिब, पिबतम्, पिबत
पिबानि, पिबाव, पिबाम

विधिलिङ्

पिबेत्, पिबेताम्, पिबेयुः
पिबेः, पिबेतम्, पिबेत
पिबेयम्, पिबेव, पिबेम

(७) नम्—झुकना, प्रणाम करना

लट्

नमति, नमतः नमन्ति
नमसि, नमथः, नमथ
नमामि, नमावः, नमामः

लृट्

नंस्यति, नंस्यतः, नंस्यन्ति
नंस्यसि, नंस्यथः, नंस्यथ
नंस्यामि, नंस्यावः, नंस्यामः

लोट्

नमतु, नमताम्, नमन्तु
नम, नमतम्, नमत
नमानि, नमाव, नमाम

लङ्

अनमत्, अनमताम्, अनमन्
अनमः, अनमतम्, अनमत
अनमम्, अनमाव, अनमाम

विधिलिङ्

नमेत्, नमेताम्, नमेयुः
नमेः, नमेतम्, नमेत
नमेयम्, नमेव, नमेम

(८) गम्—जाना

लट्

गच्छति, गच्छतः, गच्छन्ति
गच्छसि, गच्छथः, गच्छथ
गच्छामि, गच्छावः, गच्छामः

लृट्

गमिष्यति, गमिष्यतः, गमिष्यन्ति
गमिष्यसि, गमिष्यथः, गमिष्यथ
गमिष्यामि, गमिष्यावः गमिष्यामः

लोट्

गच्छतु गच्छताम्, गच्छन्तु
गच्छ, गच्छतम्, गच्छत
गच्छानि, गच्छाव, गच्छाम

लङ्

अगच्छत्, अगच्छताम्, अगच्छन्
अगच्छः, अगच्छतम्, अगच्छत
अगच्छम्, अगच्छाव, अगच्छाम

विधिलिङ्

गच्छेत्, गच्छेताम्, गच्छेयुः
गच्छेः, गच्छेतम्, गच्छेत
गच्छेयम्, गच्छेव, गच्छेम

(९) दृश्—देखना

लट्

पश्यति, पश्यतः, पश्यन्ति
पश्यसि, पश्यथः पश्यथ
पश्यामि, पश्यावः, पश्यामः

लृट्

द्रक्ष्यति, द्रक्ष्यतः, द्रक्ष्यन्ति

(१०) सीद्—दुःखी होना इत्यादि

लट्

सीदति, सीदतः, सीदन्ति
सीदसि, सीदथः, सीदथ
सीदामि, सीदावः, सीदामः

लृट्

सत्स्यति, सत्स्यतः, सत्स्यन्ति

द्रक्ष्यसि, द्रक्ष्यथः, द्रक्ष्यथ
द्रक्ष्यामि, द्रक्ष्यावः, द्रक्ष्यामः

लोट्

पश्यतु, पश्यताम्, पश्यन्तु
पश्य, पश्यतम्, पश्यत
पश्यानि, पश्याव, पश्याम

लङ्

अपश्यत्, अपश्यताम्, अपश्यन्
अपश्यः, अपश्यतम्, अपश्यत
अपश्यम्, अपश्याव, अपश्याम्

विधिलिङ्

पश्येत्, पश्येताम्, पश्येयुः
पश्येः, पश्येतम्, पश्येत
पश्येयम्, पश्येव, पश्येम

स्था—ठहरना

लट्

तिष्ठति, तिष्ठतः, तिष्ठन्ति
तिष्ठसि, तिष्ठथः, तिष्ठथ
तिष्ठामि, तिष्ठावः, तिष्ठामः

लृट्

स्थास्यति, स्थास्यतः, स्थास्यन्ति
स्थास्यसि, स्थास्यथः, स्थास्यथ
स्थास्यामि, स्थास्यावः, स्थास्यामः

लोट्

तिष्ठतु, तिष्ठताम्, तिष्ठन्तु
तिष्ठ, तिष्ठतम्, तिष्ठत
तिष्ठानि, तिष्ठाव, तिष्ठाम

सत्स्यसि, सत्स्यथः, सत्स्यथ
सत्स्यामि, सत्स्यावः सत्स्यामः

लोट्

सीदतु, सीदताम्, सीदन्तु
सीद, सीदतम्, सीदत
सीदानि, सीदाव, सीदाम

लङ्

असीदत्, असीदताम्, असीदन्
असीदः, असीदतम्, असीदत
असीदम्, असीदाव, असीदाम

विधिलिङ्

सीदेत्, सीदेताम्, सीदेयुः
सीदेः, सीदेतम्, सीदेत
सीदेयम्, सीदेव, सीदेम

स्मृ—स्मरण करना

लट्

स्मरति, स्मरतः, स्मरन्ति
स्मरसि, स्मरथः, स्मरथ
स्मरामि, स्मरावः, स्मरामः

लृट्

स्मरिष्यति, स्मरिष्यतः, स्मरिष्यन्ति
स्मरिष्यसि, स्मरिष्यथः, स्मरिष्यथ
स्मरिष्यामि, स्मरिष्यावः, स्मरिष्यामः

लोट्

स्मरतु, स्मरताम्, स्मरन्तु
स्मर, स्मरतम्, स्मरत
स्मराणि, स्मराव, स्मराम

लङ्
अतिष्ठत्, अतिष्ठताम्, अतिष्ठन्
अतिष्ठः, अतिष्ठतम्, अतिष्ठत
अतिष्ठम्, अतिष्ठाव, अतिष्ठाम

विधिलिङ्
तिष्ठेत्, तिष्ठेताम्, तिष्ठेयुः
तिष्ठेः, तिष्ठेतम्, तिष्ठेत
तिष्ठेयम्, तिष्ठेव, तिष्ठेम

जि—जीतना

लट्
जयति, जयतः, जयन्ति
जयसि, जयथः, जयथ
जयामि, जयावः, जयामः

लृट्
जेष्यति, जेष्यतः, जेष्यन्ति
जेष्यसि, जेष्यथः, जेष्यथ
जेष्यामि, जेष्यावः, जेष्यामः

लोट्
जयतु, जयताम्, जयन्तु
जय, जयतम्, जयत
जयानि, जयाव, जयाम

लङ्
अजयत्, अजयताम्, अजयन्
अजयः, अजयतम्, अजयत
अजयम्, अजयाव, अजयाम

विधिलिङ्
जयेत्, जयेताम्, जयेयुः
जयेः, जयेतम्, जयेत
जयेयम्, जयेव, जयेम

लङ्
अस्मरत्, अस्मरताम्, अस्मरन्
अस्मरः, अस्मरतम्, अस्मरत
अस्मरम्, अस्मराव, अस्मराम

विधिलिङ्
स्मरेत्, स्मरेताम्, स्मरेयुः
स्मरेः, स्मरेतम्, स्मरेत
स्मरेयम्, स्मरेव, स्मरेम

लभ्—प्राप्त करना

लट्
लभते, लभेते, लभन्ते
लभसे, लभेथे, लभध्वे
लभे, लभावहे, लभामहे

लृट्
लप्स्यते, लप्स्येते, लप्स्यन्ते
लप्स्यसे, लप्स्येथे, लप्स्यध्वे
लप्स्ये, लप्स्यावहे, लप्स्यामहे

लोट्
लभताम्, लभेताम्, लभन्ताम्
लभस्व, लभेथाम्, लभध्वम्
लभै, लभावहै, लभामहै

लङ्
अलभत्, अलभेताम्, अलभन्त
अलभथाः, अलभेथाम्, अलभध्वम्
अलभे, अलभावहि, अलभामहि

विधिलिङ्
लभेत, लभेयाताम्, लभेरन्
लभेथाः, लभेयाथाम्, लभेध्वम्
लभेय, लभेवहि, लभेमहि

सेव—सेवा करना

लट्

सेवते, सेवेते, सेवन्ते
सेवसे, सेवेथे, सेवध्वे
सेवे, सेवावहे, सेवामहे

लृट्

सेविष्यते, सेविष्येते, सेविष्यन्ते
सेविष्यसे, सेविष्येथे, सेविष्यध्वे
सेविष्ये, सेविष्यावहे, सेविष्यामहे

लोट्

सेवताम्, सेवेताम्, सेवन्ताम्
सेवस्व, सेवेथाम्, सेवध्वम्
सेवै, सेवावहै, सेवामहै

लङ्

असेवत्, असेवेताम्, असेवन्त
असेवथाः, असेवेथाम्, असेवध्वम्
असेवे, असेवावहि, असेवामहि

विधिलिङ्

सेवेत, सेवेयाताम्, सेवेरन्
सेवेथाः, सेवेयाथाम्, सेवेध्वम्
सेवेय, सेवेवहि, सेवेमहि

मुद्—आनन्दित होना

लट्

मोदते, मोदेते, मोदन्ते
मोदसे, मोदेथे, मोदध्वे
मोदे, मोदावहे, मोदामहे

लृट्

मोदिष्यते, मोदिष्येते, मोदिष्यन्ते
मोदिष्यसे, मोदिष्येथे, मोदिष्यध्वे
मोदिष्ये, मोदिष्यावहे, मोदिष्यामहे

लोट्

मोदताम् मोदेताम्, मोदन्ताम्
मोदस्व, मोदेथाम्, मोदध्वम्
मोदै, मोदावहै, मोदामहै

लङ्

अमोदत, अमोदेताम्, अमोदन्त
अमोदथाः, अमोदेथाम्, अमोदध्वम्
अमोदे, अमोदावहि, अमोदामहि

विधिलिङ्

मोदेत, मोदेयाताम्, मोदेरन्
मोदेथाः, मोदेयाथाम्, मोदेध्वम्
मोदेय, मोदेवहि, मोदेमहि

वृध्—वृद्धि को प्राप्त होना

लट्

वर्धते, वर्धेते, वर्धन्ते
वर्धसे, वर्धेथे, वर्धध्वे
वर्धे, वर्धावहे, वर्धामहे

लृट्

वर्धिष्यते, वर्धिष्येते, वर्धिष्यन्ते

सह्—सहन करना

लट्

सहते, सहेते, सहन्ते
सहसे, सहेथे, सहध्वे
सहे, सहावहे, सहामहे

लृट्

सहिष्यते, सहिष्येते, सहिष्यन्ते

वर्धिष्यसे, वर्धिष्येथे, वर्धिष्यध्वे
वर्धिष्ये, वर्धिष्यावहे, वर्धिष्यामहे

लोट्

वर्धताम्, वर्धेताम्, वर्धन्ताम्
वर्धस्व, वर्धेथाम्, वर्धध्वम्
वर्धै, वर्धावहै, वर्धामहै

लङ्

अवर्धत, अवर्धेताम्, अवर्धन्त
अवर्धथाः, अवर्धेथाम्, अवर्धध्वम्
अवर्धे, अवर्धावहि, अवर्धामहि

विधिलिङ्

वर्धेत, वर्धेयाताम्, वर्धेरन्
वर्धेथाः, वर्धेयाथाम्, वर्धेध्वम्
वर्धेय, वर्धेवहि, वर्धेमहि

सहिष्यसे, सहिष्येथे, सहिष्यध्वे
सहिष्ये, सहिष्यावहे, सहिष्यामहे

लोट्

सहताम्, सहेताम्, सहन्ताम्
सहस्व, सहेथाम्, सहध्वम्
सहै, सहावहै, सहामहै

लङ्

असहत्, असहेताम्, असहन्त
असहथाः, असहेथाम्, असहध्वम्
असहे, असहावहि, असहामहि

विधिलिङ्

सहेत, सहेयाताम्, सहेरन्
सहेथाः, सहेयाथाम्, सहेध्वम्
सहेय, सहेवहि, सहेमहि

पच्—पकाना

लट् (प०)

पचति, पचतः, पचन्ति
पचसि, पचथः, पचथ
पचामि, पचावः, पचामः

लृट् (प०)

पक्ष्यति, पक्ष्यतः, पक्ष्यन्ति
पक्ष्यसि, पक्ष्यथः, पक्ष्यथ
पक्ष्यामि, पक्ष्यावः, पक्ष्यामः

लोट् (प०)

पचतु, पचताम्, पचन्तु
पच, पचतम्, पचत
पचानि, पचाव, पचाम

लङ् (प०)

अपचत्, अपचताम्, अपचन्

लट् (आ०)

पचते, पचेते, पचन्ते
पचसे, पचेथे, पचध्वे
पचे, पचावहे, पचामहे

लृट् (आ०)

पक्ष्यते, पक्ष्येते, पक्ष्यन्ते
पक्ष्यसे, पक्ष्येथे, पक्ष्यध्वे
पक्ष्ये, पक्ष्यावहे, पक्ष्यामहे

लोट् (आ०)

पचताम्, पचेताम्, पचन्ताम्
पचस्व, पचेथाम्, पचध्वम्
पचै, पचावहै, पचामहै

लङ् (आ०)

अपचत, अपचेताम्, अपचन्त

अपचः, अपचतम्, अपचत	अपचथाः, अपचेथाम्, अपचध्वम्
अपचम्, अपचाव, अपचाम्	अपचे, अपचावहि, अपचामहि
विधिलिङ्	**विधिलिङ्**
पचेत्, पचेताम्, पचेयुः	पचेत, पचेयाताम्, पचेरन्
पचेः, पचेतम्, पचेत	पचेथाः, पचेयाथाम्, पचेध्वम्
पचेयम्, पचेव, पचेम	पचेय, पचेवहि, पचेमहि

याच्—याचना करना, माँगना

लट् (प०)	**लट् (आ०)**
याचति, याचतः, याचन्ति	याचते, याचेते, याचन्ते
याचसि, याचथः, याचथ	याचसे, याचेथे, याचध्वे
याचामि, याचावः, याचामः	याचे, याचावहे, याचामहे
लृट् (प०)	**लृट् (आ०)**
याचिष्यति, याचिष्यतः, याचिष्यन्ति	याचिष्यते, याचिष्येते, याचिष्यन्ते
याचिष्यसि, याचिष्यथः, याचिष्यथ	याचिष्यसे, याचिष्येथे, याचिष्यध्वे
याचिष्यामि, याचिष्यावः, याचिष्यामः	याचिष्ये, याचिष्यावहे, याचिष्यामहे
लोट् (प०)	**लोट् (आ०)**
याचतु, याचताम्, याचन्तु	याचताम्, याचेताम्, याचन्ताम्
याच, याचतम्, याचत	याचस्व, याचेथाम्, याचध्वम्
याचानि, याचाव, याचाम	याचै, याचावहै, याचामहै
लङ् (प०)	**लङ् (आ०)**
अयाचत्, अयाचताम्, अयाचन्	अयाचत, अयाचेताम्, अयाचन्त
अयाचः, अयाचतम्, अयाचत	अयाचथाः, अयाचेथाम्, अयाचध्वम्
अयाचम्, अयाचाव, अयाचाम	अयाचे, अयाचावहि, अयाचामहि
विधिलिङ् (प०)	**विधिलिङ् (आ०)**
याचेत्, याचेताम्, याचेयुः	याचेत, याचेयाताम्, याचेरन्
याचेः, याचेतम्, याचेत	याचेथाः, याचेयाथाम्, याचेध्वम्
याचेयम्, याचेव, याचेम	याचेय, याचेवहि, याचेमहि

नी—ले जाना, पहुँचाना

लट् (प०)	**लट् (आ०)**
नयति, नयतः, नयन्ति	नयते, नयेते, नयन्ते

नयसि, नयथः, नयथ — नयसे, नयेथे, नयध्वे
नयामि, नयावः, नयामः — नये, नयावहे, नयामहे

लृट् (प०) — **लृट् (आ०)**

नेष्यति, नेष्यतः, नेष्यन्ति — नेष्यते, नेष्येते, नेष्यन्ते
नेष्यसि, नेष्यथः, नेष्यथ — नेष्यसे, नेष्येथे, नेष्यध्वे
नेष्यामि, नेष्यावः, नेष्यामः — नेष्ये, नेष्यावहे, नेष्यामहै

लोट् (प०) — **लोट् (आ०)**

नयतु, नयताम्, नयन्तु — नयताम्, नयेताम्, नयन्ताम्
नय, नयतम्, नयत — नयस्व, नयेथाम्, नयध्वम्
नयानि, नयाव, नयाम — नयै, नयावहै, नयामहै

लङ् (प०) — **लङ् (आ०)**

अनयत्, अनयताम्, अनयन् — अनयत, अनयेताम्, अनयन्त
अनयः, अनयतम्, अनयत — अनयथाः, अनयेथाम्, अनयध्वम्
अनयम्, अनयाव, अनयाम — अनये, अनयावहि, अनयामहि

विधिलिङ् (प०) — **विधिलिङ् (आ०)**

नयेत्, नयेताम्, नयेयुः — नयेतः, नयेयाताम्, नयेरन्
नयेः, नयेतम्, नयेत — नयेथाः, नयेयाथाम्, नयेध्वम्
नयेयम्, नयेव, नयेम — नयेय, नयेवहि, नयेमहि

हृ—हरण करना

लट् (प०) — **लट् (आ०)**

हरति, हरतः, हरन्ति — हरते, हरेते, हरन्ते
हरसि, हरथः, हरथ — हरसे, हरेथे, हरध्वे
हरामि, हरावः, हरामः — हरे, हरावहे, हरामहे

लृट् (प०) — **लृट् (आ०)**

हरिष्यति, हरिष्यतः, हरिष्यन्ति — हरिष्यते, हरिष्येते, हरिष्यन्ते
हरिष्यसि, हरिष्यथः, हरिष्यथ — हरिष्यसे, हरिष्येथे, हरिष्यध्वे
हरिष्यामि, हरिष्यावः, हरिष्यामः — हरिष्ये, हरिष्यावहे, हरिष्यामहे

लोट् (प०) — **लोट् (आ०)**

हरतु, हरताम्, हरन्तु — हरताम्, हरेताम्, हरन्ताम्

हर, हरतम्, हरत
हराणि, हराव, हराम

लङ् (प०)

अहरत्, अहरताम्, अहरन्
अहरः, अहरतम्, अहरत
अहरम्, अहराव अहराम

विधिलिङ् (प०)

हरेत्, हरेताम्, हरेयुः
हरेः, हरेतम्, हरेत
हरेयम्, हरेव, हरेम

हरस्व, हरेथाम्, हरध्वम्
हरै, हरावहै, हरामहै

लङ् (आ०)

अहरत, अहरेताम्, अहरन्त
अहरथाः, अहरेथाम्, अहरध्वम्
अहरे, अहरावहि, अहरामहि

विधिलिङ् (आ०)

हरेत, हरेयाताम्, हरेरन्
हरेथाः, हरेयाथाम्, हरेध्वम्
हरेय, हरेवहि, हरेमहि

२–अदादिगण

अद्—खाना

लट्

अत्ति, अत्तः, अदन्ति
अत्सि, अत्थः, अत्थ
अद्मि, अद्वः, अद्मः

लृट्

अत्स्यति, अत्स्यतः, अत्स्यन्ति
अत्स्यसि, अत्स्यथः, अत्स्यथ
अत्स्यामि, अत्स्यावः, अत्स्यामः

लोट्

अत्तु, अत्ताम्, अदन्तु
अद्धि, अत्तम्, अत्त
अदानि, अदाव, अदाम

लङ्

आदत्, आत्ताम्, आदन्
आदः, आत्तम्, आत्त

अस्—होना

लट्

अस्ति, स्तः, सन्ति
असि, स्थः, स्थ
अस्मि, स्वः, स्मः

लृट्

भविष्यति, भविष्यतः, भविष्यन्ति
भविष्यसि, भविष्यथः, भविष्यथ
भविष्यामि, भविष्यावः, भविष्यामः

लोट्

अस्तु, स्ताम्, सन्तु
एधि, स्तम्, स्त
असानि, असाव, असाम

लङ्

आसीत्, आस्ताम्, आसन्
आसीः, आस्ताम्, आस्त

आदम्, आद्व, आद्म

विधिलिङ्

अद्यात्, अद्याताम्, अद्युः

अद्याः, अद्यातम् अद्यात

अद्याम्, अद्याव्, अद्याम

आसम्, आस्व, आस्म

विधिलिङ्

स्यात्, स्याताम्, स्युः

स्याः, स्यातम्, स्यात्

स्याम्, स्याव, स्याम

रुद्—रोना

लट्

रोदिति, रुदितः, रुदन्ति

रोदिषि, रुदिथः, रुदिथ

रोदिमि, रुदिवः, रुदिमः

लृट्

रोदिष्यति, रोदिष्यतः, रोदिष्यन्ति

रोदिष्यसि, रोदिष्यथः, रोदिष्यथ

रोदिष्यामि, रोदिष्यावः, रोदिष्यामः

लोट्

रोदितु, रुदिताम्, रुदन्तु

रुदिहि, रुदितम्, रुदित

रोदानि, रोदाव, रोदाम

लङ्

अरोदीत्, अरुदिताम्ः, अरुदन्

अरोदीः, अरुदितम्, अरुदित

अरोदम्, अरुदिव, अरुदिम

विधिलिङ्

रुद्यात्, रुद्याताम् रुद्युः

रुद्याः, रुद्यातम् रुद्यात

रुद्याम्, रुद्याव, रुद्याम

स्वप्—सोना

लट्

स्वपिति, स्वपितः, स्वपन्ति

स्वपिषि, स्वपिथः, स्वपिथ

स्वपिमि, स्वपिवः, स्वपिमः

लृट्

स्वप्स्यति, स्वप्स्यतः, स्वप्स्यन्ति

स्वप्स्यसि, स्वप्स्यथः, स्वप्स्यथ

स्वप्स्यामि, स्वप्स्यावः, स्वप्स्यामः

लोट्

स्वपितु, स्वपिताम्, स्वपन्तु

स्वपिहि, स्वपितम् स्वपित

स्वपानि, स्वपाव, स्वपाम

लङ्

अस्वपीतः अस्वपीताम् अस्वपन्

अस्वपीः, अस्वपितम्, अस्वपित

अस्वपम् अस्वपिव, अस्वपिम

विधिलिङ्

स्वप्यात्, स्वप्याताम्, स्वप्युः

स्वप्याः, स्वप्यातम्, स्वप्यात

स्वप्याम्, स्वप्याव, स्वप्याम

हन्—मारना

लट्

हन्ति, हतः, घ्नन्ति

इ—जाना

लट्

एति, इतः, यन्ति

हंसि, हथः, हथ
हन्मि, हन्वः, हन्मः

लृट्

हनिष्यति, हनिष्यतः, हनिष्यन्ति
हनिष्यसि, हनिष्यथः, हनिष्यथ
हनिष्यामि, हनिष्यावः, हनिष्यामः

लोट्

हन्तु, हताम्, घ्नंतु
जहि, हतम्, हत
हनानि, हनाव, हनाम

लङ्

अहन्, अहताम्, अघ्नन्
अहः, अहतम्, अहत
अहनम्, अहन्व, अहन्म

विधिलिङ्

हन्यात्, हन्याताम्, हन्युः
हन्याः हन्यातम्, हन्यात
हन्याम्, हन्याव, हन्याम

एषि, इथः, इथ
एमि, इवः, इमः

लृट्

एष्यति, एष्यतः, एष्यन्ति
एष्यसि, एष्यथः, एष्यथ
एष्यामि, एष्यावः, एष्यामः

लोट्

एतु, इताम् यन्तु
इहि; इतम् इत
अयानि, अयाव, अयाम

लङ्

ऐत्, ऐताम् आयन्
ऐः, ऐतम्, ऐत
आयम्, ऐव, ऐम

विधिलिङ्

इयात्, इयाताम्, इयुः
इयाः, इयातम्, इयात
इयाम्, इयाव इयाम

आस्-बैठना

लट्

आस्ते, आसाते, आसते
आस्से, आसाथे, आध्वे
आसे, आस्वहे, आस्महे

लृट्

आसिष्यते, आसिष्येते, आसिष्यन्ते
आसिष्यसे, आसिष्येथे, आसिष्यध्वे
आसिष्ये, आसिष्यावहे, आसिष्यामहे

लोट्

आस्ताम्, आसाताम्, आसताम्

शी-शयन करना

लट्

शेते, शयाते, शेरते
शेषे, शयाथे, शेध्वे
शये, शेवहे, शेमहे

लृट्

शयिष्यते, शयिष्येते, शयिष्यन्ते
शयिष्यसे, शयिष्येथे, शयिष्यध्वे
शयिष्ये, शयिष्यावहे, शयिष्यामहे

लोट्

शेताम्, शयाताम्, शेरताम्

आस्था, आसाथाम्, आध्वम्
आसै, आसावहै, आसामहै

लङ्

आस्त, आसाताम्, आसत
आस्थाः, आसाथाम्, आध्वम्
आसि, आस्वहि, आस्महि

विधिलिङ्

आसीत्, आसीयाताम्, आसीरन्
आसीथाः, आसीयाथाम्, आसीध्वम्
आसीय, आसीवहि, आसीमहि

अधि-इ—अध्ययन करना

लट्

अधीते, अधीयाते, अधीयते
अधीषे, अधीयाथे, अधीध्वे
अधीये, अधीवहे, अधीमहे

लृट्

अध्येष्यते, अध्येष्येते, अध्येष्यन्ते
अध्येष्यसे, अध्येष्येथे, अध्येष्यध्वे
अध्येष्ये, अध्येष्यावहे, अध्येष्यामहे

लोट्

अधीताम्, अधीयाताम्, अधीयताम्
अधीष्व, अधीयाथाम्, अधीध्वम्
अध्ययै, अध्ययावहै, अध्ययामहै

लङ्

अध्यैत, अध्यैयाताम्, अध्यैयत
अध्यैथाः, अध्यैयाथाम्, अध्यैध्वम्
अध्यै, अध्यैवहि, अध्यैमहि

शेष्व, शयाथाम्, शेध्वम्
शयै, शयावहै, शयामहै

लङ्

अशेत, अशेयाताम्, अशेरत
अशेथाः, अशेयाथाम्, अशेध्वम्
अशयि, अशेवहि, अशेमहि

विधिलिङ्

शयीत, शयीयाताम्, शयीरन्
शयीथाः, शयीयाथाम् शयीध्वम्
शयीय, शयीवहि, शयीमहि

दुह्—दुहना

लट् (प०)

दोग्धि, दुग्धः, दुहन्ति
धोक्षि, दुग्धः, दुग्ध
दोह्मि, दुह्वः, दुह्मः

लृट् (प०)

धोक्ष्यति, धोक्ष्यतः, धोक्ष्यन्ति
धोक्ष्यसि, धोक्ष्यथः, धोक्ष्यथ
धोक्ष्यामि, धोक्ष्यावः, धोक्ष्यामः

लोट् (प०)

दोग्धु, दुग्धाम्, दुहन्तु
दुग्धि, दुग्धम्, दुग्ध
दोहानि, दोहाव, दोहाम

लङ् (प०)

अधोक्, अदुग्धाम्, अदुहन्
अधोक्, अदुग्धम्, अदुग्ध
अदोहम्, अदुह्व, अदुह्म

विधिलिङ्

अधीयीत, अधीयीयाताम्, अधीयीरन्
अधीयीथाः, अधीयीयाथाम्, अधीयीध्वम्
अधीयीय, अधीयीवहि, अधीयीमहि

विधिलिङ्

दुह्यात्, दुह्याताम्, दुह्युः
दुह्याः, दुह्यातम्, दुह्यात
दुह्याम्, दुह्याव, दुह्याम

ब्रू—स्पष्ट बोलना

लट् (प०)

ब्रवीति आह, ब्रूतः आहतुः, ब्रुवन्ति आहुः
ब्रवीषि आत्थ, ब्रूथः आहथुः, ब्रूथ
ब्रवीमि, ब्रूवः, ब्रूमः

लट् (आ०)

ब्रूते, ब्रुवाते, ब्रुवते
ब्रूषे, ब्रुवाथे, ब्रूध्वे
ब्रुवे, ब्रूवहे, ब्रूमहे

लृट् (प०)

वक्ष्यति, वक्ष्यतः, वक्ष्यन्ति
वक्ष्यसि, वक्ष्यथः, वक्ष्यथ
वक्ष्यामि, वक्ष्यावः, वक्ष्यामः

लृट् (आ०)

वक्ष्यते, वक्ष्येते, वक्ष्यन्ते
वक्ष्यसे, वक्ष्येथे, वक्ष्यध्वे
वक्ष्ये, वक्ष्यावहे, वक्ष्यामहे

लोट् (प०)

ब्रवीतु, ब्रूताम्, ब्रुवन्तु
ब्रूहि, ब्रूतम्, ब्रूत
ब्रवाणि, ब्रवाव, ब्रवाम

लट् (आ०)

ब्रूताम्, ब्रुवाताम्, ब्रुवताम्
ब्रूष्व, ब्रुवाथाम्, ब्रूध्वम्
ब्रवै, ब्रवावहै, ब्रवामहै

लङ् (प०)

अब्रवीत्, अब्रूताम् अब्रुवन्
अब्रवीः, अब्रूतम्, अब्रूत
अब्रवम्, अब्रूव, अब्रूम

लङ् (आ०)

अब्रूत, अब्रुवाताम्, अब्रुवत
अब्रूथाः, अब्रुवाथाम्, अब्रूध्वम्
अब्रुवि, अब्रूवहि, अब्रूमहि

विधिलिङ् (प०)

ब्रूयात्, ब्रूयाताम्, ब्रूयुः
ब्रूयाः, ब्रूयातम्, ब्रूयात
ब्रूयाम्, ब्रूयाव, ब्रूयाम

विधिलिङ् (आ०)

ब्रुवीत, ब्रुवीयाताम्, ब्रुवीरन्
ब्रुवीथाः, ब्रुवीयाथाम्, ब्रुवीध्वम्
ब्रुवीय, ब्रुवीवहि, ब्रुवीमहि

३—जुहोत्यादिगण

हु—हवन करना; खाना; लेना

भी—डरना

लट्	लट्
जुहोति, जुहुतः, जुह्वति	बिभेति, बिभी (भि) तः, बिभ्यति
जुहोषि, जुहुथः, जुहुथ	बिभेषि, बिभीथिः, बिभीभिथ
जुहोमि, जुहुवः, जुहुमः	बिभेमि, बिभी (भि) वः, बिभी (भि) मः
लृट्	**लृट्**
होष्यति, होष्यतः, होष्यन्ति	भेष्यति, भेष्यतः, भेष्यन्ति
होष्यसि, होष्यथः, होष्यथ	भेष्यसि, भेष्यथः, भेष्यथ
होष्यामि, होष्यावः, होष्यामः	भेष्यामि, भेष्यावः, भेष्यामः
लोट्	**लोट्**
जुहोतु, जुहुताम्, जुह्वतु	बिभेतु, बिभी, (भि) ताम् बिभ्यतु
जुहुधि, जुहुतम्, जुहुत	बिभी(भि)हि, बिभी(भि)तम्, बिभी(भि)त
जुहवानि, जुहवाव, जुहवाम	बिभयानि, बिभयाव, बिभयाम्
लङ्	**लङ्**
अजुहोत्, अजुहुताम्, अजुहवुः	अबिभेत्, अबिभी (भि) ताम्, अबिभयुः
अजुहोः, अजुहुतम्, अजुहुत	अबिभेः, अबिभि(भि)तम्, अबिभी(भि)त
अजुहवम्, अजुहुव, अजुहुम	अबिभयम्, अबिभी(भि)व, अबिभी(भि)म
विधिलिङ्	**विधिलिङ्**
जुहुयात्, जुहुयाताम्, जुहुयुः	बिभी (भि) यात्, बिभी (भि) याताम् बिभी (भि) युः
जुहुयाः जुहुयाताम्, जुहुयात	बिभी (भि) याः बिभी (भि) यातम्, बिभी (भि) यात
जुहुयाम्, जुहुयाव, जुहुयाम	बिभी (भि) याम् बिभी (भि) याव, बिभी (भि) याम

दा—देना

लट् (प०)	लट् (आ०)
ददाति, दत्तः, ददति	दत्ते, ददाते, ददते
ददासि, दत्थः, दत्थ	दत्से, ददाथे, दद्ध्वे
ददामि, दद्वः, दद्मः	ददे, दद्वहे, दद्महे

लट् (प०)

दास्यति, दास्यतः, दास्यन्ति
दास्यसि, दास्यथः, दास्यथ
दास्यामि, दास्यावः, दास्यामः

लट् (आ०)

दास्यते, दास्येते, दास्यन्ते
दास्यसे, दास्येथे, दास्यध्वे
दास्ये, दास्यावहे, दास्यामहे

लोट् (प०)

ददातु, दत्ताम्, ददतु
देहि, दत्तम्, दत्त
ददानि, ददाव, ददाम

लोट् (आ०)

दत्ताम्, ददाताम्, ददताम्
दत्स्व, ददाथाम्, दद्ध्वम्
ददै, ददावहै, ददामहै

लङ् (प०)

अददात्, अदत्ताम्, अददुः
अददाः अदत्तम्, अदत्त
अददाम्, अदद्व, अदद्म

लङ् (आ०)

अदत्त, अददाताम्, अददत
अदत्थाः, अददाथाम् अदद्ध्वम्
अददि, अदद्वहि, अदद्महि

विधिलिङ् (प०)

दद्यात्, दद्याताम्, दद्युः
दद्याः, दद्यातम्, दद्यात
दद्याम्, दद्याव, दद्याम

विधिलिङ् (आ०)

ददीत, ददीयाताम्, ददीरन्
ददीयाः, ददीयाथाम्, ददीध्वम्
ददीय, ददीवहि, ददीमहि

४—दिवादिगण

दिव्—जुआ खेलना, चमकना आदि

लट्

दीव्यति, दीव्यतः, दीव्यन्ति
दीव्यसि, दीव्यथः, दीव्यथ
दीव्यामि, दीव्यावः, दीव्यामः

लृट्

देविष्यति, देविष्यतः, देविष्यन्ति
देविष्यसि, देविष्यथः, देविष्यथ
देविष्यामि, देविष्यावः, देविष्यामः

भ्रम्—भ्रान्त होना, घूमना

लट्

भ्राम्यति, भ्राम्यतः, भ्राम्यन्ति
भ्राम्यसि, भ्राम्यथः, भ्राम्यथ
भ्राम्यामि, भ्राम्यावः, भ्राम्यामः

लृट्

भ्रमिष्यति, भ्रमिष्यतः, भ्रमिष्यन्ति
भ्रमिष्यसि, भ्रमिष्यथः, भमिष्यथ
भ्रमिष्यामि, भ्रमिष्यावः, भ्रमिष्यामः

लोट्

दीव्यतु, दीव्यताम्, दीव्यन्तु
दीव्य, दीव्यतम्, दीव्यत
दीव्यानि, दीव्याव, दीव्याम

लङ्

अदीव्यत्, अदीव्यताम्, अदीव्यन्
अदीव्यः, अदीव्यतम्, अदीव्यत
अदीव्यम्, अदीव्याव, अदीव्याम

विधिलिङ्

दीव्येत्, दीव्येताम्, दीव्येयुः
दीव्येः, दीव्येताम्, दीव्येत
दीव्येयम्; दीव्येव, दीव्येम

लोट्

भ्राम्यतु, भ्राम्यताम्, भ्राम्यन्तु
भ्राम्य, भ्राम्यतम्, भ्राम्यत
भ्राम्याणि, भ्राम्याव, भ्राम्याम

लङ्

अभ्राम्यत्, अभ्राम्यतम्, अभ्राम्यत
अभ्राम्यः, अभ्राम्यतम्, अभ्राम्यत
अभ्राम्यम्, अभ्राम्याव, अभ्राम्याम

विधिलिङ्

भ्राम्येत्, भ्राम्येताम्, भ्राम्येयुः
भ्राम्येः, भ्राम्येतम्, भ्राम्येत
भ्राम्येयम्, भ्राम्येव, भ्राम्येम

युध्—युद्ध करना

लट्

युध्यते, युध्येते, युध्यन्ते
युध्यसे, युध्येथे, युध्यध्वे
युध्ये, युध्यावहे, युध्यामहे

लृट्

योत्स्यते, योत्स्येते, योत्स्यन्ते
योत्स्यसे, योत्स्येथे, योत्स्यध्वे
योत्स्ये, योत्स्यावहे, योत्स्यामहे

लोट्

युध्यताम्, युध्येताम्, युध्यन्ताम्
युध्यस्व, युध्येथाम्; युध्यध्वम्
युध्यै, युध्यावहै, युध्यामहै

जन्—प्रादुर्भूत होना

लट्

जायते, जायेते, जायन्ते
जायसे, जायेथे, जायध्वे
जाये, जायावहे, जायामहे

लृट्

जनिष्यते, जनिष्येते, जनिष्यन्ते
जनिष्यसे, जनिष्येथे, जनिष्यध्वे
जनिष्ये, जनिष्यावहे, जनिष्यामहे

लोट्

जायताम्, जायेताम्, जायन्ताम्
जायस्व, जायेथाम्, जायध्वम्
जायै, जायावहै, जायामहै

लङ्
अयुध्यत, अयुध्येताम्, अयुध्यन्त
अयुध्यथाः, अयुध्येथाम्, अयुध्यध्वम्
अयुध्ये, अयुध्यावहि, अयुध्यामहि

विधिलिङ्
युध्येत, युध्येयाताम्, युध्येरन्
युध्येथाः, युध्येयाथाम्, युध्येध्वम्
युध्येय, युध्येवहि, युध्येमहि

लङ्
अजायत, अजायेताम्, अजायन्त
अजायथाः, अजायेथाम्, अजायध्वम्
अजाये, अजायावहि, अजायामहि

विधिलिङ्
जायेत, जायेयाताम्, जायेरन्
जायेथाः, जायेयाथाम्, जायेध्वम्
जायेय, जायेवहि, जायेमहि

नश्—नष्ट होना

लट्
नश्यति, नश्यतः, नश्यन्ति
नश्यसि, नश्यथः, नश्यथ
नश्यामि, नश्यावः, नश्यामः

लृट्
नशिष्यति, नशिष्यतः, नशिष्यन्ति
नशिष्यसि, नशिष्यथः, नशिष्यथ
नशिष्यामि, नशिष्यावः, नशिष्यामः

(अथवा)
नङ्क्ष्यति, नङ्क्ष्यतः, नङ्क्ष्यन्ति
नङ्क्ष्यसि, नङ्क्ष्यथः, नङ्क्ष्यथ
नङ्क्ष्यामि, नङ्क्ष्यावः, नङ्क्ष्यामः

लोट्
नश्यतु, नश्यताम्, नश्यन्तु
नश्य, नश्यतम्, नश्यत
नश्यानि, नश्याव, नश्याम

लङ्
अनश्यत्, अनश्यताम्, अनश्यन्
अनश्यः, अनश्यतम्, अनश्यत
अनश्यम्, अनश्याव, अनश्याम

नृत्—नाचना

लट्
नृत्यति, नृत्यतः, नृत्यन्ति
नृत्यसि, नृत्यथः, नृत्यथ
नृत्यामि, नृत्यावः, नृत्यामः

लृट्
नर्तिष्यति, नर्तिष्यतः, नर्तिष्यन्ति
नर्तिष्यसि, नर्तिष्यथः, नर्तिष्यथ
नर्तिष्यामि, नर्तिष्यावः, नर्तिष्यामः

अथवा
नर्त्स्यंति, नर्त्स्यंतः, नर्त्स्यंन्ति
नर्त्स्यंसिं, नर्त्स्यंथः, नर्त्स्यंथ
नर्त्स्यामि, नर्त्स्यावः, नर्त्स्यामः

लोट्
नृत्यतु, नृत्यताम्, नृत्यन्तु
नृत्य, नृत्यतम्, नृत्यत
नृत्यानि, नृत्याव, नृत्याम

लङ्
अनृत्यत्, अनृत्यताम्, अनृत्यन्
अनृत्यः, अनृत्यतम्, अनृत्यत
अनृत्यम्, अनृत्याव, अनृत्याम

विधिलिङ्	विधिलिङ्
नश्येत्, नश्येताम्, नश्येयुः	नृत्येत्, नृत्येताम्, नृत्येयुः
नश्येः, नश्येतम्, नश्येत	नृत्येः, नृत्येतम्, नृत्येत
नश्येयम्, नश्येव, नश्येम	नृत्येयम्, नृत्येव, नृत्येम

५—स्वादिगण

सु—स्नान करना, रस निचोड़ना आदि

लट् (प०)	लट् (आ०)
सुनोति, सुनुतः, सुन्वन्ति	सुनुते, सुन्वाते, सुन्वते
सुनोषि, सुनुथः, सुनुथ	सुनुषे, सुन्वाथे, सुनुध्वे
सुनोमि, सुनुवः-स्व, सुनुमः-न्मः	सुन्वे, सुनुवहे-न्वहे, सुनुमहे-न्महे

लृट् (प०)	लृट् (आ०)
सोष्यति, सोष्यतः, सोष्यन्ति	सोष्यते, सोष्येते, सोष्यन्ते
सोष्यसि, सोष्यथः, सोष्यथ	सोष्यसे, सोष्येथे, सोष्यध्वे
सोष्यामि, सोष्यावः, सोष्यामः	सोष्ये, सोष्यावहे, सोष्यामहे

लोट् (प०)	लोट् (आ०)
सुनोतु, सुनुताम्, सुन्वन्तु	सुनुताम्, सुन्वाताम्, सुन्वताम्
सुनु, सुनुतम्, सुनुत	सुनुष्व, सुन्वाथाम्, सुनुध्वम्
सुनवानि, सुनवाव, सुनवाम	सुनवै, सुनवावहै, सुनवामहै

लङ् (प०)	लङ् (आ०)
असुनोत्, असुनुताम्, असुन्वन्	असुनुत, असुन्वाताम्, असुन्वत
असुनोः, असुनुतम्, असुनुत	असुनुथाः, असुन्वाथाम्, असुनध्वम्
असुनवम्, असुनुव-न्व, असुनुम-न्म,	असुन्वि, असुन्वहि-असुनुमहि

विधिलिङ् (प०)	विधिलिङ् (आ०)
सुनुयात्, सुनुयाताम्, सुनुयुः,	सुन्वीत, सुन्वीयाताम्, सुन्वीरन्
सुनुयाः, सुनुयातम्, सुनुयात	सुन्वीयाः, सुन्वीयाथाम्, सुन्वीध्वम्
सुनुयाम्, सुनुयाव, सुनुयाम	सुन्वीय, सुन्वीवहि, सुन्वीमहि

आप्—प्राप्त करना

लट्

आप्नोति, आप्नुतः, आप्नुवन्ति
आप्नोषि, आप्नुथः, आप्नुथ
आप्नोमि, आप्नुवः, आप्नुमः

लृट्

आप्स्यति, आप्स्यतः, आप्स्यन्ति
आप्स्यसि, आप्स्यथः, आप्स्यथ
आप्स्यामि, आप्स्यावः, आप्स्यामः

लोट्

आप्नोतु, आप्नुताम्, आप्नुवन्तु
आप्नुहि, आप्नुतम्, आप्नुत
आप्नवानि, आप्नवाव, आप्नवाम

लङ्

आप्नोत्, आप्नुताम्, आप्नुवन्
आप्नोः, आप्नुतम्, आप्नुत
आप्नवम्, आप्नुवः, आप्नुमः

विधिलिङ्

आप्नुयात् आप्नुयाताम्, आप्नुयुः
आप्नुयाः आप्नुयाताम्-आप्नुयात
आप्नुयाम्, आप्नुयाव, आप्नुयाम

शक्—शक्त होना

लट्

शक्नोति, शक्नुतः, शक्नुवन्ति
शक्नोषि, शक्नुथः, शक्नुथ
शक्नोमि, शक्नुवः, शक्नुमः

लृट्

शक्ष्यति, शक्ष्यतः, शक्ष्यन्ति
शक्ष्यसि, शक्ष्यथः, शक्ष्यथ
शक्ष्यामि, शक्ष्यावः, शक्ष्यामः

लोट्

शक्नोतु, शक्नुताम्, शक्नुवन्तु
शक्नुहि, शक्नुतम्, शक्नुत
शक्नवानि, शक्नवाव, शक्नवाम

लङ्

अशक्नोत्, अशक्नुताम्, अशक्नुवन्
अशक्नोः, अशक्नुतम्, अशक्नुत
अशक्नुवम्, अशक्नुव, अशक्नुम

विधिलिङ्

शक्नुयात्, शक्नुयाताम्, शक्नुयुः
शक्नुयाः, शक्नुयातम्, शक्नुयात
शक्नुयाम्, शक्नुयाव, शक्नुयाम

६—तुदादिगण

तुद्—व्यथा पहुँचाना, कष्ट देना

लट् (प०)

तुदति, तुदतः, तुदन्ति
तुदसि, तुदथः, तुदथ
तुदामि; तुदावः, तुदामः

लट् (आ०)

तुदते, तुदेते, तुदन्ते
तुदसे, तुदेथे, तुदध्वे
तुदे, तुदावहे, तुदामहे

लृट्	लृट्
तोत्स्यति, तोत्स्यतः, तोत्स्यन्ति	तोत्स्यते, तोत्स्येते, तोत्स्यन्ते
तोत्स्यसि, तोत्स्यथः, तोत्स्यथ	तोत्स्यसे, तोत्स्येथे, तोत्स्यध्वे
तोत्स्यामि, तोत्स्यावः, तोत्स्यामः	तोत्स्ये, तोत्स्यावहे, तोत्स्यामहे

लोट् (प०)	लोट् (आ०)
तुदतु, तुदताम्, तुदन्तु	तुदताम्, तुदेताम्, तुदन्ताम्
तुद, तुदतम्, तुदत	तुदस्व, तुदेथाम्, तुदध्वम्
तुदानि, तुदाव, तुदाम	तुदै, तुदावहै, तुदामहै

लङ् (प०)	लङ् (आ०)
अतुदत्, अतुदताम्, अतुदन्	अतुदत, अतुदेताम्, अतुदन्त
अतुदः, अतुदतम्, अतुदत	अतुदथाः, अतुदेथाम्, अतुदध्वम्
अतुदम्, अतुदाव, अतुदाम	अतुदे, अतुदावहि, अतुदामहि

विधिलिङ् (प०)	विधिलिङ् (आ०)
तुदेत्, तुदेताम्, तुदेयुः	तुदेत, तुदेयाताम्, तुदेरन्
तुदेः, तुदेतम्, तुदेत	तुदेथाः, तुदेयाथाम्, तुदेध्वम्
तुदेयम्, तुदेव, तुदेम	तुदेय, तुदेवहि, तुदेमहि

मुच्—मोचन करना, छोड़ना

लट् (प०)	लट् (आ०)
मुञ्चति, मुञ्चतः, मुञ्चन्ति	मुञ्चते, मुञ्चेते, मुञ्चन्ते
मुञ्चसि, मुञ्चथः, मुञ्चथ	मुञ्चसे, मुञ्चेथे, मुञ्चध्वे
मुञ्चामि, मुञ्चावः, मुञ्चामः	मुञ्चे, मुञ्चावहे, मुञ्चामहे

लृट्	लृट्
मोक्ष्यति, मोक्ष्यतः, मोक्ष्यन्ति	मोक्ष्यते, मोक्ष्येते, मोक्ष्यन्ते
मोक्ष्यसि; मोक्ष्यथः; मोक्ष्यथः	मोक्ष्यसे, मोक्षयेथे मोक्ष्यध्वे
मोक्ष्यामि, मोक्ष्यावः, मोक्ष्यामः	मोक्ष्ये, मोक्ष्यावहे, मोक्ष्यामहे

लोट् (प०)	लोट् (आ०)
मुञ्चतु, मुञ्चताम् मुञ्चन्तु	मुञ्चताम्, मुञ्चेताम्, मुञ्चन्ताम्
मुञ्च, मुञ्चतम् मुञ्चत	मुञ्चस्व, मुञ्चेथाम्; मुञ्चध्वम्
मुञ्चानि, मुञ्चाव, मुञ्चाम	मुञ्चै, मुञ्चावहै, मुञ्चामहै

लङ् (प०)	लङ् (आ०)
अमुञ्चत्, अमुञ्चताम्, अमुञ्चन्	अमुञ्चत, अमुञ्चेताम्, अमुञ्चन्त
अमुञ्चः, अमुञ्चतम्, अमुञ्चत	अमुञ्चथाः, अमुञ्चेथाम्, अमुञ्चध्वम्
अमुञ्चम्, अमुञ्चाव, अमुञ्चाम	अमुञ्चे, अमुञ्चावहि, अमुञ्चामहि

विधिलिङ् (पं०)	विधिलिङ् (आ०)
मुञ्चेत्, मुञ्चेताम्, मुञ्चेयुः	मुञ्चेत, मुञ्चेयाताम्, मुञ्चेरन्
मुञ्चेः, मुञ्चेतम् मुञ्चेत	मुञ्चेथाः, मुञ्चेयाथाम्, मुञ्चेध्वम्
मुञ्चेयम्, मुञ्चेव, मुञ्चेम	मुञ्चेय, मुञ्चेवहि, मुञ्चेमहि

स्पृश्—छूना	पृच्छ—पूछना
लट्	**लट्**
स्पृशति, स्पृशतः, स्पृशन्ति	पृच्छति, पृच्छतः, पृच्छन्ति
स्पृशसि, स्पृशथः, स्पृशथ	पृच्छसि, पृच्छथः, पृच्छथ
स्पृशामि, स्पृशावः, स्पृशामः	पृच्छामि, पृच्छावः, पृच्छामः
लृट्	**लृट्**
स्प्रक्ष्यति, स्प्रक्ष्यतः, स्प्रक्ष्यन्ति	प्रक्ष्यति, प्रक्ष्यतः, प्रक्ष्यन्ति
स्प्रक्ष्यसि, स्प्रक्ष्यथः, स्प्रक्ष्यथ	प्रक्ष्यसि, प्रक्ष्यथः, प्रक्ष्यथ
स्प्रक्ष्यामि, स्प्रक्ष्यावः, स्प्रक्ष्यामः	प्रक्ष्यामि, प्रक्ष्यावः, प्रक्ष्यामः

(अथवा) स्पर्क्ष्यति, स्पर्क्ष्यतः, स्पर्क्ष्यन्ति
स्पर्क्ष्यसि, स्पर्क्ष्यथः, स्पर्क्ष्यथ
स्पर्क्ष्यामि, स्पर्क्ष्यावः, स्पर्क्ष्यामः

लोट्	लोट्
स्पृशतु, स्पृशताम्, स्पृशन्तु	पृच्छतु, पृच्छताम्, पृच्छन्तु
स्पृश, स्पृशतम्, स्पृशत	पृच्छ, पृच्छतम्, पृच्छत

स्पृशानि, स्पृशाव, स्पृशाम

लङ्

अस्पृशत्, अस्पृशताम्, अस्पृशन्
अस्पृशः, अस्पृशतम्, अस्पृशत
अस्पृशम्, अस्पृशाव, अस्पृशाम

विधिलिङ्

स्पृशेत्, स्पृशेताम्, स्पृशेयुः
स्पृशेः, स्पृशेतम्, स्पृशेत
स्पृशेयम्, स्पृशेव, स्पृशेम

इष्—इच्छा करना

लट्

इच्छतिः, इच्छतः, इच्छन्ति
इच्छसि, इच्छथः, इच्छथ
इच्छामि, इच्छावः, इच्छामः

लृट्

एषिष्यति, एषिष्यतः, एषिष्यन्ति
एषिष्यसि, एषिष्यथः, एषिष्यथ
एषिष्यामि, एषिष्यावः, एषिष्यामः

लोट्

इच्छतु, इच्छताम्, इच्छन्तु
इच्छ, इच्छतम्, इच्छत
इच्छानि, इच्छाव, इच्छाम

लङ्

ऐच्छत्, ऐच्छताम्, ऐच्छन्
ऐच्छः, ऐच्छतम्, ऐच्छत
ऐच्छम्, ऐच्छाव, ऐच्छाम

पृच्छानि; पृच्छाव, पृच्छाम

लङ्

अपृच्छत्, अपृच्छताम्, अपृच्छन्
अपृच्छः, अपृच्छतम्, अपृच्छत
अपृच्छम्, अपृच्छाव, अपृच्छाम

विधिलिङ्

पृच्छेत्, पृच्छेताम्, पृच्छेयुः
पृच्छेः, पृच्छेतम्, पृच्छेत
पृच्छेयम्, पृच्छेव, पृच्छेम

मृ—मरना

लट् (आ०)

म्रियते, म्रियेते, म्रियन्ते
म्रियसे, म्रियेथे, म्रियध्वे
म्रिये, म्रियावहे, म्रियामहे

लृट्

मरिष्यति, मरिष्यतः, मरिष्यन्ति
मरिष्यसि, मरिष्यथः, मरिष्यथ
मरिष्यामि, मरिष्यावः, मरिष्यामः

लोट्

म्रियताम्, म्रियेताम्, म्रियन्ताम्
म्रियस्व, म्रियेथाम्, म्रियध्वम्
म्रियै, म्रियावहै, म्रियामहै

लङ्

अम्रियत, अम्रियेताम्, अम्रियन्त
अम्रियथाः, अम्रियेथाम्, अम्रियध्वम्
अम्रिये, अम्रियावहि, अम्रियामहि

विधिलिङ्
इच्छेत्, इच्छेताम्, इच्छेयुः
इच्छेः, इच्छेतम्, इच्छेत
इच्छेयम्, इच्छेव, इच्छेम

विधिलिङ्
म्रियेत, म्रियेयाताम्, म्रियेरन्
म्रियेथाः, म्रियेयाथाम्, म्रियेध्वम्
म्रियेय, म्रियेवहि, म्रियेमहि

७—रुधादिगण

रुध्—आवरण करना, रोकना

लट् (प०)
रुणद्धि, रुन्द्धः, रुन्धन्ति
रुणत्सि, रुन्द्धः, रुन्द्ध
रुणध्मि, रुन्ध्वः, रुन्ध्मः

लट् (आ०)
रुन्द्धे, रुन्धाते, रुन्धते
रुन्त्से, रुन्धाथे, रुन्द्ध्वे
रुन्धे, रुन्ध्वहे, रुन्ध्महे

लृट् (प०)
रोत्स्यति, रोत्स्यतः, रोत्स्यन्ति
रोत्स्यसि, रोत्स्यथः, रोत्स्यथ
रोत्स्यामि, रोत्स्यावः, रोत्स्यामः

लृट् (आ०)
रोत्स्यते, रोत्स्येते, रोत्स्यन्ते
रोत्स्यसे, रोत्स्येथे, रोत्स्यध्वे
रोत्स्ये, रोत्स्यावहे, रोत्स्यामहे

लोट्
रुणद्धु, रुन्द्धाम्, रुन्धन्तु
रुन्द्धि, रुन्द्धम्, रुन्द्ध
रुणधानि, रुणधाव, रुणधाम

लोट् (आ०)
रुन्द्धाम्, रुन्धाताम्, रुन्धताम्
रुन्त्स्व, रुन्धाथाम्, रुन्द्ध्वम्
रुणधै, रुणधावहै, रुणधामहै

लङ्
अरुणत्, अरुणत्, अरुन्धन्
अरुणः—णत्, अरुन्धम्, अरुन्द्ध
अरुणधम्, अरुन्ध्व, अरुन्ध्म

लङ्
अरुन्द्ध, अरुन्धाताम्, अरुन्धत
अरुन्द्धाः, अरुन्धाथाम्, अरुन्द्ध्वम्
अरुन्धि, अरुन्ध्वहि, अरुन्ध्महि

विधिलिङ् (प०)
रुन्ध्यात्, रुन्ध्याताम्, रुन्ध्युः
रुन्ध्याः, रुन्ध्यातम्, रुन्ध्यात
रुन्ध्याम्, रुन्ध्याव, रुन्ध्याम

विधिलिङ् (आ०)
रुन्धीत, रुन्धीयाताम्, रुन्धीरन्
रुन्धीथाः, रुन्धीयाथाम्, रुन्धीध्वम्
रुन्धीय, रुन्धीवहि, रुन्धीमहि

भुज्—पालन करना, खाना

लट् (प०)	लट् (आ०)
भुनक्ति, भुङ्क्तः, भुञ्जन्ति	भुङ्क्ते, भुञ्जाते, भुञ्जते
भुनक्षि, भुङ्क्थः, भुङ्क्थ	भुङ्क्षे, भुञ्जाथे, भुङ्ग्ध्वे
भुनज्मि, भुञ्ज्वः, भुञ्ज्मः	भुञ्जे, भुञ्जवहे, भुञ्जमहे
लृट्	**लृट्**
भोक्ष्यति, भोक्ष्यतः भोक्ष्यन्ति	भोक्ष्यते, भोक्ष्येते, भोक्ष्यन्ते
भोक्ष्यसि, भोक्ष्यथः, भोक्ष्यथ	भोक्ष्यसे, भोक्ष्येथे, भोक्ष्यध्वे
भोक्ष्यामि, भोक्ष्यावः, भोक्ष्यामः	भोक्ष्ये, भोक्ष्यावहे, भोक्ष्यामहे
लोट् (प०)	**लोट् (आ०)**
भुनक्तु, भुङ्क्ताम्, भुञ्जन्तु	भुङ्क्ताम् भुञ्जाताम्, भुञ्जताम्
भुङ्ग्धि, भुङ्क्तम्, भुङ्क्त	भुङ्क्ष्व, भुञ्जाथाम्, भुङ्ग्ध्वम्
भुनजानि, भुनजाव भुनजाम	भुनजै, भुनजावहै, भुनजामहै
लङ् (प०)	**लङ् (आ०)**
अभुनक्, अभुङ्क्ताम्, अभुञ्जन्	अभुङ्क्त, अभुञ्जाताम्, अभुञ्जत
अभुनः, अभुङ्क्तम्, अभुङ्क्त	अभुङ्क्था, अभुञ्जाथाम्, अभुङ्ग्ध्वम्
अभुनजम्, अभुञ्ज्व, अभुञ्ज्म	अभुञ्जि, अभुञ्जवहि, अभुञ्जमहि
विधिलिङ् (प०)	**विधिलिङ् (आ०)**
भञ्ज्यात, भुञ्ज्याताम्, भुञ्ज्युः	भुञ्जीत, भुञ्जीयाताम्, भुञ्जीरन्
भुञ्ज्याः, भुञ्ज्यातम्, भुञ्ज्यात	भुञ्जीथाः, भुञ्जीयाथाम्, भुञ्जीध्वम्
भुंज्याम्, भुंज्याव, भुंज्याम	भुंजीय, भुंजीवहि, भुंजीमहि

८—तनादिगण

तन्—विस्तार करना, फैलाना

लट् (पु०)	लट् (आ०)
तनोति, तनुतः, तन्वन्ति	तनुते, तन्वाते, तन्वते
तनोषि, तनुथः, तनुथ	तनुषे, तन्वाथे, तनुध्वे

तनोमि, तनुवः-न्वः, तनुमः-न्मः, तन्वे, तनुवहे-न्वहे, तनुमहे-न्महे

लृट् — **लृट्**

तनिष्यति, तनिष्यतः, तनिष्यन्ति — तनिष्यते, तनिष्येते, तनिष्यन्ते
तनिष्यसि, तनिष्यथः, तनिष्यथ — तनिष्यसे, तनिष्येथे, तनिष्यध्वे
तनिष्यामि, तनिष्यावः, तनिष्यामः — तनिष्ये, तनिष्यावहे, तनिष्यामहे

लोट् — **लोट्**

तनोतु, तनुताम्, तन्वन्तु — तनुताम्, तन्वाताम्, तन्वताम्
तनु, तनुतम्, तनुत — तनुष्व, तन्वाथाम्, तनुध्वम्
तनवानि, तनवाव तनवाम — तनवै, तनवावहै, तनवामहै

लङ् — **लङ्**

अतनोत्, अतनुताम्, अतन्वन् — अतनुत, अतन्वाताम्, अतन्वत
अतनोः, अतनुतम्, अतनुत — अतनुथाः, अतन्वाथाम्, अतनुध्वम्
अतनवम्, अतनुव-न्व, अतनुम-न्म, — अतन्वि, अतनुवहि-न्वहि, अतनुमहि-न्महि

विधिलिङ् — **विधिलिङ्**

तनुयात्, तनुयाताम्, तनुयुः — तन्वीत तन्वीयाताम्, तन्वीरन्
तनुयाः, तनुयातम्, तनुयात — तन्वीथाः, तन्वीयाथाम्, तन्वीध्वम्
तनुयाम्, तनुयाव, तनुयाम — तन्वीय, तन्वीवहि, तन्वीमहि

कृ—करना

लट् — **लट्**

करोति, कुरुतः, कुर्वन्ति — कुरुते, कुर्वाते, कुर्वते
करोषि, कुरुथः, कुरुथ — कुरुषे, कुर्वाथे, कुरुध्वे
करोमि, कुर्वः, कुर्मः — कुर्वे, कुर्वहे, कुर्महे

लृट् — **लृट्**

करिष्यति, करिष्यतः, करिष्यन्ति — करिष्यते, करिष्येते, करिष्यन्ते
करिष्यसि, करिष्यथः करिष्यथ — करिष्यसे, करिष्येथे, करिष्यध्वे

करिष्यामि, करिष्यावः, करिष्यामः करिष्ये, करिष्यावहे, करिष्यामहे

लोट्	लोट्
करोतु, कुरुताम्, कुर्वन्तु	कुरुताम्, कुर्वाताम्, कुर्वन्ताम्
कुरु, कुरुतम्, कुरुत	कुरुष्व, कुर्वाथाम्, कुरुध्वम्
करवाणि, करवाव, करवाम	करवै, करवावहै, करवामहै
लङ्	**लङ्**
अकरोत्, अकुरुताम्, अकुर्वन्	अकुरुत, अकुर्वाताम्, अकुर्वत
अकरोः, अकुरुतम्, अकुरुत	अकुरुथाः, अकुर्वाथाम्, अकुरुध्वम्
अकरवम्, अकुर्व, अकुर्म	अकुर्वि, अकुर्वहि, अकुर्महि
विधिलिङ्	**विधिलिङ्**
कुर्यात्, कुर्याताम्, कुर्युः	कुर्वीत, कुर्वीयाताम्, कुर्वीरन्
कुर्याः, कुर्यातम्, कुर्यात	कुर्वीथाः, कुर्वीयाथाम्, कुर्वीध्वम्
कुर्याम्, कुर्याव, कुर्याम	कुर्वीय, कुर्वीवहि, कुर्वीमहि

९—क्रयादिगण

क्री—खरीदना (द्रव्यविनिमये)

लट्	लट्
क्रीणाति, क्रीणीतः, क्रीणन्ति	क्रीणीते, क्रीणाते, क्रीणते
क्रीणासि, क्रीणीथः, क्रीणीथ	क्रीणीषे, क्रीणाथे, क्रीणीध्वे
क्रीणामि, क्रीणीवः, क्रीणीमः	क्रीणे, क्रीणीवहे, क्रीणीमहे
लृट् (प०)	**लृट् (प०)**
क्रेष्यति, क्रेष्यतः, क्रेष्यन्ति	क्रेष्यते, क्रेष्येते, क्रेष्यन्ते
क्रेष्यसि, क्रेष्यथः, क्रेष्यथ	क्रेष्यसे, क्रेष्येथे, क्रेष्यध्वे
क्रेष्यामि, क्रेष्यावः, क्रेष्यामः	क्रेष्ये, क्रेष्यावहे, क्रेष्यामहे
लोट् (प०)	**लोट्**
क्रीणातु, क्रीणीताम्, क्रीणन्तु	क्रीणीताम्, क्रीणाताम्, क्रीणताम्

क्रीणीहि, क्रीणीतम्, क्रीणीत | क्रीणीस्व, क्रीणाथाम्, क्रीणीध्वम्
क्रीणानि, क्रीणाव, क्रीणाम | क्रीणै, क्रीणावहै, क्रीणामहै

लङ् | **लङ्**

अक्रीणीत्, अक्रीणीताम्, अक्रीणन् | अक्रीणीत, अक्रीणाताम्, अक्रीणत
अक्रीणाः, अक्रीणीतम्, अक्रीणीत | अक्रीणीथाः, अक्रीणाथाम्, अक्रीणीध्वम्
अक्रीणाम्, अक्रीणीव, अक्रीणीम | अक्रीणि, अक्रीणिवहि, अक्रीणिमहि

विधिलिङ् | **विधिलिङ्**

क्रीणीयात्, क्रीणीयाताम्, क्रीणीयुः | क्रीणीत, क्रीणीयाताम्, क्रीणीरन्
क्रीणीयाः, क्रीणीयातम्, क्रीणीयात | क्रीणीथाः, क्रीणीयाथाम्, क्रीणीध्वम्
क्रीणीयाम्, क्रीणीयाव, क्रीणीयाम | क्रीणीय, क्रीणीवहि, क्रीणीमहि

ग्रह्—ग्रहण करना, लेना

लट् | **लट्**

गृह्णाति, गृह्णीतः, गृह्णन्ति | गृह्णीते, गृह्णाते, गृह्णन्ते
गृह्णासि, गृह्णीथः, गृह्णीथ | गृह्णीषे, गृह्णाथे, गृह्णीध्वे
गृह्णामि, गृह्णीवः, गृह्णीमः | गृह्णे, गृह्णीवहे, गृह्णीमहे

लृट् | **लृट्**

ग्रहीष्यति, ग्रहीष्यतः, ग्रहीष्यन्ति | ग्रहीष्यते, ग्रहीष्येते, ग्रहीष्यन्ते
ग्रहीष्यसि, ग्रहीष्यथः, ग्रहीष्यथ | ग्रहीष्यसे, ग्रहीष्येथे, ग्रहीष्यध्वे
ग्रहीष्यामि, ग्रहीष्यावः, ग्रहीष्यामः | ग्रहीष्ये, ग्रहीष्यावहे, ग्रहीष्यामहे

लोट् | **लोट्**

गृह्णातु, गृह्णीताम्, गृह्णन्तु | गृह्णीताम्, गृह्णाताम्, गृह्णताम्
गृहाण, गृहणीतम्, गृहणीत | गृह्णीष्व, गृह्णीथाम्, गृह्णीध्वम्
गृह्णानि, गृह्णाव, गृह्णाम् | गृह्णै, गृह्णावहै, गृह्णामहै

लङ् | **लङ्**

अगृह्णात्, अगृह्णीताम्, अगृह्णन् | अगृह्णीत, अगृह्णीताम्, अगृह्णत
अगृह्णाः, अगृह्णीतम्, अगृह्णीत | अगृह्णीथाः, अगृह्णीथाम्, अगृह्णीध्वम्
अगृह्णाम्, अगृह्णीव, अगृह्णीम | अगृह्णि, अगृह्णीवहि, अगृह्णीमहि

विधिलिङ्

गृह्णीयात्, गृह्णीयाताम्, गृह्णीयुः
गृह्णीयाः, गृह्णीयातम्, गृह्णीयात
गृह्णीयाम्, गृह्णीयाव, गृह्णीयाम

विधिलिङ्

गृह्णीत, गृह्णीयाताम्, गृह्णीरन्
गृह्णीथाः, गृह्णीयाथाम्, गृह्णीध्वम्
गृह्णीय, गृह्णीवहि, गृह्णीमहि

ज्ञा—जानना

लट्

जानाति, जानीतः, जानन्ति
जानासि, जानीथः, जानीथ
जानामि, जानीवः, जानीमः

लट्

जानीते, जानाते, जानते
जानीषे, जानाथे, जानीध्वे
जाने, जानीवहे, जानीमहे

लृट्

ज्ञास्यति, ज्ञास्यतः, ज्ञास्यन्ति
ज्ञास्यसि, ज्ञास्यथः, ज्ञास्यथ
ज्ञास्यामि, ज्ञास्यावः, ज्ञास्यामः

लृट्

ज्ञास्यते, ज्ञास्येते, ज्ञास्यन्ते
ज्ञास्यसे, ज्ञास्येथे, ज्ञास्यध्वे
ज्ञास्ये, ज्ञास्यावहे, ज्ञास्यामहे

लोट्

जानातु, जानीताम्, जानन्तु
जानीहि, जानीतम्, जानीत
जानानि, जानाव, जानाम

लोट्

जानीताम्, जानाताम् जानतम्
जानीष्व, जानीथाम्, जानीध्वम्
जानै, जानावहै, जानामहै

लङ्

अजानात्, अजानीताम्, अजानन्
अजानाः, अजानीतम्, अजानीत
अजानाम्, अजानीव, अजानीम

लङ्

अजानीत, अजानाताम्, अजानत
अजानीथाः, अजानाथाम्, अजानीध्वम्
अजानि, अजानीवहि, अजानीमहि

विधिलिङ्

जानीयात्, जानीयाताम्, जानीयुः
जानीयाः, जानीयातम्, जानीयनात
जानीयाम्, जानीयाव, जानीयाम

विधिलिङ्

जानीत, जानीयाताम्, जानीरन्
जानीथाः, जानीयाथाम्, जानीध्वम्
जानीय, जानीवहि, जानीमहि

१०—चुरादिगण

चुर्—चुराना

लट्

प्र० पु०—चोरयति, चोरयतः, चोरयन्ति ।
म० पु०—चोरयसि, चोरयथः, चोरयथ ।
उ० पु०—चोरयामि, चोरयावः, चोरयामः ।

लृट्

प्र० पु०—चोरयिष्यति, चोरयिष्यतः, चोरयिष्यन्ति ।
म० पु०—चोरयिष्यसि, चोरयिष्यथः, चोरयिष्यथ ।
उ० पु०—चोरयिष्यामि, चोरयिष्यावः, चोरयिष्यामः ।

लङ्

प्र० पु०—अचोरयत्, अचोरयताम्, अचोरयन् ।
म० पु०—अचोरयः, अचोरयतम्, अचोरयत ।
उ० पु०—अचोरयम्, अचोरयाव, अचोरयाम ।

लोट्

प्र० पु०—चोरयतु, चोरयताम्, चोरयन्तु ।
म० पु०—चोरय, चोरयतम्, चोरयत ।
उ० पु०—चोरयाणि, चोरयाव, चोरयाम ।

विधिलिङ्

प्र० पु०—चोरयेत्, चोरयेताम्, चोरयेयुः ।
म० पु०—चोरयेः, चोरयेतम्, चोरयेत ।
उ० पु०—चोरयेयम्, चोरयेव, चोरयेम ।

चिन्त् [उ० सेट्]

लट्

प्र० पु०—चिन्तयति, चिन्तयतः, चिन्तयन्ति ।
म० पु०—चिन्तयसि, चिन्तयथः, चिन्तयथ ।
उ० पु०—चिन्तयामि, चिन्तयावः, चिन्तयामः ।

लृट्

प्र० पु०—चिन्तयिष्यति, चिन्तयिष्यतः, चिन्तयिष्यन्ति ।

म० पु०—चिन्तयिष्यसि, चिन्तयिष्यथः, चिन्तयिष्यथ ।

उ० पु०—चिन्तयिष्यामि, चिन्तयिष्यावः, चिन्तयिष्यामः ।

लङ्

प्र० पु०—अचिन्तयत्, अचिन्तयताम्, अचिन्तयन् ।

म० पु०—अचिन्तयः, अचिन्तयतम्, अचिन्तयत ।

उ० पु०—अचिन्तयम्, अचिन्तयाव, अचिन्तयाम ।

लोट्

प्र० पु०—चिन्तयतु, चिन्तयताम्, चिन्तयन्तु ।

म० पु०—चिन्तय, चिन्तयतम्, चिन्तयत ।

उ० पु०—चिन्तयानि, चिन्तयाव, चिन्तयाम ।

विधिलिङ्

प्र० पु०—चिन्तयेत्, चिन्तयेताम्, चिन्तयेयुः ।

म० पु०—चिन्तयेः, चिन्तयेताम्, चिन्तयेत ।

उ० पु०—चिन्तयेयम्, चिन्तयेव, चिन्तयेम ।

भक्ष्—खाना

लट्

प्र० पु०—भक्षयति, भक्षयतः, भक्षयन्ति ।

म० पु०—भक्षयसि, भक्षयथः, भक्षयथ ।

उ० पु०—भक्षयामि, भक्षयावः, भक्षयामः ।

लृट्

प्र० पु०—भक्षयिष्यति, भक्षयिष्यतः, भक्षयिष्यन्ति ।

म० पु०—भक्षयिष्यसि, भक्षयिष्यथः, भक्षयिष्यथ ।

उ० पु०—भक्षयिष्यामि, भक्षयिष्यावः, भक्षयिष्यामः ।

लोट्

प्र० पु०—भक्षयतु, भक्षयताम्, भक्षयन्तु ।

म० पु०—भक्षय, भक्षयतम्, भक्षयत ।

उ० पु०—भक्षयाणि, भक्षयाव, भक्षयाम ।

लङ्

प्र० पु०—अभक्षयत्, अभक्षयताम्, अभक्षयन् ।

म० पु०—अभक्षयः, अभक्षयतम्, अभक्षयत ।

उ० पु०—अभक्षयम्, अभक्षयाव, अभक्षयाम ।

विधिलिङ्

प्र० पु०—भक्षयेत्, भक्षयेताम्, भक्षयेयुः ।

म० पु०—भक्षयेः भक्षयेतम्, भक्षयेत ।

उ० पु०—भक्षयेयम्, भक्षयेव, भक्षयेम ।

कथ्—कहना

लट्

प्र० पु०—कथयति, कथयतः, कथयन्ति ।

म० पु०—कथयसि, कथयथः, कथयथ ।

उ० पु०—कथयामि, कथयावः, कथयामः ।

लृट्

प्र० पु०—कथयिष्यति, कथयिष्यतः, कथयिष्यन्ति ।

म० पु०—कथयिष्यसि, कथयिष्यथः, कथयिष्यथ ।

उ० पु०—कथयिष्यामि, कथयिष्यावः, कथयिष्यामः ।

लोट्

प्र० पु०—कथयतु, कथयताम्, कथयन्तु ।

म० पु०—कथय, कथयतम्, कथयत ।

उ० पु०—कथयानि, कथयाव, कथयाम ।

लङ्

प्र० पु०—अकथयत्, अकथयताम्, अकथयन् ।

म० पु०—अकथयः, अकथयतम्, अकथयत ।

उ० पु०—अकथयम्, अकथयाव, अकथयाम ।

विधिलिङ्

प्र० पु०—कथयेत्, कथयेताम्, कथयेयुः ।

म० पु०—कथयेः, कथयेतम्, कथयेत ।

उ० पु०—कथयेयम्, कथयेव, कथयेम ।

षष्ठोऽध्यायः

अव्यय-प्रकरण

लक्षण—"'अव्यय' का अर्थ है—जो व्यय न हो, जिसका कभी खर्च न हो, जिसके रूप में कभी विकार न हो, जिसका रूप कभी भी परिवर्तित न हो, जो सदा एक सा बना रहे।

कहा भी है :—

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ॥

—अर्थात् जो शब्द तीनों लिङ्गोंमें सभी विभक्तियों में और सभी वचनों में एक समान रहें, उनमें कोई परिवर्तन न हो, वे अव्यय कहलायेंगे।

यदि कोई नाम मात्र का परिवर्तन होता भी है तो वह यह है कि 'र्' और 'स्' के स्थान पर 'विसर्ग' हो जाता है। यथा—पुनर् = पुनः, प्रातर् = प्रातः, अन्तर् = अन्तः आदि। इसी प्रकार इतस् = इतः; नीचैस् = नीचैः, शनैस् = शनैः आदि।

प्रकार—अव्यय शब्द प्रायः चार प्रकार के होते हैं—

(i) क्रिया-विशेषण (Adverbs)
(ii) समुच्चयबोधक शब्द (Conjunctions)
(iii) विस्मयादिबोधक शब्द (Interjections)
(iv) उपसर्ग—(Prefixes)

क्रिया-विशेषण

'क्रिया-विशेषण' (Adverb) का अर्थ यह कदापि न समझना चाहिये कि यह केवल 'क्रिया' (Verb) की ही विशेषण बतलाता है, बल्कि यह अन्य शब्दों की विशेषता भी बतलाता है। यह बात निम्नस्थ वाक्यों से स्पष्ट हो जावेगी—

---

१. स्वरादिनिपातमव्ययम्। १।१।३७।

१. **अति** सुन्दरं चित्रमिदम् ।—यहाँ 'अति' अव्यय 'सुन्दरं' विशेषण की विशेषता बतला रहा है।

२. **सत्वरं** गच्छ ।—यहां 'सत्वरं' अव्यय 'गच्छ' क्रिया की विशेषता बतला रहा है।

३. अश्वाः **अति** वेगेन धावन्ति ।—यहाँ 'वेगेन' शब्द स्वयं अव्यय है, किन्तु 'अति' अव्यय उस अव्ययभूत 'वेगेन' शब्द की भी विशेषता बतला रहा है।

क्रिया-विशेषण तीन प्रकार के होते हैं—

(i) **सामान्य क्रिया-विशेषण शब्द**—इनके भी उपभेद इस प्रकार हो सकते हैं :—

क—**समयवाची**—अद्य, यदा, पूर्वम्, पुरा, सर्वदा आदि।

ख—**स्थानवाची**—अत्र, कुत्र, सर्वत्र, उपरि, अधः, इतः, निकषा, आरात्, दूरम् आदि।

ग—**संख्यावाची**—एकधा, द्विधा, त्रिधा, चतुर्धा आदि।

घ—**विधिवाची**—सत्वरं, शीघ्रं, मन्दं, सम्यक्प्रकारेण, उच्चैः (=ज़ोर से) एवं (=इस तरह), तूष्णीम् आदि।

ङ—**अंगीकार या निषेधवाची**—आम्, एवम्, नूनं, न, नो आदि।

(ii) **प्रश्नवाचक क्रिया-विशेषण शब्द**—किम्, किमर्थं, कदा, कुत्र; कर्हि, कथम् आदि शब्द इस कोटि में आते हैं, यदि उनके प्रयोग द्वारा कोई प्रश्न किया जा रहा हो तो, अन्यथा नहीं। यथा—

—**कुत्र** गच्छति भवान् ?

—**कदा**गमिष्यति प्रियसुहृन्मे ?

—**किमर्थं** हसति मे भ्राता ?

—नावगतं **किं** भवद्भिः ?

(iii) **सम्बन्धवाची क्रिया-विशेषण शब्द**—ऊपर गिनाये गये शब्द ही यदि दो वाक्यों को जोड़ने लगें, अर्थात् उन दो वाक्यों में सम्बन्ध स्थापित कराने लगें तो वे शब्द इस कोटि में रखे जा सकते हैं। यथा—

—न जानाम्यहं **कुत्र** गच्छति मे पिता ।
—विचार्यतां तावत् **कदा**गमिष्यति नो मित्रम् ।
—ज्ञातुमिदमिच्छामि **किम**पाठयत् शिक्षकमहोदयेनाद्य ।

क्रिया-विशेषण शब्दों के स्रोत—

कुछ शब्द तो स्वभावतः ही क्रिया-विशेषण होते हैं, जैसे कि—लघु-सिद्धान्तकौमुदी के "स्वरादिनिपातमव्ययम् । १।१।३७।" सूत्र में गिनाये गये पृथक्, विना, वृथा, पुनः, शनैः आदि शब्द ; किन्तु कुछ शब्द ऐसे भी हैं जो क्रिया-विशेषण न होने पर भी तोड़-मरोड़ कर या घटा-बढ़ा कर क्रिया-विशेषण बना लिये गये हैं । ऐसे शब्दों में से—

(i) कुछ शब्द संख्यावाची विशेषणों से बनाये गये हैं, यथा—द्विधा, त्रिधा, एकधा, द्विः, त्रिः आदि ।

(ii) कुछ शब्द सर्वनामों से बनाये गये हैं, यथा—उभयतः, सर्वतः, इतस्ततः, तस्मात्, यथा, तथा, इदानीम्, तदानीम् आदि ।

(iii) कुछ शब्द संज्ञाओं में तद्धित प्रत्यय लगा कर बनाये गये हैं, यथा '**मातृवत्** परदारेषु', '**भस्मसात्** कुरुतेऽर्जुन ।' आदि ।

(iv) कुछ संज्ञा शब्दों के द्वितीया विभक्ति और एकवचन के रूप भी क्रिया-विशेषणों की कोटि में आते हैं । यथा—

—'भो वत्स ! चिरं+जीवी (=चिरञ्जीवी) भव ।
—'**सुखं** सुस्वाप' (=सुख से सोया) ।
—'**सत्यम्** ! एवमेवम् ।' (=हाँ ! ऐसा ही है) ।
—इत्येतद्वचनं श्रुत्वा कश्चित् कपोतः **सदर्पमाह** ।
—चक्षुर्विषयातिक्रान्तेषु कपोतेषु स व्याधः **सखेदं** निवृत्तः ।
—तदाकर्ण्य कोऽपि चतुरमतिः **सविनयम**ब्रवीत् ।
—**अनिशं** कार्यं ध्यानं भगवतः ।

नीचे अकारादि क्रम में मुख्य-मुख्य प्रचलित क्रिया-विशेषण दिये जाते हैं—

(अ)

अथ	=	इसके बाद, तब, फिर
अद्य	=	आज
अद्यप्रभृति	=	आज से लेकर
अद्यत्वे	=	आजकल
अद्यतनम्	=	आज का
अकस्मात्	=	अचानक
अग्रतः	=	आगे
अग्रे	=	पहले
अधुना	=	अब
अपरेद्युः	=	दूसरे दिन
अपरम्	=	और, दूसरा
अधः अधस्तात्	=	नीचे
अथ किम्	=	हाँ, तो क्या
अत्र	=	यहाँ
अतीव	=	बहुत ही
अति	=	बहुत
अर्वाक्	=	पहले
अन्तः	=	अन्दर
अजस्रम्	=	निरन्तर, लगातार
अनारतम्	=	निरन्तर, लगातार
अनवरतम्	=	निरन्तर, लगातार
अनिशम्	=	निरन्तर, लगातार
अचिरम्	=	शीघ्र
अचिरेण	=	शीघ्र
अचिराय	=	शीघ्र
अचिरात्	=	शीघ्र

अन्तरा	=	बीच में
अन्तरेण	=	बिना, बीच में
अन्तिकम्	=	पास
अद्यापि	=	आज भी
अधुनापि	=	आज भी
अत्रैव	=	यहाँ ही
अतः परम्	=	इसके बाद
अलम्	=	बस, काफी
अन्यच्च	=	और
अभितः	=	चारों ओर, पास
अपि	=	भी
अन्येद्युः	=	दूसरे दिन
अन्यत्र	=	दूसरी जगह
अमुत्र	=	परलोक में
अन्यत्	=	दूसरा
अभीक्ष्णम्	=	बार,बार
असकृत्	=	बार-बार
अन्हाय	=	शीघ्र
अञ्जसा	=	शीघ्र
अत्रान्तरे	=	इतने में
अवश्यम्	=	जरूर
असाम्प्रतम्	=	अनुचित

(आ)

आदि	=	वगैरह
आम्	=	हाँ (अंगीकारवाचक)
आहो	=	विकल्पार्थवाचक
आरात्	=	पास, समीप, दूर

(इ)

इदानीम्	=	अब, इस समय
इह	=	यहाँ, इस लोक में
इतः	=	यहाँ से
इव	=	तरह
इत्थम्	=	इस प्रकार
इतस्ततः	=	इधर-उधर
इतरेद्युः	=	दूसरे दिन

(ई)

ईषत्	=	थोड़ा, कुछ

(उ)

उच्चैः	=	ऊँचे, जोर से
उभयतः	=	दोनों ओर
उपरि	=	ऊपर
उत्तरेद्युः	=	दूसरे दिन
उताहो	=	विकल्पार्थवाचक
उत्	=	विकल्पार्थवाचक
उभयेद्युः	=	दोनों दिन

(ऊ)

ऊर्ध्वम्	=	ऊपर

(ऋ)

ऋतम्	=	सच
ऋते	=	बिना

(ए)

एव	=	ही
एकत्र	=	इकट्ठा
एवम्	=	इस तरह, और, तुल्य
ऐकपदे	=	एक साथ

एवमस्तु	=	ऐसा ही हो
एतर्हि	=	इसी समय, अब
एकदा	=	एक बार
एकैकः	=	एक-एक करके
एकधा	=	एक प्रकार

(ओ)

ओम्	=	हाँ (अंगीकारवाचक)

(क)

कदापि	=	कभी भी
किञ्च	=	और
किम्	=	क्या, क्यों ?
किमुत्	=	और कितना ?
कच्चित्	=	क्या
कदा	=	कब
कदाचित्	=	कभी, शायद
किम्वा	=	अथवा
किल	=	सचमुच, निश्चय
कुतः	=	कहाँ से
कुत्र	=	कहाँ
कुत्रचित्	=	कहीं
कृतम्	=	बस
केवलम्	=	केवल
क्व	=	कहाँ
क्वचित्	=	कहीं
कथम्	=	कैसे, क्यों
कथमपि	=	जैसे-तैसे अर्थात् बड़ी कठिनाई से
कर्हि	=	कब
किमिति	=	क्यों

कदाचिदपि	=	कभी भी
किंचिदपि	=	कुछ भी
कथंचित्	=	किसी तरह
किंचित्	=	कुछ
कुतश्चन्	=	कहीं से
कुत्रापि	=	कहीं, कहीं पर
कृते	=	के लिए
क्रमशः	=	लगातार, धीरे-धीरे
किमपि	=	कुछ भी
	(ख)	
खलु	=	निश्चय करके, जरूर
	(च)	
चिरम्	=	देरतक
चिरेण	=	देरतक
चिराय	=	देरतक
चिरात्	=	देरतक
जातु	=	कभी भी
जातुचित्	=	कभी भी
जोषम्	=	चुपचाप
	(झ)	
झटिति	=	शीघ्र
	(त)	
तदा	=	तब
तदानीम्	=	तब
तथा	=	उस तरह
तत्	=	इसलिये, सो
ततः	=	फिर, तब, वहां से
तत्र	=	वहां

तावत्	=	तबतक
तिर्यक्	=	तिरछे
तूष्णीम्	=	चुपचाप
तत्रैव	=	वहाँ पर ही

(द)

दिवा	=	दिन में
दिष्ट्या	=	सौभाग्य से
दूरम्	=	दूर
द्राक्	=	शीघ्र, फौरन
द्रुतम्	=	शीघ्र
दैवात्	=	भाग्यवश

(ध)

ध्रुवम्	=	निश्चय

(न)

न, नो, ना, नहि	=	नहीं
ननु, नूनम्	=	अवश्य
नमः	=	प्रणाम
निकषा	=	समीप
नित्यम्	=	हमेशा, लगातार
नाना	=	अनेक
नीचैः	=	नीचे
नक्तम्	=	रात को
नाम	=	नाम वाला

(प)

परश्वः	=	परसों (आने वाला)
परितः	=	चारों ओर
पुनः	=	फिर

पार्श्वतः	=	पास में
प्राक्	=	पहले
परह्यः	=	परसों (बीता हुआ)
पुनः पुनः	=	बार-बार
प्रायशः	=	अकसर
पुरः	=	सामने
पुरतः	=	सामने
पुरस्तात्	=	सामने
प्रायः	=	अकसर
प्रातः	=	प्रातःकाल
पुरा	=	पहले
पृथक्	=	अलग
पश्चात्	=	बाद में, पीछे
परेद्युः	=	दूसरे दिन
पर्याप्तम्	=	काफी
पूर्वेद्युः	=	पहले दिन (कल)
प्रकामम्	=	काफी, यथेष्ट
प्रतिदिनम्	=	रोज
प्रसह्य	=	जबरदस्ती से

(ब)

बलात्	=	जबरदस्ती से
बहिः	=	बाहर
बाढम्	=	अच्छा, हाँ
बहुधा	=	अकसर

(भ)

भूयः	=	फिर, अधिक, बार-बार
भृशम्	=	अधिक, बार-बार
भूरि	=	बहुत

(म)

मनाक्	=	थोड़ा
मिथः	=	परस्पर
मिथ्या	=	झूठ
मुधा	=	बेकार में
मुहुः	=	बार-बार
मृषा	=	झूठ, बेकार
मा	=	मत
मंक्षु	=	शीघ्र

(य)

यत्र	=	जहाँ
यथार्थतः	=	सचमुच
यथापूर्वम्	=	पूर्व के अनुसार
यत्र-तत्र	=	कहीं-कहीं
यत्र-कुत्र	=	जहाँ कहीं
यदा-कदा	=	कभी-कभी
यथा-तथा	=	जिस किसी प्रकार
युगपत्—द्	=	एक साथ
यत्किञ्चित्	=	जो कुछ
यथा-यथा	=	जैसे-जैसे

(व)

वृथा	=	व्यर्थ में
वत्	=	समान
विना	=	बिना
वरम्	=	श्रेष्ठ
वै	=	निश्चय

(श)

शनैः	=	धीरे-धीरे

श्वः	=	कल (आने वाला)
शश्वत्	=	सदा
शीघ्रम्	=	जल्दी

(स)

स्वैरम्	=	स्वेच्छा से
सततम्	=	लगातार
सपदि	=	शीघ्र, तुरन्त
सद्यः	=	शीघ्र, तुरन्त
सम्प्रति	=	इसी समय, अब
साम्प्रतम्	=	इसी समय, अब, ठीक
सकृत्	=	एकबार
सदा	=	हमेशा
सर्वदा	=	हमेशा
सदैव	=	हमेशा
सायम्	=	शाम
सर्वत्र	=	सब जगह
सर्वथा	=	सब जगह, सब तरह से
समीपम्, समीपे	=	पास
सम्यक्	=	भली प्रकार
सहसा	=	एकदम
सह, साकं, सार्धं, समं	=	साथ
सुष्ठु	=	ठीक, अच्छी तरह
साधु	=	ठीक, खूब, अच्छा
साक्षात्	=	प्रत्यक्ष, तुल्य
समन्तात्	=	आसपास, चारो तरफ
सपद्येव	=	तुरन्त, एकदम
स्वयम्	=	अपने आप
स्वतः	=	अपने आप

सहितम्	=	साथ
समम्	=	बराबर-बराबर
समया	=	निकट
समीचीनम्	=	ठीक
सम्मुखम्	=	सामने
सर्वतः	=	चारों ओर

(ह)

हि	=	इसलिये
ह्यः	=	कल (बीता हुआ)

(क्ष)

क्षिप्रम्	=	शीघ्र

समुच्चय बोधक शब्द

जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों (words) को, पदों (Phrases) या वाक्यों (Sentences) को जोड़े वे **'समुच्चय बोधक'** शब्द कहलाते हैं। यथा—

(i) मोहन सोहनश्च, रामो श्यामो **वा**।

(ii) सोऽवदत् **यद**हं गमिष्यामि।

दो प्रकार के समुच्चय बोधक शब्द—समुच्चय बोधक शब्द मोटे रूप से दो प्रकार के होते हैं—

(क) स्वायत्त—वे शब्द जो दो स्वतन्त्र वाक्यों को जोड़ें। दो में से कोई भी वाक्य दूसरे पर आश्रित न हो। दो में से दोनों ही बिना दूसरे की सहायता लिये पूरा-पूरा अर्थ दे सके। यथा—

केनचित् पीतमिदं दुग्धं रोटिका **च** खादिता।

इसमें दो वाक्य हैं—(i) केनचित् पीतं इदं दुग्धम्। (ii) केनचित् रोटिका खादिता। दोनों वाक्य स्वतः पूर्ण हैं। किसी को भी दूसरे की सहायता की अपेक्षा नहीं। अस्तु यहाँ पर 'च' शब्द स्वायत्त संयोजक की कोटि में आवेगा।

(ख) **परायत्त**—वे शब्द जो एक अपूर्ण और असहाय वाक्य को दूसरे स्वतन्त्र वाक्य से जोड़ें। यथा—

नमाम्यहं तस्यै **यतः** साऽस्ति मातुलानी मम।

—यहाँ भी दो वाक्य हैं—(i) अहं तस्यै नमामि—जो कि एक पूर्ण वाक्य है। (ii) यतः सा मम मातुलानी अस्ति = 'क्योंकि यह मेरी मामी है'—केवल इतना कहने से ही पूर्ण अर्थ बोध नहीं होता। अस्तु, यह अपूर्ण वाक्य है। पूरा-पूरा अर्थ देने के लिये यह पूर्व वाक्य पर निर्भर है। अस्तु, यहाँ पर 'यतः' शब्द परायत्त संयोजक की कोटि में आता है।

स्वायत्त समुच्चय बोधक शब्दों के उपभेद—

(i) **संयोगवाची**—च, वा, अपि, न केवलं ... ... परन्तु, अथवा आदि।

(ii) **विरोधवाची**—किन्तु, परन्तु, परम्, तथापि, अपितु, प्रत्युत् आदि।

(iii) **निष्कर्षवाची**—अतः, अस्तु, ततः (= इसलिये), तस्मात् (= इसलिये), अतएव आदि।

परायत्त समुच्चय बोधक शब्दों के उपभेद—

(i) **कालवाची**—यदा, यदायदा, तदा, तदातदा, यावत्, तावत् आदि।

(ii) **स्थानवाची**—यत्र, यत्रैव आदि।

(iii) **समय (= शर्त) वाची**—यदि और फिर उसके साथ तर्हि। इसी प्रकार यदा ... ... तदा, यावत् ... ... तावत् आदि।

(iv) **कारणवाची**—यतः (= क्योंकि), यस्मात् (= क्योंकि), यत् (क्योंकि) आदि।

(v) **तुलनावाची**—यथा, यथाहि आदि।

(vi) **विरोधवाची**—यद्यपि, तथापि आदि।

कुछ मुख्य-मुख्य समुच्चय बोधक शब्द—

अथ
अथ च } = ये वाक्य के आदि में आते हैं और प्रायः 'तब' या 'इसके बाद' का अर्थ बतलाते हैं। इन शब्दों के प्रयोग से

मालूम हो जाता है कि इस वाक्य के पूर्व कुछ वाक्य आ चुके हैं या प्रकरण में कुछ न कुछ अवश्य बीत चुका है।

अथवा = इसका प्रयोग भी ठीक उसी तरह होता है जैसा कि 'वा' का। यह 'या' के अर्थ में आता है।

अपितु = बल्कि।

अतः = इसलिये।

अन्यथा— = नहीं तो।

इति = समाप्तिसूचक शब्द। यह वाक्य के अन्त में आता है।

किन्तु = लेकिन।

च = और—हिन्दी में तो 'और' दो जोड़े हुयें शब्दों के बीच में आता है जैसे कि 'राम और श्याम', किन्तु संस्कृत में 'च' शब्द दोनों के बाद में रखा जाता है, यथा—रामः श्यामश्च। कभी-कभी दोनों में से प्रत्येक शब्द के अन्त में 'च' रख देते हैं, यथा—माता च पिता च। प्रायः 'च' को अन्य समुच्चय बोधक शब्दों के अन्त में भी लगा देते हैं, यथा—किञ्च, परञ्च, अपरञ्च' अन्यच्च, अथ च आदि।

चेत् = यदि, अगर—'यदि' की तरह इसका प्रयोग वाक्य के आदि में नहीं होता।

तु = तो—यह भी वाक्य के आदि में नहीं आता, यथा—स तु गतः। कभी-कभी यह अन्य अवयव शब्दों के बाद में भी जोड़ दिया जाता है, यथा—किम् + तु = किन्तु, परम् + तु = परन्तु।

अपि + तु = अपितु

तद्यपि = तब भी

तदापि = तब भी

तत् = इसलिये

ततः	=	इसलिये
तस्मात्	=	इसलिये
तथाहि	=	जैसे कि, वैसे ही
तथापि	=	फिर भी
नोचेत्	=	नहीं तो
प्रत्युत्	=	बल्कि
परन्तु	=	लेकिन
यदि…तर्हि	=	यदि…तो
यद्यपि…तथापि	=	हालाँकि…फिर भी
यावत्…तावत्	=	जबतक…तबतक
यदा…तदा	=	जब…तब
यदैव…तदैव	=	जब ही…तभी
यत्	=	क्योंकि, कि
यतः	=	क्योंकि
यस्मात्	=	क्योंकि
यथा	=	जैसे, जैसे कि
यत्र	=	जहाँ पर कि
यत्रैव	=	जहाँ पर ही
वा	=	अथवा—इसका प्रयोग भी ठीक 'च' की तरह होता है, यथा—रामो श्यामो वा, रामो वा श्यामो वा ।
हि	=	क्योंकि



विस्मयादि बोधक शब्द

इस कोटि में वे शब्द आते हैं जो किसी आकस्मिक मनोविकार या मनोभाव को प्रकट करें, जैसे कि—क्रोध, हर्ष, विषाद, घृणा आदि । इनके अतिरिक्त सम्बोधन सूचक शब्दों को भी इसी कोटि में रखा जा सकता है ।

कुछ विस्मयादि बोधक शब्द नीचे दिये जाते हैं—

अङ्ग !	=	हे (आदर सहित बुलाने के अर्थ में)
अहा !	=	उल्लास या हर्ष सूचक
अयि !	=	हे (आदर सहित बुलाने के अर्थ में)
अये !	=	हे (आदर सहित बुलाने के अर्थ में)
अरे !	=	हे (अवज्ञा से बुलाने में)
आः !	=	क्रोध सूचक
किम् !	=	आश्चर्य या विस्मय सूचक
धिक्—ङ् !	=	धिक्कार सूचक
पूः !	=	घृणा या अरुचि सूचक
बत् !	=	खेद सूचक
बत् !	=	दया सूचक
बत् !	=	विस्मय सूचक
रे !	=	हे (अवज्ञा से बुलाने में)
रेरे !	=	हे (अवज्ञा से बुलाने में)
हन्त !	=	हर्ष सूचक
हन्त !	=	खेद, शोक और विषाद सूचक
हा !	=	पीड़ा या शोक सूचक
हाहा !	=	शोक या परिताप सूचक
हम् !	=	क्रोध सूचक
हुम् !	=	क्रोध सूचक
भोः !	=	हे (आदर सहित बुलाने के अर्थ में)
स्वस्ति !	=	आशीर्वाद सूचक
साधु साधु !	=	प्रशंसा सूचक



उपसर्ग

उपसर्ग को अंग्रेजी में 'Prefix' कहते हैं। 'Pre' का अर्थ '**पहले**' और 'Fix' का अर्थ '**जोड़ना**' होता है। अस्तु 'Prefix' का अर्थ '**पहले जोड़ना**' हुआ।

अस्तु 'जो धातु के या धातु से बने हुये विशेषण, संज्ञा आदि शब्दों के पूर्व जोड़े जाते हैं, उन्हें 'उपसर्ग' कहते हैं।

उपसर्गों की संख्या—

उपसर्ग कुछ मिला कर बाइस (२२) होते हैं जैसा कि निम्नस्थ सूत्र से पता चलता है—

"प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उद्, अभि, प्रति, परि, उप्। एते प्रादयः उपसर्गाः क्रिया योगे। गतिश्च। १।४।५८, ५९, ६०"

उपसर्गों का महत्त्व—

उपसर्गों के कारण ही धातु के विविध अर्थों का प्रकाश होता है। एक ही धातु विभिन्न उपसर्गों से युक्त होकर अलग-अलग अनेक अर्थ बतलाती है, जैसे कि 'कृ' धातु का अर्थ 'करना' होता है, किन्तु उसके पूर्व उपसर्ग लगा कर प्रकार, विकार, संस्कार, प्रतीकार, उपकार, अपकार, अधिकार आदि शब्द बनते हैं जिनके पृथक्-पृथक् अर्थ होते हैं। यथा—प्रकार = भेद, विकार = खराबी, संस्कार = कर्म, प्रतीकार = बदला, उपकार = भलाई, अपकार = खराबी, अधिकार = मलकियत। सिद्धान्तकौमुदी में भी लिखा है कि—

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
प्रहाराहार संहारविहारपरिहारवत्॥

यहाँ विभिन्न उपसर्गों के लगने के कारण ही अकेली 'हृ' धातु से प्रहार = चोट; संहार = नाश, विहार = खेल, परिहार = बचाव आदि अनेक शब्द बन गये।

उपसर्गों के तीन काम—

धात्वर्थं बाधते कश्चित्कश्चित्तमनुवर्तते।
तमेव विशिनष्ट्यन्य उपसर्ग गति स्त्रिधा॥

अर्थात् उपसर्ग से (i) कभी तो धातु का अर्थ बिल्कुल उलटा हो जाता है, (ii) कभी अर्थ तो वही रहता है किन्तु उसमें एक विशेषता आ जाती है, और (iii) कभी धातु का अर्थ ठीक वही बना रहता है जो पहले था।

उदाहरण के लिये 'भू' धातु को लीजिये। 'भू' का अर्थ है 'होना'। 'अभि' उपसर्ग लगा देने से 'अभिभू' बना जिसका अर्थ 'हराना' होता है। 'प्र' उपसर्ग लगा देने से 'प्रभू' धातु बनी जिसका अर्थ होता है 'समर्थ होना'। इस प्रकार 'अभिभूयते' और 'प्रभवति' ये दोनों ही रूप 'भवति' से बिल्कुल अलग अर्थ बतला रहे हैं।

अब 'जि' धातु को भी देख लीजिये। इससे एक शब्द बना 'जयः' जिसका अर्थ 'जीत' होता है। इसमें 'परा' उपसर्ग लगा देने से 'पराजयः' शब्द बनता है जिसका अर्थ 'हार' होता है। इस प्रकार 'पराजयः' शब्द 'जयः' का बिल्कुल उल्टा अर्थ बतला रहा है।

अब कृष् (= खींचना या जोतना) धातु को लीजिये। इसमें 'प्र' उपसर्ग लगा देने से 'प्रकृष्' रूप बना, जिसका अर्थ 'खूब जोर से खींचना' होता है। यहाँ अर्थ तो वही है, किन्तु उसमें और भी विशेषता आ गई है।

'उपकरोति' (= उपकार करता है) में 'प्रति' उपसर्ग लगा देने से 'प्रत्युपकरोति' बना। इसका भी वही अर्थ है जो पहले था।

अँग्रेजी भाषा की तरह संस्कृत में भी यह रूढ़ि देखने को मिलती है कि किसी अर्थ विशेष के लिए कोई निश्चित उपसर्ग विशेष ही लगाया जाता है। अस्तु नीचे अकारादि क्रम से उपसर्ग दिये जा रहे हैं। साथ में ही वे 'अर्थ' भी दिये जायेंगे जो प्रायः आ उपसर्गों के साथ चला करते हैं—

अति = 'अधिकता' या 'उल्लंघन' eg.
'अतिलोभः' = बहुत लालच। 'अतिक्रमः' = सीमा का उल्लंघन।

अधि = ऊपर eg. अध्यास्ते = (किसी चीज के) ऊपर बैठता है।
अनु = पीछे eg. अनुजः, अनुगमनम् ।
अप = दूर eg. अपाकरोति ('पापमपाकरोति" = पाप को दूर करता है।)
अपि = समीप eg. अपिधानम् = ढक्कन ।

(नोट—कभी-कभी ऐसा होता है कि 'अपि' में से 'अ' लुप्त हो जाता है, इसीलिये 'अपिधानम्' न कहकर 'पिधानम्' कहते हैं।)

अभि = ओर, तरफ eg. अभिमानः, अभिशापः, अभिगमनम्, अभ्यर्थना, अभ्युदयम् ।
अव = दूर, नीचे, कम eg. अवरोधः, अवमानः, अवतारः, अवसरः, अवस्करः ।
आङ् (= आ) = कम, तक, चारों तरफ eg. आच्छादयति, आकम्पते, आस्वादयति ।
उद् = ऊपर eg. खगाः उत्पतिताः । उद्धारयति । उद्गमः ।
उप = समीप eg. उपसर्पति, उपनयति, उपासना (= पास में बैठना)
दुर् = कठिन, बुरा eg. दुर्लंघ्य, दुर्लभ, दुराचारः, दुर्नीतिः, दुरुपयोगः
दुस् = कठिन eg. दुस्तरम्, दुस्साहसम्, दुस्सहम्, दुष्करम्, दुष्प्राप्यम् ।
नि = नीचे eg. निपतति, निपातः, नीरसम्, निकाय (= समूह) निधानम् ।
निर् = बाहर, बिना eg. निर्मूलम्, निर्वंशः, निर्गमनम्; निरुपायः, निरुपमेयः ।
निस् = बाहर, बिना eg. निस्सहायम्, निस्सारः, निस्सरति, निस्करोति, निस्सहायः, निःशङ्कः ।
परा = पीछे, उल्टा eg. पराजयः, पराभवः, परागतः (= लौट गया)

परि = चारों ओर, भली प्रकार से eg. परिपूर्णः, परिसमाप्तिः; परिखा (= खाई), परिहारः।

प्र = अधिक eg. प्रवेशः, प्रणामः, प्रकीर्णः, प्रकीर्तिः, प्रभावः, प्रताड़नम्।

प्रति = ओर, विपरीत eg. प्रतिपादनम्, प्रतिहिंसा, प्रतिकारः (= बदला)।

वि = विना, पृथक् eg. वियोगः, विलापः, विचलितः, विभवः।

सम् = अच्छी तरह से eg. संयोगः, संस्कारः, संविधानम्, संवेदना, सम्मानितः, समावेशः, संधानम्।

प्रपरा……आदि (१।४।५८–६०), सूत्र के अन्त में निर्देश है कि "एते प्रादयः उपसर्गाः क्रियायोगे।गतिश्च।" इससे स्पष्ट है कि धातु में या धातु से बने विशेषण, संज्ञा आदि शब्दों में केवल 'उपसर्ग' ही नहीं जुड़ते, बल्कि **'गतियाँ'** भी जोड़ी जाती हैं। मुख्य गतियाँ सोदाहरण नीचे प्रस्तुत की जाती हैं—

अन्तः — eg. अन्तर्वर्त्तिनी = गर्भिणी, अन्तर्देशीय = देश के अन्दर का।

अस्तम् — यह गति केवल गत्यर्थक धातुओं के ही पूर्व में लगती है eg. अस्तमितः अस्तङ्गतः, अस्तन्नीतः।

असत् — eg. असत्भाषणम्, असत्कारः।

आविः — कृ, अस् और भू धातुओं के पहले लगता है eg. आविष्कारः, आविर्भूतः, आविर्भावः।

तिरः — भू और धा धातुओं के पूर्व लगता है। eg. तिरोभूतः, तिरोहितः।

नञ् — यह उपसर्ग के रूप में लगकर छः प्रकार के अर्थों को प्रकट करता है जैसा कि निम्नस्थ श्लोक में कहा गया है—

"तत्सादृश्यमभावश्च तदन्यत्वं तदल्पता।

अप्राशस्त्यं विरोधश्च नञर्थाः षट् प्रकीर्तिताः॥"

(i) **सादृश्य का बोध** eg. अब्राह्मणः = ब्राह्मण नहीं, किन्तु ब्राह्मण के समान ही कोई और।

(ii) **अभाव का बोध** eg. अज्ञानम् = ज्ञान का अभाव।

(iii) **भिन्न प्रकारता का बोध** eg. अयं अपटः = यह कपड़ा नहीं है।

(iv) **अल्पता का बोध** eg. अनुदरा सा रमणी = वह स्त्री छोटे पेट वाली है।

(v) **बुराई** eg. अकार्यम् = बुरा काम।

(vi) **विरोध** eg. अनीतिः = नीति के विरुद्ध।

नमः—यह केवल कृ धातु के पूर्व लगता है eg. नमस्कारः। नमस्करोति।

प्रादुः — कृ, अस् और भू धातुओं के पूर्व लगता है eg. प्रादुष्कारः, प्रादुर्भावः।

पुरः — कृ, भू, और गम् धातुओं के पूर्व लगता है eg. पुरष्कारः, पुरोगमनं, पुरोभवः।

सत् — eg. सत्कारः, सत्गतिः, सत्संगः, सद्धर्मः, सन्मार्गः।

साक्षात् — कृ धातु के पूर्व लगता है eg. साक्षात्कारः।

स्वी — कृ धातु के पूर्व लगता है eg. स्वीकृतम्, स्वीकारः, स्वीकरोति।

नोट—हम ऊपर कह चुके हैं कि जिसमें विभक्ति, लिंग और वचन के कारण कोई परिवर्तन न हो, वही अव्यय है। इस लक्षण के अनुसार कई तद्धित प्रत्ययान्त, कई कृदन्त तथा कुछ समासान्त शब्द भी अव्यय की कोटि में आ जाते हैं।

[1]**तद्धित्**—तद्धितों में से निम्नस्थ प्रत्ययान्त शब्द अव्यय शब्दों की कोटि में आते हैं—

१. तसिल् — eg. कर्णपुरतः, अग्रतः, पृष्ठतः, अभितः, परितः, अतः, सर्वतः, इतः आदि।

२. त्रल् — eg. कुत्र, यत्र, तत्र, बहुत्र, सर्वत्र आदि।

३. दा — eg. एकदा, सर्वदा, कदा, तदा, यदा आदि।

---

१. तद्धितश्चासर्वविभक्तिः। १।१।३८.

४. दानीम् — eg. इदानीम्, तदानीम्, कदानीम् आदि।
५. थाल् — eg. यथा, तथा, सर्वथा आदि।
६. र्हिल् — eg. कर्हि, यर्हि, तर्हि, एतर्हि आदि।
७. थमुः — eg. इत्थम्।
८. किमः — eg. कथम्।
९. धमुञ् — eg. एकधा, द्विधा, त्रिधा आदि।
१०. शस् — eg बहुशः, अल्पशः आदि।
११. कृत्वसुच्— eg द्विकृत्वः, द्विः, त्रिः आदि।

कृदन्त[1]

१. णमुल् eg—स्मारं स्मारं, पायं पायं, श्रावं श्रावं, नामं नामं आदि।
२. तुमुन् eg—गन्तुं, खादितुं, पठितुं आदि।
३. क्त्वा eg—गत्वा, पीत्वा, पठित्वा आदि।
४. ल्यप् eg —आगत्य, सम्प्रेष्य, प्रणम्य आदि।

नोट—(i) इनके अतिरिक्त तुमुन् के अर्थ वाले 'असे' प्रत्ययान्त शब्द eg. जीव से और 'शध्ये' प्रत्ययान्त शब्द eg. पिबध्यै आदि भी अव्यय ही माने जावेंगे।

(ii) इसी प्रकार क्त्वा के अर्थ वाले 'तोसुन्' और कसुन् प्रत्ययान्त शब्द भी अव्यय की कोटि में ही आते हैं।

समास—समासों में से अव्ययीभाव समास के अन्तर्गत आने वाले शब्द अव्यय ही हैं। eg—अधिहरि, यथाशक्ति, उपकृष्णम् आदि।



१. कृन्मेजन्तः १।१।३९

सप्तमोऽध्यायः

कारक-प्रकरण

लक्षण—क्रिया के सम्पादन में जिसका उपयोग हो, उसे कारक कहते हैं। यथा—"राम घर जाता है।"—इस वाक्य में जाने का काम 'राम' करता है, इसलिये वह कारक है, जहाँ जाया जाता है, वह घर है, इसलिये 'घर' भी कारक है।

कारक के प्रकार—कारक आठ प्रकार के होते हैं—

१. कर्ता — ने
२. कर्म — को
३. करण — से, के द्वारा
४. सम्प्रदान — को, के लिये
५. अपादान — से
६. सम्बन्ध — का, के, की
७. अधिकरण— में, पर
८. सम्बोधन — हे, अरे—आदि।

यथा—**अरे[८] मित्र ! राम[६] के पिताजी[१] ने अपने घर[७] में हम सबको[४] अपने ही हाथ[३] से झोले[५] में से लड्डू[२]** निकाल-निकाल कर दिये।

किन्तु कुछ लोग 'सम्बन्ध' और 'सम्बोधन' को कारक नहीं मानते। कहा भी है कि—

कर्ताकर्मकरणञ्च सम्प्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरणमित्याहुः कारकाणि षट्॥

१. कर्ता—क्रिया का जो सम्पादन करे।
२. कर्म—जो क्रिया का कर्म हो।

३. करण—क्रिया का सम्पादन जिसके द्वारा हो, या जिस किसी साधन से हो।

४. सम्प्रदान—क्रिया जिसके लिये हो।

५. अपादान—क्रिया जिससे निकले या जिससे दूर हो।

६. अधिकरण—क्रिया जिस स्थान पर हो या जो क्रिया का आधार हो।

'सम्बन्ध' कारक क्यों नहीं—

'कारक' का क्रिया से सीधा सम्बन्ध हुआ करता है। 'राम की कलम श्याम ने चुरा ली'—इस वाक्य में 'चुरा ली' क्रिया है। चोरी 'श्याम' ने की और 'कलम' चुराई गई। इसलिये दोनों ही क्रिया से सीधा सम्बन्ध रखने के कारण 'कारक' हैं। किन्तु 'राम की' का सम्बन्ध 'कलम' से भले ही हो, क्रिया से उसका कोई सम्बन्ध नहीं। इसलिये वह कारक नहीं है।

किन्तु ध्यान रहे कि 'राम की' का सम्बन्ध 'कलम' से है और कलम का 'चुरा ली' से सीधा सम्बन्ध है। इसलिये 'राम की' का सम्बन्ध क्रिया से यदि प्रत्यक्ष रूप से नहीं है, तो भी अप्रत्यक्ष रूप से तो उसका सम्बन्ध है ही। इसलिये उसे भी कारक की ही कोटि में रख लेते हैं।

'सम्बोधन' कारक क्यों नहीं—

प्रत्येक कारक की कोई न कोई विभक्ति होती है। किन्तु सम्बोधन की कोई विभक्ति नहीं होती। इसलिये वह कारक नहीं है। वह तो कर्ता कारक का ही एक रूप है। यथा—

हे बालक ! अत्रागच्छ।
हे बालकौ ! अत्रागच्छतम्।
हे बालकाः ! अत्रागच्छत।

फिर भी अध्ययन की सुविधा के लिये इसे कारकों के समकक्ष ही रख लेते हैं।

इस प्रकार कारक आठ हुये।

अब हमें क्रमानुसार प्रत्येक कारक के प्रयोग पर विचार करना है।

कर्त्ताकारक (प्रथमा विभक्ति)

१. **प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा।** अर्थात्—

(क) प्रातिपदिक शब्दों का अर्थमात्र प्रकट करने के लिये। यथा— रामः, कृष्णः, जलं, फलं आदि। राम, जल आदि प्रातिपदिक हैं, किन्तु उनका कोई विशिष्ट अर्थ तभी निकलता है, जब कि उनमें प्रथमा विभक्ति का सु प्रत्यय लगता है।

(ख) लिङ्गमात्र को प्रकट करने के लिये—यथा —तटी, तटः, तटम्।

(ग) परिमाणमात्र का ज्ञान कराने के लिये—यथा—द्रोणो व्रीहिः (एक द्रोण भर धान)।

(घ) वचनमात्र के द्योतन के लिये—यथा—एकः, द्वौ, बहवः।

२. **सम्बोधने च**—अर्थात् सम्बोधन अलग से कारक नहीं होता, उसे प्रथमा के अन्तर्गत ही माना जाता है। यथा—हे राम! हे रामौ! हे रामाः!

३. कर्तृवाच्य में 'कर्त्ता' प्रथमा विभक्ति में रहता है (यथा—**बालकः** पुस्तकं पठति) किन्तु कर्मवाच्य में कर्म प्रथमा विभक्ति में आ जाता है (यथा—**पुस्तकं** बालकेन पठ्यते)।

कर्मकारक (द्वितीया विभक्ति)

कर्तुरीप्सिततमं कर्म—वाक्य में प्रयुक्त शब्दों में से कर्त्ता जिसे सबसे अधिक चाहता है, उसे 'कर्म' कहते हैं। यथा—रामो **ग्रामं** गच्छति, सः पयसा **ओदनं** भुंक्ते; मासेष्वश्वं बध्नाति (= उरद के खेतों में घोड़े को बांधता है)।

२. **कर्मणि द्वितीया** (= अनुक्ते कर्मणि द्वितीया स्यात्)—अनुक्त कर्म को बतलाने के लिये कर्मकारक में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा— हरिं भजति, कर्णपुरं गच्छति, पुस्तकं पठति।

३. दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, पृच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मन्थ्, मुष्, नी, हृ, कृष् और वह्—इन १६ धातुओं में दो-दो कर्म हुआ करते हैं (एक प्रधान कर्म और दूसरा अप्रधान कर्म)। यथा—**गां पयः** दोग्धि (= गाय का दूध दूहता है); **बलिं वसुधां** याचते (= बलि से

भूमि माँगता है), **तण्डुलान् ओदनं** पचति (= चावलों से भात पकाता है), **गर्गान् शतं** दण्डयति (= गर्ग लोगों पर सौ रुपया दण्ड लगाता है); **गां व्रजं** अवरुणद्धि (= गाय को वाड़े में घेरता है); **माणवकं पन्थानं** पृच्छति (= बच्चे से रास्ता पूछता है); **वृक्षं फलानि** अवचिनोति (= वृक्ष से फल तोड़ता है); **माणवकं धर्मं** ब्रूते शास्ति वा (= बच्चे को धर्म के विषय में बतलाता है); **देवदत्तं शतं** जयति (= देवदत्त से सौ रुपये जीत लेता है); **सुधां क्षीरनिधिं** मथ्नाति (= क्षीरसागर से अमृत मथता है); **देवदत्तं शतं** मुष्णाति (देवदत्त से सौ रुपये चुराता है); अजां ग्रामं नयति, हरति, कर्षति, वहति वा (बकरी को गाँव ले जाता है)।

४. **अकर्मकधातुभिर्योगे देशः कालो भावो गन्तव्योऽध्वा च कर्म-संज्ञक इति वाच्यम्** (वार्तिक)—अकर्मक धातुओं के योग में देश, काल, भाव (= कार्य) और मार्ग के योग में **द्वितीया** होती है। यथा—**कुरून्** स्वपिति (= कुरुदेश में सोता है); **मासं** आस्ते (= महीने भर रहता है); **गोदोहं** आस्ते (= गाय दूहने के समय तक रहता है); **क्रोशं** आस्ते (= कोसभर तक रहता है)।

५. **गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्द कर्माकर्मकाणामणिकर्त्ता स णौ**—जाना, जानना, खाना आदि धातुओं, अकर्मक धातुओं और शब्दरूपी कर्म वाली धातुओं का अण्यन्त (= णिच् प्रत्यय से रहित) कर्त्ता णिच् में कर्म हो जाता है। यथा—शत्रून् स्वर्गं अगमयत्, स्वान् वेदार्थं अवेदयत्, देवान् अमृतं आशयत्, विधिं वेदं अध्यापयत्, पृथ्वीं सलिले आसयत्।

६. **हृक्रोरन्यतरस्याम्**—हृ तथा कृ धातुओं का साधारण कर्त्ता णिजन्त (= प्रेरणार्थक) वाक्य में विकल्प से कर्म होता है। यथा—हारयति कारयति वा **भृत्यं** भृत्येन वा कटम् (= चटाई)।

७. **अधिशीङ्स्थासां कर्म**—शी, स्था और आस् धातुओं के पूर्व यदि 'अधि' उपसर्ग आवे, तो इन क्रियाओं के आधार को 'कर्म' हो जाता है। यथा—अधिशेते अधितिष्ठति अध्यास्ते वा **वैकुण्ठं** हरिः (= विष्णु वैकुण्ठ में सोते हैं, स्थित हैं या बैठे हैं।)

८. **अभिनिविशश्च**—यदि 'विश्' धातु के पूर्व 'अभि' और 'नि' उपसर्ग एक साथ आ जावें, तो उस क्रिया का आधार 'कर्म' होता है। यथा—**सन्मार्गं** अभिनिविशते।

९. **उपान्वध्याङ्वसः**—'वस्' धातु के पूर्व यदि उप, अनु, अधि और आ में से कोई उपसर्ग लगा हो तो उस क्रिया का आधार 'कर्म' होता है। यथा—हरिः **वैकुण्ठं** उपवसति, अनुवसति, अधिवसति, आवसति वा (=विष्णु वैकुण्ठ में रहते हैं)।

१०. उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपरि-उपरि, अधि-अधि, अधोऽधः आदि के योग में द्वितीया होती है। यथा—**कृष्णं** उभयतः सर्वतः वा गोपाः सन्ति (=कृष्ण के दोनों ओर या सब ओर ग्वाले हैं); धिक् **पापिनं पुत्रं** (=पापी पुत्र को धिक्कार है); उपर्युपरि **लोकं** हरिः (=विष्णु संसार के ठीक ऊपर हैं); अध्यधि **लोकं** (=संसार के ठीक नीचे); अधोऽधो **नवान् पयोधरान्** (=नवीन मेघों के ठीक नीचे)।

११. अभितः, परितः, समया, निकषा, हा और प्रति के योग में भी द्वितीया होती है। यथा—**कृष्णं** अभितः परितः वा; **ग्रामं** समया; **लङ्कां** निकषा; हा **कृष्णभक्तं; रामं** प्रति, **बुभुक्षितं** न **प्रति**भाति किञ्चित्।

१२. **अन्तरान्तरेण युक्ते**—अन्तरा (=बीच में) तथा अन्तरेण (=बिना) के योग में द्वितीया होती है। यथा—**त्वां मां** च अन्तरा हरिः; **हरिं** अन्तरेण न सुखम्।

१३. **कर्मप्रवचनीयाः**—कर्मप्रवचनीय (=वे उपसर्ग जो किसी क्रिया आदि के साथ प्रयुक्त न होकर स्वतन्त्र रूप से ही प्रयुक्त होते हैं) के योग में द्वितीया होती है। यथा—**अनु**—**जपं** अनु प्रावर्षत् (=जप की समाप्ति पर वृष्टि हुई); **नदीं** अनुवसिता सेना (=सेना नदी के किनारे स्थित है); अनु**हरिं** सुराः (=देवता हरि से हीन हैं)। **उप**—उप हरिं सुराः (=देवता हरि से हीन हैं या हरि के समीप हैं)।

प्रति, परि, अनु—लक्षण में, इत्थंभूत आख्यान में, भाग में तथा वीप्सा में उक्त तीनों उपसर्ग कर्मप्रवचनीय होते हैं। यथा—(लक्षण)—**वृक्षं** प्रति

परि अनु वा विद्योतते विद्युत् (= वृक्ष पर बिजली चमकती है)। (इत्थंभूत कथने) भक्तो **विष्णुं** प्रति परि अनु वा (= विष्णु का यह भक्त है) (भागे) लक्ष्मीः **हरिं** प्रति परि अनु वा (= लक्ष्मी विष्णु के हिस्से में पड़ी) (वीप्सायां) **वृक्षं वृक्षं** प्रति परि अनु वा सिञ्चति (= प्रत्येक वृक्ष को सींचता है)।

अभि—केवल 'भाग' को छोड़कर अन्य तीनों अर्थों में 'अभि' भी कर्मप्रवचनीय होता है। यथा—**हरिं** अभि वर्तते, भक्तो **हरिं** अभि, **देवं देवं** अभि पूजयति।

सु—पूजा (= प्रशंसा) अर्थ में 'सु' अव्यय भी कर्मप्रवचनीय होता है। यथा—सुसिक्तं, सुगीतं।

अति—अतिक्रमण अर्थ में 'अति' की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है। यथा—अति **देवान्** कृष्णः (= कृष्ण देवताओं से बढ़कर हैं)।

१४. **कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे**—यदि कोई क्रिया लगातार कुछ समय (काल) पर्यन्त होती रहे या कोई लगातार कुछ दूरी (अध्वन् तक चलता रहे, तो द्वितीया होती है। यथा—**मासं** अधीते (= एक माह तक पढ़ता है) **क्रोशं** कुटिला नदी (= नदी एक कोश तक टेढ़ी है)।

करण कारक (तृतीया विभक्ति)

१. **साधकतमं करणम्**—क्रिया-सिद्धि में सर्वाधिक उपकारक को 'करण' कहते हैं। यथा—रामः **बाणेन** मृगं हन्ति।

२. **कर्तृकरणयोस्तृतीया**—अनुक्त कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है। यथा—**रामेण** रावणो हतः।

३. **प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्**—प्रकृति (= स्वभाव) आदि अर्थों में तृतीया होती है। यथा—**प्रकृत्या** चारुः, **प्रायेण** याज्ञिकः, गोत्रेण गार्ग्यः, **विषमेण** एति, द्वि—**द्रोणेन** धान्यं क्रीणाति, **सुखेन दुःखेन** वा याति, **क्लेशेन** स्थातुं शक्नोति।

४. दिव् (= जुआ खेलना) धातु के साधकतम कारण की विकल्प से कर्म और करण संज्ञा होती है। यथा—**अक्षैः अक्षान्** वा दीव्यति।

५. **अपवर्गे तृतीया**—अभीष्ट फल प्राप्ति का बोध कराने में काल और मार्गवाची शब्दों के योग में तृतीया होती है। यथा—**द्वादशवर्षैः** व्याकरणं श्रूयते, **क्रोशेन** पुस्तकं पठितवान् ।

६. **सहयुक्तेऽप्रधाने**—सह के योग में अप्रधान (=प्रधान के सहायक) को तृतीया होती है। यथा—**पुत्रेण** सह आगतः पिता। साकं, सार्धं और समं के साथ भी तृतीया होती है। यथा—सीता **रामेण** साकं सार्धं समं वा वनं गता।

७. **पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्**—पृथक्, विना और नाना के योग में विकल्प से तृतीया अथवा द्वितीया अथवा पञ्चमी होती है। यथा—पृथक् **रामेण** (रामं रामात् वा) न मे जीवनं सम्भविष्यति; **ज्ञानेन** (ज्ञानं ज्ञानात् वा) विना न मुक्तिः।

८. **येनाङ्गविकारः**—जिस अंगविशेष में विकार हो, उसमें तृतीया होती है। यथा—**अक्ष्णा** काणः, **पादेन** खञ्जः, **कर्णेन** बधिरः, **पृष्ठेन** कुब्जः आदि।

९. तुल्यार्थक शब्दों के योग में विकल्प से तृतीया (और षष्ठी) होती है। यथा—तुल्यः सदृशः समो वा **कृष्णेन** (कृष्णस्य वा); स्फुटोपमं भूतसितेन **शम्भुना**।

१०. **हेतौ**—हेत्वर्थ में तृतीया भी होती है। यथा—ते **भक्त्या** प्रीतोऽस्मि; **पुण्येन** दृष्टो हरिः, **अध्ययनेन** वसामि।

११. **इत्थंभूतलक्षणे**—जो जिस प्रकार जाना जाय, उसके लक्षण में तृतीया होती है। यथा—**जटाभिः** तापसः।

१२. निषेध वाचक 'अलं' और 'कृतं' के योग में तृतीया होती है। यथा—अलं **विस्तरेण**; कृतं **विवादेन**।

१३. उत्कर्ष तथा सादृश्य बोधक धातुओं के योग में, जिससे कोई विशेषता या समता प्रकट होती है, उसमें तृतीया लगती है। यथा—अस्य मुखं सीतायाः **चन्द्रमुखेन** संवदति, **स्वरेण** अयं रामभद्र अनुहरति।

सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति)

१. **चतुर्थी सम्प्रदाने**—जिसे कुछ दिया जाय, उसमें चतुर्थी होती है। यथा—**विप्राय** गां ददाति। **भिक्षुकाय** भोजनं देहि।

२. **रुच्यार्थानां प्रीयमानः**—रुच् या समानार्थक धातुओं के योग में चतुर्थी लगती है। यथा—**हरये** रोचते भक्तिः; मह्यं मोदकानि रोचन्ते, **यज्ञदत्ताय** स्वदते अपूपः।

३. **श्लाघह्नुङ्स्थाशप्तं ज्ञीप्स्यमानः**—श्लाघ्, ह्नु, स्था और शप् धातुओं के योग में, जिसे जनाया जाय, उसमें चतुर्थी होती है। यथा—गोपी स्मरात् **कृष्णाय** श्लाघते ह्नुते तिष्ठते शपते वा।

४. **धारेरुत्तमर्णः**—'धृ' (उधार या कर्ज लेना) धातु के योग में महाजन (= कर्जदार) के साथ चतुर्थी विभक्ति लगेगी। यथा—गोविन्दः **रामाय** शतं धारयति, हरिः **भक्तजनाय** मोक्षं धारयति।

५. **स्पृहेरीप्सितः**—स्पृह् धातु के योग में चाही हुई चीज चतुर्थी विभक्ति में होती है। यथा—सा पुष्पेभ्यः स्पृहयति; परिक्षीणो यवानां **प्रसृतये** स्पृहयति (= निर्धन व्यक्ति एक मुट्ठी जव की इच्छा करता है)।

६. **क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः**—क्रुध्, द्रुह, ईर्ष्य्, असूय् अर्थ वाली धातुओं के योग में, जिसके ऊपर क्रोध आदि किये जाते हैं, उसमें चतुर्थी लगती है। यथा—**हरये** क्रुध्यति, द्रुह्यति, ईर्ष्यति, असूयति वा।

किन्तु ध्यान रहे कि उपसर्गयुक्त इन धातुओं के योग में द्वितीया विभक्ति ही होती है। यथा—**क्रूरं** अभिद्रुह्यति संद्रुह्यति; **मच्छरीरं** अभिद्रोग्धुं, न खलु **तां** अभिक्रुद्धो गुरुः।

७. **प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्त्ता**—प्रति और आ उपसर्गों के बाद यदि 'श्रु' धातु आवे तो उसके योग में चतुर्थी होती है। यथा—सः **विप्राय** गां प्रतिश्रृणोति आश्रृणोति वा (= वह ब्राह्मण को गाय देने की प्रतिज्ञा करता है)।

८. **राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः**—राध् और ईक्ष् धातुओं के योग में, जिसके विषय में विविध प्रश्न पूछे जायँ, उसमें चतुर्थी लगती है। यथा—**कृष्णाय** राध्यति ईक्षते वा गर्गः।

९. **अनुप्रतिगृणश्च**—अनु और प्रति उपसर्गों से परे गृ धातु के योग में चतुर्थी होती है। यथा—सः **होत्रे**ऽनुगृणाति प्रतिगृणाति वा धेनुं (होता पुरोहित को वह एक गाय देने का वचन देता है)।

१०. **परिक्रमणे सम्प्रदानमन्यतरस्यां**—जिस मूल्य या मजदूरी पर कोई पुरुष नियुक्त किया जाता है, वह मूल्य या मजदूरी में विकल्प से चतुर्थी (या तृतीया) होती है। यथा—**शताय** (शतेन वा) परिक्रीतोऽयं दासः।

११. **तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या** (वार्तिक)—जिस प्रयोजन के लिये कोई कार्य किया जाय, उसमें चतुर्थी होती है। यथा—काव्यं **यशसे**; **भूपाय** दारुः; **मुक्तये** हरिं भजति।

१२. **क्लृपि संपद्यमाने च** (वार्तिक)—क्लृप् धातु के योग में तथा उसके समानार्थक संपद्, भू, जन् आदि के योग में भी चतुर्थी होती है। यथा—यवागूः (=माड़) **मूत्राय** कल्पते, सम्पद्यते, भवति, जायते वा; भक्तिः ज्ञानाय कल्पते जायते वा।

१३. **उत्पातेन ज्ञापिते च** (वार्तिक)—उत्पात के द्वारा ज्ञापित वस्तु में चतुर्थी होती है। यथा—**वाताय** कपिला विद्युत् (=कपिल वर्ण की विद्युत् आँधी की सूचना देती है)।

१४. **हितयोगे च** (वार्तिक)—हित और सुख के योग में चतुर्थी होती है। यथा—ब्राह्मणाय हितं सुखं वा।

१५. **क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः**—जब किसी वाक्य में तुमुन्नन्त धातु का अर्थ छिपा रहता है, तब उस तुमुन्नार्थक धातु का कर्म चतुर्थी में होता है। यथा—फलेभ्यः (=फलानि आहर्तुं) याति; **स्वयंभुवे** (=स्वयंभुवं प्रीणयितुं) नमस्कृत्य; **वनाय** (=वनं गन्तुं) गां मुमोच; **नृसिंहाय** (=नृसिंहं अनुकूलयितुं) नमः कुर्मः।

१६. **तुमर्थाच्च भाववचनात्**—किसी धातु में तुमुन् प्रत्यय जोड़ने पर जो अर्थ निकलता है; उसी को प्रकट करने के लिये उसी धातु से निष्पन्न भाववाचक संज्ञा का प्रयोग करने पर भी चतुर्थी होती है। यथा—

स्नानाय (=स्नातुं) गच्छति, यागाय (यष्टुं, यज्ञसम्पादयितुं) याति; दानाय (=दातुं) धनं अर्जयति ।

१७. **नमः स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च**—नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलं तथा वषट् शब्दों के योग में चतुर्थी होती है । यथा—**गुरवे** नमः; स्वस्ति **भवते**; **अग्नये** स्वाहा; **पितृभ्यः** स्वधा; **इन्द्राय** वषट् ।

→केवल पर्याप्त सामर्थ्यवाची 'अलं' के योग में 'चतुर्थी' होती है । यथा—**दैत्येभ्यः** हरिः अलं; अलं मल्लो **प्रतिमल्लाय** ।

→'अलं' की समानार्थक प्रभु, शक्त तथा प्र+भू के योग में भी चतुर्थी होती है । यथा—अयं मल्लः **प्रतिमल्लाय** प्रभुः शक्तः प्रभवति वा ।

→'नमः' पूर्वक 'कृ' धातु के योग में 'द्वितीया' लगती है । यथा—**मुनित्रयं** नमस्कृत्य । किन्तु 'प्र' उपसर्ग-पूर्वक 'नम्' धातु के योग में द्वितीया और चतुर्थी दोनों होती हैं । यथा—**धातारं** प्रणिपत्य प्रणम्य **त्रिलोचनाय** ।

१८. 'कहना' अर्थ वाली कथ्, ख्या, शंस्, चक्ष्, नि+विद् आदि धातुओं के योग में, जिससे कहा जाय, उसमें चतुर्थी होती है । यथा—आर्ये ! कथयामि **ते** भूतार्थम् (=आर्ये! मैं तुमसे सत्य कहता हूँ); एहि, इमां वनस्पति-सेवां **काश्यपाय** निवेदयावहे (=आओ ! इस वृक्षकृत सेवा को गुरु से निवेदित करें); **यस्मै** ब्रह्मनारायणं जगौ ।

१९. 'भेजना' अर्थ वाली धातुओं के प्रयोग में, जिस व्यक्ति के पास कोई भेजा जाता है, उसमें चतुर्थी लगती है । यथा—भोजेन दूतो **रघवे** विसृष्टः (=राजा भोज ने रघु के पास दूत भेजा), **माधवाय** पद्मवतीं प्रहिण्वता देवरातेन…(=माधव के पास पद्मवती को भेजने वाले देवरात ने—) ।

२०. अनादर में 'मन्' धातु का गौण कर्म विकल्प से चतुर्थी (या द्वितीया) में रक्खा जाता है । यथा—न त्वां **तृणाय** (तृणं वा) मन्ये (=मैं तुम्हें तिनके के बराबर भी नहीं मानता) ।

→किन्तु यदि अनादर का भाव न हो और केवल समता या तुलना दिखलानी हो तो केवल द्वितीया लगती है । यथा—त्वां तृणं मन्ये ।

२१. **गत्यर्थकर्मणि द्वितीया चतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि**—यदि गत्यर्थक धातुओं का कर्म मार्गवाची न हो और क्रिया-निष्पादन में शरीराङ्गों से व्यापार करना पड़े तो उस कर्म में चतुर्थी (और द्वितीया) दोनों होते हैं। यथा—**ग्रामाय** (ग्रामं वा) गच्छति।

२२. **चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभद्रकुशलसुखार्थहितैः**—आशीर्वाद अर्थ में 'आयुष्य' मद्र, भद्र, कुशल, सुख, अर्थ और हित आदि के योग में विकल्प से चतुर्थी (और षष्ठी) विभक्ति होती है। यथा—**देवदत्ताय** कुशलं भूयात्; स्वागतन्**ते**; स्वस्ति **ते** भूयात्; आयुष्यं चिरजीवितं **कृष्णाय** (कृष्णस्य वा) भूयात्; मद्रं भद्रं कुशलं निरामयं सुखं शं अर्थः हितं पथ्यं वा **कृष्णाय** (कृष्णस्य वा) भूयात्।

अपादान कारक (पञ्चमी विभक्ति)

१. **ध्रुवमपायेऽपादानम्**—जिससे किसी वस्तु का अलग होना पाया जाय, उसमें अपादान कारक और पंचमी विभक्ति लगती है। यथा—**वृक्षात्** फलानि पतन्ति; **अश्वपृष्ठात्** अपतत्।

२. **जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्** (**वार्तिक**)—जुगुप्सा, विराम, प्रमाद तथा उनकी समानार्थक धातुओं के योग में पंचमी विभक्ति होती है। यथा—**पापात्** जुगुप्सते; वत्स! **एतस्मात्** विरम; **स्वाधिकारात्** प्रमत्तः; **धर्मात्** प्रमाद्यति मुह्यति वा; न **निश्चितार्थात्** विरमन्ति धीराः।

३. **भीत्रार्थानां भयहेतुः**—जिसके कारण भय मालूम हो और जिससे रक्षा करनी हो, उसमें पञ्चमी विभक्ति लगती है। यथा—**सर्पात्** भयं; **सिंहात्** बिभेति; रक्ष मां **नरकपातात्**; न भीतो **मरणादस्मि; लोकापवादात्** भयं।

४. **पराजेरसोढः**—परा पूर्वक 'जि' धातु के योग में, जो असहनीय होता है, उसमें पञ्चमी विभक्ति लगती है। यथा—**अध्ययनात्** पराजयते (=पढ़ने से जी चुराता है)।

५. **वारणार्थानामीप्सितः**—जिससे किसी को मना किया जाय या दूर किया जाय, उसमें पञ्चमी होती है। यथा—**पापात्** निवारयति; **यवेभ्यः** गां वारयति।

६. **अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति**—जब छिपना या छिपाना अभीष्ट हो, तो जिससे छिपा-छिपाया जाय, उसमें पंचमी लगती है। यथा—**मातुः** निलीयते कृष्णः।

७. **आख्यातोपयोगे**—जिससे नियमपूर्वक विद्या ग्रहण की जाय, उसमें पंचमी लगती है। यथा— **उपाध्यायात्** व्याकरणं अधीते, मया **तीर्थात्** अभिनय विद्या शिक्षिता, **तेभ्यो**ऽधिगन्तुं निगमान्तविद्यां वाल्मीकिपार्श्वादिह पर्यटामि।

८. **जनिकर्तुः प्रकृतिः**—जन् धातु के योग में मूलकारण में पञ्चमी होती है। यथा—**गोमयात्** वृश्चिको जायते; **कामात्** क्रोधोऽभिजायते; **ब्रह्मणः** प्रजाः प्रजायन्ते।

९. **भुवः प्रभवश्च**—उत्पन्न होनेवाले का जो प्रभव (= उत्पत्तिस्थान) होता है, उसमें भी पञ्चमी लगती है। यथा—**हिमवतः**, **हिमालयात्** वा गंगा प्रभवति; **लोभात्** क्रोधो प्रभवति।

१०. **ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे**—ल्यप् का लोप होने पर कर्म और अधिकरण में पञ्चमी होती है। यथा—**प्रासादात्** (= प्रासादं आरुह्य) प्रेक्षते; **आसनात्** (आसनं उपविश्य) प्रेक्षते; **श्वसुरात्** (= श्वसुरं अवलोक्य) जिह्रेति।

११. **प्रश्नाख्यानयोश्च** (वार्तिक)—प्रश्न और आख्यान (= उत्तर) वाची शब्दों के योग में पञ्चमी होती है। यथा—**कुतो** भवान्? पाटलिपुत्रात् (= आप कहाँ से आ रहे हैं? पटना से।); **कस्मात्** त्वं? **नद्याः** (= तुम कहाँ से आ रहे हो? नदी के किनारे से)।

१२. **यतश्चाध्वकालनिर्माणं तत्र पञ्चमी** (वार्तिक)—जिस स्थान या समय से दूसरे स्थान या समय की दूरी या अन्तर दिखलाया जाता है, उसमें पञ्चमी होती है। यथा—**वनात्** ग्रामः योजनं योजने वा तिष्ठति;

कार्तिक्याः आग्रहायणी मासे भवति (=कार्तिक पूर्णिमा से अगहन की पूर्णिमा एक मास बाद होती है।)

→ध्यान रहे कि इसमें दूरी वाची शब्द प्रथमा या सप्तमी में रखा जाता है, जब कि काल वाची शब्द केवल सप्तमी में (ऊपर देखिये—योजनं योजने, तथा मासे)।

१३. **पंचमी विभक्तेः**—ईयसुन् या तरप् प्रत्ययान्त विशेषण या सामान्य विशेषण द्वारा यदि किसी का तुलनात्मक भेद दिखलाया जाय, तो उसमें पंचमी होती है। यथा—श्रेयान् स्वधर्मः **परधर्मात्**; **स्वधर्मत्यागात्** मरणं श्रेयः; **मोहात्** अभूत् कष्टतरः प्रबोधः; **चैत्ररथात्** अनूने वृन्दावने (=चैत्ररथ नामक वन के समकक्ष वृन्दावन में)।

१४. **अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते**—अन्य, इतर, आरात् (=समीप), ऋते (=बिना) आदि शब्दों; दिशावाचक प्राक् (=पूर्व), प्रत्यक् (=पश्चिम), उदीच् (=उत्तर) आदि शब्दों तथा उत्तरा, दक्षिणा अथवा उत्तराहि, दक्षिणाहि आदि शब्दों के योग में पञ्चमी होती है। यथा—**कृष्णात्** अन्यः इतरः वा; **वनात्** आरात्; ऋते **कृष्णात्**; **ग्रामात्** पूर्वः उत्तरः वा, प्राक् प्रत्यक् वा **ग्रामात्**, दक्षिणा दक्षिणाहि उत्तरा उत्तराहि वा **ग्रामात्**।

१५. प्रभृति, आरभ्य, बहिः, अनन्तरं, परं और ऊर्ध्वं के योग में पञ्चमी होती है। यथा—**शैशवात्** प्रभृति पोषितां, प्रथमावलोकन **दिवसात्** आरभ्य, **ग्रामात्** बहिः निवसन्, **विवाहविधेः** अनन्तरं, **अस्मात्** परं (=इसके बाद), **मुहूर्तात्** ऊर्ध्वं म्रिये (=क्षण भर के बाद मर जाऊँगा।)

१६. **पञ्चम्यपाङ्परिभिः**—कर्म प्रवचनीय संज्ञक अप, परि और आङ् के योग में पञ्चमी लगती है। यथा—अप **हरेः** संसारः (=हरि को छोड़ कर अन्यत्र संसार है), परि **संसारात्** मुक्तिः (=सांसारिकता को छोड़ कर मुक्ति है), **आमुक्तेः** संसारः (=मुक्ति पर्यन्त यह संसार है)। इसी प्रकार आपरितोषात् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोग-विज्ञानं, **आमूलात्** श्रोतुमिच्छामि आदि।

१७. **प्रतिः प्रतिनिधिप्रतिदानयोः**—प्रतिनिधि अथवा प्रतिदान अर्थ वाले कर्मप्रवचनीय 'प्रति' के योग में भी पंचमी लगती है। यथा—प्रद्युम्नः **कृष्णात्** प्रति (=प्रद्युम्न कृष्ण के प्रतिनिधि हैं), **तिलेभ्यः** माषान् प्रतियच्छति (=तिल के बदले उड़द देता है)।

१८. पृथक्, विना और नाना (=विना) के योग में पंचमी (तृतीया या द्वितीया) होती है। यथा—**रामात्** (रामेण रामं वा) विना नोत्सहे जीवितुं, विभीषणः **रावणात्** (रावणेन रावणं वा) पृथक् अभवत्, नाना **नार्याः** (नार्या, नारीं वा) निष्फला लोक-यात्रा।

१९. **करणे च स्तोकाल्पकृच्छ्रकतिपयस्यासत्ववचनस्य**—अद्रव्यवाची स्तोक (=थोड़ा), अल्प, कृच्छ्र (=कठिनाई से) और कतिपय (=कुछ) के करण में विकल्प से पंचमी (या तृतीया) होती है। यथा—**स्तोकात्** (स्तोकेन वा) मुक्तः, **अल्पात्** (अल्पेन वा) **कृच्छ्रात्** (कृच्छ्रेण वा) **कतिपयात्** कतिपयेन वा मुक्तः।

२०. **दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च**—अद्रव्यवाची दूर और समीप अर्थ वाले शब्दों के योग में द्वितीया, तृतीया, पंचमी या सप्तमी में से कोई भी लग सकती है। यथा—दूरं दूरेण **दूरात्** दूरे वा ग्रामस्य, अन्तिकं अन्तिकेन **अन्तिकात्** अन्तिके वा ग्रामस्य।

सम्बन्ध कारक (षष्ठी विभक्ति)

१. **षष्ठी शेषे**—सम्बन्ध में षष्ठी होती है। यथा—**राज्ञः** पुरुषः (स्वस्वामिभावसम्बन्ध), **रामस्य** पुत्रः (जन्यजनकभावसम्बन्ध), **पशोः** पादः (अवयवअवयवीभावसम्बन्ध), **भ्रुवोर्वचः** (स्थानीआदेशभावसम्बन्ध), **काष्ठस्य** क्रीडनकं (कार्यकारणभावसम्बन्ध) आदि।

२. **कर्मादीनामपि सम्बन्धमात्रविवक्षायां षष्ठ्येव**—'कर्म' आदि में भी 'सम्बन्ध' मात्र की विवक्षा होने पर षष्ठी ही लगती है। यथा—**मातुः** स्मरति (द्वितीयार्थे), **फलानां** तृप्तः (तृतीयार्थे), **सतां** गतं, भजे शम्भोः **चरणयोः**।

३. **षष्ठीहेतुप्रयोगे**—जब हेतु शब्द का वस्तुतः प्रयोग किया जाता है, तब हेतुभूत शब्द में तथा स्वयं हेतु शब्द में षष्ठी लगती है। यथा—

अन्नस्य हेतोः वसति, **अध्ययनस्य हेतोः** वसति; विस्मृतं **कस्य हेतोः, अल्पस्य हेतोः** बहु हातुमिच्छन् विचारमूढः प्रतिभासि में त्वम् ।

→**सर्वनाम्नस्तृतीया च**—किन्तु जब 'हेतु' शब्द के साथ किसी सर्वनाम का प्रयोग हो, तो उक्त सर्वनाम शब्द और 'हेतु' शब्द दोनों में तृतीया, पंचमी और षष्ठी में से कोई भी विभक्ति लग सकती है । यथा—कस्य हेतोः, कस्मात् हेतोः, केन हेतुना वा अत्र वसति ।

→**निमित्तपर्यायप्रयोगे सर्वासां प्रायदर्शनम्**—यदि 'निमित्त' अर्थ वाले कारण, प्रयोजन आदि का प्रयोग होता है तो प्रायः सभी विभक्तियों का प्रयोग किया जा सकता है । यथा—को हेतुः, किं प्रयोजनं, केन निमित्तेन, कस्मै निमित्ताय, कस्मात् प्रयोजनात्, कस्य निमित्तस्य, कस्मिन् प्रयोजने आदि ।

४. **षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन**—अतसुच् (= तस्) प्रत्यय से अन्त होने वाले शब्दों तथा उस प्रत्यय का अर्थ रखने वाले प्रत्ययों से युक्त शब्दों के योग में षष्ठी होती है । यथा—**ग्रामस्य** दक्षिणतः पश्चिमतः, पुरः, पुरस्तात्, उपरि; उपरिष्टात् । उपरि अधः वा **तरूणाम्** ।

५. **एनपा द्वितीया**—एनप् (एन) प्रत्ययान्त शब्दों के योग में षष्ठी और द्वितीया दोनों होती हैं । यथा—दक्षिणेन उत्तरेण पश्चिमेन वा **ग्रामस्य** ग्रामं वा ।

६. **दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम्**—दूर, अन्तिक (= पास) तथा तदर्थक शब्दों के योग में विकल्प से षष्ठी तथा पंचमी दोनों का प्रयोग होता है । यथा—**ग्रामस्य** ग्रामात् वा दूरं निकटं समीपं अन्तिकं वा ।

७. **अधीगर्थदयेशां कर्मणि**—अधि + इ (= स्मरण करना), दय् (= दया करना), ईश् (= समर्थ होना) तथा तदर्थक धातुओं के योग में षष्ठी होती है । यथा—सः **मातुः** अध्येति स्मरति वा, **रामस्य** दयमानः सः मृतः, नायं **गात्राणां** ईष्टे प्रभवति वा । ननु प्रभवति आर्यः **शिष्य** जनस्य । स्मरन् **राघव बाणानां** विव्यथे राक्षसेश्वरः । **रामस्य** दयमानः असौ अध्येति **तव** लक्ष्मणः ।

८. **जासिनिप्रहणनाटक्राथपिषां हिंसायाम्**—हिंसार्थक जस्, नि तथा प्र उपसर्गपूर्वक हन्, नट्, क्रथ् और पिष् धातुओं के कर्म में षष्ठी होती है। यथा—**चौरस्य** उज्जासनं, **चौरस्य** निहननं, प्रहणनं, निप्रहणं वा, **चौरस्य** उन्नाटनं क्राथनं पेषणं वा। प्रवृत्त एव स्वयं……क्रमेण पेष्टुं **भुवनद्विषां** असि।

९. **व्यवहृपणोः समर्थयोः**—वि और अव उपसर्गपूर्वक एक ही अर्थ वाली हृ तथा पण् धातुओं के कर्म में षष्ठी होती है। यथा—शतस्य व्यवहरणं पणनं वा (=सौ रुपये का सौदा या बाजी)। **प्राणानां** अपनिष्ट असौ (=उसने तो प्राणों की बाजी लगा दी)।

१०. **दिवस्तदर्थस्य**—द्यूत अर्थ वाली दिव् धातु का कर्म भी षष्ठी में होता है। यथा—**शतस्य** दीव्यति।

—>किन्तु यदि उक्त दिव् धातु के पूर्व कोई उपसर्ग लगा हो, तो द्वितीया या षष्ठी में से कोई भी लग सकती है। यथा—**शतस्य** शतं वा प्रतिदीव्यति।

११. **प्रेष्यब्रुवोर्हविषो देवता सम्प्रदाने**—यदि किसी देवता को आहुति देनी है तो प्रेष्य और ब्रुव् धातुओं के योग में हविर्भूत कर्म में षष्ठी लगती है। यथा—अग्नये **छागस्य** प्रेष्य (=भेजो) अनुब्रूहि (=दे दो) वा।

१२. **क्तस्य च वर्तमाने**—वर्तमान काल की विवक्षा में क्त प्रत्यय के योग में षष्ठी होती है। यथा—**राज्ञां** मतः पूजितः वा बुद्धः (=राजा गण बुद्ध को मानते हैं और पूजते हैं)।

—>किन्तु भूत काल की विवक्षा में 'क्त' प्रत्यय के योग में तृतीया ही होगी। यथा—न खलु विदिताः ते **चाणक्यहतकेन**।

१३. शतृ, शानच्, उ प्रत्यय, यक्, निष्ठा संज्ञक क्त और क्तवतु, खल् तथा तृन् प्रत्ययान्त शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति का निषेध है।

१४. **कृत्यानां कर्तरि वा**—जिन शब्दों में कृत्य प्रत्यय (=तव्यत्, अनीयर्, यत्, ण्यत्, क्यप् और केलिमर्) जुड़ जाते हैं, उनके योग में विकल्प से षष्ठी या तृतीया होती है। यथा—**मम** (मया वा) सेव्यो

हरिः; न वयं अनुग्राह्याः प्रायो **देवतानां**, न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः (अनुजीविनां वा)।

१५. तुल्य और उसके समानार्थक सदृश, सम, संकाश इत्यादि शब्दों के योग में विकल्प से षष्ठी (या तृतीया) होती है। यथा—कृष्णस्य (कृष्णेन वा) सदृशः समः संकाशः।

—>किन्तु तदर्थक तुल्य और उपमा शब्दों के योग में केवल षष्ठी होती है। यथा—तुल्य उपमा वा **कृष्णस्य** नास्ति।

अधिकरण कारक (सप्तमी विभक्ति)

१. **सप्तम्यधिकरणे**—क्रिया के आधार में सप्तमी होती है। यह आधार तीन प्रकार का होता है—(क) औपश्लेषिक (=जिसमें आधेय का भौतिक संश्लेष प्राप्त हो)। यथा—**कटे** काकः आस्ते (=कौआ चटाई पर है। (ख) वैषयिक (=जिसमें आधेय का बौद्धिक संश्लेष प्राप्त हो)। यथा—**मोक्षे** इच्छा अस्ति। (ग) अभिव्यापक (=जिसमें आधेय का व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध प्राप्त हो)। यथा—**तिलेषु** तैलं अस्ति।

२. दूर, अन्तिक आदि शब्दों में तथा क्रिया के समय में सप्तमी होती है। यथा—ग्रामस्य **अन्तिके,** ग्रामात् **दूरे** आषाढस्य प्रथम**दिवसे** आदि।

३. **क्तस्येन्विषयस्य कर्मण्युपसंख्यानम्**—क्त प्रत्ययान्त शब्दों में इन् प्रत्यय लगाकर बने हुये शब्दों के योग में उनके कर्म में सप्तमी लगती है। यथा—अधीती **व्याकरणे,** गृहीती षट् **सांगेषु**।

४. **साध्वसाधुप्रयोगे च**—साधु और असाधु शब्दों के योग में सप्तमी होती है। यथा—साधुः कृष्णो **मातरि,** असाधुः **मातुले**।

५. **निमित्तात्कर्मयोगे**—जिस निमित्त (=फल) की प्राप्ति के लिये कोई कार्य किया जाता है, उस निमित्त भूत शब्द में सप्तमी लगती है। यथा—**चर्मणि** द्वीपिनं हन्ति **दन्तयो**र्हन्ति कुञ्जरम्। **केशेषु** चमरीं हन्ति **सीम्नि** पुष्कलको हतः॥ (=चमड़े के लिये गैंडे को, दाँतों के लिये हाथी को, बालों के लिये चमरीमृग और कस्तूरी के लिये पुष्कलमृग को मारा जाता है)।

६. **यस्य च भावेन भावलक्षणम्**—जब किसी काम के होने पर किसी दूसरे काम का होना या किया जाना प्राप्त हो, तो जो कार्य हो चुकता है, उसमें सप्तमी लगती है। यथा—**गोषु दुह्यमानासु** सः गृहं गतः; **रामे** वनं **गते** दशरथः प्राणान् तत्याज; **सर्वेषु** सुप्तेषु रात्रौ सुषुमा रोदिति।

७. **षष्ठी चानादरे**—जिसका अनादर या उपेक्षा करके कोई कार्य किया जाता है, उसमें विकल्प से षष्ठी या सप्तमी होती है। यथा—रुदतः पुत्रस्य **रुदति पुत्रे** वा सः प्राव्राजीत् (= रोते हुये पुत्र की परवाह न करके वह संन्यासी बन गया)।

८. **स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षि प्रतिभूप्रसूतैश्च**—स्वामी, ईश्वर, अधिपति, दायाद, साक्षी, प्रतिभू और प्रसूत इन सात शब्दों के योग में षष्ठी और सप्तमी में से कोई भी लगाई जा सकती है। यथा—गवां **गोषु** वा स्वामी ईश्वरः अधिपतिः वा; गवां **गोषु** वा प्रसूतः (= गायों को उत्तराधिकार में प्राप्त करने के लिये पैदा हुआ)।

९. **आयुक्तकुशलाभ्यांचासेवायाम्**—सब प्रकार से सेवा करने के अर्थ में आयुक्त और कुशल शब्दों का प्रयोग होने पर विकल्प से षष्ठी और सप्तमी दोनों का प्रयोग होता है। यथा—आयुक्तः (= नियुक्त, समर्पित) कुशलो (= निपुण) वा **हरिपूजने** हरिपूजनस्य वा।

१०. **यतश्च निर्धारणम्**—जाति, गुण, क्रिया, संज्ञा आदि की दृष्टि से यदि किसी समुदाय में से किसी एक का वैशिष्टय बतलाना हो तो षष्ठी और सप्तमी दोनों का प्रयोग हो सकता है। यथा—गवां **गोषु** वा कृष्णा बहुक्षीरा; कवीनां **कविषु** वा कालिदासः श्रेष्ठः; नदीनां **नदीषु** वा गंगा पूज्या।

—>किन्तु यदि समुदाय और उक्त व्यक्तिविशेष में वैधर्म्य (= सादृश्य का अभाव) हो तो केवल पंचमी लगती है। यथा—माथुराः **पाटलिपुत्रकेभ्यः** आढ्यतराः (मथुरानिवासी पटनानिवासियों से अधिक समृद्ध हैं)।

११. **साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः**—अर्चना अर्थ में साधु और निपुण शब्दों के योग में सप्तमी होती है, किन्तु 'प्रति' या तदर्थक किसी कर्मप्रवचनीय का योग होने पर सप्तमी नहीं होती। यथा—सः **मातरि**

साधुः निपुणो वा । किन्तु—सः साधुः निपुणो वा **मातरं** प्रति परि अनु वा ।

१२. **प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च**—प्रसित (आसक्त) और उत्सुक शब्दों के योग में तृतीया और सप्तमी विभक्तियाँ विकल्प से होती हैं। यथा—प्रसितः उत्सुको वा हरिणा **हरौ** वा; निद्रया **निद्रायां** वा उत्सुकः ।

१३. **नक्षत्रे च लुपि**—नक्षत्रवाची शब्दों के योग में विकल्प से तृतीया या सप्तमी विभक्तियाँ लगती हैं। यथा—मूलेन **मूले** वा देवीं आवाहयेत्, श्रवणेन **श्रवणे** वा विसर्जयेत्; पुष्येण **पुष्ये** वा कार्यमारभेत ।

१४. **सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये**—दो कारकशक्तियों के बीच 'समय' या 'मार्ग' का अन्तर बतलाने वाले शब्दों में विकल्प से पंचमी या सप्तमी होती है। यथा—अस्मिन् दिने भुक्त्वा अयं त्र्यहात् **त्र्यहे** वा भोक्ता (= आज करके यह तीन दिन बाद भोजन करेगा)। इहस्थोऽपि अयं क्रोशात् **क्रोशे** वा लक्ष्यं विध्येत् (= यहाँ स्थित होने पर भी यह एक कोश पर स्थित लक्ष्य को बेध देगा)।

१५. 'अधिक' शब्द के योग में भी विकल्प से पंचमी या सप्तमी होती है। यथा—**लोके** लोकाद्वा अधिको हरिः ।

१६. **अधिरीश्वरे**—'स्वामी' के अर्थ में 'अधि' कर्मप्रवचनीय होता है और उसके योग में अधिकृत वस्तु में सप्तमी होती है। यथा—अधि **भुवि** रामः (= राम संसार के स्वामी हैं)।

१७. गृहणार्थक और प्रहारार्थक धातुओं के योग में जिसे पकड़ा जाय या जिस पर प्रहार किया जाय, उसमें सप्तमी होती है। यथा—**केशेषु** गृहीत्वा; आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुं **अनागसि** ।

१८. विश्वास अर्थबोधक शब्दों के योग में जिस पर विश्वास किया जाय उसमें सप्तमी लगती है। यथा—सः **मयि** विश्वसिति ।

अष्टमोऽध्यायः

सन्धि-प्रकरण

लक्षण—दो समीपस्थ शब्दों के मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे सन्धि कहते हैं।

महत्व—वाक्य में शब्दों की सन्धि करना या न करना कहने वाले या लिखने वाले की इच्छा पर निर्भर है, किन्तु शब्द और धातु के रूपों में रूपों में और समास में सन्धि करना परम आवश्यक है। यथा—

पौ + अकः = पावकः

नि + अवसत् = न्यवसत्

यथा + इष्ट = यथेष्ट

मुख + इन्दु = मुखेन्दु—आदि।

किन्तु 'अहं तत्र अगच्छम्' या 'अहं तत्रागच्छम्' या 'तत्रागच्छमहम्' में से कुछ भी लिखना हमारी इच्छा पर है।

सन्धि कर देने से कभी वाक्य में सुन्दरता आ जाती है, कभी बोलने में आसानी मालूम होती है, वाक्य में दाल-चावल अलग-अलग रह कर विरसता नहीं उत्पन्न करते अपि तु घुटी-मिली स्वादिष्ट खिचड़ी का मजा आता है।

प्रकार—सन्धियाँ तीन प्रकार की होती हैं—

(१) स्वरसन्धि, (२) व्यञ्जनसन्धि, (३) विसर्गसन्धि।

कुछ संकेत (= प्रत्याहार)—सन्धियों से प्रयुक्त सूत्रों को भलीभाँति समझने के लिये निम्नस्थ सूक्ष्म संकेतों (= प्रत्याहारों) को समझ लेना बड़ा उपादेय है—

अण्—अ, इ, उ

अक्—अ, इ, उ, ऋ; लृ

अच्—अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ऐ, ओ, औ

अश्—अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ऐ, ओ, औ, ह, य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द

अट्—अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र

इक्—इ, उ, ऋ, लृ

एङ्—ऐ, ओ

एच्—ए, ओ, ऐ, औ

ऐच्—ऐ, औ

खय्—ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प

खर्—ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स, ह

चर्—च, ट, त, क, प; श, ष, स

जश्—ज, ब, ग, ड; द

झश्—झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द

झष्—झ, भ, घ, ढ, ध

झल्—झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स, ह

यण्—य, र, ल, व

यम्—य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न

शल्—श, ष, स, ह

हश्—ह, य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द

हल्—ह, य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स, ह

संक्षेप में सभी वर्णों को चार गणों में बाँटा जा सकता है—

पहला गण—खर्—वर्गों के पहले और दूसरे अक्षर तथा श्, ष्, स्।

दूसरा गण—(१) अण्—सभी स्वर, और य्, र्, ल्, व्, ह्।

(२) झश्—वर्गों का तीसरे और चौथे अक्षर।

तीसरा गण—अश्—स्वर, वर्गों के तीसरे, चौथे और पाँचवें अक्षर तथा य्, र्, ल्, व्, ह्।

चौथा गण—झल्—य्, र्, ल्, व् और वर्गों के पाँचवें अक्षर को छोड़कर शेष सभी व्यञ्जन, अर्थात् वर्गों के पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे अक्षर तथा—श्, ष्, स्, ह् ।

स्वर-सन्धि

स्वर के साथ स्वर के मेल को स्वरसन्धि कहते हैं । इसे ही अच् सन्धि भी कहते हैं ।

नियम—

(१) यदि दीर्घ अथवा ह्रस्व अ, इ, उ और ऋ के बाद कोई सवर्ण स्वर आवे तो दोनों को मिलाकर सवर्ण दीर्घ स्वर होता है । **(अकः सवर्णे दीर्घः) इसे दीर्घसन्धि कहते हैं** । उदाहरण—विद्या + आलयः = विद्यालयः । विद्या + अभ्यासः = विद्याभ्यासः । मही + इन्द्रः = महीन्द्रः । लक्ष्मी + ईशः = लक्ष्मीशः । गुरु + उपदेशः = गुरूपदेशः । वधू + उत्सवः = वधूत्सवः । पितृ + ऋणम् = पितॄणम् । शुभ + आगमनम् = शुभागमनम् । विद्या + अर्थी = विद्यार्थी । गिरि + इन्द्र = गिरीन्द्रः । श्री + ईशः = श्रीशः । गिरि + ईशः = गिरीशः । विधु + उदयः = विधूदयः । मातृ + ऋद्धिः = मातॄद्धिः । शश् + अङ्क = शशाङ्कः । महा + आशयः = महाशयः । साधु + ऊचुः = साधूचुः । इति + इव = इतीव । अभिमन्यु + उपाख्यानम्=अभिमन्यूपाख्यानम्—आदि ।

अपवाद—शक + अन्धुः = शकन्धुः । कुल + अटा = कुलटा ।

(२) यदि अ अथवा आ के बाद—(क) इ अथवा ई हो तो वह दोनों के स्थान पर 'ए' हो जाता है । (ख) उ अथवा ऊ हो तो दोनों के स्थान पर 'ओ' हो जाता है । (ग) ऋ अथवा ॠ हो तो दोनों के स्थान पर 'अर्' हो जाता है । (घ) ऌ अथवा ॡ हो तो दोनों के स्थान पर 'अल्' हो जाता है । **(आद्गुणः) इसे गुणसन्धि कहते हैं** । उदाहरण—

(क) रमा + ईशः = रमेशः । देव + इन्द्रः = देवेन्द्रः । परम + ईश्वरः= परमेश्वरः । गण + ईशः = गणेशः । सुर + ईशः = सुरेशः । महा + ईशः =

महेशः । उप + इन्द्रः = उपेन्द्रः । नर + ईशः = नरेशः । पुत्र + इष्टिः = पुत्रेष्टिः । ईश्वर + इच्छा = ईश्वरेच्छा ।

(ख) गंगा + उदकम् = गंगोदकम् । चन्द्र + उदयः = चन्द्रोदयः । गंगा + उर्म्मिः = गंगोर्म्मिः । हित + उपदेशः = हितोपदेशः । नील + उत्पलम् = नीलोत्पलम् । महा + उत्सवः = महोत्सवः । तडाग + उदकम् = तडागोदकम् । वृक्ष + उपरि = वृक्षोपरि । विशाल + उदरम् = विशालोदरम् । ज्ञान + उदयः = ज्ञानोदयः । नव + ऊढा = नवोढा । मम + ऊरुः = ममोरुः । वृषभ + ऊढः = वृषभोढः । शय्या + उत्सङ्गे = शय्योत्सङ्गे । शिला + उच्चये = शिलोच्चये ।

(ग) वसन्त + ऋतुः = वसन्तर्तुः । महा + ऋषिः = महर्षिः । देव + ऋषिः = देवर्षिः । ब्रह्मा + ऋषिः = ब्रह्मर्षिः । शीत + ऋतौ = शीततौं । महा + ऋद्धिः = महर्द्धिः ।

(घ) तव + लृकारः = तवल्लकारः ।

नोट—इस प्रकार के रूप वेद में मिलते हैं, लौकिक संस्कृत में नहीं ।

अपवाद—कुछ ऐसे भी शब्द हैं जिनमें उक्त नियम नहीं लगता । यथा—

१. अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिणी ।

२. स्व + ईरः = स्वैरः । स्व + ईरिणी = स्वैरिणी । स्व + ईरम् = स्वैरम् ।

३. प्र + ऊढः = प्रौढः । प्र + इषः = प्रैषः ।

४. अप + ऋच्छति = अपार्च्छति । प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति ।

५. सुख + ऋतः = सुखार्तः ।

(३) यदि अ अथवा आ के बाद—(क) ए अथवा ऐ आवे तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' हो जाता है और यदि (ख) ओ अथवा औ आवे तो दोनों के स्थान पर 'औ' हो जाता है । **(वृद्धिरेचि) इसे वृद्धिसन्धि कहते हैं** । उदाहरण—

(क) एक + एकम् = एकैकम् । महा + ऐरावतः = महैरावतः । परम + ऐश्वर्यम् = परमैश्वर्यम् । तथा + एव = तथैव । यदा + एव = यदैव । महा + ऐश्वर्यम् = महैश्वर्यम् । अद्य + एव = अद्यैव । यथा + एव = यथैव ।

(ख) जल + ओघः = जलौघः । जल + ओका = जलौका (जोंक) । चित्त + औदार्यम् = चित्तौदार्यम् । शुद्ध + ओदनः = शुद्धौदनः । महा + ओषधिः = महौषधिः । महा + औषधम् = महौषधम् ।

अपवाद—किन्तु कुछ स्थलों पर उक्त नियम नहीं लगता । यथा—

१. प्र + एजते = प्रेजते

२. उप + ओषति = उपोषति

(४) यदि (क) इ अथवा ई, (ख) उ अथवा ऊ (ग) ऋ अथवा ॠ, (घ) लृ अथवा ॡ के बाद असमान स्वर आवे तो इकार, उकार, ऋकार और लृकार के स्थान पर क्रमशः य्, व्, र्, ल् हो जाता है । **(इको यणचि) इसे यण् सन्धि कहते हैं** । उदाहरण—

(क) यदि + अपि = यद्यपि । अति + आचार = अत्याचारः । अभि + उदय = अभ्युदयः । प्रति + एकम् = प्रत्येकम् । देवी + आगता = देव्यागता । वली + ऋषभः = वल्यृषभः । वली + ऐरावतः = वल्यैरावतः । प्रति + उपकारः = प्रत्युपकारः । पार्वती + आराधनम् = पार्वत्याराधनम् । इति + आदि = इत्यादि । अपि + एवम् = अप्येवम् ।

(ख) सु + आगतम् = स्वागतम् । अनु + एषणम् = अन्वेषणम् । अनु + अयः = अन्वयः । बहु + ऐश्वर्यम् = बह्वैश्वर्यम् । तनु + इन्द्रियम् = तन्विन्द्रियम् । वधू + ऐश्वर्यम् = वध्वैश्वर्यम् । वधू + औदार्यम् = वध्वौदार्यम् । मधु + अरिः = मध्वरिः । गुरु + आदेशः = गुर्वादेशः । प्रभु + आज्ञा = प्रभ्वाज्ञा । शिशु + ऐक्यम् = शिश्वैक्यम् ।

(ग) पितृ + आदेशः = पित्रादेशः । मातृ + अनुमतिः = मात्रनुमतिः । पितृ + इच्छा = पित्रिच्छा । मातृ + ऐश्वर्यम् = मात्रैश्वर्यम् । पितृ + औदार्यम् = पित्रौदार्यम् । धातृ + अंशः = धात्रंशः । सवितृ + उदयः = सवित्रुदयः ।

(घ) लृ + आकृतिः = लाकृतिः ।

(५) यदि ए, ऐ, ओ, और औ के बाद कोई भी स्वर हो तो उनके स्थान पर क्रमशः अय्, आय्, अव् और आव् हो जाता है। (**एचोऽयवायावः) इसे अयादि चतुष्टय या अयादि सन्धि कहते हैं।** उदाहरण—

(क) ने + अनम् = नयनम् । शे + अनम् = शयनम् । शे + इतम् = शयितम् । हरे + ए = हरये ।

(ख) नै + अकः = नायकः । गै + अकः = गायकः । विनै + अकः = विनायकः । रै + ए = राये । रै + ओः = रायोः ।

(ग) पो + अनः = पवनः । भो + अनम् = भवनम् । विष्णो + ए = विष्णवे । गो + ओः = गवोः ।

(घ) पौ + अकः = पावकः । भौ + उकः = भावुकः । नौ + इकः = नाविकः । भौ + इनी = भाविनी । नौ + औ = नावौ ।

नोट—यकारादि प्रत्यय (ऐसा प्रत्यय जिसके आदि में 'य्' हो) परे रहने पर भी ओ और औ को क्रमशः 'अव्' और 'आव्' हो जाता है। यथा—गो + यम् = गव्यम् । नौ + यम् = नाव्यम् ।

(७) किसी पद के अन्त में यदि ए अथवा ओ हो और उस पद के बाद में 'अकार' आवे तो उस अकार का लोप करके उसके स्थान पर अवग्रह का चिह्न (ऽ) लग जाता है। (**एङः पदान्तादति) इसे पूर्वरूपसन्धि कहते हैं। उदाहरण—**

हरे + अव = हरेऽव = हे हरि, रक्षा करो ।

विष्णो + अव = विष्णोऽव = हे विष्णु, रक्षा करो ।

इसी प्रकार—प्रभो + अनुगृहाण = प्रभोऽनुगृहाण !

को + अत्र = कोऽत्र । गजे + अस्मिन् = गजेऽस्मिन्—आदि ।

नोट—(१) 'गो' शब्द के बाद यदि 'अ' आवे तो 'अ' का विकल्प से लोप होता है। यथा—गो + अग्रम् = गोऽग्रम् या गो अग्रम् ।

(२) 'गो' के बाद अकारादि शब्द आने पर 'गो' के 'ओ' की जगह 'अव' का आदेश भी विकल्प से होता है। यथा—गो + अग्रम् = गवाग्रम् या गोऽग्रम् या गो अग्रम् ।

(७) प्लुत स्वर के बाद अथवा प्रगृह्यसंज्ञक वर्णों के बाद कोई स्वर हो, तो सन्धि नहीं होती। (**प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्**) **इसे प्रकृतिभावसन्धि कहते हैं।**

(क) **प्लुत**—प्लुतों के साथ सन्धि नहीं होती। यथा—हे कृष्ण + आगच्छ = हे कृष्ण आगच्छ। एहि कृष्ण + अत्र गौश्चरति = एहि कृष्ण अत्र गौश्चरति।

(ख) **प्रगृह्य**—जब किसी संज्ञा, सर्वनाम या क्रिया के द्विवचन के अन्त में 'ई', 'अ' अथवा 'ए' रहता है तो उस 'ई', 'अ' और 'ए' से अन्तः होने वाले शब्द को **'प्रगृह्य'** कहते हैं। (= **ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्**)। इनके उपरान्त स्वर आने पर भी सन्धि नहीं होती। यथा—

लते + इमे = लते इमे। हरी + एतौ = हरी एतौ। साधू + अत्र = साधू अत्र। लते + अत्र = लते अत्र। विष्णू + इमौ = विष्णू इमौ। गंगे + अमू = गंगे अमू। पचेते + इमौ = पचेते + इमौ।

व्यञ्जन-सन्धि

व्यञ्जन के साथ स्वर या व्यञ्जन के मेल को व्यञ्जन सन्धि कहते हैं। इसे ही हल्सन्धि भी कहते हैं।

नियम—

(१) (**स्तोश्चुनाश्चुः**)—यदि सकार और तवर्ग के बाद शकार या चवर्ग आवे तो सकार और तवर्ग को क्रमशः शकार और चवर्ग हो जाता है। यथा—

(क) हरिस् + शेते = हरिश्शेते। रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति। दुस् + चरित्रम् = दुश्चरित्रम्। निस् + चयः = निश्चयः।

(ख) सत् + चित् = सच्चित्। तद्+जयः=जतज्जयः। भवत्+चरित्रम्= भवच्चरित्रम्। महत् + चित्रम् = महच्चित्रम्। धनिन् + जयः = धनिञ्जयः।

(२) (**ष्टुना ष्टुः**)—यदि सकार या तवर्ग के बाद षकार या टवर्ग का कोई वर्ण आवे तो सकार और तवर्ग के स्थान पर क्रमशः षकार और टवर्ग हो जाता है। यथा—

धनुस् + टंकारः = धनुष्टंकारः । रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः । रामस् + टीकते = रामष्टीकते । तत् + टीका = तट्टीका । उत् + डयनम् = उड्डयनम् । चक्रिन् + ढौकसे = चक्रिण्ढौकसे (= हे कृष्ण, तू जाता है) ।

नोट—यदि तवर्ग के किसी अक्षर के बाद 'ष्' आवे तो उसके स्थान पर मूर्धन्य षकार नहीं होता । यथा—

सन् + षष्ठः = सन्षष्ठः ।

(३) (**झलां जशो अन्ते**)—यदि अन्तस्थ (य, र, ल, व) और अनुनासिक (ङ, ञ, ण, न, म) व्यञ्जनों को छोड़ कर शेष किसी व्यञ्जन के बाद किसी वर्ग का तीसरा या चौथा अक्षर या कोई स्वर आये तो उस पूर्व व्यञ्जन के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा अक्षर हो जाता है । यथा—अप् + जम् = अब्जम् । षट् + दर्शनम् = षड्दर्शनम् । जगत् + ईशः = जगदीशः । एतत् + दुष्टम् = एतद्दुष्टम् । पयोमुक् + गर्जति = पयोमुग्गर्जति । वाक् + धनी = वाग्धनी । वाक् + ईशः = वागीशः । अच् + अन्तः = अजन्तः । क्रुध् + धः = क्रुद्धः । बुध् + धि = बुद्धिः ।

(४) (**यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा**)—यदि किसी पद के अन्त में र् और ह् को छोड़ कर शेष कोई व्यञ्जन हो और उसके बाद कोई अनुनासिक अक्षर हो तो उस पूर्व व्यञ्जन की जगह पर उसी वर्ग का पाँचवाँ अक्षर हो जाता है । यथा—

जगत् + नाथः = जगन्नाथः । षट् + मासा = षण्मासाः । एतद् + मुरारिः = एतन्मुरारिः । षट् + नगर्यः = षण्णगर्यः ।

नोट—प्रत्यय का अनुनासिक अक्षर परे होने पर तो नित्य ही अनुनासिक होता है । यथा—वाक् + मयम् = वाङ्मयम् । कियत् + मात्रम् = कियन्मात्रम् ।

(५) (**तोर्लि**)—यदि तवर्ग के बाद लकार आवे तो तवर्ग को भी लकार हो जाता है । यथा—तडित् + लता = तडिल्लता । उत् + लेखः = उल्लेखः । वृक्षात् + लगुडम् = वृक्षाल्लगुडम् । तद् + लयः = तल्लयः । तस्मात् + लालयेत् = तस्माल्लालयेत् ।

नोट—उक्त नियम में तवर्ग के 'न' को अनुस्वार हो जाता है। यथा—भवान् + लिखति = भवाँल्लिखति। महान् + लाभः = महाँल्लाभः। विद्वान्+ लसति = विद्वाँल्लसति।

(६) (झयो होऽन्यतरस्याम्)—यदि वर्गों के पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे अक्षर के बाद 'ह्' आवे तो उस 'ह्' के स्थान पर उसी वर्ग का चौथा अक्षर विकल्प से हो जाता है। यथा—अच् + हलम् = अज्झलम्। षट् + हलम् = षड्ढलम्। तत + हितम्=तद्धितम्। वाक् + हरिः=वाग्घरिः। ककुप् + हस्ती = ककुब्भस्ती।

(७) (शश्छोटि)—जिस पद के अन्त में वर्गों का पहला, दूसरा, तीसरा और चौथा अक्षर हो उस पद के बाद यदि 'श्' आवे और उस 'श्' के बाद अनुनासिक व्यञ्जन का य, र, ल, व, ह में से कोई हो तो उस 'श्' के स्थान में विकल्प से 'छ्' हो जाता है।

उदाहरण—एतत् + श्रुत्वा = एतच् + श्रुत्वा = एतच्छ्रुत्वा अथवा एतच्श्रुत्वा। तद् + शिवः = तच्छिवः अथवा तच्शिवः। वनात् + शशः = वनाच्छशः अथवा वनात्शशः।

नोट—तवर्ग आदि के स्थान पर (खरि च) के अनुसार 'च' हो गया।

(८) (मोऽनुस्वारः)—पदान्त मकार के बाद यदि कोई व्यञ्जन हो तो मकार के स्थान पर विकल्प से अनुस्वार हो जाता है। यथा—

हरिम् + वन्दे = हरिंवन्दे। गृहम् + चलति = गृहं चलति, गृहञ्चलति। मृत्युम् + जयः = मृत्युं जयः, मृत्युञ्जयः। सम् + गमः = संगमः, सङ्गमः।

नोट—स्वर परे रहने पर 'म्' इस स्वर के साथ ही मिल जाता है। यथा—

सम् + आचारः = समाचारः।

(९) (नश्चापदान्तस्य झलि)—अपदान्त म् न् के बाद यदि अनुनासिक व्यञ्जन और य्, र्, ल्, व्, ह् को छोड़ कर शेष कोई व्यञ्जन हो तो म् या न् के स्थान पर अनुस्वार हो जाता है।

उदाहरण—आक्रम् + स्यते = आक्रंस्यते। यशान् + सि = यशांसि।

(१०) (**अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः**)—यदि किसी पद के बीच में आये अनुस्वार के बाद श्, ष्, स् और ह् को छोड़ कोई और व्यञ्जन आवे तो अनुस्वार के स्थान पर उस व्यञ्जन विशेष का पाँचवाँ अक्षर हो जाता है। जैसे—अन्च् + इतः = अञ्चितः। सम् + कटम्=सङ्कटम्। शम् + भुः = शम्भुः। गम् + तारौ = गन्तारौ।

(११) **वा पदान्तस्य**—अनुस्वार के पदान्त में रहने पर भी ऊपर वाला नियम विकल्प से होता है। यथा—

ग्रामम् + गच्छति = ग्रामं गच्छति या ग्रामङ्गच्छति।
पुस्तकम् + पठति = पुस्तकं पठति या पुस्तकम्पठति।
तृणम् + चरति = तृणं चरति या तृणञ्चरति।
त्वम् + करोषि = त्वं करोषि या त्वङ्करोषि।

(१२) (**मो राजि समः क्वौ**)—किन्तु क्विप् प्रत्यय से युक्त राज् धातु परे हो तो सम उपसर्ग के म् को म ही बना रहेगा—यथा—सम् + राट् = सम्राट्।

(१३) (**रषाभ्यां नो णः समानपदे। अट्कुप्वाङ् नुम् व्यवायेऽपि**)—किसी समान पद (एक ही पद) में र्, ष्, ऋ और न् के बीच में कोई स्वर य्, र्, व्, ह् या ओष्ठ या कण्ठ स्थानीय व्यञ्जन आ जाय तो 'न्' को 'ण्' हो जाता है। यथा—

रामे + न = रामेण। पुष्पा + नि = पुष्पाणि।
मित्रा + नि = मित्राणि। द्रव्ये + न = द्रव्येण।
तृष् + ना = तृष्णा। मातृ + नाम् = मातृणाम्।

(१४) (**पदान्तस्य न**)—किन्तु 'न्' किसी पद के अन्त में हो तो ऊपर वाला नियम नहीं लगता। यथा—

रामान्। पितृन्। वृषभान्। ऋषीन्। आदि।

(१५) (**अपदान्तस्य मूर्धन्यः। इण्कोः। आदेशप्रत्यययोः**) **षत्व-विधान**—अकार भिन्न, किसी स्वर के बाद, कण्ठस्थानीय वर्ण या य्, र्, ल्, व् के बाद कोई प्रत्यय सम्बन्धी 'सकार' आवे या किसी अन्य वर्ण के

स्थान पर आदेशित 'सकार' हो तो उस 'सकार' के स्थान पर 'ष्' हो जाता है। यथा—

ए + साम् = एषाम्। वने + सु = वनेषु। ग्रामे + सु = ग्रामेषु। अन्ये + साम् = अन्येषाम्। मति + सु = मतिषु। नदी + सु = नदीषु। धेनु + सुं = धेनुषु। वधू + सु = वधूषु। धातृ + सु = धातृषु। गो + सु = गोषु आदि।

नोट—यदि स् पदान्त में आवे तो उक्त षत्व विधि न होगी। यथा—

करिस् = करिः (करिष् नहीं होगा)।

(१६) (**छे च**)—यदि 'छ्' के पूर्व कोई ह्रस्व या दीर्घ स्वर हो तो 'छ्' और उस स्वर के बीच में 'च्' आ जाता है। यथा—

तरु + छाया = तरुच्छाया। लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया।

(१७) (**आङ् माङोश्च। दीर्घात्। पदान्ताद्वा**)—'छ्' के पूर्व यदि 'आ' उपसर्ग या 'मा' के आ को छोड़ अन्य कोई स्वर हो तो दोनों के बीच 'च्' विकल्प से आता है। यथा—रमणी + छलम् = रमणीछलम् या रमणी-च्छलम्।

नोट—किन्तु 'छ्' के पूर्व 'आ' उपसर्ग और 'मा' के रहने पर केवल एक ही रूप बनता है। यथा—मा + छिन्धि = माच्छिन्धि। आ + छादयति= आच्छादयति।

(१८) (**नश्छव्यप्रशान्**)—यदि पदान्त में 'न्' हो और उसके बाद च्, छ्, ट्, ठ् और त्, थ् में से कोई अक्षर हो तथा फिर उसके बाद कोई स्वर हो या किसी वर्ग के पाँचवें अक्षर को छोड़ कोई अक्षर हो या फिर य्, र्, ल्, व्, ह् हो तो उस नकार को **अनुस्वार** और **'सकार'** हो जाता है। यथा—कस्मिन् + चित् = कस्मिंश्चित्। अस्मिन् + तडागे = अस्मिंस्तडागे। चलन् + टिट्टिभः = चलंष्टिट्टिभः।

नोट—किन्तु प्रशान् को अनुस्वार और सकार नहीं होता। यथा—प्रशान् + तः = प्रशान्तः।

(१९) 'र्' से परे यदि 'र्' हो तो पूर्व 'र्' का लोप हो जाता है और

उससे पूर्व यदि अ, इ, उ में से कोई स्वर हो तो उसका दीर्घस्वर हो जाता है। यथा—

निर् + रसम् = नीरसम्। निर् + रोग, = नीरोगः।

विसर्ग-सन्धि

विसर्ग के बाद कोई स्वर या व्यञ्जत आने पर जो विकार होता है उसे विसर्गसन्धि कहते हैं।

(१) (**खरवसानयोर्विसर्गनीयः**)—पदान्त 'स्' के बाद कोई वर्ण हो या न हो। उसकी जगह पर विसर्ग हो जाता है। यथा—

कृष्णस् + गच्छति = कृष्णः गच्छति। रामस् = राम + स् = रामः।

(२) (**ससजुषोरुः**) – सजुष् शब्द के 'ष्' को 'र्' हो जाता है और पदान्त 'र्' के परे खर् प्रत्याहार होने पर 'र्' के स्थान पर विसर्ग हो जाता है। यथा—

सजुष् = सजुर् = सजुः।

पितर् = पितः।

भ्रातुर् कन्यका = भ्रातुः कन्यका।

(३) (**विसर्जनीय सः**)—यदि विसर्गों के बाद च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ् आवे और उसके बाद ऊष्मवर्ण (श्, स्, ष्) न आवें तो विसर्ग के स्थान पर सकार हो जाता है।

(क) च्, छ् परे रहने पर विसर्ग को 'श्' होता है। यथा—

बालः + चलति = बालश्चलति। निः + छलः = निश्छलः। हरिः + चलति = हरिश्चलति।

(ख) ट्, ठ् परे रहने पर विसर्ग को 'ष्' होता है। यथा—

धनुः + टंकारः = धनुष्टंकारः।

(ग) त्, थ् परे रहने पर विसर्ग को 'स्' होता है। यथा—

विष्णुः + त्राता = विष्णुस्त्राता।

देवः + तिष्ठसि = देवस्तिष्ठति।

(४) (वा शरि)—विसर्ग के बाद श्, ष्, स् आने पर विसर्ग को विकल्प से सकार होता है। यथा—

हरिः + शेते = हरिश्शेते या हरिः शेते।
निः + सारः = निस्सारः या निःसारः।
निः + सरति = निस्सरति या निःसरति।
मनः + षष्ठम् = मनष्षष्ठम् या मनःषष्ठम्।

(५) (द्विस्त्रिश्चतुरितिकृत्वोऽर्थे)— द्विः, त्रिः और चतुः आदि क्रियाविशेषण अव्ययों के बाद यदि क्, ख्, प् और फ् आवें तो उक्त शब्दों के विसर्ग को विकल्प से 'ष्' हो जाता है। यथा—

द्विः + करोति = द्विष्करोति, द्विःकरोति।

(६) स् के स्थान पर आदेश दिये गये विसर्ग के पूर्व यदि छोटा 'अ' आवे और बाद में भी छोटा 'अ' अथवा कोई मृदु व्यञ्जन आवे तो विसर्ग का 'उ' हो जाता है। "अतो रोरप्लुतादप्लुते" के अनुसार अप्लुत अकार के बाद आये हुये 'र्' के बाद का 'अ' भी यदि अप्लुत हो तो 'र्' को 'उ' आदेश हो जाता है। इसी प्रकार "हशि च" के अनुसार हश् प्रत्याहार (मृदु व्यञ्जन) परे रहने पर भी अप्लुत 'अ' के परवर्ती 'र्' को 'उ' आदेश होता है। यथा—

शिवः + अर्च्यः = शिव + उ + अर्च्यः।
शिवो + अर्च्यः = शिवोऽर्च्यः।
देवः + वन्द्यः = देवो वन्द्यः।
रामः + अस्ति = रामोऽस्ति।
सः + अपि = सोऽपि।
एषः + अब्रवीत् = एषोऽब्रवीत्।
बालः + गच्छति = बालो गच्छति।
हरः + याति = हरो याति।
वृक्षः + वर्धते = वृक्षो वर्धते।

(७) (भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि)—यदि विसर्ग के पूर्व 'आ'

रहे और बाद में कोई मृदुव्यञ्जन आवे तो विसर्ग का लोप हो जाता है। यथा—

बालाः + गच्छन्ति = बाला गच्छन्ति।
भक्ताः + जपन्ति = भक्ता जपन्ति।
नराः + वदन्ति = नरा + वदन्ति।
अश्वाः + धावन्ति = अश्वा + धावन्ति।

किन्तु जब विसर्ग के पूर्व 'आ' और बाद को कोई स्वर आवे, अथवा विसर्ग के पूर्व 'अ' और बाद में 'अ' से भिन्न कोई स्वर आवे तो विसर्गों का लोप करना या न करना अपनी इच्छा पर है। यथा—

देवाः + इह = देवा इह या देवायिह।

इसी प्रकार—

मुनयः + आप्नुवन्ति = मुनय आप्नुवन्ति।
शत्रवः + आपतन्ति = शत्रव आपतन्ति।
रामः + एति = राम एति।
जनः + इच्छति = जन + इच्छति।

(८) विसर्ग के पूर्व यदि अकार से भिन्न कोई स्वर हो और बाद में कोई भी स्वर अथवा कोई मृदुव्यञ्जन हो तो विसर्ग को 'र्' हो जाता है। यथा—

कविः + जयति = कविर्जयति।
भानुः + उदेति = भानुरुदेति।
मुनिः + ध्यायति = मुनिर्ध्यायति।
ऋषिः + हसति = ऋषिर्हसति।
लक्ष्मीः + याति = लक्ष्मीर्याति।
श्रीः + एषा = श्रीरेषा।

(९) (रोरि)—र् के बाद यदि 'र्' और 'ढ्' के बाद 'ढ्' आवे तो र् और ढ् का लोप हो जाता है और यदि उसके पूर्व अ, इ, उ, आदि ह्रस्व स्वर रहें तो उनको दीर्घ हो जाता है। (देखिए—ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः)। यथा—

पुनर् + रमते = पुना रमते ।

हरिर् + रम्यः = हरी रम्यः ।

शम्भुर् + राजते = शम्भू राजते ।

शिशुर् + रोदिति = शिशू रोदिति ।

वृढ् + ढः = वृढः ('वृढ्ढः' नहीं होगा) ।

(१०) (**एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि**)—यदि 'सः' और 'एषः' के बाद कोई व्यञ्जन आवे तो उनके विसर्गों का लोप हो जाता है । यथा—

सः + शम्भुः = स शम्भुः ।

एषः + हरिणः = एष हरिणः ।



नवमोऽध्यायः

समास-प्रकरण

समास का अर्थ है एकाधिक शब्दों को इस प्रकार साथ रख देना कि उनके आकार में कुछ कमी भी हो जाय और अर्थ भी पूरा-पूरा विदित हो जाय। यथा—सभायाः पतिः = सभापतिः।

समास के मुख्य भेद ये हैं—

१. **केवल समास**—जिसका कोई विशेष नाम न हो।

२. **अव्ययीभाव समास**—जिसमें पूर्व पदार्थ प्रधान हो।

३. **तत्पुरुष समास**—जिसमें उत्तर पदार्थ प्रधान हो। इसके भी दो अन्य भेद हैं।

(क) **कर्मधारय समास**—यह भी उत्तर पदार्थ प्रधान वाला होता होता है। इसमें विशेषण और विशेष्य का समास होता है।

(ख) **द्विगु समास**—विशेषण और विशेष्य के समास में यदि विशेषण संख्यावाची है तो द्विगु समास होगा।

४. **बहुव्रीहि समास**—अन्य पदार्थ प्रधान होता है।

५. **द्वन्द्व समास**—इसमें उभय पदार्थ प्रधान होते हैं।

केवल समास—

(सहसुपा)—यथा—पूर्वं भूतः। उक्त सूत्र से सुबन्त 'पूर्व' का 'भूतः' के साथ समास हुआ। जिन पदों का समास होता है, उनके समुदाय की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा होती है। प्रातिपदिक के अवयवभूत 'सुप्' का लोप हो जाता है, यहाँ पर। 'अम्' और 'सु' इन सुपों का लोप होने से 'पूर्वभूत' शेष रहा। अब 'भूतपूर्वं चरट्' इस पाणिनीय नियम से 'भूत' शब्द पहले रखा। इस प्रकार 'भूतपूर्व' बना।

अव्ययीभाव समास—

१. निम्नलिलित अर्थों में अव्यय का सुबन्त के साथ नित्य समास होता है—

(क) **विभक्ति**—किसी विभक्ति के अर्थ में। यथा—हरौ = हरि अधि= **अधि**हरि।

(ख) **सामीप्य**—समीपता के अर्थ में। यथा—कृष्णस्य समीपं = **उपकृष्णम्**। जरायाः समीपं = **उपजरसम्**। शरदः समीपं=**उपशरदम्**। गंगायाः समीपं = **उपगंगम्**।

(ग) **समृद्धि**—बढ़ती के अर्थ में। यथा—मद्राणां समृद्धिः = **समद्रम्**।

(घ) **व्यृद्धि**—घटती के अर्थ में। यथा—यवनानां व्यृद्धिः=**दुर्य**वनम्।

(ङ) **अभाव**—'न होना' के अर्थ में। मक्षिकाणां अभावः = **निर्म**क्षिकम्। मशकानां अभावः = **निर्म**शकम्।

(च) **अत्यय**—नाश के अर्थ में। यथा—हिमस्य अत्ययः = **अति**हिमम्।

(छ) **असम्प्रति**—अनुचित के अर्थ में। यथा—निद्रा सम्प्रति न युज्यते = **अति**निद्रम्।

(ज) **शब्द प्रादुर्भाव**—'शब्द होना' के अर्थ में। यथा—हरि शब्दस्य प्रकाशः (= प्रादुर्भावः) = **इति**हरि।

(झ) **पश्चात्**—'बाद में' और 'घट कर' के अर्थ में। यथा—विष्णोः पश्चात् = **अनु**विष्णु।

(ञ) **यथा**—यथा के अर्थ में। यथा के चार अर्थ हैं—

(१) **योग्यता**—रूपस्य योग्यं = **अनु**रूपम्।

(२) **वीप्सा**—अर्थं अर्थं प्रति = **प्रत्यर्थम्**।

(३) **पदार्थ का अतिक्रमण**—शक्तिम् अनतिक्रम्य=**यथा**शक्ति।

(४) **सादृश्य**—हरेः सादृश्यम् = **स**हरि।

(ट) **आनुपूर्व्य**—'क्रम से' के अर्थ में। यथा—ज्येष्ठमासस्य अनुपूर्व्येण = **अनु**ज्येष्ठम्।

(ट) **यौगपद्य**—'एक साथ' के अर्थ में। यथा—चक्रेण युगपत् = **सचक्रम्**।

(ड) **सादृश्य**—'सदृश' के अर्थ में। यथा—सदृशः सख्या = **ससखि**।

(ढ) **सम्पत्ति**—सम्पत्ति के अर्थ में। योग्यतानुसार मिले वैभव को सम्पत्ति कहते हैं: योग्यता से अधिक किसी देवता आदि की कृपा से प्राप्त हुये वैभव आदि को समृद्धि या ऋद्धि कहते हैं। यथा—क्षत्राणां सम्पत्तिः = **सक्षत्रम्**।

(ण) **साकल्य**—'सम्पूर्णतया' के अर्थ में। यथा—तृणम् अपरित्यज्य अत्ति = **सतृणम्** अत्ति (सब का सब खा जाता है।)

(त) **अन्त**—'पर्यन्त और तव' के अर्थ में। यथा—अग्निग्रन्थपर्यन्तम् अधीते = **साग्निम्** अधीते।

नोट—

(१) ऊपर के उदाहरणों मे से प्रत्येक समास होने की वजह से प्रातिपदिक बना। इसलिये उसके 'सुप्' का लोप हुआ।

(२) अव्ययीभाव समास में शब्द सदा नपुंसकलिंग में होता है।

(३) अव्ययीभाव समास में 'अव्यय' प्रायः पहले रखा जाता है।

(४) **अदन्त** अव्ययीभाव के परे 'सुप्' का लोप न होकर उसके स्थान पर 'अम्' का आदेश पंचमी विभक्ति को छोड़ कर शेष सभी विभक्तियों में प्रायः होता है। पंचमी विभक्ति का उदाहरण—'आप्रयागात् वृष्टो देवः' यहाँ पर 'आप्रयागं वृष्टो देवः' नहीं होगा।

(५) अव्ययीभाव समास में 'सह' को 'स' आदेश होता है, जब कि उत्तरपद **कालवाचक** न हो। कालवाचक उत्तरपद का उदाहरण—ज्येष्ठ मासस्य आनुपूर्वेण = 'अनुज्येष्ठम्'। 'सज्येष्ठं' नहीं होगा।

२. **'नदीभिश्च'**—नदीसंज्ञक (अर्थात् ईकारान्त, ऊकारान्त) शब्दों के साथ संख्यावाचक शब्दों का समास, विकल्प से हो जाता है। यथा—'पञ्चगङ्गम्, द्वियमुनम् आदि।

३. **'नस्तद्धिते'**—तद्धित प्रत्यय परे रहने पर नकारान्त शब्दों की 'टि' का लोप हो जाता है। यथा—आत्मन् + अधि = आत्म + अधि =

अधिआत्म = अधिआत्मं (अम् का आदेश हुआ) = अध्यात्मम् । इसी प्रकार राजन् + उपराजम् आदि ।

तत्पुरुष समास—

विभक्तियों के अनुसार इसके कई भेद हो जाते हैं ।

१. द्वितीया तत्पुरुष—"द्वितीया श्रितं[१]-अतीतं[२]-पतितं[३]-गतं[४]-अत्यस्तं[५]-प्राप्तं[६]-आपन्नैः[७]" । यथा—

(क) कृष्णं श्रितः = कृष्णश्रितः ।
(ख) दुःखम् अतीतः = दुःखातीतः ।
(ग) नरकं पतितः = नरकपतितः ।
(घ) स्वर्गं गतः = स्वर्गगतः ।
(ङ) कूपम् अत्यस्तः = (कुयें में फेंका गया) = कूपात्यस्तः ।
(च) सुखं प्राप्तः = सुखप्राप्तः ।
(छ) संकटम् आपन्नः = संकटापन्नः ।

२. तृतीया तत्पुरुष—"तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचने" । यथा— धान्येन अर्थः = धान्यार्थः । शंकुलया खण्डः (सरौते से काटा गया) = शंकुलाखण्डः ।

"कर्तृकरणे कृता बहुलम्"—यथा—हरिणा त्रातः = हरित्रातः । नखैः भिन्नः = नखभिन्नः ।

३. चतुर्थी तत्पुरुष—"चतुर्थी तदर्थ-बलि-हित-सुख-रक्षितैः" । यथा— यूपाय दारु (खम्भे के लिये लकड़ी) = यूपदारु । भूतेभ्यः = बलिः = भूतबलिः । गोभ्यो हितं सुखं रक्षितं वा = गोहितम् (गाय के लिये हितकर), गोसुखम् (गाय के लिये सुखकर), गोरक्षितम् (गाय के लिये सुरक्षित रखा हुआ) ।

४. पञ्चमी तत्पुरुष—"पञ्चमी भयेन" = चौराद् भयम् = चौरभयम् ।

"स्तोक-अन्तिक-दूरार्थ-कृच्छ्राणि क्तेन"—इस सूत्रगत अर्थों में क्तान्त शब्दों के साथ ही समास होगा । यथा—

स्तोकात् + मुक्तः = स्तोकान्मुक्तः (= थोड़ा सा खुला हुआ या छूटा हुआ)। अन्तिकात् + आगतः = अन्तिकादागतः (= समीप से आया हुआ)।

दूरात् + आगतः = दूरादागतः (दूर से आया हुआ)। कृच्छ्रात् + आगतः = कृच्छ्रादागतः (कष्ट से या बड़ी मुश्किल से आया हुआ)।

५. **षष्ठी तत्पुरुष**—षष्ठ्यन्त शब्दों का सुबन्तों के साथ समास। यथा—राज्ञः + पुरुषः = राजपुरुषः। गवां अक्षि इव = गवाक्षः। विष्णोः पूरम् = विष्णुपुरम्। इसी प्रकार जोधपुरं, कर्णपुरम् आदि।

६. **सप्तमी तत्पुरुष**—"सप्तमी शौण्डैः"—शौण्ड (= प्रवीण) आदि शब्दों के साथ भी समास होता है। यथा—अक्षेषु शौण्डः = अक्षशौण्डः (पासा खेलने में प्रवीण)।

७. **अर्धं नपुंसकम्**—'आधा' वाची शब्दों के साथ। यथा—अर्धं पिप्पल्याः = अर्धपिप्पली।

८. **"दिक्संख्ये संज्ञायाम्"**—संज्ञा अर्थं में दिशा और संख्यावाची शब्दों का भी समास होता है। यथा—पूर्व + इषुकामशमी = पूर्वेषुकामशमी (= पूर्व का इषुकामशमी नाम का स्थान)। सप्त च ये ऋषयः = सप्तर्षयः।

नोट—(१) 'पञ्चब्राह्मणाः' में उक्त समास नहीं होगा, क्योंकि उनका प्रयोग संज्ञा अर्थ में नहीं हुआ है।

(२) 'पञ्चगवधनः' = पञ्चन् + गो = पञ्चगो। 'गो' के ओकार को 'अव' आदेश हो गया। इस प्रकार 'पञ्चगव' बना। तत्सम्बन्धी धन = पञ्चगवधन। इसमें भी तत्पुरुष समास ही है।

तत्पुरुष के अन्य भेद—

१. **कर्मधारय समास**—उन तत्पुरुषों को कर्मधारय कहते हैं जो कि समानाधिकरण हों अर्थात् जहाँ पूर्व और उत्तरपद दोनों ही समान विभक्त्यन्त हों।

नोट—पूर्वोक्त तत्पुरुष समास में पूर्व और उत्तरपद भिन्न विभक्त्यन्त थे, समान नहीं।

कर्मधारय के अन्तर्गत मुख्य सूत्र दो हैं—

(क) "विशेषणं विशेष्येण बहुलम्"—यथा—नीलम् = उत्पलम् = नीलोत्पलम् । महान् चासौ राजा इति=महाराजः । इसी प्रकार परमराजः, धर्मराजः, देवराजः भोगराजः आदि बनते हैं ।

नोट—कृष्णश्चासौ सर्पश्चेति=कृष्णसर्पः । इसमें नित्य समास है । कर्मधारय नहीं । क्योंकि 'कालासाँप' तो साँपों की एक जाति होती है ।

(ख) "उपमानानि सामान्यवचनैः"—यथा—घन इव श्यामः= घनश्यामः ।

२. **द्विगु समास**—"द्विगुरेकवचनं नपुंसकं च"—यथा—पंचानां गवां समाहारः = पंचगवम् । इसी प्रकार द्वयोः रात्र्योः समाहारः = द्विरात्रम् , तिसृणां रात्रीणां समाहारः = त्रिरात्रम्—आदि ।

३. **उत्तरपदलोपी समास**—यथा—

शाकप्रियः पार्थिवः = शाकपार्थिवः ।

देवपूजको ब्राह्मणः = देवब्राह्मणः ।

४. **नञ् समास**—यथा—

न + ब्राह्मणः = अब्राह्मणः ।

न + अश्वः = अनश्वः (इसमें पहले—"न लोपो नञः" से नकार का लोप हुआ । अस्तु, शेष बचा अ + अश्वः । अब चूँकि 'अ' के परे 'अजादि' (= अ) है । इसलिये 'नुट्' का आगम् हुआ और 'अनश्वः' रूप सिद्ध हुआ ।

५. **कु-गति-प्रादि समास**—इनका समर्थ सुबन्त के साथ नित्य समास होता है । यथा—

(क) कुत्सितः पुरुषः—कुपुरुषः (बुरा आदमी) ।

(ख) अशुक्लं शुक्लं कृत्वा = शुक्लीकृत्य ।

पटत्-पटत् इति कृत्वा = पटपटाकृत्य ।

इसी प्रकार उरीकृत्य (= स्वीकार करके) ।

(ग) (i) 'प्र' आदि का 'गति' अर्थ में प्रथमान्त समर्थ सुबन्त के साथ समास होगा। यथा—

प्रगतः आचार्यः = प्राचार्यः (= प्रधानाध्यापक)।

(ii) 'अति' आदि का 'क्रान्त' अर्थ में द्वितीयान्त समर्थ सुबन्तों के साथ समास होगा। यथा—अतिक्रान्तो मालाम् इति = अतिमालः (= माला का जो अतिक्रमण कर गया हो)। समास होने से यह 'अतिमालाम्' शब्द प्रातिपदिक बना। इसलिये उसके 'सुप्' अर्थात् 'म्' का लोप हो गया। अब बचा 'अतिमाला'। 'गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य'—इस सूत्र से स्त्रीप्रत्ययान्त 'माला' शब्द को ह्रस्व हो गया। इसलिये 'अतिमाल' बना। इसका प्रथमा एकवचन में 'अतिमालः' रूप सिद्ध होता है। इसी प्रकार—

अतिरथः = अतिरथ = अतिरथ + सु = अतिरथः।

(iii) 'अव' आदि का तृतीयान्त समर्थ सुबन्त से समास होता है। यथा—अवक्रुष्टः कोकिलया = अवकोकिलः।

(iv) 'परि' आदि का चतुर्थ्यन्त समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है। यथा—परिग्लानो अध्ययनाय = पर्यध्ययनः।

६. **उपपद समास**—'उपपदमतिङ्' अर्थात् यह समास तिङन्त शब्दों के साथ नहीं होता। उदाहरण—'कुम्भं करोति इति = कुम्भकार = कुम्भं + कृ = कुम्भ + अम् + कृ। अब कृ के ऋकार को 'आर्' वृद्धि हुई। इसलिये रूप बना कुम्भ + अम् + आर। समास होने की वजह से यह प्रातिपदिक बना इसलिये सुप् अर्थात् अम् का लोप हुआ। इस प्रकार 'कुम्भकार' शेष रहा। इसमें सु जोड़ कर 'कुम्भकारः' बना लिया।

बहुव्रीहि समास—

(१) प्रथमा को छोड़ कर शेष सभी विभक्तियों में यह समास होता है। यथा—

(क) **द्वितीया के अर्थ में**—प्राप्तम् उदकं यम् = प्राप्तोदको (ग्रामः) = वह गाँव जहाँ जल सुलभ है।

(ख) **तृतीया के अर्थ में**—ऊढो रथो येन = रूढरथो (अनड्वान्)।

(ग) **चतुर्थी के अर्थ में**—उपहृतः पशुर्यस्मै = उपहृतपशुः (रुद्रः)।

(घ) **पञ्चमी के अर्थ में**—उद्धृत ओदनो यस्याः = उद्धृतौदना (स्थाली) = जिसके चावल निकाल लिया गया है ऐसी बटलोई।

(ङ) **षष्ठी के अर्थ में**—पीतानि अम्बराणि यस्य=पीताम्बरो (हरिः)।

(च) **सप्तमी के अर्थ में**—वीराः पुरुषाः यस्मिन् = वीरपुरुषको (ग्रामः)।

२. जिसके परे 'ऊङ्' प्रत्यय ('ऊ' न हो, उस स्त्रीलिंगवाचक शब्द का पुंवाचक के समान रूप होता है। यथा—चित्राः गावो यस्य = चित्रगुः (= चित्राः + गावः = चित्रा + गावः)। क्योंकि प्रातिपदिक होने से 'सुप्' का लोप हो गया। = चित्र + गो—क्योंकि पुंवद्भाव से टाप् का लोप होता है। = चित्र + गु = उपसर्जन होने से 'गो' को ह्रस्व उकार हो गया= चित्रगु + सु = चित्रगुः।

ऊङ् प्रत्यय वाला उदाहरण—वामोरुः भार्या यस्य = वामोरुभार्यः।

३. **पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः**—बहुव्रीहि में 'हस्ति' को छोड़ कर अन्य उपमानों से परे 'पाद' शब्द का लोप हो जाता है। (**नोट**—'पाद' के केवल 'अकार' का लोप होता है।) यथा—व्याघ्रस्य इव पादौ यस्य = व्याघ्रपात्।

नोट—संख्या और 'सु' के पूर्व में होने पर भी 'पाद' का लोप हो जाता है। यथा—

द्वौ पादौ यस्य = द्विपात्।

शोभनौ पादौ यस्य = सुपात्।

उपमान हस्ति वाला उदाहरण—

हस्ति इव पादौ यस्य = हस्तिपादः (यहाँ पर 'पाद' का लोप नहीं हुआ।)

४. सप्तम्या अलुक्—यथा—कण्ठे कालो यस्य = कण्ठकालः (= नीलकण्ठ पक्षी या शिव)। इसी प्रकार सरसि जन्म यस्य = सरसिजम् (= कमल)।

५. **"सुहृद्-दुर्हृदौ मित्राऽमित्रयोः"**—'मित्र' और 'शत्रु' के अर्थ में 'सु' और 'दुर्' से परे 'हृदय' को 'हृद्' हो जाता है। यथा—

शोभनं हृदयं यस्य = सुहृद् (= मित्र)

दुष्टं हृदयं यस्य = दुर्हृद् (= शत्रु)

६. **'उरः प्रभृतिभ्यः कप्'**—उरस्, सर्पिष् आदि से समासान्त में कप् (= क) प्रत्यय होता है। यथा—

व्यूढम् उरो यस्य = व्यूढोरस्कः (= विशाल छाती वाला) = व्यूढ + उरः + क = व्यूढ + उरस् + क, क्योंकि प्रातिपदिक होने से सुप् अर्थात् अम् का लोप हो गया। = व्यूढ + उरस्क = व्यूढोरस्क, क्योंकि अकार के परे उकार होने से दोनों को मिलकर गुण हो गया। व्यूढोरस्क + सु = व्यूढोरस्कः।

इसी प्रकार—

पियं सर्पिः यस्य = प्रियसर्पिष्कः (= जिसे घी बहुत प्रिय हो।)

७. **'शेषे विभाषा'**—जिस बहुव्रीहि समास से परे किसी समासान्त का विधान न हुआ हो, उसके परे 'कप्' प्रत्यय विकल्प से होता है। यथा—महद् यशो यस्य = महायशस्कः या महायशाः।

द्वन्द्व समास—

१. **'चार्थे द्वन्द्वः'**—यथा—

अर्थश्च धर्मश्च = अर्थधर्मौ। किन्तु धर्मार्थौ रूप भी तो बनता है। इसका कारण यह है कि इस समास में उभय पद प्रधान हुआ करते हैं। इसलिए एक समस्या उठ खड़ी होती है कि किसे पहले रखें, इसी समस्या के निवारणार्थं कुछ नियम दिये जाते हैं—

(क) 'घि' संज्ञक पद का पहले प्रयोग हो। यथा—हरिहरौ (हरिश्च हरश्च)

(ख) अजादि और अदन्त पद का पहले प्रयोग हो। यथा—ईशकृष्णौ (ईशश्च कृष्णश्च)।

(ग) जिस पद में थोड़े अच् हों उसका पहले प्रयोग हो। यथा—

शिवकेशवौ (शिवश्च केशवश्च) क्योंकि 'शिव' में दो अच् और 'केशव' में तीन अच् हैं।

(घ) **'अभ्यर्हितं च'**—इस सूत्र से अभ्यर्हित अर्थात् पूज्य होने के कारण 'मातापितरौ' (=माता च पिता च) में 'मातृ' शब्द का पूर्व निपात हुआ। क्योंकि गौरव में पिता से माता में १० गुण अधिक होते हैं।

नोट—किन्तु ध्यान रहे कि कहीं-कहीं एकशेष द्वन्द्व भी होता है। यथा—

माता च पिता च = पितरौ

२. **'द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्'**—प्राणी (=जीव) तूर्य (=बाजे) और सेना के अंगों के वाचक शब्दों का द्वन्द्व एक वचनान्त होता है। प्राणियों के अंग जैसे हस्त, पाद, ग्रीवा आदि। तूर्य के अंग जैसे मृदंग, बाँसुरी आदि। सेना के अंग जैसे रथ, घोड़े आदि। उदाहरण—

(क) पाणी च पादौ च = पाणिपादम्

(ख) मार्दङ्गिकश्च वैणविकश्च = मार्दङ्गिकवैणविकम्

(ग) रथिकाश्च अश्वारोहाश्च = रथिकाश्वारोहम्

३. **'द्वन्द्वात् चु-द-ष-हान्तात् समाहारे टच्'**—द्वन्द्वात्मक चवर्गान्त, दकारान्त, षकारान्त और हकारान्त शब्दों में टच् प्रत्यय होता है। यथा—

(क) वाक् च त्वक् च तयोः समाहारः = वाक्त्वचम् (=वाणी और त्वचा)

(ख) त्वक् च स्रक् च तयोः समाहारः = त्वक्स्रजम् (=वाणी और माला)

(ग) शमी च दृशद् च तयोः समाहारः = शमीदृशदम् (शमी और पत्थर)

(घ) वाक् च त्विट् च तयोः समाहारः = वाक्त्विटम् (=वाणी और कान्ति)

(ङ) छत्रं च उपानत् च तयोः समाहारः = छत्रोपानहम् (= छाता और जूता)

सिद्धि—वाक्त्वचम् = वाच् + त्वच् = वाक् + त्वच् + टच् प्रत्यय, क्योंकि 'चोकुः' सूत्र से 'वाच्' के 'च्' को 'क्' हो गया। = वाक् + त्वच् + अ, क्योंकि टच् प्रत्यय का लोप होने पर 'अ' शेष रहता है। = वाक्त्वच। इसका नपुंसकलिंग के एकवचन में 'वाक्त्वचम्' यह रूप बना।

नोट—'समाहार' के समास में सदैव नपुंसकलिंग होगा।



दशमोऽध्यायः

कृदन्त-प्रकरण

लक्षण—धातु में जिस प्रत्यय को जोड़ कर संज्ञा, विशेषण अथवा अव्यय आदि बनते हैं, उसे 'कृत्' प्रत्यय कहते हैं और इसके द्वारा जो शब्द सिद्ध होते हैं उन्हें 'कृदन्त' कहते हैं।

कृदन्त और तद्धित का भेद—तद्धित सदा किसी सिद्ध संज्ञा, विशेषण, अव्यय अथवा क्रिया के अनन्तर ही जोड़ा जाता है और इसका प्रयोजन किसी अन्य संज्ञा आदि का बनाना है। किन्तु 'कृत्' प्रत्यय केवल धातु में ही जोड़ा जाता है।

कृदन्तों के भेद—

कृदन्तों के मुख्य तीन भेद हैं—

(१) कृत्य (२) कृत् (३) उणादि।

कृत्य-प्रत्यय

ये प्रत्यय सात हैं—(१) तव्यत्, (२) तव्य, (३) अनीयर्; (४) केलिमर्, (५) यत्, (६) क्यप्, (७) ण्यत्।

नोट—ये प्रत्यय सदा भाव और कर्मवाच्य में ही प्रयुक्त होते हैं, कर्तृवाच्य में नहीं। अर्थात् इन प्रत्ययों के योग में कर्ता में सदा तृतीया होती है। जब ये भाव में होंगे तो सदा नपुंसकलिंग और एकवचन। किन्तु जब 'कर्म' में होते हैं तब तो कर्म के अनुसार ही उनके लिंग और वचन होते हैं।

१. तव्यत् (तव्य) और तव्य (तव्य)—दोनों में कोई विशेष अन्तर नहीं है। दोनों से एक ही रूप बनता है। यथा—

एध् + तव्य = एधि + तव्य (सेट् धातुओं के योग में धातु और प्रत्यय के बीच में 'इट्' का आगम होता है) = एधितव्य + अम् = एधितव्यम् (त्वया) = तुझे बढ़ना चाहिये या तुझे बढ़ना उचित है।

२. **अनीयर्** (अनीय)—यथा—एध् + अनीय् + अम्=एधनीयम् (त्वया इति शेषः) ।

नोट—उक्त उदाहरण तो 'भाव' में हुये । इसलिये नपुंसकलिंग एकवचन हुआ । अब 'कर्म' में उनके उदाहरण देखिये—

चि + तव्य = चे + तव्य + सु ('सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से 'चि' को गुण होकर 'चे' बन गया) = चेतव्यः ।

चि + अनीय् = चय् + अनीय् + सु = चयनीयः ।

प्रयोग—त्वया धर्मः चेतव्यश्चयनीयो वा ।

३. **केलिमर्** (एलिम)—यथा—पच् + एलिम + जस् = पचेलिमाः (माषाः इति शेषः) = उड़द राँधने योग्य है ।

भिद् + एलिम + जस् = भिदेलिमाः (सरलाः इति शेषः) = देवदारु काटने योग्य है ।

४. **यत्**—'अचो यत्'—अजन्त धातुओं से परे 'यत्' (= य) प्रत्यय होता है । यथा—चि + य = चेय ('सार्वधातु०...' सूत्र से गुण हुआ) + अम् = चेयम् = संचय करने के योग्य ।

ईद्यति—यत् परे होने पर 'आकार' को 'ईकार' हो जाता है । यथा—दा + य = दी + य ('ईद्यति' सूत्र से 'दा' को 'दी' हुआ) = दे + य (सार्वधातु० आदि सूत्र से गुण हुआ) = देय + अम् = देयम् = जो देने योग्य हो ।

इसी प्रकार ग्ला + य = ग्ली + य = ग्ले + य = ग्लेय + अम् = ग्लेयम् = जो ग्लानि करने के योग्य है ।

नोट—जो धातु पवर्गान्त हो और उसकी उपधा में अकार हो तो उससे परे 'यत्' प्रत्यय ही होता है 'ण्यत्' नहीं । यथा—शप् + य = शप्य + अम् = शप्यम् ।

लभ् + य = लभ्य + अम् = लभ्यम् ।

५. **क्यप्**—इण् (= जाना) । स्तु (= स्तुति करना) । शास् (शिक्षा देना) । वृ (= स्वीकार करना) । दृ (= आदर करना) और जुष्

(=सेवा करना)—इन धातुओं से क्यप् (य) प्रत्यय होता है; यत् या 'ण्यत्' नहीं। यथा—

इ + क्यप् = इ + य = इ + त् + य (जिसका पकार इत्संज्ञक हो ऐसे कृत् के परे रहते धातु के ह्रस्व को 'तुक्' का आगम होता है।) = इत्य + सु = इत्यः = जो जाने योग्य है।

इसी प्रकार—स्तु + क्यप् = स्तु + त् + य = स्तुत्य + सु = स्तुत्यः = जो स्तुति के योग्य हो। शास् + क्यप् = शिस् + य = शिष्य + सु = शिष्यः = जो सिखाने योग्य है।

वृ + क्यप्=वृ + त्+य=वृत्य+सु = वृत्यः = जो स्वीकार करने योग्य है।

आङ्+दृ+क्यप्=आ+दृ + त् + य + सु=आदृत्यः = जो आदर के योग्य है।

जुष् + क्यप् = जुष् + य् + सु = जुष्यः=जो सेवा करने योग्य है।

७. **ण्यत् (= य)**—ऋकारान्त और हलन्त धातुओं से परे 'ण्यत्' प्रत्यय होता है। यथा—कृ + ण्यत् = कृ + य = कार् + य ('अचोञ्णिति' सूत्र से ऋकार को 'आर' वृद्धि हुई) + अम् = कार्यम् = करने के योग्य।

इसी प्रकार हार्यम्, धार्यम् आदि भी।

नोट—ऊपर तो ऋकार का उदाहरण दिया गया।

अब हलन्त का उदाहरण लीजिये—

मृज् + ण्यत् = मृज् + य = मृग् + य (णित् परे रहते च् और ज् को कवर्ग हो जाता है) = मार्ग + य् (आर् वृद्धि) + सु = मार्ग्यः = शुद्ध करने के योग्य।

भुज् + ण्यत् = भुज् + य् = भुग् + य = भोग् + य + सु = भोग्यः = भोग किये जाने के योग्य।

नोट—किन्तु भक्षण करने के अर्थ में भोज्यः ही रहेगा।

कृत् प्रत्यय

इन्हें दो भागों में बाँट देते हैं—

(१) पूर्व कृदन्त।

(२) उत्तर कृदन्त।

पूर्व कृदन्त

कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय—

१. **ण्वुल (=वु)**—कृ+वु=कार्+वु (अचोञ्णिति से 'ऋ' को 'आर्' वृद्धि) = कार्+अक् ('युवोरनाकौ' सूत्र से) + सु = कारकः = करने वाला।

२. **तृच् (=तृ)**—कृ + तृ = कर् + तृ ('सार्वधातु' आदि सूत्र से) = कर्तृ + सु = कर्ता = करने वाला।

नोट—ल्यु, णिनि और अच् प्रत्यय भी कर्तृ बोधक हैं। नन्द् आदि धातुओं के साथ 'ल्यु', ग्रह् आदि के साथ 'णिनि' और पच् आदि के साथ 'अच्' प्रत्यय लगता है। यथा—

३. **ल्यु (=यु)**—नन्द् + यु = नन्द् + अन् ('युवोरनाकौ' सूत्र से) = सु = नन्दनः = जो आनन्द कारक हो। इसी प्रकार—

जन् + अर्द + यु + सु = जनार्दनः = दुष्टजनों को मारने वाला, विष्णु।

णिनि (=इन्)—ग्रह् + इन् = ग्राह् + इन् (णित् परे रहते ग्रह की उपधा को दीर्घ हो गया) = ग्राहिन् + सु = ग्राही = ग्रहण करने वाला। इसी प्रकार मन्त्र् + इन् + सु = मंत्री।

स्था + इन् + सु = स्थायी आदि।

५. **अच् (= अ)**—पच् + अच् + सु = पचः = पकाने वाला। सर्प् + अच् + सु = सर्पः = सरकने वाला।

६. **क (= अ)**—जिन धातुओं की उपधा में इक् (= इ, उ, ऋ, लृ) हो उनसे तथा ज्ञा, प्री, किर् आदि धातुओं से परे 'क' प्रत्यय होता है। यथा—

ज्ञा + क = ज्ञा + अ = ज्ञ् + अ (कित् परे रहते 'आ' का लोप) = ज्ञ + सु = ज्ञः = जानने वाला।

प्री + क = प्री + अ = प्र + इय् + अ (कियत् परे रहते ईकार को इयङ् आदेश) = प्रिय + सु = प्रियः = प्रीति को करने वाला।

कृ + क = कृ + अ = किर् + अ = किर + सु = किरः = फेंकने वाला।
इसी प्रकार बुधः, कृशः आदि।

७. **अण्** (=अ)—जब किसी धातु का उपपद कर्म हो तो उस धातु से परे 'अण्' प्रत्यय होता है। यथा—

कुम्भ + अम् + कृ + अण् = कुम्भ+कार + सु (ऋ को आर् वृद्धि)= कुम्भकार + सु = कुम्भकारः = घड़ा बनाने वाला, कुम्हार।

८. **ट** (=अ)—जिस धातु का उपपद अधिकरण (सप्तमी विभक्ति) हो। उससे परे 'ट' प्रत्यय लगता है। यथा—

कुरु + चर् + ट् = कुरु + चर् + अ (सप्तमी वाचक 'सु' का लोप)= कुरुचर + सु = कुरुचरः = कुरु देश में फिरने वाला।

नोट—यदि अधिकरण के स्थान पर भिक्षा, सेना, आदाय—ये उपपद हों तो भी चर् धातु में 'ट' प्रत्यय ही लगेगा। यथा—

भिक्षां चरति = भिक्षा + चर् + ट = भिक्षा + चर् + अ = भिक्षाचरः = भिक्षा के लिये भ्रमण करने वाला।

सेनां चरति = सेना + चर् + ट (अ) = सेना चरः = जो सेना को जावे।

आदाय चरति = आदायचरः = लेकर जाने वाला।

नोट—हेतु, ताच्छील्य (=स्वभाव) अथवा अनुकूलता प्रकाशित करनी हो तो 'कृ' धातु के परे भी 'ट' प्रत्यय ही लगता है। यथा—

यशस्करी विद्या (यशः+कृ+ट+ङीप) इसमें हेतु है।

श्राद्धकरः = जिसका श्राद्ध करना स्वभाव है—इसमें ताच्छील्य है।

वचनकरः = आज्ञाकारी इसमें अनुकूलता है।

९. **खश्** (=अ) —यदि एज् (काँपना) धातु ण्यन्त हो (=जिसके अन्त में णिच् हो) तो उससे परे 'खश्' प्रत्यय होता है। यथा—

जनं + एजयति = जन + एज् + अ = जन + म् + एज्+अ (मुम् = म का आगम) = जन + म् + एज् + इ + अ (णिच् वाचक 'इ' का आगम)= जनमेजय + सु = जनमेजयः = मनुष्यों को कँपाने वाला, परीक्षित का पुत्र।

१०. **खच्** (= अ)—वद् धातु का उपपद प्रिय अथवा वश् हो तो उससे 'खच्' प्रत्यय होता है। यथा—

प्रियं वदति = प्रिय + वद + अ = प्रिय + म + वद + अ (मुम् = का आगम) = प्रियंवद + सु = प्रियंवदः = प्रिय बोलने वाला।

इसी प्रकार वशंवदः = आधीनता स्वीकार करने वाला।

११. **क्वनिप् (वन्)**—कर्म उपपद हो तो दृश् धातु से परे मूल अर्थ में 'क्वनिप्' प्रत्यय लगता है। यथा—

पारं दृष्टवान् = पार + दृश् + वन् (अम् का लोप) = पारदृश्वन् + सु = पारदृश्वा = जिसने पार देखा।

राजन् शब्द उपपद हो तो युध् और कृ धातु से परे भी 'क्वनिप्' होता है। यथा—

राजानं + योधितवान् = राजन् + युध् + वन = राज + युध् + वन = राजयुध्वन् + सु = राजयुध्वा = जिसने राजा को लड़वाया।

१२. **ड (= अ)**—जिसका उपपद सप्तम्यन्त हो। ऐसी जन् धातु से परे 'ड' प्रत्यय आता है। यथा—

सरसि + जातम् = सरस् + ज + अ + अम् = सरोजम् = कमल।

किन्तु तत्पुरुष में 'ङि' का लोप नहीं होता। यथा—सरसिजम्।

भूतकालिक कृत् प्रत्यय—

क्त (= त) और **क्तवतु**—इन्हें 'निष्ठा' की संज्ञा प्रदान की गई है। 'क्त' का प्रयोग 'भाव' और 'कर्म' में, 'क्तवतु' का प्रयोग केवल 'कर्ता' अर्थ में होता है। यथा—

क्त—स्नातं मया (भाव), स्तुतस्त्वया विष्णुः (कर्म)।

क्तवतु—विश्वं कृतवान् विष्णुः।

१. **क्त (= त)**—यथा—(i) भिद् + क्त = भिन्नः। छिद् + क्त = छिन्नः।

(ii) जॄ + क्त = जीर्णः = पुराना। शॄ + क्त = शीर्णः = जो मारा गया।

(iii) नि + सद् लृ = निषण्णः।

(iv) म्लै + क्त = म्लानः। ग्लै + क्त = ग्लानः (= जिसने ग्लानि की)।

द्रै + क्त = द्राणः = जिसने कुत्सित गति की।

(v) शुष् + क्त = शुष्कः।

(vi) पच् + क्त = पक्वः।

(vii) क्षै + क्त = क्षामः (= दुबला)।

(viii) दृह् (= हिंसा करना) + क्त = दृढः (= स्थूल और बलवान्)।

२. क्तवतु—इसमें 'तवान्' (पुल्लिंग में), यथा—गम् + क्तवतु = गतवान्, 'तवती' स्त्रीलिंग में, यथा—गम् + क्त = गतवती और 'तवत्' नपुंसकलिंग में बचता है, यथा—गतवत्।

वर्तमान कालिक कृत् प्रत्यय—

शतृ और शानच्—इन्हें 'सत्' की संज्ञा मिली है। 'शतृ' परस्मैपद और 'शानच्' आत्मने पद की धातुओं में लगता है। 'शतृ' में 'ङीप्' और 'शानच्' में 'टाप्' लगाकर स्त्रीलिंग बनाते हैं।

शतृ यथा—**पचन्तं** देवदत्तं पश्य।

शानच् यथा—**पचमानं** देवदत्तं पश्य।

भविष्य कालिक कृत् प्रत्यय—

जो वर्तमान काल के सत् प्रत्यय (शतृ और शानच्) हैं। वे ही यहाँ भी होते हैं। अन्तर केवल इतना है कि ये प्रत्यय लृट् लकार के अन्य पुरुष के बहुवचन में जो धातु रूप बनता है। इसके अनन्तर जोड़े जाते हैं। यथा—भविष्यन्ति के 'भविष्य' में अत् और मान् जोड़ कर 'भविष्यत्' और 'भविष्यमाण' रूप बने। ये ही 'शतृ' और 'शानच्' के रूप हैं। इसी प्रकार 'करिष्यन्तम्' शतृ का और 'करिष्यमाणम्' शानच् का रूप है।

शील, धर्म, साधुकारिता वाचक कृत् प्रत्यय—

१. **षाकन्**—भिक्ष्, कुट्ट, लुण्ट्, वृङ्—इन धातुओं के परे ताच्छील्य आदि अर्थों में यह प्रत्यय होता है। यथा—

जल्प + षाकन् (= आक) = जल्पाकः

भिक्ष + षाकन् (= आक) = भिक्षाकः

लुण्ट् + षाकन् (= आक) = लुण्टाकः

वृ + षाकन् (= आक) = वराकः

२. **उ**—सन्नन्त धातुओं से परे, आङ् पूर्वक शस् के परे और भिक्ष् के परे ताच्छील्य आदि अर्थों में यह प्रत्यय लगता है। यथा—

चिकीर्ष् + उ = चिकीर्षुः

आशंस् + उ = आशंसुः

भिक्ष् + उ = भिक्षुः

३. **क्विप्**—भ्राज्, भास्, धुर्व्, द्युत्, अर्ज्, पॄ, जु और पाषाणवाची ग्रावन् शब्द पूर्वक ष्टु—इन धातुओं से परे ताच्छील्य आदि अर्थों में यह प्रत्यय लगता है। यथा—

वि + भ्राज् + क्विप् = विभ्राट् = चमकने वाला

भास् + क्विप् = भाः = चमकने वाला

धुर्व् + क्विप् = धूः = धुरा, घबड़ाहट

वि + द्युत् + क्विप् = विद्युत्

ऊर्ज + क्विप् = ऊर्ज या ऊर्ग = बलवान्

पॄ + क्विप् = पूः = नगरी

जु + क्विप् = जूः = शीघ्रगामी

ग्रावन् + ष्टु + क्विप् = ग्रावस्तुत = पत्थर की स्तुति करने वाला

नोट—इसी प्रकार वच्, प्रच्छ्, जु, श्रि आदि से परे भी 'क्विप्' प्रत्यय लगता है। यथा—

वच् + क्विप् = वाक् = वाणी

प्रच्छ + क्विप् = प्राट्

जु + क्विप् = जूः

श्रि + क्विप् = श्रीः।

४. **इत्र**—ऋ, लू, धू, षू; खन्, सह्, चर् आदि के परे इत्र प्रत्यय लगता है। यथा—

ऋ + इत्र = अरित्रम् = पतवार

लू + इत्र = लवित्रम् = हँसुवा, चाकू

धू + इत्र = धवित्रम् = पंखा

षू + इत्र = सवित्रम् = उत्पत्ति का कारण

खन् + इत्र = खनित्रम् = कुदाली

सह् + इत्र = सहित्रम् = छाता

चर् + इत्र = चरित्रम् = आचरण

उत्तर कृदन्त

नोट—'पूर्व कृदन्त' के प्रत्यय प्रायः 'कारक' अर्थों में होते हैं और उत्त रकृदन्त के प्रत्यय प्रायः 'भाव' में होते हैं।

१. तुमुन् और ण्वुल्—जब एक क्रिया के निमित्त दूसरी क्रिया उपपद रहे तो भविष्य अर्थ में धातु से परे तुमुन् (= तुम्) और ण्वुल्) प्रत्यय लगते हैं। यथा—

कृष्णं **द्रष्टुं** याति—इसमें तुमुन् है।
कृष्णं दर्शको याति—इसमें ण्वुल् है।

नोट—'तुमुन्' प्रत्यय लगने से अव्यय शब्द बनते हैं।

२. घञ्—यथा—पच् + घञ् (= अ) = पाकः।
रञ्ज् + घञ् (= अ) = रागः।
नि + चि + घञ् (= अ) = निकायः।
अव + तॄ (= तैरना)+घञ्=अवतारः=अवतार, घाट।
अव + स्तॄ (= फैलाना) + घञ् = अवतारः (=कनात)
रम् + घञ् = रामः।

३. एरच् (= अ)—इवर्णान्त धातुओं के परे होता है। यथा—
चि + एरच् (= अ) = चयः।
जि + एरच् (= अ) = जयः।

४. अप् (= अ)—ऋवर्णान्त या उकारान्त धातु से अप् प्रत्यय होता है। यथा—
कॄ + अप् (= अ) = करः = हाथ, बिखेरना।
स्तु + अप् (+ अ) = स्तवः = स्तुति।

५. क्त्रि (= त्रि)—जिस धातु का 'डु' इत् हो (जैसे डुपच् = पच्) उससे परे यह प्रत्यय होता है। यथा—
पच् + त्रि = पक्त्रि + मप् प्रत्यय = पक्त्रिमम्।

नोट—क्त्रि प्रत्यय के बाद सदैव ही 'मप्' प्रत्यय जुड़ता है।

६. **अथुच्**—जिस धातु का 'टु' इत् हो (जैसे—टुवेपृ = वेपृ) उससे परे लगता है। यथा—

वेपृ (= काँपना) + अथुच् (= अथु) + सु = वेपथुः = कँपकँपी, कंपन।

७. **नङ् (= न)**—यज्, याच्, यत्, विच्छ्, प्रच्छ् और रक्ष् से परे 'नङ्' प्रत्यय लगता है। यथा—

यज् + नङ् (= न) = यज्ञः।

याच् + नङ् (= न) + टाप् = याञ्चा।

यत् + नङ् (= न) = यत्नः।

प्रच्छ् + नङ् (= न) = प्रश्नः।

८. **नन् (= न)**—स्वप् धातु से परे होता है। यथा—

स्वप् + नन् (= न) = स्वप्नः।

९. **क्तिन् (= ति)**—यह 'घञ्' का अपवाद है। 'घञ्' पुल्लिंगवाची है। यह स्त्रीलिंगवाची है। यथा—

कृ + क्तिन् (= ति) = कृतिः।

स्तु + क्तिन् (= ति) = स्तुतिः।

१०. **अ**—प्रत्ययान्त धातुओं से स्त्रीलिंग में 'अकार' प्रत्यय होता है। यथा—

कृ + सन् + अ = किर् + सन् + अ = कीर् + सन् + अ = किकीर् + सन् + अ = चिकीर् + सन् (= स) + अ = चिकीर् + ष् + अ = चिकीर्ष + टाप् = चिकीर्षा = इच्छा।

इसी प्रकार—ईह् + अ = ईहा = इच्छा।

११. **खल् (= अ)**—जब दुःख अर्थ में 'दुर्' और सुख अर्थ में 'ईषद्' या 'सु' उपपद रहे तब धातु से परे 'खल्' प्रत्यय होता है। यथा—

दुर् + कृ + खल् (= अ) = दुष्करः।

इसी प्रकार ईषत्करः और सुकरः, जलधरः आदि बनते हैं।

१२. **युच् (= यु)**—ऊपर बताई गई दशा में आकारान्त धातुओं से परे 'युच्' प्रत्यय होता है। यह खल् प्रत्यय का अपवाद है। यथा—

ईषद् + पा + युच् (= यु) = ईषत्पानः ।

इसी प्रकार दुष्पानः, सुपानः आदि ।

१३. **क्त्वा (= त्वा)**—निषेधवाचक 'अलम्' और 'खलु' जिसके उपपद हों, उन धातुओं के परे 'क्त्वा' प्रत्यय लगता है । यथा—

अलं + दा + क्त्वा (त्वा) = अलं दत्वा = मत दो ।

इसी प्रकार—खलु पीत्वा = मत पियो ।

नोट—जब अनेक धातुओं का कर्ता एक हो तो पूर्वकाल वाली धातुयें क्त्वा प्रत्यय युक्त होती हैं । यथा—

भुक्त्वा (= भुज् + क्त्वा) पीत्वा (= पा + क्त्वा) वा व्रजति ।

नोट—उक्त नियम में यदि धातु के पूर्व कोई उपसर्ग हो तो 'क्त्वा' पर 'ल्यप्' का आदेश होता है । यथा—

प्र + कृ + क्त्वा = प्रकृत्य

आ + गम् + क्त्वा = आगत्य ।

वि + स्मृ + क्त्वा = विस्मृत्य—आदि ।

१४. **णमुल् (= अम्)**—जब किसी क्रिया के बार-बार होने का प्रकाश करना हो तो 'णमुल्' प्रत्यय होता है । वीप्सा के कारण क्रियापद का द्वित्व हो जाता है । यथा—

स्मृ + 'णमुल्' (= अम्) स्मारम्-स्मारम् ।

(स्मारं स्मारं नमति शिवः = बारम्बार स्मरण करके शिव जी को नमस्कार करता है ।)

पा + णमुल् (= अम्) = पायम्-पायम् ।

भुज् + णमुल् (= अम्) = भोजम्-भोजम् ।

श्रु + णमुल् (= अम्) = श्रावम्-श्रावम् ।

उणादि-प्रत्यय

उण् (= उ)—कृ, वा, पा, जि, मि, स्वद, साध, अश—इन धातुओं से परे उण् (= उ) प्रत्यय होता है । यथा—

कृ + उण् + सु = कारुः = कारीगर, शिल्पी ।
वा + उण् + सु = वायुः = पवन ।
पा + उण् + सु = पायुः = गुदा, मलद्वार ।
जि + उण् + सु = जायुः = औषधी ।
मि + उण् + सु = मायुः = पित्त ।
स्वद् + उण् + सु = स्वादुः = स्वादयुक्त ।
साध् + उण् + सु = साधुः = श्रेष्ठ पुरुष ।
अश् + उण् + आशु = शीघ्र ।



एकादशोऽध्यायः

तद्धित-प्रकरण

किसी सिद्ध रूप वाले संज्ञा, विशेषण, अव्यय अथवा क्रिया आदि के अनन्तर जुड़ कर 'तद्धित' तदन्य संज्ञा आदि का सृजन करते हैं।

नोट—ध्यान रहे कि कृत् प्रत्यय (= कृदन्त) केवल धातु में ही जुड़ते हैं।

१. अण् (= अ)—अपत्यार्थ में 'अण्' लगता है। यथा—

अश्वपति + अण् (= अ) = आश्वपतम् = अश्वपति की सन्तान आदि।

नोट—शिव आदि में भी 'अण्' लगता है। यथा—

शिव + अण् = शैव

गंगा + अण् = गांगः आदि।

२. ण्य (= य)—दिति, अदिति, आदित्य और पति शब्द उत्तरपद होने पर उन शब्दों से 'ण्य' प्रत्यय होता है। यथा—

दिति + ण्य (= य) = दैत्यः = दिति की सन्तान

अदिति + ण्य (= य) = आदित्यः = सूर्य, अदितिपुत्र।

३. ईकक् (= ईक)—यथा—

बहिष् + ईक् = बाहीकः

४. यत् (= य)—गो + यत् (= य) = गव्य + अम् = गव्यम् = गो की सन्तान, गो का विकार, जो गो का उपकारक हो जैसे तृण आदि।

५. इञ् (= इ)—सन्तान अर्थ में अदन्त से परे होता है। यथा—

दक्ष + इञ् (= इ) = दाक्षिः = दक्ष की सन्तान।

६. तल् (= त)—तलन्त शब्द सदैव स्त्रीलिंग होता है। यथा—

ग्राम + तल् (= त) = ग्रामता = गाँवों का समूह

जन + तल् = जनता = जनों का समूह

वन्धु + तल् = वन्धुता = वन्धुओं का समूह

गज + तल् = गजता = हाथियों का समूह ।

७. क—यथा—हस्तिन्+क+अम् = हास्तिकम् = हाथियों का समूह

धेनु + क + अम् = धेनुकम् = गायों का समूह ।

८. अण्—यथा—व्याकरण + अण् = वैयाकरणः ।

९. वुन् (= वु)—यथा—शिक्षा + वु = शिक्षकः ।

इसी प्रकार मीमांसकः, नैयायिकः आदि ।

१०. अण्—उदुम्बर + अण् (= अ) = औदुम्बरः = जिसमें गूलर के पेड़ बहुत हों । ऐसा देश ।

११. घ (= अ)—यथा—

राष्ट्र + घ (= अ) = राष्ट्रियः = जो देश में उत्पन्न हुआ हो ।

१२. ख (= अ)—अवार-पार या पार-अवार—इनमें 'ख' प्रत्यय हो । यथा—

पारावार + ख = पारावारीणः = दोनों पार का ।

अवारपार + ख = अवारपारीणः = आर-पार का ।

ग्राम + ख = ग्रामीणः = गाँव का ।

१३. त्यल् (= त्य)—दक्षिणा पश्चात् और पुरस् शब्दों के आगे यह प्रत्यय हो । यथा—

दक्षिणा + त्यल् = दाक्षिणात्यः = दक्षिण का, जो दक्षिण में उत्पन्न हुआ हो ।

पश्चात् + त्यल् = पाश्चात्यः = पश्चिम का, जो पश्चिम में उत्पन्न हुआ हो ।

पुरस् + त्यल् = पौरस्त्यः = जो पूर्व में उत्पन्न हुआ हो ।

१४. जब 'खञ्' या 'अण्' प्रत्यय परे हो तब एकार्थवाचक (एकवचन) युष्मद् और अस्मद् शब्दों के स्थान में 'तवक' और 'ममक' हो जाता है । यथा—

तवक + खञ् (= अ) = तावकीनः = तेरा ।

ममक + खञ् (= अ) = मामकीनः = मेरा ।

ममक + अण् = मामकः = मेरा ।

१५. 'छ' (= अ)—युष्मद् और अस्मद् से परे एकार्थ में 'छ' प्रत्यय भी होता है। इसकी वजह से 'युस्म्' और 'अस्म्' की जगह क्रमशः 'त्व' और 'म' का आदेश होता है। यथा—

युस्मद् + छ (= अ) = त्वद् + अ = त्वद्+ईय्+अ = त्वदीयः=तेरा ।

इसी प्रकार—अस्मद् + छ (= अ) = मदीयः = मेरा ।

१६. ठञ् (ठ = अ)—'काल' के परे 'ठञ्' होता है। यथा—

काल + ठञ् = कालिकम् = समय पर होने वाला ।

सम + काल + ठञ् = समकालिकः ।

मास + ठञ् = मासिकः = महीने में होने वाला ।

सम्वत्सर + ठञ् = साम्वत्सरिकम् = सालभर में होने वाला ।

१७. एण्य—प्रावृष् के साथ 'एण्य' लगता है। यथा—

प्रावृष् + एण्यः = प्रावृषेण्यः = जो वर्षा ऋतु में हो ।

१८. यत्—'तत्रभवः' अर्थ में 'यत्' प्रत्यय हो। यथा—

दन्त + यत् (= य) + अम् = दन्त्यम् = जो दांत का उपकारक हो ।

इसी प्रकार कण्ठ्यम् आदि ।

१९. मयट् (= मय)—पुरीष् अर्थ में गो से 'मयट्' प्रत्यय हो। यथा—गो + मयट् + अम् = गोमयम् = गाय का पुरीष=गोबर। मृत् + मयट् + अम् = मृन्मयम् = मिट्टी का विकार या अवयव ।

४०. यत् (= य)—यथा—

वयस् + यत् = वयस्यः = जो अवस्था में तुल्य हो ।

मूल + यत् = मूल्यः = मोल ली हुई वस्तु के जो समान दाम हो ।

कर्मन् + यत् = कर्मण्यः = जो कर्म में निपुण हो ।

सभा + यत् = सभ्यः = सभाओं में जो निपुण हो ।

इसी प्रकार—दण्ड्यः, वध्यः, अर्घ्यः आदि ।

२१. ठञ् (= अ)—'तस्येश्वरः' अर्थ में 'ठञ्' लगेगा। यथा—

सर्वभूमि+ठञ् (= अ) + सु = सार्वभौमः = सब धरती का स्वामी।

पृथिवी + ठञ् = पार्थिवः = पृथ्वी का स्वामी।

२२. ष्यञ् (= य)—शुक्ल + ष्यञ् (= य) = शौक्ल्यम् = सफेदी।

दृढ + ष्यञ् = दार्ढ्यम् = दृढ़ता।

२३. इमनिच् (= इमन्)—यथा—

पृथु + इमन् = प्रथिमन् + सु = प्रथिमा = मोटापन।

इसी प्रकार—म्रदिमा = कोमलता और द्रढिमा = मजबूती।

२४. अण् (= अ)—मृदु + अण् + अम् = मार्दवम् = कोमलता।

२५. ष्यञ् (= य)—जड + ष्यञ् = जाड्यम् = मूर्खता।

ब्राह्मण + ष्यञ् = ब्राह्मण्यम् = ब्राह्मणत्व।

२६. य—सख्युर्भाव में। यथा—

सखि + य + अम् = सख्यम् = मित्रता।

२७. इतच् (= इत)—'तदस्य संजातम्' इस अर्थ में। यथा—

पण्डा + इतच् = पण्डितः = जिसमें सत्य और असत्य के विवेक की बुद्धि उत्पन्न हो।

२८. इनि (= इन्)—अधीत् + इनि = अधीतिः + सु=अधीती = जिसने पढ़ लिया है।

२९. मतुप् (= मत्)—भूम (अधिक), निन्दा, प्रशंसा, नित्ययोग, अतिशय और संसर्ग में 'मतुप्' आदि प्रत्यय होते हैं। यथा—

गो + मत् = गोमान्।

विद्वस् + मत् = विदुष्मान्।

गरुत् + मत् = गरुत्मान्।

चूडा + मत् = चूडावान्।

३०. उरच् (= उर)—दन्त + उर = दन्तुरः = जिसके दाँत ऊँचे हैं।

३१. **तसिल्**—पंचमी के स्थान पर। यथा—
किम् + तसिल् (तस्) = कुतः।
इतम् + तसिल् (तस्) = इतः।
इसी प्रकार—अभितः, परितः, अतः आदि।

३२. **त्रल्** (= त्र)—यथा—
किम् + त्रल् = कुत्र = कहाँ।
यद् + त्रल् = यत्र = जहाँ।
इसी प्रकार—बहुत्र, तत्र, सर्वत्र।

३३. **दा**—समय के अर्थ में। यथा—
सर्व + दा = सदा।
एक + दा = एकदा।
इसी प्रकार—अन्यदा, कदा; यदा; तदा आदि।

३४. अनद्यतनकाल में 'हिल' और 'दा' प्रत्यय लगते हैं। यथा—
किम् + हिल् = कर्हि, किम् + दा = कदा।
यत् + हिल = यर्हि, यत् + दा = यदा।
तत् + हिल = तर्हि, तत् + दा = तदा।

३५. **थाल्**—'तेन प्रकारेण' इस अर्थ में। यथा—
तद् + थाल् (था) = तथा।

३६. **तमप्** और **इष्ठन्**—'अतिशयित' अर्थ में। यथा—
लघु + तमप् (तम्) = लघुतमः = सबसे छोटा।
लघु + इष्ठन् (इष्ट) = लघिष्ठ = सबसे छोटा।

३७. **तरप्** और **ईयसुन्**—'दो में से एक की श्रेष्ठता' के अर्थ में। यथा—
लघु + तरप् (= तर) = लघुतरः = दो में से छोटा।
लघु + ईयसुन् (= ईयस्) = लघीयस् + सु = लघीयान् = दो में से छोटा।

३८. **डतरच्**—'दो में से कौन' के अर्थ में। यथा—
क + डतरच् (= अतर) = कतरः।
इसी प्रकार—इतरः, ततरः आदि।

३९. **डतमच्**—'बहुतों में से कौन सा' के अर्थ में। यथा—

किम् + डतमच् (= अतम) = कतमः ।

इसी प्रकार—यतमः, ततमः आदि ।

४०. **अण्** (= अ)—प्रज्ञा आदि के साथ । यथा—

प्रज्ञा + अण् (= अ) = प्राज्ञः ।

देवता + अण् (= अ) = दैवतः ।

वन्धु + अण् (= अ) = वान्धवः ।

४१. **च्वि**—'अभूत तद्भाव' में । यथा—

कृष्ण + च्वि + करोति = कृष्णीकरोति = जो काला नहीं है उसे काला करता है ।

इसी प्रकार—ब्रह्मीभवति आदि ।

४२. **डाच्** (=आ)—अव्यक्त ध्वनि के अनुकरण शब्द से भू, कृ और अस् धातुओं के योग में 'डाच्' (=आ) प्रत्यय लगता है । यथा—

पटत् + डाच् (आ) + करोति=पटपटा करोति=पट-पट करता है ।



द्वादशोऽध्यायः

स्त्री-प्रत्यय-प्रकरण

स्त्री-प्रत्यय वे हैं जिनके योग से पुंल्लिग शब्द स्त्रीलिङ्ग बन जाते हैं। ऐसे प्रत्यय संख्या में कुल आठ हैं—

टाप्, डाप्, चाप् (सभी में 'आ' शेष रहता है); ङीप्, ङीष्, ङीन्, (सभी में 'ई' शेष बचता है); ऊङ् (= ऊ) और ति।

टाप् (= आ)

१. **अजाद्यतष्टाप्**—अज, एड, कोकिल, चटक, अश्व, मूषिक, बाल; होड, वत्स तथा अन्य अकारान्त शब्दों में स्त्रीलिंग बनाने के लिये 'टाप्' लगता है। यथा—अज + टाप् = अजा (= बकरी); एड + टाप् = एडा (= भेड); कोकिल + टाप् = कोकिला (= कोयल); चटक + टाप् = चटका (=चिड़िया); अश्व+टाप् = अश्वा (=घोड़ी); मूषिक+टाप्=मूषिका (=चुहिया); बाल + टाप् = बाला (= लड़की); वत्स + टाप् = वत्सा (= बछिया)।

इसी प्रकार—प्रिय > प्रिया, कान्त > कान्ता, वृद्ध > वृद्धा, दीन > दीना, अबल > अबला, सरल > सरला, चपल > चपला, निपुण > निपुणा; कृष्ण > कृष्णा, चतुर > चतुरा, प्रथम > प्रथमा, मनोहर > मनोहरा; प्रतिकूल > प्रतिकूला आदि।

२. **प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्यात इदाप्यसुपः**—

यदि शब्द के अन्त में 'क' हो और उसके पूर्व 'अ' हो तो 'टाप्' लगने पर उस 'अ' का 'इ' हो जाता है। यथा—

कारक + टाप् = कारिका, वाचक + टाप् = वाचिका, नायक + टाप् = नायिका, बोधक + टाप् = बोधिका, याचक + टाप् = याचिका, साधक + टाप् = साधिका, गायक + टाप् = गायिका, बालक + टाप् = बालिका; पालक + टाप् = पालिका, दायक + टाप् = दायिका आदि।

—>उपर्युक्त सभी शब्द प्रत्ययान्त हैं। किन्तु यदि कोई शब्द प्रत्ययान्त न हो और फिर भी उसके अन्त में 'क' तथा उसके पूर्व 'अ' हो तो उक्त 'इ' नहीं होगा।

यथा—शङ्क + टाप् = शङ्का; चटक + टाप् = चटका, जीवक + टाप् = जीवका, अष्टक + टाप् = अष्टका, उपत्यक + टाप् = उपत्यका आदि।

डाप् (= आ)

१. **डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम्**—मन्नन्त शब्दों (यथा यामन्, सीमन्) तथा बहुव्रीहि समास-युक्त अन्नन्त शब्दों (यथा—बहुपर्वन्, बहुयज्वन्, बहुराजन्) में 'ङीप्' न लग कर 'डाप्' लगता है। यथा—पामा = पाम (न लोपः प्रातिपादिकस्य) + डाप् = पामा, सीम = सीम + डाप् = सीमा। इसी प्रकार—बहुपर्वन् (बहूनि सन्ति अस्यां पर्वाणि) = बहुपर्व (न लोपः प्रातिपदिकस्य) + डाप् = बहुपर्वा, बहुराजन् (=बहवः सन्ति अत्र राजानः) = बहुराज (न लोपः प्रातिपदिकस्य) + डाप् = बहुराजा।

चाप् (= आ)

१. **यङश्चाप्**—जातिवाची यङ् प्रत्ययान्त शब्दों में 'चाप्' प्रत्यय लगता है। यथा—सौवीर्य+चाप् = सौवीर्या; आम्बष्ठ्य+शाप् = आम्बष्ठ्या; वाराह्य + चाप् = वाराह्या—आदि।

२. **षाच्च यञः** (वार्तिक)—षकार के बाद में स्थित यञ् (= य) से समाप्त होने वाले शब्दों में भी 'चाप्' प्रत्यय लगता है। यथा—शार्कराक्ष्य + चाप् = शार्कराक्ष्या। गोकक्ष्य + चाप् = गोकक्ष्या—आदि।

३. **सूर्याद्देवतायां चाप् वक्तव्यः** (वार्तिक)—देवतावाची सूर्य शब्द में भी विकल्प से चाप् प्रत्यय लगता है। यथा—सूर्य + चाप् = सूर्या (= सूर्य की पत्नी)। विकल्प से दूसरा प्रत्यय 'ङीष्' लगेगा।

ङीप् (= ई)

१. **ऋन्नेभ्यो ङीप्**—ऋकारान्त और नकारान्त पुल्लिग शब्दों से स्त्रीलिंग बनाने में ङीप् (= ई) प्रत्यय लगता है। यथा—**ऋकारान्त**—कर्तृ + ङीप् = कर्त्री, दातृ + ङीप् = दात्री, भर्तृ + ङीप् = भर्त्री, धातृ + ङीप् = धात्री, गन्तृ + ङीप् = गन्त्री, हन्तृ + ङीप् = हन्त्री, भोक्तृ + ई = भोक्त्री, प्रसवितृ + ङीप् = प्रसवित्री—आदि।[1]

१. दुहितृ, स्वसृ, तिसृ, चतसृ आदि में उक्त प्रत्यय नहीं लगेगा, क्योंकि ये स्वयं स्त्रीलिंग हैं। 'पितृ' में भी उक्त प्रत्यय नहीं लगेगा।

नकारान्त—मालिन् + ङीप् = मालिनी, मानिन् + ङीप् = मानिनी; कामिन् + ङीप् = कामिनी, विलासिन् + ङीप् = विलासिनी, मायाविन् + ङीप् = मायाविनी, गुणिन् + ङीप् = गुणिनी, तपस्विन् + ङीप् = तपस्विनी, मनोहारिन् + ङीप् = मनोहारिणी, प्रियवादिन् + ङीप् = प्रियवादिनी—आदि।

२. **टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयपठक्ठञ्कञ्क्वरपः**—टित्; ढ, अण्, अञ्, द्वयसच्, दघ्नच्, मात्रच्, तयप्, ठक्, ठञ्, कञ्, क्वरप् आदि प्रत्ययों से बने अकारान्त शब्दों में 'ङीप्' प्रत्यय लगता है। यथा—

टित्—वनेचर + ङीप् = वनेचरी।
ढ—वैनतेय + ङीप् = वैनतेयी, गांगेय + ङीप् = गांगेयी, सारमेय + ङीप् = सारमेयी।
अण्—कुम्भकार + ङीप् = कुम्भकारी।
अञ्—तापस + ङीप् = तापसी।
द्वयसच्—जानुद्वयस + ङीप् = जानुद्वयसी।
दघ्नच्—जातुदघ्न + ङीप् = जानुदघ्नी।
मात्रच्—जानुमात्र + ङीप् = जानुमात्री।
तयप्—चतुष्टय + ङीप् = चतुष्टयी।
ठक्—धार्मिक + ङीप् = धार्मिकी।
ठञ्—मासिक + ङीप् = मासिकी।
कञ्—यादृश + ङीप् = यादृशी।
क्वरप्—नश्वर + ङीप् = नश्वरी।

३. उकार-लोप[1] और ऋकार-लोप[2] वाले प्रत्ययों से बने शब्दों में 'ङीप्' प्रत्यय लगता है। यथा—श्रीमत् + ङीप् = श्रीमती; बुद्धिमत्+ङीप् =

---

१. **उकार-लोप**—यथा—वतुप् और मतुप् आदि प्रत्यय, जिनके अन्त्य पकार का लोप तो 'हलन्त्यम्' सूत्र से और उसके पूर्ववर्ती उकार का लोप 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से हो जाता है।

२. **ऋकारान्त-लोप**—यथा—'शतृ' प्रत्यय, जिसके अन्त्य ऋकार का लोप हो जाता है। (उपदेशे सूत्र से)।

बुद्धिमती; पुत्रवत् + ङीप् = पुत्रवती; बलवत् + ङीप् = बलवती—आदि।

इसी प्रकार—कुर्वंत् + ङीप् = कुर्वती; विभ्रत्+ङीप् = विभ्रती, सत् + ङीप्=सती; रुदत् + ङीप् = रुदती—आदि।

टिप्पणी—भ्वादि, दिवादि और चुरादि गण की धातुओं में 'शतृ' प्रत्यय लगने से बने शब्दों में जब 'ङीप्' प्रत्यय स्त्रीलिंग की विवक्षा में लगाया जाता है, तो बीच में 'नकार' का आगम हो गया है। यथा—

भ्वादि०—भवत् + ङीप् = भवन्ती, गच्छत् + ङीप्=गच्छन्ती, पतत् + ङीप् = पतन्ती, पश्यत् + ङीप् = पश्यन्ती—आदि।

दिवादि—दीव्यत् + ङीप्=दीव्यन्ती, नश्यत् + ङीप्=नश्यन्ती, जीर्यंत् + ङीप् = जीर्यन्ती—आदि।

चुरादि०—चोरयत् + ङीप्=चोरयन्ती, चिन्तयत् = ङीप् = चिन्तयन्ती, कथयत् + ङीप् = कथयन्ती—आदि।

तुरादिगण और अदादिगण की धातुओं में विकल्प से 'नकार' का आगम होता है। यथा—

तुदादि०—तुदत् + ङीप् = तुदन्ती, तुदती; इच्छत् + ङीप् = इच्छन्ती, इच्छती—आदि।

अदादि०—रुदत् + ङीप् = रुदन्ती, रुदती; दुहत् + ङीप् = दुहन्ती, दुहती—आदि।

४. **पादोऽन्यतरस्याम्**—जिनका अन्त्य भाग 'पाद' हो ऐसे शब्दों में 'ङीप्' लगता है। यथा—द्विपाद् + ङीप्=द्विपादी, त्रिपाद् + ङीप्=त्रिपादी, चतुष्पाद + ङीप्= चतुष्पादी—आदि।

५. **यञश्च**—यञ् (= य) प्रत्ययान्त शब्दों में भी 'ङीप्' ही लगता है। ध्यान रहे कि 'हलस्तद्धितस्य' सूत्र से 'ङीप्' प्रत्यय लगने पर पूर्वोक्त 'यञ्' प्रत्ययान्त शब्दों (यथा गार्ग्य, आगस्त्य) के किसी 'हल्' के बाद स्थित 'य्' का लोप हो जाता है। यथा—गार्ग्य + ङीप् = गार्गी, आगस्त्य + ङीप्= आगस्ती, माण्डव्य + ङीप् = माण्डवी—आदि।

६. **द्विगोः**—द्विगुसमासान्त अकारान्त शब्दों में भी ङीप् प्रत्यय लगता है। यथा—अष्टाध्याय + ङीप् = अष्टाध्यायी; त्रिलोक + ङीप् = त्रिलोकी; पञ्चमूल + ङीप् = पञ्चमूली—आदि।

७. **वयसि प्रथमे**—यदि वृद्धावस्था से भिन्न अन्य अवस्थाओं का बोध होता हो, तो ऐसे अकारान्त शब्दों में 'ङीप्' लगता है। यथा—कुमार + ङीप्=कुमारी, किशोर + ङीप्=किशोरी, कलम + ङीप्=कलमी, चिरण्ट + ङीप् = चिरण्टी—आदि।

८. **पत्युर्नो यज्ञसंयोगे**—यज्ञफल की भागीदारी का भाव प्रकट होने पर 'पति' शब्द में 'ङीप्' प्रत्यय लगता है और उसमें नकार का आगम हो जाता है। यथा—पति + ङीप् = पत्नी।

यदि उक्त यज्ञफल की भागीदारी का भाव न हो तो 'पति' शब्द का स्त्रीलिंग में भी 'पति' ही रूप बनेगा। उदाहरण—शकुन्तला एवं आश्रमस्यास्य **पतिः** (= शकुन्तला ही इस तपोवन की स्वामिनी है)। इस अर्थ में 'पति' में 'ङीप्' नहीं लगा और न 'नकार' का आगम ही हुआ।

किसी पूर्वपद से युक्त 'पति' शब्द में विकल्प से 'ङीप्' की योजना और 'नकार' का आगम होता है। यथा—वृद्धपत्नी या वृद्धपतिः (= वृद्धः पतिः यस्याः सा); स्थूलपत्नी या स्थूलपतिः—आदि।

'सौत' आदि अर्थों में 'पति' में सदैव 'ङीप्' की योजना और नकार का आगम होगा। यथा—सपत्नी, वीरपत्नी, एकपत्नी—आदि।

ङीष् (= ई)

१. **षिद्गौरादिभ्यश्च**—षित् शब्दों (यथा—नर्तक, खनिक, पथिक आदि) तथा गौरादि गण में पठित शब्दों (यथा—गौर, मनुष्य, मत्स्य, शृङ्ग, पिङ्गल, हय, गवय आदि)। के बाद 'ङीष्' प्रत्यय लगता है। 'ङीष्' (= ई) लगने पर अन्त्य अकार का लोप हो जाता है। यथा—

षित्०—नर्तक + ङीष् = नर्तकी; खनक + ङीष् = खनकी; पथिक + ङीष् = पथिकी—आदि।

गौरादि०—गौर + ङीष् = गौरी; सुन्दर + ङीष् = सुन्दरी; पितामह + ङीष् = पितामही, मातामह + ङीष् = मातामही, नट + ङीष्=नटी, तरुण + ङीष् = तरुणी, स्थल + ङीष् = स्थली—आदि।

२. **जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्**—जाति का बोध होने से जातिवाचक अकारान्त शब्दों में 'ङीष्' प्रत्यय लगता है (तथा उसके लगने से उन शब्दों

के अन्त्य अकार का लोप हो जाता है)। यथा—सिंह + ङीष् = सिंही, मृग + ङीष् = मृगी, व्याघ्र + ङीष् = व्याघ्री, भल्लुक + ङीष् = भल्लुकी, हरिण + ङीष् = हरिणी, हंस + ङीष् = हंसी, राक्षस + ङीष् = राक्षसी, मानुष + ङीष् = मानुषी—आदि।

३. **पुंयोगादाख्यायाम्**—पुरुषवाचक शब्दों में जाया (= पत्नी) अर्थ में ङीष् प्रत्यय लगता है। यथा—शूद्रस्य जाया शूद्री, नापितस्य जाया नापिती, निषादस्य जाया निषादी, ब्राह्मणस्य जाया ब्राह्मणी—आदि।

टिप्पणी—किन्तु 'वैश्य' और 'क्षत्रिय' शब्दों से पूर्वोक्त जाया अर्थ में ङीष्' लगने पर 'आनुक्' (= आन्) का आगम हो जाता है। यथा—वैश्य से वैश्यानी, क्षत्रिय से क्षत्रियाणी।

४. **इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक्**—इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड, हिम, अरण्य, यव, यवन, मातुल, आचार्य आदि शब्दों में 'ङीष्' प्रत्यय लगने के पूर्व 'आनुक्' (आन्) का आगम हो जाता है। यथा—

इन्द्र + ङीष् = इन्द्राणी, वरुण + ङीष् = वरुणानी, भव + ङीष्=भवानी, शर्व + ङीष् = शर्वाणी, रुद्र + ङीष् = रुद्राणी, मृड + ङीष् = मृडानी, हिम + ङीष् = हिमानी, अरण्य + ङीष् = अरण्यानी, यव + ङीष् = यवानी, यवन + ङीष् = यवनानी, मातुल + ङीष्=मातुलानी, आचार्य + ङीष्=आचार्याणी—आदि।

५. **क्रीतात् करणपूर्वात्**—करणवाची पूर्वपद से युक्त क्रीत शब्दान्त शब्दों में 'ङीष्' प्रत्यय लगता है। यथा—वस्त्रक्रीत (= वस्त्रेण क्रीतः) + ङीष् = वस्त्रक्रीती। इसी प्रकार वसनक्रीती, रथक्रीती—आदि।

६. **स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्**—बहुव्रीहि समास में अवयववाचक अकारान्त शब्दों विकल्प से 'ङीष्' प्रत्यय लगता है। यथा—चन्द्रमुख (= चन्द्र इव मुखं यस्य) + ङीष् = चन्द्रमुखी। पक्षान्तर में 'टाप्' लग कर 'चन्द्रमुखा' भी बनता है। इसी प्रकार—सुकेशी और सुकेशा, कृशांगी और कृशांगा, मृदुगात्री और मृदुगात्रा, बिम्बोष्ठी और बिम्बोष्ठा, कोकिलकण्ठी और कोकिलकण्ठा—आदि।

टिप्पणी—(१) 'नखमुखात्संज्ञायाम्' सूत्र के अनुसार बहुव्रीहि समास भिन्न संज्ञावाची नखान्त और मुखान्त शब्दों में 'ङीष्' प्रत्यय नहीं लगता ('टाप्' लगता है)। यथा—शूर्पणखा, वज्रणखा, गौरमुखा, कालमुखा—आदि ।

२. **'दिक्पूर्वपदान्ङीष्'** सूत्र से—जिस शब्द का पूर्वपद दिशावाची हो; उसमें 'ङीष्' प्रत्यय लगता है । यथा—प्राङ्मुख + ङीष् = प्राङ्मुखी, प्रत्यङ्मुख + ङीष् = प्रत्यङ्मुखी, प्राङ्नासिक + ङीष् = प्राङ्नासिकी—आदि ।

३. **'नासिकोदरौष्ठजङ्घादन्तकर्णशृङ्गाच्च'**— सूत्रानुसार— नासिका, उदर, ओष्ठ, जङ्घा, दन्त, कर्ण और भृङ्ग शब्दों के योग में विकल्प से 'ङीष्' होता है । यथा—तुङ्गनासिकी, तुङ्गनासिका, दीर्घोदरी, दीर्घोदरा; विपुलोष्ठी, विपुलोष्ठा, सुदीर्घकर्णी, सुदीर्घकर्णा—आदि ।

७. **'पाककर्णपर्णपुष्पफलमूलबालोत्तरपदाच्च'**—पाक, कर्ण, पर्ण, पुष्प, फल, मूल और बाल आदि उत्तरपदों से युक्त शब्दों में 'ङीष्' प्रत्यय लगता है । यथा—ओदनपाक + ङीष् = ओदनपाकी; शंकुकर्ण + ङीष् = शङ्कुकर्णी; शालपर्ण + ङीष् = शालपर्णी; शङ्खपुष्प + ङीष् = शङ्खपुष्पी; दामीफल + ङीष् = दामीफली; दर्भमूल + ङीष् = दर्भमूली; गोबाल + ङीष् = गोबाली ।

८. **बह्वादिभ्यश्च**—'बहु' आदि गण में पठित शब्दों में 'ङीष्' प्रत्यय लगता है । यथा—बहु + ङीष् = बह्वी, लघु + ङीष् = लघ्वी, तनु + ङीष् = तन्वी—आदि ।

ङीन् (= ई)

१. **शार्ङ्गरवाद्यञोङीन्**—शार्ङ्गरव आदि गण में पठित जातिवाचक शब्दों में 'ङीन्' प्रत्यय लगता है । यथा—शार्ङ्गरव + ङीन् = शार्ङ्गरवी (= शृङ्गारु ऋषि के वंश की कन्या)। इसी प्रकार—गौतमी, आत्रियेयी; आशोकेयी—आदि ।

२. **नृनरयोर्वृद्धिश्च** (वार्तिक)—'ङीन्' प्रत्यय लगने पर 'नृ' और 'नर' शब्दों में वृद्धि आदेश होता है । यथा—नृ + ङीन् अथवा नर + ङीन् = नारी ।

ऊङ् (= ऊ)

१. **ऊङुतः**—मनुष्यवाचक उकारान्त शब्दों में 'ऊङ' प्रत्यय लगता है। यथा—कुरु + ऊङ् = कुरूः, कद्रु + ऊङ् = कद्रूः, कर्कन्धु + ऊङ् = कर्कन्धूः—आदि।

टिप्पणी—रज्जु आदि शब्दों में 'ऊङ्' प्रत्यय नहीं लगता। यथा—रज्जुः, आखुः, हनुः, कमण्डलुः; कृकवाकुः, अध्वर्युः—आदि।

२. **ऊरूत्तरपदादौपम्ये**—यदि उपमा अर्थ में किसी शब्द का उत्तरपद 'ऊरु' हो, तो उसमें 'ऊङ्' प्रत्यय लगता है। यथा—रम्भोरु (= रम्भे इव ऊरु यस्य) + ऊङ् = रम्भोरुः। इसी प्रकार—करभोरुः—आदि।

टिप्पणी—यदि वाम आदि विशेषणों के बाद भी 'ऊरु' शब्द हो तो भी 'ऊङ्' प्रत्यय लगता है। यथा—वाम-ऊरु + ऊङ् = वामोरूः। इसी प्रकार—शफोरूः, संहितोरूः, लक्षणोरुः।

ति (= ति)

१. **यूनस्तिः**—युवन् शब्द से स्त्रीलिंग बनाने में 'ति' प्रत्यय लगता है और 'युवन्' के नकार का लोप हो जाता है। यथा—युवन् + ति=युवतिः। विकल्प से युवती भी बनता है।

विशेष—(१) सम्बन्धवाचक शब्दों के स्त्रीलिंग शब्द अनियमित रूप से बनते हैं। यथा—पति से पत्नी, पिता से माता, श्वसुर से श्वश्रू, ज्येष्ठ से ज्येष्ठानी—आदि।

(२) निम्नलिखित छः शब्द स्वयम् स्त्रीलिंग हैं, अतएव इनमें स्त्री-प्रत्यय नहीं लगते—स्वसृ (= स्वसा), ननान्दृ (= ननान्दा), दुहितृ (= दुहिता), तिसृ (= तिस्रः), चतसृ (= चतस्रः) और मातृ (= माता)। (दे०—'न षट्स्वस्रादिभ्यः')।

खण्ड २

अनुवाद

अध्याय १

[क] अनुवादोपयोगी कुछ सूचनायें

१. साधारण हिन्दी के वाक्य को पहले शुद्ध हिन्दी के वाक्य में परिवर्तित कर लो। इस प्रकार जो नया वाक्य बनेगा, उसमें लगभग वे ही शब्द होंगे, जिनका प्रयोग तुम्हें संस्कृत में करना है।

यथा—'मास्टर साहब' के स्थान पर 'अध्यापक जी', 'स्कूल' के स्थान पर 'पाठशाला', कमरे के स्थान पर 'कक्ष' और 'छुट्टी' के स्थान पर 'अवकाश' आदि का प्रयोग वाञ्छनीय है। अब इस प्रकार बने हुये नये वाक्य में जो शब्द आये हैं उनके आगे केवल कारक और कोई क्रिया विशेष ही लगाना अवशेष रह जाता है। एक उदाहरण देखिये—

"हमारे गाँव के लोग लड़ाकू नहीं हैं।" इसकी शुद्ध हिन्दी— "हमारे ग्राम के निवासी युद्धप्रिय नहीं हैं।"—यह होगी।

अब इसका अनुवाद संस्कृत में इस प्रकार होगा—

"अस्माकं ग्रामस्य निवासिनः युद्धप्रियाः न सन्ति।"

इसी प्रकार—"गाँवों के स्कूलों के लड़के मैले कपड़े पहनते हैं" इसकी शुद्ध हिन्दी इस प्रकार होगी—"ग्रामों के विद्यालयों के बालक मलिन वस्त्र धारण करते हैं।" इसका अनुवाद संस्कृत में इस प्रकार होगा—"ग्रामाणां विद्यालयानां बालकाः मलिनानि वस्त्राणि धारयन्ति।"

२. कर्त्ता और क्रिया में **'वचन'** का साम्य होता है, अर्थात् दोनों में समान वचन होना चाहिये। जिस वचन में कर्त्ता हो, क्रिया भी उसी वचन की होनी चाहिये। यथा—

(१) **'अश्वः चरति'**—इस वाक्य में 'अश्वः' एक वचन है, इसलिये क्रिया 'चरति' भी एक वचन रक्खी गई है। यहाँ पर 'अश्वः' के साथ 'चरतः' या 'चरन्ति' क्रियायें लगाने से वाक्य; अशुद्ध हो जाता।

(२) **'चौरौ चोरयतः'**—इस वाक्य में 'चौरौ' कर्त्ता के द्विवचनात्मक होने के कारण ही 'चोरयतः' क्रिया भी द्विवचनात्मक है। यहाँ पर 'चौरौ' के साथ 'चोरयति' अथवा 'चोरयन्ति' लगाने से वाक्य में अशुद्धि आ जायेगी।

(३) **'बुधाः पठन्ति'**—में कर्ता 'बुधाः' और क्रिया 'पठन्ति' दोनों में बहुवचन है। 'बुधाः' के साथ 'पठति' या 'पठतः' लगाना अशुद्ध है।

३. कर्ता और क्रिया में 'पुरुष' का भी साम्य होता है, अर्थात् कर्ता जिस पुरुष में हो क्रिया भी उसी पुरुष की होनी चाहिये।

यथा—(१) 'रामः गच्छति', 'रामः गच्छसि' और 'रामः गच्छामि'—इन तीनों वाक्यों में 'रामः' नामक कर्ता के साथ एकवचन की ही क्रिया लगाई गई है। किन्तु तीनों क्रियाओं के पुरुष भिन्न हैं क्योंकि 'रामः' अन्य पुरुष का शब्द है, अस्तु उसके साथ अन्य पुरुष की क्रिया 'गच्छति' ही लगाना ठीक है। इस प्रकार 'रामः गच्छति' यह शुद्ध वाक्य हुआ, शेष दोनों वाक्य अशुद्ध हैं।

(२) 'त्वं पठति', 'त्वं पठसि' और 'त्वं पठामि' इन तीनों वाक्यों में 'त्वं पठसि' ही शुद्ध है, क्योंकि इसमें 'त्वं' नामक कर्ता और 'पठसि' नामक क्रिया दोनों ही मध्यम पुरुष में हैं।

(३) 'अहं धावति', 'अहं धावसि' और 'अहं धावामि' इन तीनों वाक्यों में से 'अहं धावामि' ही शुद्ध है, क्योंकि इसमें कर्ता शब्द 'अहं' और क्रिया शब्द 'धावामि' दोनों ही उत्तम पुरुष में हैं।

नोटः—(१) इस प्रकार स्पष्ट है कि कर्ता और क्रिया में पुरुष और वचन का साम्य रहता है, अर्थात् जिस पुरुष और जिस वचन में कर्ता होगा, क्रिया भी उसी पुरुष और उसी वचन की होगी।

(२) निम्नस्थ वाक्यों को शुद्ध करो :—

अहं पूजयसि। ते इच्छावः। वयं विशामि। वयं सिंचावः। त्वं रक्षति। यूयं द्रवामः। तौ गच्छथः। बालकाः पतामः। ते नयथः। स नश्यसि। युवां धावतः। बालकौ हसथ। आवां गच्छतः। बालकाः क्रीडति। मयूरः नृत्यन्ति। पिकः कूजति।

४. हिन्दी के 'आप' शब्द के लिये संस्कृत में 'भवत्' शब्द है, जिसका रूप पुल्लिग में 'भवान्' होता है, स्त्रीलिंग में 'भवति' होता है और नपुंसक लिंग में 'भवत्' ही रहता है।

यद्यपि यह शब्द मध्यमपुरुष का है, तथापि इसके साथ अन्यपुरुष की क्रिया ही लगाई जाती है। 'वचन' का प्रयोग पूर्ववत् ही रहेगा। उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता। यथा—

आप पढ़ते हैं	= भवान् पठति।
आप दोनों हँसते हैं	= भवन्तौ हसतः।
आप सब कहाँ जाते हैं	= भवन्तः कुत्र गच्छन्ति ?
आप लिखती हैं	= भवती लिखति।
आप दोनों नाचती हैं	= भवत्यौ नृत्यतः।
आप सब गाती हैं	= भवत्यः गायन्ति।

नोटः—(१) 'भवत्' शब्द के रूप पुल्लिग में 'भगवत्' के समान, स्त्रीलिंग में 'नदी' के समान और नपुंसक लिंग में 'जगत्' के समान चलते हैं।

५. यदि अन्यपुरुष के दो कर्ता 'च' शब्द के द्वारा जुड़े हों और दोनों एकवचनात्मक ही हों तो उनकी सम्मिलित क्रिया अन्यपुरुष के द्विवचन में रक्खी जायगी, एकवचन में नहीं। कुछ विद्यार्थी अज्ञानवश एकवचन का ही प्रयोग करते हुये मिले हैं। यथा—

(१) राम और श्याम हँसते हैं = रामः श्यामश्च **हसतः**।

(२) गोविन्द और नारायण अपनी पुस्तक पढ़ते हैं=गोविन्दो नारायणश्च स्वपुस्तकं **पठतः**।

(३) नेवला और साँप दोड़ते हैं = नकुलः सर्पश्च **धावतः**।

नोट—उक्त वाक्यों में 'हसति', 'पठति' और 'धावति' का क्रमशः प्रयोग असंगत है।

६. यदि भिन्न वचन वाले दो या दो से अधिक अन्यपुरुष के कर्ता 'च' शब्द द्वारा जुड़े हों और वे एक ही क्रिया को करते हों, तो वह क्रिया अन्यपुरुष के बहुवचन में होगी। यथा—

(१) ततः कुन्ती च राजा च भीष्मश्च सह बन्धुभिः। ददुः श्राद्धं तदा पाण्डो.........आदि।

(२) अयं बालकः ताः बालिकाः च **क्रीडन्ति**।

(३) पाण्डवाः कौरवाः च कलहं **कुर्वन्ति**।

नोटः—किन्तु कभी-कभी एक ही क्रिया के भिन्न वचन वाले कई कर्ता होने पर भी क्रिया अपने से समीपतम कर्ता से ही सम्बन्ध रखती है। यथा—

अहश्च रात्रिश्च उभे च सन्ध्ये धर्मोऽपि **जानाति** नरस्य वृत्तम्।

७. यदि किसी वाक्य में उत्तम, मध्यम और अन्य पुरुष के कर्ता 'च' शब्द के द्वारा जुड़े हों तो उनकी सम्मिलित क्रिया **'उत्तम पुरुष'** के अनुसार होगी और क्रिया का वचन उस वाक्य के **कर्ताओं की संख्या** के अनुसार होगा। यथा—

(१) वह, तुम और मैं यहाँ पर खड़े हैं = सः त्वं अहं च अत्र **तिष्ठामः**।

(२) तुम, मैं और राम आज घूमने के लिये क्यों न जावें? = त्वं अहं रामश्च अद्य पर्यटनाय कथं न **गच्छेम**?

८. यदि किसी वाक्य में एक कर्ता उत्तम पुरुष का और दूसरा मध्यम पुरुष का हो तथा दोनों कर्ता 'च' शब्द से जुड़े हों तो उनकी सम्मिलित क्रिया **उत्तम पुरुष** के अनुसार ही होगी और क्रिया का वचन भी उस वाक्य के **कर्ताओं की संख्या** के अनुसार ही होगा। यथा—

(१) तुम और हम भोजन पचाते हैं = त्वं अहं च भोजनं **पचावः**।

(२) हम लोग और तुम लोग मिलकर फुटबाल खेलते हैं = वयं यूयं च परस्परं मिलित्वा पादकन्दुकं **क्रीडामः**।

९. यदि किसी वाक्य में एक कर्ता उत्तम पुरुष का और दूसरा अन्य पुरुष का हो तथा दोनों कर्ता 'च' शब्द से जुड़े हों तो उनकी सम्मिलित क्रिया **उत्तम पुरुष** के अनुसार ही होगी और क्रिया का वचन भी उस वाक्य के **कर्ताओं की संख्या** के अनुसार ही होगा। यथा—

(१) मैं और राम कानपुर जावेंगे=अहं रामश्च कान्यकुब्जपुरं **गमिष्यावः**।

(२) रणधीर और हम लोग बाजार जा रहे हैं = रणधीरः वयं च आपणं **गच्छामः** ।

१०. यदि किसी वाक्य में एक कर्ता मध्यम पुरुष का हो और दूसरा अन्य पुरुष का हो और दोनों कर्ता 'च' शब्द द्वारा जुड़े हों तो उनकी सम्मिलित क्रिया **मध्यमपुरुष** के अनुसार होगी और क्रिया का वचन उस वाक्य के **कर्ताओं की संख्या** के अनुसार ही होगा । यथा—

(१) राम और तुम क्या देख रहे हो ? = रामः त्वं च किं **पश्यथः** ।

(२) तुम, हरि और राम यहाँ पर हीं रहो = त्वं हरिः रामश्च अत्रैव **तिष्ठत** ।

११. यदि किसी वाक्य में भिन्न-भिन्न पुरुषों के कर्ता 'च' शब्द से न मिलकर 'वा' शब्द से मिले हों तो उस वाक्य में क्रिया के पुरुष और वचन **अन्तिम कर्ता** के अनुसार होंगे । यथा—

(१) इस काम को वह करे या तुम लोग = सः यूयं वा एतत् कर्म **कुरुत** ।

(२) इस काम को तुम करो या वे लोग करें = त्वं ते वा एतत् कर्म **कुर्वन्तु** ।

(३) तुम या तुम्हारे भाई कचहरी जावें = त्वं ते भ्रातरो वा राजद्वारं **गच्छेयुः** ।

(४) वह, तुम या मैं इस काम को कर सकते हैं = सः त्वं अहं वा एतद् कर्म कर्तुं **शक्नोमि** ।

(५) मैं या तुम दोनों एक पत्र लिखें = अहं युवां वा पत्रमेकं **लिखेतम्** ।

(६) तुम वे, सब या हम दोनों पुस्तक पढ़ते हैं = त्वं ते आवां वा पुस्तकं **पठावः** ।

१२. लिंग भेद का क्रिया पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता अर्थात् कर्ता किसी भी लिंग का हो, किन्तु क्रिया के रूप में कोई परिवर्तन नहीं होगा । यथा—(अ) राम घर जाता है = रामः गृहं **गच्छति** ।

(ब) सीता घर जाती है = सीता गृहं **गच्छति** ।

(स) मेरा दोस्त घर जाता है = मे मित्रं गृहं **गच्छति** ।

उक्त तीनों वाक्यों में कर्ता के लिंग में भेद है। 'रामः' शब्द पुल्लिङ्ग है, 'सीता' शब्द स्त्रीलिङ्ग है और 'मित्रं' शब्द नपुंसक लिङ्ग का है। कर्ता भिन्न होने पर भी तीनों वाक्यों की क्रिया में कोई अन्तर नहीं है। भिन्न लिङ्ग वाले तीनों कर्ताओं के साथ "गच्छति" क्रिया ही लगाई गई है। इस प्रकार स्पष्ट है कि लिङ्ग का क्रिया पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

१३. संस्कृत में वाक्यान्तर्गत शब्दों के आगे पीछे लिखने के विषय में कोई नियम नहीं है। हिन्दी में पहले कर्ता, फिर कर्म और फिर उसके बाद क्रिया का प्रयोग होता है। यथा 'राम घर जाता है'। इसी प्रकार अंग्रेजी में पहले कर्ता, फिर क्रिया और तत्पश्चात् कर्म आदि का प्रयोग होता है। यथा **'राम गोज होम'**। किन्तु इस प्रकार का कोई नियम संस्कृत में नहीं है। आप किसी शब्द को आगे पीछे कहीं भी रख सकते हैं। किन्तु फिर भी वाक्य अशुद्ध न होगा कारण यह है कि संस्कृत में शब्दगत विभक्तियों के रूप निश्चित होते हैं अस्तु आगे या पीछे कहीं भी किसी शब्द को रखने से उसके अर्थ में अन्तर नहीं पड़ता। हिन्दी आदि भाषाओं में विभक्तियों के निश्चित रूप के न होने से ही "बरसेगा कम्बल भीगेगा पानी" आदि वाक्यों में हास्यास्पदता के दर्शन होते हैं। संस्कृत में ऐसी बात नहीं है। यथा—

(१) अहं गृहं गच्छामि। (२) गच्छाम्यहं गृहम्।
(३) गृहमहं गच्छामि। (४) गृहं गच्छाम्यहम्।

ये चारों ही वाक्य शुद्ध और समानार्थक हैं।

१४. विशेषण पद में विशेष्य के अनुसार ही लिंग, वचन और विभक्तियाँ होती हैं अर्थात् जिस लिंग में विशेष्य होगा, विशेषण भी उसी लिंग में होना चाहिये। जिस वचन में विशेष्य हो, उसके विशेषण को भी उसी वचन में होना चाहिये। इसी प्रकार विशेष्य जिस विभक्ति में हो, उसके विशेषण को भी उसी विभक्ति से युक्त होना चाहिये। यथा—

लिंग { ज्येष्ठो भ्राता = सबसे बड़ा भाई।
ज्येष्ठा भगिनी = सबसे बड़ी बहन।
ज्येष्ठं कलत्रम् = सबसे बड़ी स्त्री।

वचन { **हरितं** पत्रम् = हरा पत्ता ।
हरितानि पत्राणि = हरे पत्ते ।
हरिते फले = दो हरे फल ।

विभक्ति { **तस्मिन्** वृक्षे **एको** वानरो निवसति ।
तस्मात् वृक्षात् **इदं** फलं अपतत् ।
तस्मै बालकाय **तत्** क्रीडनकं देहि ।

विभक्ति { **धीमता** कृष्णेन **दुष्टः** कंसो हतः ।
वनं गत्वा स च **सुन्दरीम्** एकां युवतीं अपश्यत् ।
गृध्रकूट **नाम्नि** पर्वते **महान्** पिप्पलवृक्षः अस्ति ।

१५. कुछ संख्यावाची विशेषणों के लिङ्ग और वचन निश्चित होते हैं; उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता। विशेष्य किसी भी लिङ्ग और किसी भी वचन का हो, उस विशेषण शब्द विशेष का रूप वैसा ही बना रहेगा। यथा—

(१) शतं बालकाः = सौ लड़के ।

(२) शतं स्त्रियः = सौ औरतें ।

(३) शतं फलानि = सौ फल ।

(४) विंशतिः पुरुषाः = बीस आदमी ।

(५) अशीतिः कमलपुष्पाणि = अस्सी कमल के फूल ।

(६) त्रिंशत् नद्यः = तीस नदियाँ ।

(७) चतुश्चत्वारिंशत् मणयः = चवालीस मणियाँ ।.........आदि ।

१६. यदि कोई 'विशेषण शब्द' दो या दो से अधिक 'विशेष्य-शब्दों' की विशेषता बतलाये तो उस 'विशेषण' शब्द का वचन 'विशेष्य' शब्दों के सम्मिलित वचन के अनुसार होगा । यथा—

(१) राजा राज्ञी च **स्तुत्यचरितौ** स्तः ।

(२) दशरथो भीष्मो हरिश्चन्द्रश्च **दृढ़प्रतिज्ञाः** आसन् ।

१७. यदि कोई 'विशेषण-शब्द' दो या दो से अधिक 'विशेष्य-शब्दों' की विशेषता बतलाये तो इसका लिंग इस प्रकार निर्धारित किया जायगा :—

(१) यदि एक विशेष्य पुल्लिंग है और दूसरा स्त्रीलिंग, तो उक्त विशेषण शब्द पुल्लिंग वाले विशेष्य से ही सम्बन्ध स्थापित करेगा ।

(२) यदि एक विशेष्य पुल्लिंग है और दूसरा नपुंसक लिंग, तो वह विशेषण शब्द नपुंसक लिंग वाले विशेष्य से ही सम्बन्ध स्थापित करेगा।

(३) यदि एक विशेष्य स्त्रीलिंग है और दूसरा नपुंसक लिंग, तो वह विशेषण शब्द नपुंसक लिंग वाले विशेष्य से ही सम्बन्ध स्थापित करेगा। यथा—

(१) राजा राज्ञी च **स्तुत्यचरितौ** स्तः (यहाँ पर स्त्रीलिंगवाची 'स्तुत्य चरितौ' का प्रयोग अशुद्ध होगा।)

(२) धर्मः, सुखं च, **इमे** पोष्य-पोषकभावेन वर्तते (यहाँ पर 'इमे' नपुंसक लिंग का द्विवचनात्मक शब्द है। यह पुल्लिंग का बहुवचनात्मक शब्द नहीं है।)

(३) **अतिशोभने इमे** वनं वाटिका च स्तः (यहाँ पर 'अतिशोभने' और 'इमे' शब्द नपुंसकलिंग के हैं, स्त्रीलिंग के नहीं।)

एक अन्य उदाहरण—

धर्मः कामश्च दर्पश्च हर्षः क्रोधं सुखं वयः।
अर्थादेतानि सर्वाणि प्रवर्तन्ते न संशयः॥

यहाँ पर नपुंसकलिंग के बहुवचनात्मक 'एतानि' शब्द का प्रयोग दर्शनीय है :

१८. कभी-कभी बहुत से विशेष्य-शब्दों में से जिस लिंग के विशेष्यों की बहुलता होती है, 'विशेषण शब्द' भी उसी लिंग में प्रयुक्त होता है। यथा—

वृद्धौ च मातापितरौ साध्वी भार्या सुतः शिशुः।
अप्यकार्यशतं कृत्वा भर्तव्या **सर्वे** मनुरब्रवीत्॥

अर्थ—मनुजी का कहना है कि बूढ़े माता-पिता, भली स्त्री, पुत्र और किसी भी बच्चे का पालन करना ही चाहिये, भले ही उन्होंने सैकड़ों बुरे काम किये हों।

यहाँ पर पुल्लिंग शब्दों की बहुलता होने से 'भर्तव्याः' क्रिया-पद और 'सर्वे' विशेषण-पद 'पुल्लिंग' तथा बहुवचन में रक्खे गये हैं।

१९. कभी-कभी 'विशेषण-शब्द' अपने से समीपतम 'विशेष्य-शब्द' के लिंग और वचन से ही तादात्म्य स्थापित करता है। यथा—

उद्वेगः कलहः कण्डूः **सेव्यमाना च वर्धते।**

इस वाक्य में विशेषण-पद 'सेव्यमाना' और क्रिया-पद **'वर्धते'** का निर्धारण कण्डूः (खुजली) शब्द के आधार पर हुआ है, जो कि एक स्त्रीलिंग शब्द है।

२०. विभक्तियों के चिह्नों को कभी न भूलना चाहिये। इनसे सामान्य वाक्यों के अनुवाद में बड़ी सहायता मिलती है। वे चिह्न इस प्रकार हैं—

कर्ता—ने, अथवा, जहाँ कोई चिह्न न हो।

कर्म—को।

करण—ने, से, के द्वारा।

सम्प्रदान—लिये, के लिये, को।

अपादान—से (अलगावसूचक)।

सम्बन्ध—का, के, की।

अधिकरण—में, पै, पर।

सम्बोधन—हे, अरे, अरी।

२१. किसी वाक्य में **'उद्देश्य'** और **'विधेय'** ये दो अंश होते हैं। यथा—

रामः गृहं गच्छति।

कभी-कभी वाक्य के विधेय अंश में ऐसे संज्ञा-शब्द आ जाते हैं, जिनका 'कर्ता' से सीधा सम्बन्ध होता है। इसीलिये उनमें अनुरूपता भी मिलती है। यथा—

सीता रामस्य **भार्या** आसीत्।

यहाँ पर 'सीता' और 'भार्या' स्त्रीलिंग के एकवचन होने से परस्पर अनुरूप हैं।

किन्तु विधेयगत संज्ञा-शब्दों के लिये यह आवश्यक नहीं है कि उनके लिंग और वचन 'कर्ता' के अनुसार ही हों। यथा—

(१) **कैकेयी** । दशरथस्य **प्राणाधारः आसीत्**=कैकेयी दशरथ के प्राणों का आधार थी।

(२) **सीता** रामस्य **जीवितं** आसीत् = सीता रामचन्द्र जी का जीवन थीं।

नोट—प्रथम वाक्य में स्त्रीवाची 'कैकेयी' के लिये 'प्राणाधारः' पुल्लिंग शब्द प्रयुक्त हुआ है। इसी प्रकार द्वितीय वाक्य में भी स्त्रीवाची 'सीता' शब्द के लिये 'जीवितं' नपुंसक लिंग के शब्द का प्रयोग देखने योग्य है।

(३) **गुणाः पूजास्थानं** गुणिषु न तु रूपम् = गुणियों में गुण ही पूजा के स्थान होते हैं, रूप नहीं।

नोट—इस वाक्य में बहुवचनान्त 'गुणाः' के लिये एकवचनान्त 'पूजा स्थानं' का प्रयोग दर्शनीय है।

२२. जब "पात्र,'आस्पद, स्थान, पद, प्रमाण, भाजन"—ये शब्द विधेय के तौर पर प्रयुक्त होते हैं, तो ये सर्वदा एकवचन और नपुंसकलिंग में ही रक्खे जाते हैं, चाहे कर्ता किसी भी लिंग अथवा वचन का हो। यथा—

(१) अस्मिन् विषये तु **भवन्तः प्रमाणम्** = इस विषय में तो आप ही प्रधानपुरुष हैं।

(२) **रामः** यशसां **भाजनम्** = राम यश के पात्र हैं।

(३) **पुरीषः** तु सर्वेषां **घृणास्पदं** भवति = मल तो सभी की घृणा की चीज है।

(४) **गुणाः पूजास्थानं** गुणिषु=गुणियों में गुण ही तो पूजा की वस्तु है।

(५) अहं सर्वेषां **निन्दापात्रम्** अभूवम्=मैं सब की निन्दा का पात्र बना।

(६) **भवान्** एव **आश्रयपदम्** अस्मद् विधानाम्=हमारे जैसों के तो आप ही आश्रय-स्थान हैं।

(७) **सुपुत्रः** पितुः **गर्वास्पदं** भवति = सपूत पिता के लिये गर्व की वस्तु है।

(८) स तु तस्याः अभिमानभूमिः = वही है उसके अभिमान का आधारभूत कारण।

(९) सम्पदः परमापदां पदम् = सम्पत्ति ही बड़ी-बड़ी आपदाओं का कारण है।

२३. किसी शब्द के पूर्व में 'आ' का प्रयोग करने पर वह शब्द स्वल्पार्थ का द्योतक होता है। यथा—

(१) आ + उष्णं जलम् = ओष्णं जलं = कुछ-कुछ गरम पानी।

(२) आ + समाप्ति गतो मे ज्वरः = आसमाप्ति गतो मे ज्वरः = मेरा बुखार करीब-करीब खतम हो गया है।

२४. वर्तमानकालिक एकवचनान्त क्रिया के आगे 'स्म' जोड़ देने से भूतकालवाची क्रिया बन जाती है। यथा—

(१) { रामः गृहं गच्छति = राम घर जाता है।
रामः गृहं गच्छति स्म = राम घर जाता था।

(२) { वने सिंहः प्रतिवसति = वन में शेर रहता है।
वने सिंहः प्रतिवसति स्म = वन में शेर रहता था।

२५. किल, खलु, यावत्, नु, च, चेत्—ये शब्द वाक्य के पूर्व में कभी नहीं आते।

२६. 'ष' और 'र' के बाद 'न' आवे तो उसका 'ण' हो जाता है, किन्तु यदि श, ष, ठ, ल, ण बीच में आ जाय तो नहीं होता। यथा—

(१) 'नर' शब्द से षष्ठी—बहुवचन में 'नराणां' बनता है।

(२) 'मनुष्य' शब्द से षष्ठी—बहुवचन में 'मनुष्याणां' बनता है।

(३) 'हरि' शब्द से तृतीया—एकवचन में 'हरिणा' बनता है।

(४) 'पुष्प' शब्द से तृतीया—एकवचन में 'पुष्पेण' बनता है।

किन्तु—(१) 'कृश्' धातु में 'ल्युट्' प्रत्यय लगाने पर 'कर्शनम्' बनता है।
(२) 'दृश्' धातु में 'ल्युट्' प्रत्यय लगाने पर 'दर्शनम्' बनता है।

२७. जहाँ सदृशवाची 'वत्' लगता है, वहाँ कोई विभक्ति नहीं लगती। यथा—

मनुष्यवत्	=	मनुष्य की तरह
पशुवत्	=	जानवर की तरह
तृणवत्	=	तिनके के समान
लोष्ठवत्	=	ढेले के समान

किन्तु 'इव' लगाने पर षष्ठी विभक्ति लगानी पड़ती है। यथा—
नरस्य इव = मनुष्य के समान।

२८. आवश्यकता पड़ने पर प्रायः 'आ', 'ई', 'ऊ' और 'ति' जोड़कर पुल्लिग से स्त्रीलिंग शब्द बनाये जा सकते हैं। यथा—

(१) अजः (= बकरा), अजा (= बकरी)
(२) पुत्रः (= लड़का), पुत्री (= लड़की)
(३) रम्भोरुः=(केले के तने के समान चिकनी जाँघों वाला), रम्भोरुः = (केले के तने के समान चिकनी जाँघों वाली)।
(४) युवन् = (जवान लड़का), युवति = (जवान लड़की)।

उदाहरण के लिये 'बड़ी बहन' के लिये 'अत्तिका' शब्द हमें नहीं मालूम है, किन्तु 'अग्रजः'=(बड़ा भाई) शब्द का हमें ज्ञान है। बस 'अग्रज' में 'आ' लगाकर तदर्थक 'अग्रजा' शब्द बनाकर काम चला लेना चाहिये। इस प्रकार बने कुछ शब्द ये हैं :—

पुंल्लिग शब्द		स्त्रीलिङ्ग शब्द	
चटकः	=	चटका	(= चिड़िया)
बालः	=	बाला	(= लड़की)
वत्सः	=	वत्सा	(= बेटी, बछेड़ी)
अजः	=	अजा	(= बकरी)
शूद्रः	=	शूद्रा	(= नीच कुल की स्त्री)
ज्येष्ठः	=	ज्येष्ठा	(= सबसे बड़ी)
मध्यमः	=	मध्यमा	(= मँझली; बीच की)
कनिष्ठः	=	कनिष्ठा	(= सबसे छोटी)
वृद्धः	=	वृद्धा	(= बुढ़िया)

सुतः	=	सुता	(= लड़की)
अज्ञातः	=	अज्ञाता	(= न जानी हुई)
सुनयनः	=	सुनयना	(= सुन्दर नेत्रों वाली) आदि।

इसी प्रकार यदि 'घोड़ी' के लिये 'वड़वा' शब्द नहीं मालूम है तो झट 'हयः=(घोड़ा)' शब्द में 'ई' लगाकर तदर्थक 'हयी' शब्द बना लेना चाहिये। इस प्रकार से बने कुछ शब्द ये हैं—

पुल्लिङ्ग शब्द		स्त्रीलिङ्ग शब्द	
तरुणः	=	तरुणी	(= जवान लड़की)
नदः	=	नदी	(= जल का सुदीर्घ प्रवाह)
किशोरः	=	किशोरी	(= छोटी लड़की)
छागः	=	छागी	(= बकरी)
पुत्रः	=	पुत्री	(= लड़की)
यादृशः	=	यादृशी	(= जैसी)
तादृशः	=	तादृशी	(= वैसी)
नर्तकः	=	नर्तकी	(= नाचने वाली)
रजकः	=	रजकी	(= धोबिन)
गौरः	=	गौरी	(= गौरी, पार्वती)
हरिणः	=	हरिणी	(= मादा हिरन)
पितामहः	=	पितामही	(= दादी, आजी)
सुन्दरः	=	सुन्दरी	(= रूपवती)
गोपः	=	गोपी	(= ग्वालिन)
कामुकः	=	कामुकी	(=काम वासना के वश में स्त्री) आदि।

२९. यह भी देखने में आया है कि विद्यार्थी कभी-कभी अव्यय शब्दों के भी रूप चलाने लगते हैं। यह अशुद्ध है। कुछ विद्यार्थी ऐसे भी मिले हैं जिन्हें कि शायद किसी अव्यय शब्द विशेष के आगे 'विसर्ग' लगा कर ही सन्तोष मिलता है। यह भी अशुद्ध है। अव्यय शब्दों के रूप कदापि नहीं चलते। तीनों लिंगों, तीनों वचनों और सातों विभक्तियों में उनका एक ही

निश्चित रूप होता है। इन अव्यय शब्दों को इस पुस्तक के सम्बन्धित अध्याय में देखकर हृदयंगम कर लेना चाहिये।

नोटः—उक्त अव्यय शब्दों के अतिरिक्त संस्कृत में कुछ "शब्द" ऐसे भी हैं जिनका प्रयोग अव्यय शब्दों की भाँति ही होता है। यथा—

अन्यत् = दूसरा प्रमाण, अस्ति = आस्तिकवाद, नास्ति = नास्तिकवाद, ओम् = ब्रह्मबोधक पवित्र शब्द, अस्तम् = अस्त होना, नमः = नमस्कारसूचक, भूः = पृथ्वी, भुवः = आकाश, स्वः = स्वर्ग, स्वस्ति=प्रसन्नता, शम्=प्रसन्नता, संवत् = साल, वदि = अँधेरा पाख, सुदि = उजेला पाख, स्वाहा = देवताओं के प्रति हवन, स्वधा = पितरों के प्रति हवन, चाटु = चापलूसी से पूर्ण।

३०. यदि कोई धातु उभयपदी है, तो उसका प्रयोग परस्मैपद और आत्मनेपद दोनों में ही हो सकता है। किन्तु यदि किसी क्रिया विशेष का फल किसी **दूसरे के लिये** हो तो परस्मैपद का प्रयोग करना चाहिये और यदि उस क्रिया का फल **स्वयं के लिये** ही हो तो आत्मनेपद का प्रयोग करना चाहिये। यथा—

(१) रसोइया चावल पकाता है (दूसरों के लिये) = सूपकारः ओदनं **पचति**।

(२) देवदत्त चावल पकाता है (अपने ही लिये) = देवदत्तः ओदनं **पचते**।

(३) पुरोहित यज्ञ करता है (यजमान के लिये) = पुरोहितः **यजति**।

(४) राजा यज्ञ करता है (अपने लिये) = राजा **यजते**।

३१. यदि समासों का थोड़ा सा ज्ञान हो जाय तो अनुवाद करते समय बड़ी सरलता मालूम पड़ने लगती है। समास द्वारा शब्दों को जोड़ने से बहुत से शब्दों में विभक्तियों के चिह्न लगाने की आवश्यकता भी नहीं पड़ती। यथा—

"सभी राजाओं के सामने अपमानित की गई द्रौपदी को देखकर भीम सभा के खम्भे को ही उखाड़ने लगता है" इसका अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता है—

"सर्वेषां राज्ञां समक्षे अपमानितां द्रौपदीं दृष्ट्वा भीमः सभायाः स्तम्भमेव तुलयति।"

किन्तु समास का सहारा लेकर हम इस वाक्य का अनुवाद इस प्रकार करते हैं—

"सर्वराजसमक्षमपमानितां द्रौपदीं दृष्ट्वा भीमः **सभास्तम्भं** तुलयति।"

इसी प्रकार "रघुवंश के रचयिता कालिदास कवियों के कुल के गुरु ही थे" का अनुवाद "रघुवंशस्य प्रणेता कालिदासः कवीनां कुलस्य गुरुः एव आसीत्" न करके **"रघुवंशप्रणेता कालिदासः कविकुलगुरुः** एव आसीत्" ही करना अधिक सरल प्रतीत होता है।

इसी प्रकार "एकदा रात्रौ **निजगृहे** सुखं शयानः **स्त्रीक्रन्दनं** शुश्राव। पश्चात् **रोदनरवानुसारेण** गच्छन् **सर्वावयवसुन्दरीं** स्त्रियमेकां रुदतीं ददर्श।" में सामासिक शब्दों का प्रयोग दर्शनीय है—

(१) निजगृहे = निजे गृहे।
(२) स्त्रीक्रन्दनम् = स्त्रियाः क्रन्दनम्।
(३) रोदनरवानुसारेण = रोदनस्य रवस्य अनुसारेण।
(४) सर्वावयवसुन्दरीम् = सर्वैः अवयवैः सुन्दरीम्।

इसी सत्य के पोषक निम्नस्थ प्रयोग भी दर्शनीय हैं—

(१) सभायाः पतिः = सभापतिः
(२) खड्गेन हतः = खड्गहतः
(३) राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः
(४) चौराद् भयम् = चौरभयम्
(५) न सत्यम् = असत्यम्
(६) कुत्सितः पुरुषः = कुपुरुषः
(७) दीर्घं नयनम् = दीर्घनयनम्
(८) रामश्च कृष्णश्च = रामकृष्णौ
(९) गावः च अश्वा च = गवाश्वम्
(१०) माता च पिता च = मातापितरौ अथवा पितरौ
(११) पुत्रेण सह = सपुत्रः
(१२) मांस कामयती स्त्री = मांसकामा

(१३) कूपे मण्डूकः इव = कूपमण्डूकः
(१४) विशालौ बाहू यस्य = विशालबाहुः
(१५) दीर्घाः केशाः यस्याः = दीर्घकेशी
(१६) पयसां धरः = पयोधरः
(१७) गंगा च यमुना च = गंगायमुने
(१८) अहनि च दिवा च = अहर्दिवम्
(१९) व्याघ्र इव पुरुषः = पुरुषव्याघ्रः
(२०) ब्राह्मणानाम् कुलम् = ब्राह्मणकुलम्

३२. तद्धित प्रत्ययों का सामान्य ज्ञान भी अनुवाद को कभी-कभी कुछ अंशों में सरल बना देता है। उदाहरण के लिये—

(१) वसुदेवस्य पुत्रः = वासुदेवः
पर्वतस्य पुत्री = पार्वती
द्रोणस्य पुत्रः = द्रौणिः
दशरथस्य पुत्रः = दाशरथिः
(२) शर्करानिर्मितम् = शार्करम्
ऊर्णानिर्मितम् = और्णम् (ऊनी)
(३) कपोतानां समूहः = कापोतम्
बकानां समूहः = बाकम्
मयूराणां समूहः = मायूरम्
काकानां समूहः = काकम्
राज्ञाम् समूहः = राजकम्
मनुष्याणां समूहः = मानुष्यकम्
(४) अश्वेन यः चरति = अश्विकः
रथेन यः चरति = रथिकः
पथा यः चरति = पथिकः
(५) मृदंगवादकः = मार्दंगिकः
वीणावादकः = वैणिकः
झर्झरीवादकः = झार्झरिकः

(६) पृथुभावः	= प्रथिमा	(= महानता)
मृदुभावः	= म्रदिमा	(= कोमलता)
तनुभावः	= तनिमा	(= पतलापन)
पटुभावः	= पटिमा	(= चालाकी)
महत्	= महिमा	(= बड़प्पन)
लघु	= लघिमा	(= छोटापन)
गुरु	= गरिमा	(= भारीपन, बड़ाई)
बालभावः	= बालिमा	(= बचपना)
दृढभावः	= द्रढिमा	(= मजबूती)
कृशभावः	= क्रशिमा	(= दुबलापन, कमजोरी)
उष्णभावः	= उष्णिमा	(= गर्माहट)
जडभावः	= जडिमा	(= मूर्खता)
मधुरभावः	= मधुरिमा	(= मिठास)
शुक्लभावः	= शुक्लिमा	(= सफेदी)
(७) भगिन्याः पुत्रः	= भागिनेयः	(= भानजा)
विनतायाः पुत्रः	= वैनतेयः	(= गरुड़)
कुलटायाः पुत्रः	= कौलटेयः	
दासस्य पुत्रः	= दासेयः	
मण्डूकस्य पुत्रः	= माण्डूकेयः	
अत्रेः पुत्रः	= आत्रेयः	
(८) गङ्गायाः इदम्	= गाङ्गेयम्	
गङ्गायाः अयं	= गाङ्गेयः	
नद्याः इदम्	= नादेयम्	
वाराणस्याः इदम्	= वाराणसेयम्	
वाराणस्याः अयम्	= वाराणसेयः	
(९) सायं भवः	= सायंतनः	(= शाम का)
अद्य भवः	= अद्यतनः	(= आज का)
ह्यः भवः	= ह्यस्तनः	(= कल का)
दिवा भवः	= दिवातनः	(= दिन का)

३३. संस्कृत में लिङ्ग निर्धारण एक समस्या है। एतद्विषयक कोई भी निश्चित नियम नहीं बनाया जा सकता। इसका ज्ञान तो सबसे अच्छी तरह शब्दकोष से ही हो सकता है अथवा धीरे-धीरे अभ्यास करते-करते हो सकता है।

अंग्रेजी में सजीव पदार्थों के लिये पुल्लिंग तथा निर्जीव पदार्थों के लिये नपुंसकलिंग का प्रयोग किया जाता है, किन्तु संस्कृत में ऐसा नहीं है। इसमें तो निर्जीव वस्तुओं के लिये भी पुल्लिंग और स्त्रीलिंग का प्रयोग होता है। यथा—

समिध् (= हवन सामग्री), अप् (= पानी) और वाच् (= वाणी) शब्द नपुंसक लिंग के न होकर स्त्रीलिंग के हैं। इसी प्रकार क्षुरः (छुरा), वृक्ष (= पेड़) आदि शब्द नपुंसकलिंग में न होकर पुल्लिंग में होते हैं।

संस्कृत में एक ही अर्थ वाले कुछ शब्द विभिन्न लिंगों में पाये जाते हैं। यथा—पत्नीवाची, 'भार्या' शब्द स्त्रीलिंग में, 'दार' शब्द पुल्लिंग में और 'कलत्र' शब्द नपुंसक लिंग में प्रयुक्त होते हैं।

संस्कृत में कुछ शब्द ऐसे भी हैं जिनके कई अर्थ होते हैं। एक ही शब्द एक अर्थ में तो किसी लिंग में और दूसरे अर्थ में किसी दूसरे लिंग में पाया जाता है। यथा—

'मित्र' शब्द 'सूर्य' के अर्थ में 'पुल्लिंग' किन्तु 'दोस्त' के अर्थ में 'नपुंसक लिंग' में प्रयुक्त होता है।

नोटः—इतना सब होते हुये भी निम्नस्थ सूचनाओं के द्वारा विद्यार्थियों की लिंगनिर्धारण सम्बन्धी समस्या को अंशतः दूर करने की चेष्टा कर रहा हूं।

३४. **पुल्लिंग** शब्दों को जानने के लिये अधोलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिये—

[क] धातु-जनित वे शब्द जिनके अन्त में (१) 'अ', (२) 'न' और (३) 'इ' आवें। यथा—

(१) करः (= हाथ), गरः (= पेय पदार्थ, विष); चरः (=जासूस),

त्यागः (= छोड़ना), पाकः (= पकाकर सिद्ध किया हुआ पदार्थ), मानः (= गर्व), भावः (= भाव) आदि ।

(२) यज्ञः (= यज्ञ), विघ्नः (= अड़चन) आदि शब्द ।

(३) आधिः (= मानसिक कष्ट), व्याधिः (= शारीरिक कष्ट), निधिः (= खजाना), वारिधिः (= समुद्र) समाधिः आदि ।

[ख] वे शब्द जिनके अन्त में 'उ' आवे । यथा—

प्रभुः (= स्वामी), भानुः (= सूर्य), गुरुः (= पूज्य जन, आचार्य), सेतुः (= बाँध), हेतुः (= कारण), इक्षुः (= ईख) आदि ।

नोट—उकारान्त कुछ शब्द नपुंसकलिंग में भी होते हैं । उन्हें आगे चल कर गिनावेंगे ।

[ग] वे शब्द जिनके अन्त में क्, ट्, ण्, थ्, न् , प् , भ् , म् , य् , र्, ष् अथवा स् हो । यथा—

(१) स्तवकः (= गुच्छा), कारकः (= करने वाला)
(२) घटः (= घड़ा), पटः (= कपड़ा)
(३) पाषाणः (= पत्थर), गुणः (= अच्छाई)
(४) शोथः (= सूजन), रथः (= रथ)
(५) फेनः (= फेना), श्येनः (= बाज)
(६) दीपः (= दीपक), नीपः (= कदम्ब का पेड़)
(७) कुम्भः (= घड़ा), वृषभः (= साँड़)
(८) सोमः (= चन्द्रमा । सोमरस) धूमः (= धुआँ)
(९) समयः (= समय), चयः (= ढेर)
(१०) क्षुरः (= छुरा), अंकुरः (= कोपल)
(११) वृषः (= बैल), दोषः (= बुराई)
(१२) वायसः (= कौआ), पावसः (= वर्षा)

[घ] वे शब्द जिनके अन्त में 'अ' हो और उसके पूर्व यदि 'आ' हो तो वे शब्द प्रायः पुल्लिग में होते हैं । यथा—

प्रकाशः, मानः, अपमानः, भावः, अपराधः, व्यवहारः, व्यायामः, अपाङ्गः (= नेत्रों के कोने) आदि ।

[ङ] वे शब्द जिनके अन्त में 'इक' हो—नाविकः (=मल्लाह); यामिकः (=सिपाही), वैणिकः (=वीणावादक), तूलिकः (=चित्रकार), तैलिकः (=तैल)—आदि।

३५. **"स्त्रीलिंग"** शब्दों को जानने के लिये निम्नस्थ बातों पर ध्यान रखना चाहिये :—

[क] वे शब्द जिनके अन्त में 'आ', 'ई' और 'ऊ' होवे। यथा—

(१) रमा, लता, माला, भार्या, शिला, तृष्णा, लज्जा, विद्या, निद्रा, कन्या, शाला, आज्ञा, प्रमदा, रसना, क्रीड़ा आदि।

(२) नदी, जननी, मही, दासी, विभावरी, देवी, नारी, पत्नी, कुमारी, भगिनी, पुत्री, सखी, रजनी, नलिनी आदि।

(३) वधूः, चमूः (=सेना), भूः (=पृथ्वी), भ्रूः (=भौंह), यवागूः (=लपसी) आदि।

[ख] वे शब्द जिनके अन्त में 'ति', 'नि', 'मि' और 'अनि' हो। यथा—

(१) गतिः (= चाल, हालत), मतिः (=बुद्धि), श्रुतिः (=वेद), कीर्तिः, प्रकृतिः, विभक्तिः, प्रीतिः, विभूतिः, रीतिः आदि।

(२) अवनिः (= भूमि), खनिः (= खान) आदि।

(३) भूमि, नेमिः आदि।

(४) ग्लानिः, हानिः आदि।

[ग] २० से लेकर ९९ तक के सभी शब्द। यथा—

विंशतिः एकविंशतिः, द्वाविंशतिः, त्रयोविंशतिः, आदि।

३६. **"नपुंसकलिंग"** शब्दों को जानने के लिये नीचे लिखी बातों पर ध्यान रखना चाहिये :—

[क] 'अन' और 'त'—इन कृदन्त चिह्नों से युक्त शब्द नपुंसकलिंग में होते हैं। यथा—

(१) हसनम्, गमनम्, भोजनम्, लेखनम्, पठनम्, आगमनम्, शयनम् आदि।

(२) गीतम् (=गीत), स्मितम् (=मुस्कराहट), हसितम् (=हँसी) आदि।

[ख] जिन शब्दों में तद्धित प्रत्यय 'त्व' लगा हो, वे शब्द नपुंसकलिंग में होंगे। यथा—शुक्लत्वं, मलिनत्वं, कृष्णत्वं आदि।

[ग] वे शब्द जिनके अन्त में 'अस्', 'इस्', 'उस्' और 'मन्' लगा हो। यथा—

(१) यशस्, मषस्, उषस्, पयस्, वासस् (= कपड़े), वयस् (= आयु), चेतस् (= मन), तमस् (= अन्धकार), रजस् (= धूल) आदि।

(२) सर्पिस् (= घी), ज्योतिष् (= ज्योतिष विद्या) आदि।

(३) धनुष्, चक्षुष् (= आँख), अचक्षुस् (= अन्धा), दीर्घायुस् (= लम्बी आयु वाला) आदि।

(४) चर्मन् (= चमड़ा), वर्मन् (कवच), कर्मन् (= काम), नामन् (= नाम), शर्मन् (= शर्म) आदि।

[घ] वे शब्द जिनके अन्त में 'त्र' या 'ल' आवे। यथा—

(१) पत्रम् (= चिट्ठी, पत्ता), छत्रम् (= छाता), नेत्रम् (= आँख), वस्त्रम् (= कपड़े), क्षेत्रम् (= खेत, मैदान), मित्रम् (= दोस्त) आदि।

(२) फलम्, जलम्, कुलम्, कूलम् (= किनारा), स्थलम्, कमलम्, बलम् (= ताकत, सेना) आदि।

[ङ] जितने भी फलबोधक शब्द हैं, वे सभी नपुंसकलिंग में होते हैं। यथा—

आम्रम्, आमलकम्, दाडिमम् आदि।

[च] लक्ष (= लाख) और कोटि (= करोड़) शब्दों को छोड़कर शेष सभी १०० और उसके ऊपर के शब्द नपुंसकलिंग में होते हैं। यथा—

शतम् (= सौ), सहस्रम् (= हजार), अयुतम्, अर्बुदम् आदि।

३७. (१) संस्कृत में कुछ शब्द ऐसे भी हैं जो कि पुल्लिंग भी हैं और स्त्रीलिंग भी। यथा—

गो, मणि, यष्टि (= लकड़ी), मुष्टि (= मुट्ठी), मसि (= स्याही), मृत्यु, सिन्धु, कर्कन्धु (= बेर), रेणु, रज्जु, नाभि, बाहु, अशनि, अरणि, श्रोणि, योनि, ऊर्मि आदि।

(२) संस्कृत में कुछ शब्द ऐसे भी हैं जो कि पुंलिंग भी हैं और नपुंसकलिंग भी। यथा—

घृत (= घी), भूत, ऐरावत, लोहित (= खून), शृंग, अर्घ, निदाघ

(= गर्मी), उद्यम, कुंज, कुथ (= झूल), कूर्च (= मोरपंख, दाढ़ी), कवच, दर्प, पुच्छ, कबन्ध, औषध, आयुध, दण्ड, मण्ड (= चावल का माँड); खण्ड, शव, आकाश, कुश, अंकुश, गृह, मेह, बर्ह (= मोरपंख), देह, पटह (= नगाड़ा), दैव, ककुद, मधु, सानु (=चोटी), कमण्डलु, कण्टक, मोदक (= लड्डू), चषक (= प्याला), मस्तक, कपट, कपाट, कीट, रण, तोरण, स्वर्ण, व्रण (= घाव), चरण, विषाण, तृण, तीर्थ, प्रोथ (= जानवरों का थूथुन), यूथ (= झुण्ड), गूथ (= मल), मान, यान (= सवारी), पुलिन (= नदी का किनारा), उद्यान, शयन, आसन, स्थान, चन्दन, भवन, वसन, वितान (= तम्बू), विमान, शूर्प (= सूप), द्वीप, विटप (= पेड़), उडुप (= डोंगी, छोटी नाव), जृम्भ (= जँभाई), संग्राम, कुसुम, आश्रम, होम, गोमय (= गोबर), मलय, किसलय, चक्र, वज्र, क्षीर, उशीर (= खस), शिशिर, विष, वर्ष, उपवास, कार्पास, कंस (= कटोरा), अरण्य, मूल, मूसल (= मूसर), कुण्डल, विडाल, शूल, पात्र आदि।

३८. (१) संस्कृत में कुछ शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग सदा ही बहुवचन में होता है। यथा—

दाराः (= पत्नी), अक्षताः (= विना कुटे चावल), लाजाः (= भुने हुये चावल। खीलें), असवः (= प्राणपोषक वायु), आपः (= जल), सुमनसः (=फूल), समाः (=वर्ष), सिकताः (=बालू), वर्षाः (=बरसात), अप्सरसः (=अप्सरा), प्राणाः (= प्राण)। इनके अतिरिक्त तीन और उसके बाद की संख्यायें सदा बहुवचनान्त ही रहती हैं। 'एक' शब्द' 'एक' (= १) के अर्थ में एकवचनान्त और 'कई' के अर्थ में बहुवचनान्त हो जाता है। यथा—'एके वदन्ति'।

(२) संस्कृत में कुछ शब्द ऐसे भी हैं जो सदा द्विवचनान्त ही प्रयुक्त होते हैं। यथा—

दम्पति (दम्पती) = पत्नी और पति।

अश्विन् (अश्विनौ) = अश्विनीकुमारों का जोड़ा।

मातृ, पितृ (पितरौ) = माता और पिता।

द्वि (द्वौ, द्वे) = दो।

३१. **'ऐसा करते हुये'** के अर्थ में 'शतृ' और 'शानच्' नाम के कृदन्त प्रत्ययों का प्रयोग होता है। यथा—

(१) अम्बरतलाद् **अवतरन्तं** नारदम् अपश्यत् हरिः=भगवान ने आकाश से उतरते हुये नारद को देखा।

(२) वने **गच्छन्** रामः सिंहमेकं अपश्यत्=जंगल **जाते हुये** राम ने एक शेर को देखा।

(३) **याचमानाय** भिक्षुकाय भोजनं देहि=**माँगते हुये** भिखारी को खाना दे दो।

(४) सू सू शब्दं **कुर्वती** गौः मृता=सू सू **करती हुई** गाय मर गई।

(५) **एधमाना** निदाघ-ऊष्मा भृशं पीडयति जनान्=ग्रीष्म काल की **बढ़ती हुई** गर्माहट लोगों को बहुत परेशान कर देती है।

(६) **म्रियमाणस्य** नरस्य **गलन्तः** अश्रुविन्दवः=**मरते हुये** मनुष्य के **गिरते हुये** आँसू।

ऊपर के वाक्यों में हमने देखा कि किसी धातु में 'शतृ' का प्रयोग हुआ है और किसी में 'शानच्' का। अस्तु, यह जान लो कि किस धातु में 'शतृ' और किस में 'शानच्' लगाना चाहिये।

[क] परस्मैपद की धातुओं में 'शतृ' का प्रयोग होता है। यथा—

भू	भवत्	= होते हुये
गम्	गच्छत्	= जाते हुये
अद्	अदत्	= खाते हुये
कृ	कुर्वत्	= करते हुये
चुर्	चोरयत्	= चोरी करते हुये
बुध्	बोधयत्	= जगाते हुये
आ + गम्	आगच्छत्	= आते हुये

नोटः—इन शत्रन्त शब्दों के रूप पुल्लिंग में 'भगवत्' के समान; स्त्रीलिंग में 'नदी' के समान और नपुंसकलिंग में 'जगत्' के समान चलेंगे। एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जावेगी। देखिये :—

'भवत्=होते हुये' के रूप पुल्लिंग में—भवान्, भवन्तौ, भवन्तः आदि।

'भवत् = होते हुये' के रूप स्त्रीलिंग में—भवती, भवत्यौ, भवत्यः आदि।
'भवत् = होते हुये' के रूप नपुंसकलिंग में—भवत्, भवती, भवन्ती आदि।

[ख] आत्मनेपद की धातुओं में 'शानच्' लगाया जाता है। यथा—

एध्	एधमान	= बढ़ते हुये
वन्द्	वन्दमान	= वन्दना करते हुये
शी	शयान	= सोते हुये
धा	दधान	= धारण करते हुये
दिव्	दीव्यमान	= खेलते हुये
कृ	कुर्वाण	= करते हुये
क्री	क्रीणान	= खरीदते हुये
चुर्	चोरयमाण	= चुराते हुये

नोट—इन शानजन्त शब्दों के रूप पुल्लिंग में 'बालक' स्त्रीलिंग में 'लता' और नपुंसकलिंग में 'फलम्' के समान चलेंगे। एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जावेगी। देखिये :—

'एधमान=बढ़ते हुये' के रूप पुल्लिंग में—एधमानः, एधमानौ, एधमानाः आदि।

'एधमान=बढ़ते हुये' के रूप स्त्रीलिंग में—एधमाना, एधमाने, एधमानाः आदि।

'एधमान = बढ़ते हुये' के रूप नपुंसकलिंग में—एधममानम्, एधमाने, एधमानानि आदि।

[ग] उभयपद की धातुओं में शतृ और शानच् के रूप अलग-अलग होते हैं। यथा :—

दिव् दीव्यत् (श०), दीव्यमानः (शा०) = खेलते हुये।
दुद् तुदत् (श०), तुदमान (शा०) = कष्ट देते हुये।

४०. भूतकाल के अर्थ में 'क्त' और 'क्तवतु' नामक कृदन्त प्रत्ययों का प्रयोग भी किया जाता है। यथा—

(१) 'कुम्हार ने घड़ा बनाया' इस वाक्य का सामान्यरूप से भूतकाल में

अनुवाद होगा 'कुम्भकार घटं अकरोत्'। इसी वाक्य को 'क्त' के सहारे बनाने पर अनुवाद इस प्रकार होगा 'कुम्भकारेण घटः कृतः।' यही वाक्य 'क्तवतु' के सहारे इस प्रकार का होगा 'कुम्भकारः घटं कृतवान्।'

(२) 'वह घर गई' = भूतकाल में 'सा गृहं अगच्छत्।' 'क्त' के आधार पर 'सा गृहं गता।' 'क्तवतु' के आधार पर 'सा गृहं गतवती।'

नोटः—'क्त' प्रत्यय में क्रिया के बाद प्रायः **'त'** और 'क्तवतु' में क्रिया के बाद प्रायः **'तवान्'** लगता है। इस प्रकार से बने हुये शब्दों के रूप लिंग, वचन और विभक्ति के अनुसार चला लेते हैं। यथा—

(१) राम वन गये='रामः वनं **गतः**।' अथवा 'रामः वनं **गतवान्**।'

(२) सीता वन को गई='सीता वनं **गता**।' अथवा 'सीता वनं **गतवती**।'

(३) दही गिर पड़ी = 'दधि **पतितम्**।'

(४) वन में गये हुये राम ने रावण को मार डाला = 'वनं **गतेन** रामेण रावणो **हतः**।' अथवा 'वनं **गतो** रामः रावणं **हतवान्**।'

(५) उसके चले जाने पर सीता ने रोना शुरू किया='तस्मिन् **गते** सीता रोदनं प्रारभत्।' अथवा 'तस्मिन् **गते** सीतया रोदनं **प्रारब्धम्**।' अथवा 'तस्मिन् **गते** सीता रोदनं **प्रारब्धवती**।'

कुछ क्त प्रत्ययान्त शब्द

नी	नीत	= ले जाया गया
कृ	कृत	= किया गया
त्यज्	त्यक्त	= छोड़ा गया
स्वप्	सुप्त	= सोया हुआ
लभ्	लब्ध	= पाया हुआ, पाया गया
वच्	उक्त	= कहा गया
नश्	नष्ट	= नष्ट किया गया
सिच्	सिक्त	= सींचा गया
प्रच्छ्	पृष्ट	= पूछा गया
दह्	दग्ध	= जलाया गया

लिह्	लीढ	= चाटा गया
शी	शयित	= सोया हुआ
पत्	पतित	= गिरा हुआ
कथ्	कथित	= कहा गया
कृ	कीर्ण	= बिखराया हुआ
हन्	हत	= मारा गया
गम्	गत	= गया हुआ
खन्	खात	= खोदा गया
जन्	जात	= पैदा हुआ
दा	दत्त	= दिया गया आदि ।

कुछ क्तवतु प्रत्ययान्त शब्द

भू	भूतवत्	हस्	हसितवत्
पठ्	पठितवत्	वद्	उदितवत्
पच्	पक्ववत्	गम्	गतवत्
पा	पीतवत्	श्रु	श्रुतवत्
लभ्	लब्धवत्	सह्	सोढवत् सहितवत्
याच्	याचितवत्	नी	नीतवत्
रुद्	रुदितवत्	स्वप्	सुप्तवत्
हृत्	हृतवत्	शी	शयितवत्
भी	भीतवत्	दा	दत्तवत्
नश्	नष्टवत्	युध्	युद्धवत्
आप्	आप्नुवत् आदि ।		

नोटः—ऊपर दिये गये क्त और क्तवतु प्रत्ययान्त शब्दों को भी पूर्वोक्त विधि से पुंल्लिग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग बनाकर उनके रूप 'वचन' और 'विभक्तियों' के अनुसार चलेंगे ।

४१. एक काम को करके जब कोई दूसरा काम किया जाय तो पहले काम को सूचित करने वाली क्रिया में 'क्त्वा' प्रत्यय लगता है । इस प्रत्यय में

क्रिया के बाद प्रायः 'क्त्वा' लग जाता है। यथा—

(१) शत्रुओं को जीत कर राजा लौट रहा है = शत्रून् **जित्वा** निवर्तते राजा।

(२) पानी पीकर इधर आओ = पानीयं **पीत्वा** अत्रागच्छ।

कुछ क्त्वा प्रत्ययान्त शब्द

भक्ष्	—	भक्षयित्वा	=	खाकर
कथ्	—	कथयित्वा	=	कहकर
चुर्	—	चोरयित्वा	=	चुराकर
मुष्	—	मुषित्वा, मोषित्वा	=	चुराकर
ज्ञा	—	ज्ञात्वा	=	जानकर
ग्रह्	—	गृहीत्वा	=	लेकर
क्री	—	क्रीत्वा	=	खरीद कर
भुज्	—	भुक्त्वा	=	खाकर
मुच्	—	मुक्त्वा	=	छोड़कर
मृ	—	मृत्वा	=	मर कर
प्रच्छ्	—	पृष्ट्वा	=	पूछ कर
आप्	—	आप्त्वा	=	पाकर
दा	—	दत्वा	=	देकर
शी	—	शयित्वा	=	सोकर
आस्	—	आसित्वा	=	पाकर—आदि।

नोट:—किन्तु यदि क्रिया के पूर्व कोई **'उपसर्ग'** लगा हो तो 'क्त्वा' प्रत्यय के स्थान पर 'ल्यप्' का आदेश हो जाता है। यथा—

(१) शत्रुओं को जीतकर राजा लौट रहा है = शत्रून् **विजित्य** निवर्तते राजा।

(२) वह घोड़े पर चढ़कर वन को गया = सः अश्वम् **आरुह्य** वनं गतः।

इसी प्रकार—

प्र + वच् = प्रोच्य = कह कर

अवं + कृ	=	अवकीर्य	=	बिखराकर
आ + पृ	=	आपूर्य	=	भरकर
उत् + प्लुत्	=	उत्प्लुत्य	=	उछलकर
द्विधा + कृ	=	द्विधाकृत्य	=	दुगना करके
प्र + इ	=	प्रेत्य	=	मरकर
अधि + इ	=	अधीत्य	=	पढ़कर
वि + नी	=	विनीय	=	विनम्र होकर आदि।

नोट :—'क्त्वा' प्रत्ययान्त सभी शब्द अव्यय होते हैं। उनके रूप नहीं चलते। केवल एक ही निश्चित रूप होता है।

४२. कभी-कभी 'लिये' के अर्थ में चतुर्थी विभक्ति के स्थान पर 'तुमुन्' प्रत्यय का प्रयोग भी होता है। इस प्रत्यय में क्रिया के बाद 'तुम्' लग जाता है। यथा—

(१) मैं नहाने के लिये जाता हूँ = अहं **स्नानाय** गच्छामि = अहं **स्नातुं** गच्छामि।

(२) तुम्हारा काम करने के लिये मेरे पिताजी आवेंगे = तव कार्यस्य **करणाय** आगमिष्यति मे पिता = तव कार्यं **कर्तुं** आगमिष्यति मे पिता।

(३) माली फूलों को तोड़ने के लिये जाता है = मालाकारः पुष्पाणां **त्रोटनाय** गच्छति = मालाकारः पुष्पाणि **त्रोटितुं** गच्छति।

(४) विद्यार्थी इस पाठ को पढ़ने के लिये यहाँ पर आया है = छात्रः पाठस्यास्य **पठनाय** अत्रागतः = छात्रः पाठम् इदं **पठितुम्** आगतः।

कुछ तुमुन् प्रत्ययान्त शब्द

भू	—	भवितुम्	=	होने के लिये
हस्	—	हसितुम्	=	हँसने के लिये
पठ्	—	पठितुम्	=	पढ़ने के लिये
वद्	—	वदितुम्	=	कहने के लिये
पच्	—	पक्तुम्	=	पकाने के लिये
दृश्	—	द्रष्टुम्	=	देखने के लिये

पा	—	पातुम्	=	पीने के लिये
जि	—	जेतुम्	=	जीतने के लिये
श्रु	—	श्रोतुम्	=	सुनने के लिये
लभ्	—	लब्धुम्	=	पाने के लिये
सह्	—	सोढुम् सहितुम्	=	सहने के लिये
याच्	—	याचितुम्	=	माँगने के लिये
नी	—	नेतुम्	=	ले जाने के लिये
हृ	—	हर्तुम्	=	हरण करने के लिये
अद्	—	अत्तुम्	=	खाने के लिये
रुद्	—	रोदितुम्	=	रोने के लिये
स्वप्	—	स्वप्तुम्	=	सोने के लिये आदि।

नोट :—तुमुन् प्रत्ययान्त शब्द भी अव्यय होते हैं। इनके भी रूप नहीं चलते। इनका भी एक ही निश्चित रूप होता है।

४३. कभी-कभी **"चाहिये"** के अर्थ में विधिलिङ् के स्थान पर 'तव्यत्' और 'अनीयर्' प्रत्ययों का भी प्रयोग होता है। 'तव्यत्' प्रत्यय में क्रिया के बाद प्रायः 'तव्य' और 'अनीयर्' प्रत्यय में क्रिया के बाद प्रायः 'नीय' जुड़ जाता है। यथा—

(१) उसे गाँव जाना चाहिये = सः ग्रामं गच्छेत्' (विधि०) = तेन ग्रामो **गन्तव्यः** (तव्यत्)।

(२) मुझे यह करना चाहिये = अहम् इदं कुर्याम् (विधि०) = मया इदं **करणीयम्** (अनीयर्)।

नोट :—(१) यदि तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय सकर्मक धातु से प्रयुक्त होते हैं, तो उसके साथ तीनों लिंग और तीनों वचन आते हैं। यथा—

१. उसे अपना पाठ पढ़ना चाहिये = तेन स्वपाठः **पठितव्यः**।

२. उसे अपने पाठ पढ़ने चाहिये = तेन स्वपाठाः **पठितव्याः**।

३. उसे गीता पढ़नी चाहिये = तेन गीता **पठितव्या**।

४. मुझे यह करना चाहिये = मया इदं **करणीयम्**।

(२) यदि तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय अकर्मक धातु से प्रयुक्त होते हैं तो उनके साथ केवल नपुंसकलिंग के एकवचन का ही प्रयोग होता है। यथा—

१. उसे बैठना चाहिये = **तेन आसितव्यम्।**

२. मुझे पढ़ना चाहिये = मया **पठनीयम्।**

३. मुझे हंसना चाहिये = मया **हसितव्यः।**

कुछ तव्यत् और अनीयर् प्रत्ययान्त शब्द

(धातु)	(तव्यत्)	(अनीयर्)
श्रु	श्रोतव्य	श्रवणीय
पा	पातव्य	पानीय
दृश्	दृष्टव्य	दर्शनीय
पच्	वक्तव्य	पचनीय
पठ्	पठितव्य	पठनीय
नी	नेतव्य	नयनीय
हृ	हर्त्तव्य	हरणीय
भू	भवितव्य	भवनीय
ब्रू	वक्तव्य	वचनीय
हन्	हन्तव्य	हननीय आदि।

४४. अन्त में मैं विद्यार्थियों को सचेत कर देना चाहता हूं कि अनुवाद करते समय वे अपने सामान्य विवेक से भी काम लें। अनुवाद करते समय मूल भाषा के शब्दों पर ही केवल दृष्टि न रखकर उसके भावों पर ही विशेष दृष्टि रखनी चाहिये, अन्यथा 'विनायकं प्रकुर्वाणः रचयामास वानरम्' की स्थिति उत्पन्न हो जायगी। उदाहरण के लिये—

१. **वह मुँह देखी करता है**—इसका अनुवाद "सः मुखं दृष्ट्वा करोति" उचित नहीं है। अपितु "सः पक्षपातं करोति" ही ठीक होगा।

२. **उसने तो भण्डा ही फोड़ दिया**—इसका अनुवाद "स तु भाण्डमेव अभाक्षीत्" सर्वथा हास्यास्पद है। इसका अनुवाद तो "तेन तु रहस्यमेव उद्घाटिम्।" ही उचित होगा।

—:o:—

[ख] अनुवादोपयोगी

कुछ कारक-नियम

(क) कर्ता कारक (प्रथमा विभक्ति)

१. कर्तृवाच्य के कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा—

क—**रामः** पठति = राम पढ़ता है।

ख—**बालकौ** क्रीडतः = दो लड़के खेलते हैं।

ग—**अश्वाः** धावन्ति = घोड़े दौड़ते हैं।

२. कर्तृवाच्य का 'कर्म' कर्मवाच्य में प्रथमान्त हो जाता है। यथा—

क—रामेण हतो **बालिः** = राम के द्वारा बालि मारा गया।

ख—हनुमता दग्धा **लंका** = हनुमान के द्वारा लंका जलाई गई।

ग—अस्माभिः **कथा** श्रूयते = हमारे द्वारा कथा सुनी जाती है।

३. सम्बोधन में भी प्रकारान्तर से प्रथमा विभक्ति ही होती है। यथा—

क—हे **राम** ! अत्रागच्छ = हे राम ! यहाँ आओ।

ख—हे **बालकौ** ! अत्रागच्छतम् = हे दोनों लड़को ! यहाँ आओ।

ग—भो **जनाः** ! अत्रागच्छत = हे मनुष्यो ! यहाँ आओ।

(ख) कर्मकारक (द्वितीया विभक्ति)

१. कर्तृवाच्य के कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—

(क) रामः **पुस्तकं** पठति = राम किताब पढ़ता है।

(ख) वयं **चित्राणि** पश्यामः = हम लोग तस्वीरें देखते हैं। यथा—

२. गत्यर्थक धातुओं के योग में द्वितीया विभक्ति आती है। यथा—

(क) **गृहं** गच्छाम्यहम् = मैं घर जाता हूँ।

(ख) **वनं** अटति स कौन्तेयः = वह कुन्ती का पुत्र अर्थात् जंगल में घूमता-फिरता है।

(ग) अधिज्य धन्वा विचचार **दावम्** = धनुष पर डोरी चढ़ाकर वह जंगल में घूमा करता था।

(घ) मनसा **कृष्णम्** एति = वह मन से कृष्ण के पास जाता है अर्थात् उनका ध्यान करता है।

(ङ) ते आनन्दस्य परां **कोटिं** ययौ = वे आनन्द की चरमसीमा तक पहुँच गये।

(च) इति चिन्तयन्नैव स **निद्रां** ययौ = ऐसा सोचते ही सोचते वह निद्रा को प्राप्त हुआ अर्थात् सो गया।

३. 'अधि' उपसर्ग पूर्वक शी, स्था और आस् धातुओं के योग में द्वितीया विभक्ति लगाई जाती है। यथा—

(क) गोविन्दः **पर्यङ्कं** अधिशेते = गोविन्द पलंग पर सोता है।

(ख) शकुन्तला **शय्यां** अधिशेते = शकुन्तला सेज पर लेटती है।

(ग) **आसनं** अधितिष्ठति बालः = बच्चा आसन पर बैठता है।

(घ) हरिः **गृहं** अधितिष्ठति = हरि घर पर बैठा हुआ है या घर में है।

(ङ) राजा **सिंहासनं** अध्यास्ते = राजा सिंहासन पर बैठता है या बैठा हुआ है।

(च) गोविन्दः **गृहं** अध्यास्ते = गोविन्द घर में है।

४. निम्नलिखित शब्दों के योग में भी द्वितीया विभक्ति होती है:—

(क) धिक्कार सूचक 'धिक्' और 'हा' शब्दों के योग में। यथा—

(१) धिक् **पापिनं** पुत्रम् = पापी पुत्र को धिक्कार है।

(२) धिक् **पिशुनम्** = चुगलखोर मनुष्य को धिक्कार है।

(३) हा **कृष्णाभक्तम्** = कृष्ण की भक्ति न करने वाले को धिक्कार है।

(ख) अभितः परितः, सर्वतः, उभयतः आदि शब्दों के योग में। यथा—

(१) **ग्रामं** अभितः परितः सर्वतः वा वृक्षाः सन्ति = गाँव के चारों तरफ पेड़ हैं।

(२) सर्वतः **प्रासादं** दण्डधारिणः विचरन्ति = राजमहल के चारों तरफ दण्डधारी घूम रहे हैं।

(३) उभयतः **कृष्णं** गोपाः सन्ति = कृष्ण दोनों ओर ग्वाले हैं।

(४) **यमुनां** उभयतः तरवः सन्ति = यमुना के दोनों ओर पेड़ हैं।

(ग) उपरि-उपरि, अधः-अधः, अधि-अधि आदि शब्दों के योग में। यथा—

(१) उपर्युपरि **लोकं** हरिः = हरि सब लोकों के ऊपर हैं।

(२) अधोऽधो **लोकं** पातालः = पाताल सब लोकों के नीचे है।

(३) नवान् **मेघान्** अधोऽधः = नये बादलों के नीचे।

(४) अध्यधिः **लोकं** = संसार के नीचे।

(घ) समीप अर्थ वाले समया और निकषा शब्दों के योग में। यथा—

(१) **ग्रामं** समया नदी वर्तते = गाँव के पास नदी है।

(२) **खड्गं** निकषा एव द्विनालिका वर्तते = तलवार के पास ही बन्दूक रक्खी है।

(ङ) विना अर्थ वाले विना, ऋते, अन्तरेण आदि शब्दों के योग में। यथा—

(१) **ज्ञानं** विना न मुक्तिः = ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती।

(२) **विद्यां** ऋते अर्थलाभो नैव भवति = विद्या के बिना धन की प्राप्ति नहीं होती।

(३) **धर्ममन्तरेण** जनस्य न सुखम् = धर्म के विना लोगों को सुख नहीं मिलता।

(च) अन्तरा (बीच में) शब्द के योग में। यथा—

रामं कृष्णं चान्तरा गोपालः वर्तते = राम और कृष्ण के बीच में गोपाल है।

(छ) अति, प्रति, अनु और उप शब्दों के योग में। यथा—

(१) अति **देवान्** कृष्णः = कृष्ण देवताओं से बढ़कर हैं।

(२) अति **रामं** गोविन्दः = गोविन्द राम से बढ़कर है।

(३) **दीनं** प्रति दयां कुरु = गरीब के प्रति दयापूर्ण व्यवहार करो।

(४) **गृहं** प्रति गच्छति देवदत्तः = देवदत्त घर की तरफ जा रहा है।

(५) अहं **त्वां** अनुधावामि = मैं तुम्हारे पीछे-पीछे दौड़ता हूँ।

(६) **रामं** अनुगच्छति सीता = सीता राम के पीछे-पीछे चलती है।

(७) **जपं** अनु प्रावर्षत = जप के पीछे (बाद) वर्षा हुई ।

(८) सर्वं ते **मां** अनु = तुम्हारी हर चीज मेरे से पीछे है (घटिया है) ।

(९) अनु **पितरं** गच्छति सुतः = बाप के पीछे-पीछे बेटा चलता है ।

(१०) अनु **हरिं** सुराः = देवता हरि से घट कर हैं ।

५. 'अभि + नि' उपसर्गों से युक्त विश् धातु के योग में भी द्वितीया विभविभक्ति होती है । यथा—

(१) सुशीला **सन्मार्गं** अभिनिविशते = सुशीला सन्मार्ग पर चलती है या प्रवेश करती है ।

(२) धान्या सा गणिका पुत्री **याभेव** भवन्मनो अभिनिविशते = वह वेश्या की लड़की धन्य है जिसमें आपका मन अनुरक्त है ।

६. क्रिया-विशेषण सूचक शब्द भी प्रायः द्वितीयान्त ही होते हैं । यथा—

(१) कमला **मधुरं** गायति = कमला मधुर गीत गाती है ।

(२) मृगाः **सत्वरं** धावन्ति = हिरन तेजी से दौड़ते हैं ।

७. 'उप', 'अनु', 'अधि' और 'आ' उपसर्गों के साथ 'वस्' धातु के योग में भी द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता । यथा—

(१) हरिः **वैकुण्ठं** उपवसति = हरि वैकुण्ठ में रहते हैं ।

(२) **वृजं** अनुवसति मुरारिः = कृष्ण जी वृज में रहते हैं ।

(३) **कैलाशम्** अधिवसति त्रिनयनः = शंकर जी कैलास पर्वत पर रहते हैं ।

(४) **साहसमेव** आवसति श्रीः = साहस में ही लक्ष्मी का निवास है ।

८. अधोलिखित १६ धातुयें और उनकी समानार्थक धातुयें **दो कर्म** लेती हैं । उनके योग में भी इसीलिये द्वितीया होती है । यथा—

(१) दुह् = दुहना (**गां पयः** दोग्धि गोपः = ग्वाला गाय का दूध दुहता है ।)

(२) याच् = माँगना (वामनो **वलिं वसुधां** याचते = वामन भगवान् वलि से वसुधा माँगते हैं ।)

(३) पच् = पकाना (**तण्डुलान् ओदनं** पचति सूपकारः = रसोइया चावलों से भात पकाता है ।)

(४) दण्ड् = दण्ड देना (**गर्गान् शतं** दण्डयति राजा = राजा गर्गों पर सौ रुपया दण्ड करता है ।)

(५) रुध् = रोकना, घेरना (कृषकस्तु व्रजम् अवरुणद्धि **गाम्** = किसान गाय को बाडे में घेरता है, अर्थात् बन्द कर देता है ।)

(६) प्रच्छ = पूछना (**माणवकं पन्थानं** पृच्छति वटुः = ब्राह्मण माणवक से रास्ता पूछता है ।)

(७) चि = चुनना, तोड़ना (सीता **वृक्षं फलानि** अवचिनोति चिनोति वा = सीता पेड़ से फल तोड़ती है ।)

(८) ब्रू = कहना, शास् = उपदेश देना (उपाध्यायः **मां धर्मं** **ब्रूते** शास्ति वा = गुरुजी मुझे धर्म का उपदेश देते हैं ।)

(९) जि = जीतना (द्यूतकरः **देवदत्तं शतं** जयति = जुआरी देवदत्त से सौ रुपये जीत लेता है ।)

(१०) मथ् = मथना (**सुधां क्षीरनिधिं** मथ्नाति सुरासुरसमुदयः = देव और दानवों का समुदाय अमृत के लिये सागर को मथता है ।)

(११) मुष् = चुराना (**देवदत्तं शतं** मुष्णाति ते सुतः = तुम्हारा लड़का देवदत्त के सौ रुपये चुराता है ।)

(१२) नी, हृ, कृष् और वह = ले जाना (हरिः **ग्राममजां** नयति हरति कर्षति वहति वा = हरि बकरी को गाँव ले जाता है ।)

नोट—पूर्व निर्देशानुसार उक्त धातुओं की समानार्थक दूसरी धातुयें **दो कर्म** वाली होती हैं और उनके योग में भी द्वितीया विभक्ति होती है । यथा—

१. **माणवकं धर्मं** भाषते वक्ति वा तस्य जनकः = माणवक का पिता उसे धर्म का उपदेश करता है, या; उससे धर्म कहता है, या, धर्म की बात कहता है ।

(२) **बलिं वसुधां** भिक्षते हरिः = भगवान् बलि से वसुधा मांगते हैं । आदि ।

३. किन्तु जब उक्त द्विकर्मक धातुयें **कर्मवाच्य** में प्रयुक्त होती हैं तो—

(क) पहली १२ धातुओं (दुह् , याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ, चि, ब्रू,

शास्, जि, मथ् और मुष्) का अप्रधान कर्म प्रथमान्त (= कर्ता कारक में) हो जाता है। यथा—

(१) **धेनुः** पयो दुह्यते रामेण = राम के द्वारा गाय का दूध दुहा जाता है।

(२) **दशरथः** रामं ययाचे कौशिकेन = विश्वामित्र के द्वारा दशरथ से राम को मांगा गया।

(३) **उदधिः** सुधां ममन्थे देवैः = देवताओं के द्वारा अमृत के लिये समुद्र को मथा गया। आदि।

(ख) अन्तिम चार धातुओं (नी, हृ, कृष् और वह्) का **'प्रधान कर्म'** प्रथमान्त हो जाता है। यथा—

तेन **गावः** ग्रामं नीयते, ह्रियन्ते, कृष्यन्ते, उह्यन्ते वा = उसके द्वारा गायें गांव को ले जाई जाती हैं।

(ग) करण कारक (तृतीया विभक्ति)

१. 'करण' में तृतीया आती है। यथा—

(१) स खड्गेन शत्रुं प्रहरति = वह तलवार से शत्रु को मारता है या शत्रु पर प्रहार करता है।

(२) रामेण **बाणेन** हतो बालिः = राम के द्वारा बाण से बालि मारा गया।

२. कर्तृवाच्य का 'कर्ता' कर्मवाच्य और भाववाच्य में तृतीयान्त हो जाता है। यथा—

(१) { **रामो** बालिं हन्ति = राम बालि को मारते हैं।
रामेण बालिः हन्यते = राम के द्वारा बालि मारा जाता है।

(२) { **त्वं** स्वपिषि = तुम सोते हो।
त्वया सुप्यते = तुम्हारे द्वारा सोया जाता है।

(३) { **अहं** जीवामि = मैं जीता हूँ।
मया जीव्यते = मेरे द्वारा जिया जाता है आदि।

३. प्रकृति (स्वभाव) आदि के सूचक शब्द तृतीयान्त होते हैं। यथा—

(१) स **प्रकृत्या** दयालुः = वह स्वभाव से दयावान् है।

(२) **गोत्रेण** गार्ग्यः = वह गोत्र से गार्ग्य है।

(३) **जटाभिः** तापसः = जटाओं से लगता है कि वह साधु है।

४. क्रिया-विशेषण सूचक शब्दों में द्वितीया के ही समान प्रायः तृतीया विभक्ति का भी प्रयोग होता है। यथा—

(१) स **सुखेन** जीवति = वह सुख से जीता है।

(२) शिशुः **क्लेशेन** स्थातुं शक्नोति = बच्चा कठिनता से खड़ा हो पाता है।

(३) रामः **सरलतया** पठति = राम आसानी से पढ़ता है।

५. जिस दाम में कोई वस्तु खरीदी जाती है उसे तृतीया में रखते हैं। यथा—

(१) **कियता मूल्येन** क्रीतं इदं पुस्तकम् = यह पुस्तक कितने मूल्य पर खरीदी ?

(२) **शतेन** क्रीता इयं शाटी = यह साड़ी सौ रुपये में खरीदी गई।

(३) इयं द्विचक्रिका **सार्धशतेन** क्रीता = यह साइकिल डेढ़ सौ रुपये में खरीदी है।

६. गत्यर्थक धातुओं के योग में **वाहन** (सवारी) में तृतीया लगती है। यथा—

राजा **रथेन** वनं अटति = राजा रथ से जंगल में घूमता-फिरता है।

७. जिस किसी का भी नाम लेकर शपथ ली जाय वह तृतीयान्त होता है। यथा—

(१) अहन्तु **स्वप्राणः** शपे = मैं तो अपने प्राणों की कसम खाता हूँ।

(२) कथं शपसे **स्वजीवितेन** = अपनी जान की कसम क्यों खाते हो।

(३) **भरतेनात्मा** चाहं शपे = मैं अपनी और भरत की कसम खाता हूँ।

८. जिस **'दिशा'** या **'मार्ग'**, से किसी स्थान विशेष पर जाया जाय, वह भी तृतीया में रक्खा जाता है। यथा—

(१) **केन मार्गेण** काशीं गच्छेयम् = मैं किस रास्ते से काशी जाऊँ ?

(२) **उत्तरेण** गन्तव्यं भवता = आपको उत्तर से जाना चाहिये।

९. सह, साकं, सार्धं और समं के योग में भी तृतीया का प्रयोग होता है। यथा—

(१) पिता **पुत्रेण** सह गच्छति = पिता अपने लड़के के साथ जाता है ।

(२) प्रविशतु साकं **मया** सौधे = आप मेरे साथ महल में प्रवेश करिये ।

(३) **शशिना** सार्धं याति कौमुदी = चांद के साथ चांदनी भी चली जाती है ।

(४) **मात्रा** समं क्रीडति बालकोऽयम् = यह बच्चा मां के साथ खेलता है ।

१०. शरीर के जिस अङ्ग में खराबी हो, उसमें तृतीया विभक्ति होती है । यथा—

(१) हरिः **नेत्रेण** काणः अस्ति = हरि आँख का काना है ।

(२) अयं साधुः **नेत्राभ्यां** अन्धः = यह साधू दोनों आँखों से अन्धा है ।

(३) गोविन्दः **शिरसा** खल्वाटोऽस्ति = गोविन्द सिर का गंजा है ।

(४) गोपालः **कर्णाभ्यां** बधिरः = गोपाल कानों से बहरा है ।

(५) गणेशः **पादेन** खञ्जः अस्ति = गणेश पैरों से लंगड़ा है ।

(६) ज्ञानः **पृष्ठेन** कुब्जः = ज्ञान पीठ का कुबड़ा है ।

११. हीनार्थक (हीन, रहित आदि) और वारणार्थ (अलम् कृतम् किम् आदि) शब्दों के योग में तृतीया होती है । यथा—

(१) **अर्थेन** हीनः कृषकोऽयम् = यह किसान धनहीन है ।

(२) **विद्यया** विहीनः पशुः = विद्या से हीन मनुष्य पशु के समान होता है ।

(३) **पुच्छेन** रहितोऽयं वानरः = इस बन्दर के पूंछ नहीं है ।

(४) अलं **श्रमेण** = मेहनत करना बेकार है अर्थात् मत करो ।

(५) अलं **रुदितेन** = रोओ मत ।

(६) अलं **विवादेन** = झगड़ा या बहस मत करो ।

(७) कृतम् **अत्यादरेण** = इतनी अधिक इज्जत क्यों कर रहे हो अर्थात् मत करो ।

(८) कृतम् **एभिः परुषवचनैः** = इन कठोर शब्दों से क्या लाभ अर्थात् इनका व्यवहार मत करो ।

(९) किम् **अनेन** विवादेन = झगड़ा या बहस क्यों करते हो अर्थात् मत करो ।

(१०) **पुत्रेण** किं यो न विद्वान् न धार्मिकः = उस पुत्र से क्या लाभ जो न तो विद्वान् हो और न धार्मिक अर्थात् ऐसा पुत्र पैदा ही न हो।

१२. 'विना' के योग में भी विकल्प से तृतीया विभक्ति लगती है। यथा—

रामेण विना मह्यं किमपि न रोचते = राम के बिना मुझे कुछ भी नहीं सुहाता।

१३. दिव् (= जुआ खेलना) धातु के योग में विकल्प से तृतीया और द्वितीया दोनों का ही प्रयोग होता है। यथा—

मुरारिः **अक्षैः अक्षान्** वा दीव्यति = मुरारी पासों से जुआ खेलता है।

१४. काल और मार्ग के अत्यन्त संयोग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है। यदि उससे किसी काम का समाप्त होना बतलाया जाये। यथा—

(१) **अह्ना** अनुवाकोऽधीतः = एक दिन में अनुवाक पढ़ डाला।

(२) **क्रोशेन** एक अनुवाकोऽधीतः = एक कोश में ही अनुवाक पढ़ डाला (अर्थात् चलते-चलते पढ़ डाला)।

१५. समता के योग में प्रायः तृतीया विभक्ति लगाई जाती है। यथा—

(१) **स्वरेण** पितरं अनुहरति रामः = राम का स्वर उसके पिता के स्वर के समान ही है।

(२) अस्य मुखं मातुः **मुखेन** संवदति = इसका मुंह अपनी माँ के मुँह से मिलता-जुलता है।

(३) **विष्णुना** सदृशो हि वीर्ये आसीत् स नृपः = वह राजा पराक्रम में विष्णु के ही समान था।

(घ) सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति)

१. जिसे कोई चीज दी जाय उसमें चतुर्थी लगती है। यथा—

(१) राजा **ब्राह्मणाय** गां ददाति = राजा ब्राह्मण को गाय देता है।

(२) **मह्यं** पुस्तकं देहि = मुझे किताब दो।

२. क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य् और असूय् और उनकी समानार्थक धातुओं के योग में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। यथा—

(१) स्वामी **सेवकाय** क्रुध्यति = मालिक नौकर पर क्रोध करता है।

(२) शठाः **सर्वेभ्यः** द्रुह्यन्ति = शठ लोग सभी से द्रोह करते हैं।

(३) दुर्योधनः **पाण्डवेभ्यः** ईर्ष्यति=दुर्योधन पाण्डवों से ईर्ष्या करता है।

(४) खलाः **सज्जनेभ्यः** असूयति = दुष्ट लोग सज्जनों में ऐब निकाला करते हैं।

(५) सीता **रावणाय** अकुप्यत् = सीता जी रावण पर क्रोधित हुईं।

३. किन्तु यदि उक्त क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य और असूय् आदि धातुओं के पूर्व कोई 'सर्वनाम' हो तो चतुर्थी न लगाकर द्वितीया विभक्ति ही लगेगी। यथा—

(१) किं **मां** संक्रुध्यति = मुझ पर क्रोध क्यों करते हो?

(२) स तु नित्यमेव अस्मत् **शरीरं** अभिद्रोग्धुं यतते = वह तो सदा ही मेरे शरीर को चोट पहुँचाने का प्रयत्न किया करता है।

४. रुच् और स्पृह् धातुओं के योग में चतुर्थी विभक्ति ही आती है। यथा—

(१) **मह्यं** फलं रोचते = मुझे फल अच्छे लगते हैं।

(२) **हरये** रोचते भक्तिः = हरि को भक्ति अच्छी लगती है।

(३) स **धनाय** स्पृहयति = वह धन की इच्छा करता है।

(४) **पुष्पेभ्यः** स्पृहयति बाला = लड़की फूलों की इच्छा करती है।

५. अच्छा या बुरा भाग्य बतलाया' इस अर्थ वाली 'राध्' और 'ईक्ष्' आदि धातुओं के योग में चतुर्थी विभक्ति प्रयुक्त होती है। यथा—

(१) ज्योतिषी **कृष्णाय** राध्यति = ज्योतिषी कृष्ण का अच्छा या बुरा भाग्य देखता है।

(२) गणकः **मह्यं** ईक्षते = ज्योतिषी मेरा भाग्य देखता है।

६. श्लाघ् (= प्रशंसा करना), ह्नु (= छिपाना), स्था (= रुकना, खड़ा होना) और शप् (= कसम खाना)—इन धातुओं के योग में कर्मभूत व्यक्ति या शब्द विशेष में चतुर्थी विभक्ति लगती है। यथा—

गोपी कामवशात् **कृष्णाय** श्लाघते-ह्नुते तिष्ठते शपते वा = कामान्ध होकर गोपी कृष्ण के रूप आदि की प्रशंसा करती है, उनसे अपने भाव को छिपाने का प्रयास करती है, उनकी प्रतीक्षा करती है (भोग आदि के लिये) और उनके समक्ष शपथ खाती और खिलाती है (यथा—तुम्हें कसम है, ऐसा मत करो आदि)।

७. 'कहना' इस अर्थवाली कथ्, ख्या, शंस्, चक्ष् और निविद् आदि धातुओं के योग में भी चतुर्थी विभक्ति ही आती है। यथा—

(१) स **मैथिलाय** कथयांबभूव = उन्होंने मिथिलापति जनक से कहा।

(२) आख्याहि **मे** को भवानुग्ररूपः = मुझे बतलाइये कि इस उग्र रूप में आप कौन हैं?

(३) उपस्थितां होमवेलां **गुरवे** निवेदयामि = मैं जाकर गुरु जी से बतला दूं कि होम का समय हो गया है।

८. मन् (= मानना) धातु से यदि 'अनादर' का भाव झलकता हो, तो चतुर्थी या द्वितीया का प्रयोग होता है। किन्तु यदि केवल 'तुलना' ही की जाय तो केवल द्वितीया ही प्रयोग में आती है। यथा—

(१) न त्वां **तृणाय** मन्ये **तृणं** वा = मैं तुम्हें तिनके के बराबर भी नहीं समझता।

(२) स स्ववधूं **गणिकां** मन्यते = वह अपनी वधू को गणिका के समान मानता है।

९. जिसका कर्जा हो, उसके लिये चतुर्थी विभक्ति प्रयुक्त होती है। यथा—

(१) अहं **तुभ्यं** शतं धारयामि = मेरे ऊपर तुम्हारे सौ रुपये उधार हैं।

(१) **भक्ताय** धारयते मोक्षं हरिः = भक्त को मोक्ष दिलाने का ऋण भगवान् के ऊपर चढ़ा रहता है।

१०. जिस प्रयोजन के लिये कोई कार्य किया जाता है, उस प्रयोजन में चतुर्थी होती है। यथा—

(१) भक्तो **मुक्तये** हरिं भजति = भक्त मुक्ति के लिये ईश्वर का भजन करता है।

(२) स **फलेभ्यः** उपवनं गच्छति = वह फल लाने के लिये बगीचे में जाता है।

(३) वणिकः **धनाय** प्रयतते = व्यापारी धन के लिये प्रयत्न करता है।

(४) शिशुः **मोदकाय** रोदिति = बच्चा लड्डू के लिये रोता है।

(५) धनं **सुखाय** भवति = धन इसलिये इकट्ठा किया जाता है कि सुख मिले।

(६) काव्यं **यशसे** = काव्य इसलिये रचा जाता है कि यश मिले।

(७) विद्या **ज्ञानाय** भवति = विद्या ज्ञान के लिये अर्जित की जाती है।

(८) धर्मः **मोक्षाय** कल्पते सम्पद्यते जायते वा = धर्म मोक्ष के लिये होता है या किया जाता है।

११. जिस वस्तु के बनाने के लिए किसी दूसरी वस्तु का अस्तित्व रहता है, उसमें चतुर्थी होती है। यथा—

(१) **शकटाय** दारु = गाडी बनाने के लिये लकड़ी।

(२) **कुण्डलाय** हिरण्यं क्रीतम् = कुण्डल बनवाने के लिये सोना खरीदा।

(३) **आभूषणाय** स्वर्णमिदम् = यह सोना गहने बनाने के लिये है।

१२. नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा और वषट् के योग में चतुर्थी विभक्ति आती है। यथा—

(१) **तस्मै** श्री**गुरवे** नमः = उन गुरु जी को नमस्कार है।

(२) **नमस्तुभ्यम्** = तुम्हें नमस्कार है।

(३) स्वस्ति **भवते** = आपका कल्याण हो।

(४) स्वस्ति **तेऽस्तु** = तुम्हारा कल्याण हो।

(५) **प्रजाभ्यः** स्वस्ति = प्रजा का कल्याण हो।

(६) **अग्नये** स्वाहा = यह आहुति अग्नि के लिये है।

(७) **पितृभ्यः** स्वधा = यह बलि पितरों के लिये है।

(८) **इन्द्राय** वषट् = यह भाग इन्द्र के लिये है।

१३. प्रणम् और प्रणपत् आदि प्रणामार्थक धातुओं के योग में विकल्प से चतुर्थी और द्वितीया का प्रयोग किया जाता है। यथा—

(१) न प्रणमन्ति **देवताभ्यः** = (वे लोग) देवताओं को प्रणाम नहीं करते।

(२) **तां** देवीं प्रणमामि = उस देवी को मैं प्रणाम करता हूँ।

(३) **वागीशं** प्रणिपत्य = वागीश्वर को प्रणाम करके।

१४. यदि 'नमः' के परे 'कृ' धातु हो तो उसके योग में चतुर्थी न होकर द्वितीया विभक्ति हो जाती है। यथा—

(१) **देवान्** नमस्कृत्य = देवताओं को नमस्कार करके।

(२) **पितरं** नमस्करोमि = (मैं) पिता जी को नमस्कार करता हूँ ।

१५. 'समर्थता' सूचक 'अलम्' और उसके समानार्थक 'प्रभुः, समर्थः, शक्तः और प्र + भू' आदि शब्दों के योग में चतुर्थी का प्रयोग होता है । यथा—

(१) अलं मल्लो **मल्लाय** = (यह) पहलवान (उस) पहलवान के लिये काफी है ।

(२) **दैत्येभ्यो** हरिः अलम् = राक्षसों के लिये हरि पर्याप्त हैं ।

(३) अयं मल्लः तस्मै **मल्लाय** समर्थः शक्तः प्रभुः वा = यह पहलवान उस पहलवान के लिये काफी है (अर्थात् उससे लड़ने में पूर्ण समर्थ है ।)

(४) विधिरपि न **येभ्यः** प्रभवति=ब्रह्मा भी जिनसे पार नहीं पा सकते ।

(ङ) अपादान कारक (पञ्चमी विभक्ति)

१. जिससे किसी चीज का अलग होना पाया जाय, उसमें पंचमी विभक्ति होती है । यथा—

(१) स **प्रासादात्** अपतत् = वह महल में गिर पड़ा ।

(२) गंगा **हिमालयात्** निस्सरति = गंगा हिमालय से निकली है ।

(३) **वृक्षात्** पर्णानि पतन्ति = पेड़ से पत्ते गिरते हैं ।

(४) हरिः **ग्रामात्** आयाति = हरी गाँव से आता है ।

२. जिससे कोई वस्तु या पुरुष आदि दूर किया जाता है या मना किया जाता है, उसमें पंचमी विभक्ति होती है । यथा—

(१) **यवेभ्यो** गां निवारयति वारयति वा = जो (खाने) से गाय को रोकता है ।

(२) मित्रं **पापाद्** निवारयति = मित्र को पाप से दूर करता है ।

३. जिससे कोई चीज पढ़ी या मालूम की जाय उसमें भी पंचमीं विभक्ति लगती हैं । यथा—

(१) **उपाध्यात्** अधीते = उपाध्याय जी से सीखता है ।

(२) **अध्यापकाद्** गणितं पठति = मास्टर साहब से गणित पढ़ता है ।

(३) **तेभ्य** अधिगन्तुं उदन्तमिदं आगतोऽहम् = उनसे यह खबर जानने के लिये ही मैं आया हूँ ।

४. 'भय' या 'भय से बचाव' सूचक शब्दों के योग में जिससे डर या भय आदि मालूम हो, उसमें पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा—

(१) **चौराद्** बिभेति = चोर से डरता है।

(२) सर्पः **नकुलाद्** बिभेति = साँप नेवले से डरता है।

(३) स्वल्पमपि अस्य धर्मस्य त्रायते महतो **भयात्**=इस धर्म का अल्पांश भी बड़े-बड़े भय से छुटकारा दिला देता है।

(४) कपेः **नादात्** अत्रासिषुः शिशवः = बन्दर की आवाज से बच्चें डर गये।

(५) **सर्पाद्** भयम् = सांप से डर है।

(६) **नरकयातनायाः** मां रक्ष = नरक की यातना से मेरी रक्षा करो।

(७) पाहि मां **विपदः** = विपत्ति से मुझे बचाओ।

५. अधोलिखित शब्दों के योग में भी पंचमी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है—

'क'—प्रभृति और आरम्भ के योग में पंचमी—

(१) **ततः** प्रभृति = तब से लेकर।

(२) **तस्मात् दिनात्** प्रभृति = उस दिन से लेकर।

(३) **जन्मनः** प्रभृति मया मांसं न भुक्तम् = जन्म से लेकर मैंने मांस नहीं खाया।

(४) **तस्मात् दिनात्** आरभ्य मया न चोरितं किंचिदपि = उस दिन से लेकर मैंने कुछ भी नहीं चुराया।

'ख'—'बिना' के योग में विकल्प से द्वितीया, तृतीया और पंचमी का प्रयोग होता है। यथा—

(१) **नारीं** विना निष्फला लोकयात्रा=स्त्री के बिना जीवन व्यर्थ है।

(२) **ज्ञानेन** विना न मुक्तिः = ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं मिलती।

(३) **परिश्रमात्** विना न साफल्यम् = परिश्रम के बिना सफलता नहीं मिलती।

'ग'—'बहिः' और 'पृथक्' के योग में पंचमी का प्रयोग होता है। यथा—

(१) **ग्रामात्** बहिः शिवालयः अस्ति = गाँव के बाहर शंकर जी का मन्दिर है ।

(२) **गृहात्** पृथक् गोशाला अस्ति = घर से अलग गोशाला है ।

'घ'—'ऊर्ध्वम्' और 'अनन्तरम्' के योग में भी पंचमी का ही प्रयोग होता है । यथा—

(१) **संवत्सरात्** ऊर्ध्वं आगन्तव्यम् भवता = आप को एक साल के बाद आना चाहिये ।

(२) **अत** ऊर्ध्वं नागमिष्यामि कदापि = इसके बाद मैं कभी भी न आऊँगा ।

(३) **अध्ययनात्** अनन्तरं स क्रीडति = पढ़ने के बाद वह खेलता है ।

'ङ'—'अन्य', 'भिन्न' और 'इतर' आदि शब्दों के योग में । यथा—

(१) **ईश्वराद्** अन्यः को मां पातुं समर्थः = ईश्वर के अलावा और कौन मुझे बचा सकता है ।

(२) **कृष्णाद्** अन्यं कमपि बालं आहूयतम् = कृष्ण को छोड़ कर किसी दूसरे बच्चे को बुलाओ ।

(३) **नगराद्** भिन्नो वर्तते ग्रामः = गाँव नगर से भिन्न होता है ।

(४) **अंगुष्ठात्** इतरा अंगुलिका तर्जनी इत्यभिधीयते = अँगूठे से दूसरी अँगुली को तर्जनी कहते हैं ।

(५) **रामात्** इतरो न कोऽपि रोचते मह्यम् = राम को छोड़कर दूसरा कोई मुझे अच्छा नहीं लगता ।

६. जो जिसका उत्पादक हो, उसमें पंचमी लगती है । यथा—

(१) **गोमयात्** वृश्चिकः जायते = गोबर से बिच्छू पैदा होता है ।

(२) **हिमालयात्** गंगा प्रभवती = हिमालय से गंगा नदी निकलती है ।

(३) **दुग्धात्** दधि भवति = दूध से दही बनती है ।

(४) **ब्रह्मणः** प्रजायन्ते प्रजाः = प्रजा की उत्पत्ति ब्रह्म से होती है ।

(५) **कामात्** क्रोधः अभिजायते = काम से क्रोध पैदा होता है ।

७. जिससे छिपना हो उसमें पंचमी लगती है । यथा—

मातुः निलीयते कृष्णः = कृष्ण जी अपनी माता यशोदा से छिपते हैं ।

८. 'मार्ग' और 'काल' की अवधि में भी पंचमी ही होती है। यथा—

(१) **कर्णपुरतः** पंचाशत् क्रोशाः = कानपुर से पचास कोस की दूरी।

(२) **जन्मनः** दसमे मासे = जन्म से दसवें महीने में।

९. 'जुगुप्सा', 'विरामः' और 'प्रमाद' बोधक शब्दों के योग में पंचमी का प्रयोग किया जाता है। यथा—

(१) **पापात्** जुगुप्सते = पाप से घृणा करता है।

(२) दिलीपः **आफलोदयात् कर्मणः** न विरराम = फल प्राप्ति तक दिलीप ने काम करने से विराम नहीं किया।

(३) **स्वाध्यायात्** मा प्रमदः = स्वाध्याय में आलस्य मत करो।

(४) **स्वाधिकारात्** प्रमत्तः = अपने कर्त्तव्य के प्रति उदासीन (लापरवाह)।

(५) प्रसमीक्ष्य निवर्तेत सर्वमांसस्य **भक्षणात्** = खूब सोच-समझकर सभी प्रकार के मांसों का भक्षण नहीं करे।

(६) **धर्मात्** मुह्यति = धर्म से जी चुराता है।

१०, 'परा' उपसर्ग पूर्वक 'जि' धातु के योग में 'अरुचि' या 'ऊबना' आदि के अर्थ में पंचमी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। यथा—

अध्ययनात् पराजयते = वह पढ़ने से ऊब गया है (आजिज आ गया है)।

११. कभी-कभी 'क्त्वा' आदि प्रत्ययों को छिपाने के लिये भी पंचमी काम में आती है। यथा—

(१) **प्रासादात्** प्रेक्षते (प्रासादं आरुह्य प्रेक्षते) = महल पर चढ़ कर देखती है।

(२) **आसनात्** प्रेक्षते (आसने उपविश्य प्रेक्षते) = आसन पर बैठकर देखता है।

(३) **श्वसुरात्** जिह्रेति (श्वसुरं वीक्ष्य जिह्रेति) = ससुर को देखकर शर्माती है।

१२. कभी-कभी प्रश्नोत्तर के लिये भी पंचमी का आश्रय लिया जाता है। यथा—

(१) कस्मात् त्वं ? नद्याः । = तुम कहाँ से आ रहे हो ? नदी पर से ।

(२) कुतो भवान् ? पाटलिपुत्रात् । = आप कहाँ से आ रहे हैं ? पटना से ।

१३. अपने मत की पुष्टि के लिये प्रमाण देते समय भी पंचमी का आश्रय लेते हैं । यथा—

पर्वतो वह्निमान्, धूमात् = पर्वत में आग है, क्योंकि धुआँ उठ रहा है ।

१४. जब क्रियाओं के साथ 'स्तोक', 'अल्प', 'कृच्छ्र', 'कतिपय' आदि का प्रयोग क्रिया-विशेषण के रूप में होता है, तो विकल्प से पंचमी या तृतीया का प्रयोग होता है । यथा—

(१) 'स्तोकेन मुक्तः' अथवा 'स्तोकात् मुक्तः' = कुछ-कुछ खुला हुआ ।

(२) 'अल्पेन मुक्तः' अथवा 'अल्पात् मुक्तः' = थोड़ा-सा छूटा हुआ ।

(३) 'कृच्छ्रेण कृतः' अथवा 'कृच्छ्राद् कृतम्' = कठिनता से किया गया ।

(४) 'कतिपयेन प्राप्तः' अथवा 'कतिपयात् प्राप्तः' = कुछ लोगों से प्राप्त हुआ ।

(च) सम्बन्ध कारक (षष्ठी विभक्ति)

१. सम्बन्ध में—यथा—

(१) **कस्य** इदं पुस्तकम् = यह किताब किसकी है ?

(२) मातृस्वसा **मे** मृता = मेरी मौसी मर गई ।

(३) **लोकानां** अधिपः = लोकों का स्वामी ।

२. निर्धारण में—यथा—

(१) **नृणां** ब्राह्मणः श्रेष्ठः = मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं ।

(२) **कवीनां** कालिदासो श्रेष्ठः = कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं ।

(३) **गवां** कृष्णा बहुक्षीरा=गायों में से काली गाय बहुत दूध देने वाली होती है ।

३. 'समीप' और 'तुल्य' तथा उनके समानार्थक शब्दों के बोध में । यथा—

(१) **नगरस्य** समीपं एव आश्रमपदम् = नगर के पास ही आश्रम है ।

(२) **चन्द्रस्य** तुल्यं मुखम् = चन्द्रमा के समान मुख ।

(३) **कृष्णस्य** तुल्यः सदृशः समो वा = कृष्ण के समान ।
(४) कोऽन्योऽस्ति सदृशो **मम** = मेरे समान और दूसरा कौन है ।

४. हेतु प्रयोग में । यथा—
(१) **कस्य** हेतोः सोऽत्र वसति = वह किस लिये यहाँ रह रहा है ?
(२) **अन्नस्य** हेतोः वसति = अन्न के लिये रहता है ।
(३) **अल्पस्य** हेतोः बहुहातुमिच्छसि = तुम तो थोड़े के लिये बहुत कुछ गँवाना चाहते हो ।
(४) रोदिषि **कस्य** हेतोः = किस लिये रोते हो ?

५. आशीर्वाद में—यथा—
(१) **तव** सुखं भूयात् = तुम्हें सुख मिले या सुखी रहो ।
(२) **कृष्णस्य** आयुष्यं भूयात् = कृष्ण दीर्घायु होवे ।
(३) **कृष्णस्य** चिरजीवितं भूयात् = कृष्ण चिरंजीवी हो ।
(४) **कृष्णस्य** भद्रं कुशलं कल्याणं निरामयं सुखं शं हितं वा भूयात् = कृष्ण का भला हो ।

६. (क) तस् प्रत्ययान्त शब्द षष्ठी विभक्तियुक्त किसी न किसी शब्द विशेष के साथ ही प्रयुक्त होते हैं । यथा—
(१) **ग्रामस्य** दक्षिणतः उत्तरतः वा गाँव के दक्षिण या उत्तर की तरफ ।
(२) **गृहस्य** पृष्ठतः आम्रवृक्षः अस्ति = घर के पिछवाड़े आम का पेड़ है ।

(ख) तस् प्रत्ययान्त शब्दों के समानार्थक उपरि-उपरिष्ठात्, अधः अधस्तात्, पुरः पुरस्तात्, पश्चात् आदि शब्द भी षष्ठी विभक्ति से युक्त किसी शब्द विशेष के साथ ही प्रयुक्त होते हैं । यथा—
(१) **अर्कस्य** उपरि = अकवन के पौधे के ऊपर ।
(२) **तरूणां** अधः अधस्तात् वा = पेड़ों के नीचे ।
(३) **तस्य** पुरः पुरस्तात् वा कथमपि स्थित्वा = उसके सामने बड़ी मुश्किल से खड़े होकर ।

७. उत्तरेण, दक्षिणेन आदि एनान्त शब्दों के योग में विकल्प से द्वितीया या षष्ठी विभक्तियों का प्रयोग होता है । यथा—

ग्रामस्य ग्रामं वा उत्तरेण = गाँव के उत्तर की ओर।

८. 'दूर' अन्तिक और तदर्थक अन्य शब्दों के योग में या तो षष्ठी लगती है या पंचमी। यथा—

(१) **ग्रामस्य ग्रामात्** वा वनं निकटं समीपं वा अस्ति = गाँव के निकट जंगल है।

(२) तव **गृहस्य गृहात्** वा दूरे मम वसतिः = मेरा मकान तुम्हारे घर से दूर है।

(३) **रामात् रुद्रस्य** यो दूरं, पापात् दुःखस्य सोऽन्तिकम् = जो राम और शिव से दूर रहता है, वह पाप और दुःख के पास रहता है।

(४) प्रत्यासन्नो माधवी **मण्डपस्य** = वह माधवी लता के मंडप के पास है।

(५) **तस्य** सकाशम् = उसके पास।

९. निम्नस्थ धातुओं के योग में षष्ठी आती है—

'क' 'याद करना' अर्थ वाली स्मृ, अधि + इ, आदि धातुओं के योग में यथा—

(१) कच्चिद् **भर्तुः** स्मरसि = क्या तुम्हें अपने स्वामी की याद आती है।

(२) स्मरन् **राघवबाणानां** विव्यथे राक्षसेश्वरः = राम के बाणों की याद करके रावण को दुःख हुआ।

(३) अध्येति **तव** लक्ष्मणः = लक्ष्मण तुम्हारी याद करते हैं।

'ख' "अधिकार होना" अर्थ वाली प्र + भू, ईश आदि धातुओं के योग में, यथा—

(१) प्रभवति **निजस्य** कन्यका जनस्य महाराजः = महाराज को अपनी कन्या पर पूरा पूरा अधिकार है।

(२) यदि तं प्रेक्षमाणा **आत्मनः** प्रभविष्यामि = यदि उसे देखकर मैं अपने आप पर काबू कर सकी तो...... ।

(३) कथंचित् ईशा **मनसां** बभूवुः = बड़ी मुश्किल से वे अपने मन पर काबू कर सके।

'ग' 'दया करना' अर्थ वाली 'दय्' आदि धातुओं के योग में, यथा—

(१) **'रामस्य'** दयमानः = राम के ऊपर दया करता हुआ।

(२) कथं न दयसे **दीनजनस्य** = गरीबों पर दया क्यों नहीं करते ?

१०. 'व्यापार में लगाना' या 'जुये के दाव में लगाना' इन अर्थों वाली "वि + अव + हृ = व्यवहृ', 'पण्' और 'दिव्' आदि धातुओं के योग में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा—

(१) **शतस्य** व्यवहरति = व्यापार में सौ रुपये लगाता है।

(२) **प्राणानां** अपणिष्ट असौ=इसने प्राणों को भी बाजी में लगा दिया। अथवा प्राणों की बाजी लगा दी।

(३) अदेवीत् **बन्धुभोगानां** युधिष्ठिरः = युधिष्ठिर ने अपने भाइयों और भोगों को जुये में गँवा दिया।

११. 'मध्ये', 'पारे', 'कृते' आदि अव्ययों के साथ भी षष्ठी का प्रयोग होता है। यथा—

(१) **गंगायाः** मध्ये पारे वा = गंगा के बीच में या गंगा के उस पार।

(२) **अमीषां प्राणानां** कृते = इन प्राणों के लिये।

(छ) अधिकरण कारक (सप्तमी विभक्ति)

१. जिस स्थान पर किसी काम का करना या होना पाया जाय, उसमें सप्तमी लगती है। यथा—

(१) रामः **पाठशालायां** पुस्तकं पठति = राम स्कूल में किताब पढ़ता है।

(२) **स्थाल्यां** ओदनं पचति मे माता = मेरी माँ बटलोई में चावल पकाती है।

(३) तस्य **कर्णे** किमपि कथयति स कर्कटकः = वह कर्कटक उसके कान में कुछ कहता है।

२. जिस समय कोई कार्य सम्पन्न हो उसमें भी सप्तमी आती है। यथा—

(१) **शैशवे** वेदं अपठम् = बचपन में मैंने वेद पढ़ा।

(२) **बाल्ये** पितुर्वशे तिष्ठेत् पाणिग्राहस्य यौवने = (स्त्री को) बचपन में पिता के वश में और जवानी में पति के वश में रहना चाहिये।

(३) जब किसी कार्य के हो जाने पर कोई दूसरा कार्य हो, तो जो कार्य हो चुकता है, उसमें सप्तमी लगती है। यथा—

(क) **सूर्ये** अस्तं **गते** गोपाः गृहं आगच्छन् = सूर्य के अस्त हो जाने पर ग्वाले घर को आगये।

(ख) **रामे** वनं **गते** दशरथः प्राणान् अत्यजत् = राम के वन चले जाने पर दशरथ ने प्राण त्याग दिये।

(ग) **सुरेशे गायति** सर्वे अहसन् = सुरेश के गा चुकने पर सबलोग हँस पड़े।

(घ) **सर्वेषु शयानेषु** श्यामा रोदिति = सब के सो जानेपर श्यामा रोती है।

(४) निर्धारण में षष्ठी की ही भाँति सप्तमी का प्रयोग भी होता है। यथा—

(क) **गोषु** कृष्णा बहुक्षीरा = गायों में काली गाय बहुत दूध देने वाली होती है।

(ख) **छात्रेषु** रामः पटुः = विद्यार्थियों में राम होशियार है।

(ग) **नृषु** ब्राह्मणः श्रेष्ठः = मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है।

(५) प्रेम, आसक्ति अथवा आदरसूचक शब्दों के योग में जिसके प्रति उक्त भाव हो, उसमें सप्तमी आती है। यथा—

(क) पिता **पुत्रे** स्निह्यति = पिता पुत्र से स्नेह करता है।

(ख) अध्यापकः **छात्रेषु** स्निह्यति = अध्यापक विद्यार्थियों से स्नेह करता है।

(ग) **शिवे** मम महान् अनुरागः = शंकर जी से मुझे बहुत प्रेम है।

(घ) **तापसकन्यकायां अस्यां** मे महान् अभिलाषः = तपस्वी की इस कन्या से मैं बहुत प्रेम करता हूँ अथवा इसके प्रति मेरे हृदय में बहुत बड़ी चाह है।

(ङ) **धर्मे** रतिः कार्या = धर्म से प्रेम करना चाहिये।

(च) **ब्रह्मणि** रमते मे मनः = मेरा मन ब्रह्म के चिन्तन में ही रमता है।

(छ) **अशुद्धप्रकृतौ राज्ञि** जनता न अनुरज्यते = उस राजा से जनता स्नेह नहीं करती जिसके मंत्रीगण भ्रष्ट हो गये हों।

(ज) मृतस्य भ्रातुः **भार्यायां** यो अनुरज्येत कामतः = जो काम-वश मरे हुये भाई की स्त्री से प्रेम करे।

(६) 'साधु' और 'असाधु' शब्दों के योग में भी सप्तमी का प्रयोग होता है। यथा—

(क) साधुः कृष्णो **मातरि**=माता के प्रति कृष्ण का व्यवहार अच्छा है।

(ख) असाधुर्मातुले कृष्णः = कृष्ण का व्यवहार अपने मामा के प्रति ठीक नहीं है।

७. यदि किसी प्रयोजन के लिये किसी काम को किया जाता है और उस प्रयोजन का उस कर्म के 'आधार' के साथ घनिष्ट सम्बन्ध होता है तो उस प्रयोजन में सप्तमी का प्रयोग होता है। यथा—

चर्मणि द्वीपिनं हन्ति **दन्तयो**र्हन्ति कुञ्जरम्।
केशेषु चमरीं हन्ति **सीम्नि** पुष्कलको हतः॥

(लोग चीते को **खाल के लिये** मारते हैं और हाथी को **दाँतों के लिये**। चमरी मृग को उसके **बालों के लिये** मारते हैं और कस्तूरी मृग को **कस्तूरी के लिये**)।

८. निम्नस्थ शब्दों के योग में विकल्प से षष्ठी या सप्तमी का प्रयोग किया जाता है:—

स्वामी, ईश्वर, अधिपति, दायाद (=उत्तराधिकारी), साक्षिन (=गवाह), प्रतिभू (=जमानत) आदि। यथा—

(१) **गवां गोषु** वा स्वामी = गायों का मालिक।
(२) **पृथिव्याः पृथिव्यां** वा ईश्वरः = पृथ्वी का स्वामी।
(३) **ग्रामाणां ग्रामेषु** वा अधिपतिः = गाँवों का मालिक।
(४) **पित्रंशस्य पित्रंशे** वा दायादः=पिता के हिस्से का उत्तराधिकारी।
(५) **व्यवहारस्य व्यवहारे** वा साक्षी = मुकदमे में गवाह।
(६) **दर्शनस्य दर्शने** वा प्रतिभूः = देखने के लिये जमानत।

द्वितीयोऽध्यायः

[क] संस्कृत में अनूदित कुछ आदर्श वाक्य

अभ्यास १

[लट् लकार = वर्तमान काल]

१. वह पढ़ता है = सः पठति ।
२. वह पढ़ती है = सा पठति ।
३. वह खाता है = सः खादति ।
४. वह खाती है = सा खादति ।
५. तुम खाते हो = त्वं खादसि ।
६. तुम खाती हो = त्वं खादसि ।
७. मैं पढ़ता हूँ = अहं पठामि ।
८. मैं पढ़ती हूँ = अहं पठामि ।
९. आप खाते हैं = भवान् खादति ।
१०. आप खाती हैं = भवती खादति ।
११. कौन बुलाता है ? = कः आह्वयति ?
१२. वह क्यों मुझे बुलाती है ? = सा कथं मां आह्वयति ?
१३. क्या जपती हो ? = त्वं किं जपसि ?
१४. मैं कुछ नहीं जपती हूँ = अहं न किञ्चित् जपामि ।
१५. तुम क्या पढ़ती हो ? = त्वं किं पठसि ?
१६. घोड़ा दौड़ता है = अश्वः धावति ।
१७. कल्लू आम चूसता है = कल्लूः आम्रं चूषति ।
१८. विनोदिनी चना चबाती है = विनोदिनी चणकं चर्वति ।
१९. क्यों हँसते हो ? = कथं हससि ?
२०. आप क्या चाहते हैं ? = भवान् किं इच्छति ?
२१. ओले गिरते हैं = वर्षोपलाः पतन्ति ।

२२. मास्टर साहब कुछ बोलते हैं = अध्यापकमहोदयः किमपि वदति ।
२३. यह क्या कहती है ? = इयं किं कथयति ?
२४. वहाँ क्या होता है ? = तत्र किं भवति ?
२५. शेर गरजता है = सिंहः गर्जति ।

अभ्यास २

[लङ् लकार = भूतकाल]

१. उसने पढ़ा = सः अपठत् ।
२. कुत्ता क्यों भूँका ? = कुक्कुरः कथं अबुक्कत् ?
३. तुम क्यों हँसे ? = त्वं कथं अहसः ?
४. आप कहाँ से आईं ? = भवती कुतः आगच्छत् ?
५. मैं प्रयाग से आई हूँ = अहं प्रयागात् आगच्छम् ।
६. उसने जो चाहा सो पाया = सः यद् ऐच्छत् तत् प्राप्नोत् ।
७. तुमने कहाँ तक पढ़ा है ? = त्वं कियद् अपठः ?
८. जनता नहीं समझती कि तुमने क्या कहा ? = जनता न जानाति यत् त्वं किं अकथयः ?
९. वह वहाँ क्यों ठहरा ? = एषः तत्र कथं अतिष्ठत् ?
१०. आपने क्या खाया ? = भवान् किं अखादत् ?
११. मैंने कुछ नहीं खाया = अहं किमपि न अखादम् ।
१२. जब मैंने चाहा तब नहीं पाया = यदा अहम् ऐच्छम् तदा न प्राप्नवम् ।
१३. ईश्वर ने जो किया, अच्छा किया = ईश्वरः यद् अकरोत्, उत्तमं अकरोत् ।
१४. मैंने साधु के पैर नहीं छुवे = अहं साधोः पादं न अस्पृशम् ।
१५. तुम कहाँ गयी थीं ? = त्वं क्व आगच्छः ?
१६. तुमने किसको बुलाया ? = त्वं कं आह्वयः ?
१७. तुमने कुछ सुना है ? = त्वं किमपि अशृणोः ?
१८. जो पैदा किया सो खा लिया = यद् अर्जयम्, तद् अखादम् ।
१९. कुछ याद किया है ? = किञ्चित् स्मरः !
२०. सब भूल गया हूँ = अहं सर्वं व्यस्मरम् ।

अभ्यास ३

[लृट् लकार = भविष्यत् काल]

१. वह पढ़ेगा = सः पठिष्यति ।
२. तू जायेगा = त्वं गमिष्यसि ।
३. मैं आऊँगा = अहं आगमिष्यामि ।
४. वह देखेगा = स द्रक्ष्यति ।
५. राम धनुष तोड़ेंगे = रामः चापं त्रोटयिष्यति ।
६. वे दोनों गीता पढ़ेंगे = तौ गीतां पठिष्यतः ।
७. हम दान करेंगे = वयं दानं करिष्यामः ।
८. किसान खेत सींचेंगे = कृषकाः क्षेत्राणि सेक्ष्यन्ति ।
९. वह पानी पियेगा = सः जलं पास्यति ।
१०. मैं कानपुर जाऊँगा = अहं कान्यकुब्जपुरं गमिष्यामि ।

अभ्यास ४

[लोट् लकार = आज्ञावाचक]

१. वह पुस्तक पढ़े = सः पुस्तकं पठतु ।
२. तू गाँव को जा = त्वं ग्रामं गच्छ ।
३. मैं खाना खाऊं = अहं भोजनं खादानि ।
४. तुम सब काम करो = यूयं कार्यं कुरुत ।
५. इसे इनाम दो = अस्मै पुरस्कारं यच्छ ।
६. इस घड़े से जल लाओ = अनेन घटेन जलं आनय ।
७. अपने पिता की सेवा करो = स्वपितरं सेवस्व ।
८. हम सब सेवा करें = वयं सेवामहे ।
९. तुम्हारा कल्याण होवे = तव कल्याणं अस्तु ।
१०. राजा मुझे धन देवे = राजा मह्यं धनं ददातु ।
११. हम सोवे = वयं शयामहै ।
१२. लड़का खिलौना खेले = बालकः क्रीडनकं खेलतु ।

अभ्यास ५

[विधिलिङ् = चाहिये]

१. उसे पढ़ना चाहिये = सः पठेत् ।
२. तुम्हें लिखना चाहिये = त्वं लिखेः ।
३. मुझे गुरु को नमस्कार करना चाहिये = अहं गुरुं नमेयम् ।
४. शिष्य से हार की इच्छा करनी चाहिये = शिष्यात् पराभवं इच्छेत् ।
५. सम्पत्ति में खुश न होना चाहिये = सम्पत्तौ न हृष्येत् ।
६. स्त्रियों पर क्रोध नहीं करना चाहिये = स्त्रीभ्यः न क्रुध्येत् ।
७. तुम्हें शत्रुओं से युद्ध करना चाहिये = यूयं शत्रुभिः युध्येध्वम् ।
८. विद्वानों की सभा में मूर्खों को चुप रहना चाहिये = पण्डितानां समाजे मूर्खाः मौनं भजेयुः ।
९. दुष्ट मनुष्य को भलाई करके शान्त करना चाहिये = दुर्जनः उपकारेण शाम्येत् ।
१०. हमें रस्सी को साँप नहीं मान लेना चाहिये = वयं रज्जुं सर्पं न मन्येमहि ।

अभ्यास ६

[सर्वनाम]

१. सूर्य किस दिशा में हैं = सूर्यः कस्यां दिशायां वर्तते ?
२. उसका वर्ताव कैसा है ? = तस्य व्यवहारः कीदृशः अस्ति ?
३. इस पेड़ का फल कड़ुआ है = अस्य वृक्षस्य फलं कटु अस्ति ।
४. आपकी भाभी कहाँ हैं ? = भवतः प्रजावती कुत्र वर्तते ?
५. इस लड़की की आयु क्या है ? = अस्याः कन्यायाः आयुः किमस्ति ?
६. मेरा यहाँ कोई नहीं है = मम इह कोऽपि नास्ति ।
७. आपके साथ कौन है ? = भवता सह कोऽस्ति ?
८. जिस समय रावण था उस समय त्रेतायुग था = यस्मिन् समये रावणः आसीत् तस्मिन् समये त्रेतायुगम् आसीत् ।
९. आपके पीछे कोई है = भवतः पृष्ठतः कश्चिद् वर्तते ।
१०. वह चिट्ठी किस किताब में है ? = तत् पत्रं कस्मिन् पुस्तके अस्ति ?

अभ्यास ७

[रहा-रहे-रही]

१. वह पढ़ रहा है = सः पठन् अस्ति ।
२. वह पढ़ रही है = सा पठन्ति अस्ति ।
३. तुम पढ़ रहे हो = त्वं पठन् असि ।
४. तुम पढ़ रही हो = त्वं पठन्ती असि ।
५. मैं पढ़ रही हूँ = अहं पठन्ती अस्मि ।
६. मैं पढ़ रहा हूँ = अहं पठन् अस्मि ।
७. वह पढ़ रहा था = सः पठन् आसीत् ।
८. वह पढ़ रही थी = सा पठन्ती आसीत् ।
९. तुम पढ़ रहे थे = त्वं पठन् आसीः ।
१०. तुम पढ़ रही थी = त्वं पठन्ती आसीः ।
११. मैं पढ़ रहा था = अहं पठन् आसम् ।
१२. मैं पढ़ रही थी = अहं पठन्ती आसम् ।
१३. वह पढ़ रहा होगा = सः पठन् भविष्यति ।
१४. वह पढ़ रही होगी = सा पठन्ती भविष्यति ।
१५. तुम पढ़ रहे होगे = त्वं पठन् भविष्यसि ।
१६. तुम पढ़ रही होगी = त्वं पठन्ती भविष्यसि ।
१७. मैं पढ़ रहा हूँगा = अहं पठन् भविष्यामि ।
१८. मैं पढ़ रही होऊँगी = अहं पठन्ती भविष्यामि ।

अभ्यास ८

('बालक' शब्द के रूप)

[कर्त्ता]

१. वह लड़का कहाँ जाता है ? = स **बालकः** कुत्र गच्छति ।
२. वे दो लड़के किताब पढ़ते हैं = तौ **बालकौ** पुस्तकं पठतः ।
३. ये लड़के फूल सूंघते हैं = इमे **बालकाः** पुष्पाणि जिघ्रन्ति ।

[कर्म]

१. मैं एक लड़के को देखता हूं = अहं एकं **बालकं** पश्यामि ।

२. वह दो लड़कों को बुलाती है = सा **बालकौ** आह्वयति ।

३. महेश लड़कों को मारता है = महेशः **बालकान्** प्रहरति ।

[करण]

१. सुशीला एक लड़के के साथ नाचती है = सुशीला एकेन **बालकेन** सह नृत्यति ।

२. ओमी दो लड़कों के साथ खेलता है = ओमी **बालकाभ्यां** सह क्रीडति ।

३. पुष्पा चार लड़कों के साथ गाती है = पुष्पा चतुर्भिः **बालकैः** सह गायति ।

[सम्प्रदान]

१. राम उस लड़के के लिये फल लाता है = रामः तस्मैः **बालकाय** फलं आहरति ।

२. वेला दो लड़कों को मिठाई देती है = वेला **बालकाभ्यां** मिष्ठान्नं ददाति ।

३. लड़कों को लड्डू बहुत अच्छे लगते हैं = **बालकेभ्यः** मोदकानि बहु रोचन्ते ।

[अपादान]

१. सीता किस लड़के से घृणा करती है ? = सीता कस्मात् **बालकात्** जुगुप्स्यते ?

२. उन दो लड़कों के बिना मजा नहीं आता = ताभ्यां **बालकाभ्यां** विना मोदः न जायते ।

३. बिल्ली सभी लड़कों से डरती है = बिडाली सर्वेभ्यः **बालकेभ्यः** बिभेति ।

[सम्बन्ध]

१. शैला इस लड़के की बहन है=शैला अस्य **बालकस्य** भगिनी अस्ति ।
२. ये उन दो लड़कों की किताबें हैं=इमानि तयोः **बालकयोः** पुस्तकानि सन्ति ।
३. गोपाल लड़कों के फल चुरा लेता है=गोपालः **बालकानां** फलानि अपहरति ।

[अधिकरण]

१. रणधीर इस लड़के से स्नेह करता है=रणधीरः अस्मिन् **बालके** स्निह्यति ।
२. उन दोनों लड़कों में से प्रदीप अधिक चंचल है=तयोः **बालकयोः** प्रदीपः चपलतरोऽस्ति ।
३. सभी लड़कों में से अनिल श्रेष्ठ होगा=सर्वेषु **बालकेषु** अनिलो श्रेष्ठो भविता ।

[सम्बोधन]

१. हे बालक ! इधर आओ=**हे बालक !** अत्रागच्छ ।
२. हे दो बालकों ! एक निबन्ध लिखो=**हे बालकौ !** निबन्धमेकं लिखतम् ।
३. हे बालकों ! अपनी किताब पढ़ो=**हे बालकाः !** स्वपुस्तकं पठत ।

अभ्यास ९

[कुछ धातुयें]

१. गोपी कृष्ण को सुलाती है=गोपी कृष्णं शाययति ।
२. गायक स्वरों को बदलता है=गायकः स्वरान् विकुरुते ।
३. दो दीपक एक दूसरे का उपकार नहीं करते=न हि प्रदीपौ परस्परस्य उपकुरुतः ।
४. लक्ष्मी वही है जिससे कि दूसरे का भला किया जाय=सा लक्ष्मीः उपकुरुते यया परेषाम् ।
५. सांड़ प्रसन्न होकर जमीन खोदने लगता है=अपस्किरते वृषो हृष्टः ।

६. हाथी धूल बिखेरता है = गजो धूलि अपकिरति ।
७. महल की छत से धुँआ उठता है = हर्म्यतलात् धूमः आक्रामति ।
८. चोर सिपाही को धोखा देता है = चोरं यामिकं गर्द्धयते ।
९. वह कुत्ते को लालची बनाता है = सः श्वानं गर्द्धयति ।
१०. बच्चा कौर को निगल जाता है = बालः ग्रासं संगिरति ।
११. चारण अपने स्वामी के गुणों का बखान करता है=चारणः स्वस्वामिनः गुणाः संगिरते ।
१२. पिशाच खून पीता है = पिशाचः अवगिरते शोणितम् ।
१३. भाप ऊपर उठती है = वाष्पः उद्गच्छति ।
१४. विद्यार्थी पढ़ने से थक जाता है = छात्रः अध्ययनात् पराजयते ।
१५. सुनार सोने को तपाता है = सुवर्णकारः सुवर्णं उत्तपति ।
१६. बन्दर अपना मुँह खोलता है = वानरः मुखं व्याददाति ।
१७. पिता अपनी लड़की को देखना चाहता है=पिता स्वकन्यकां दिदृक्षते।
१८. योधा लड़ाई के लिये तैयार होता है = योधः युद्धाय सन्नह्यते ।
१९. वह मजदूरों को नौकर रखता है = सः कर्मकरान् उपनयते ।
२०. शिष्य गुरु के क्रोध को दूर करता है=गुरोः क्रोधं विनयति शिष्यः ।

अभ्यास १०

[कुछ धातुयें]

१. वह सरकता है = सः सरति ।
२. मैं छूता हूँ = अहं स्पृशामि ।
३. तुम पूँछते हो = त्वं पृच्छसि ।
४. वे दोनों क्रोध करते हैं = तौ कुप्यतः ।
५. मनुष्य लोभ करते हैं = नराः लुभ्यन्ति ।
६. वे सब पुष्ट होते हैं = ते पुष्यन्ति ।
७. हम सब सूखते हैं = वयं शुष्यामः ।
८. सीता कपड़ा धोती है = सीता वस्त्रं क्षालयति ।
९. तुम कष्ट देते हो = त्वं तुदसि ।

१०. वह प्रसिद्ध करती है = सा प्रथयति ।

११. लड़के आनन्दित होते हैं = कालकाः माद्यन्ति ।

१२. तुम थकते हो = त्वं श्राम्यसि ।

१३. घी पिघलता है = घृतं द्रवति ।

१४. वह फेंकता है = सः अस्यति (क्षिपति) ।

१५. लुटेरे लूटते हैं = लुण्टाकाः लुण्ठन्ति ।

१६. हम दुःख देते हैं = वयं पीडयामः ।

१७. वह बकवास करता है = सः जल्पति ।

१८. माता आलिंगन करती है = माता श्लिष्यति ।

१९. पथिक थकता है = पथिकः क्लाम्यति ।

२०. मैं प्रसन्न करता हूँ = अह प्रीणयामि ।

२१. वे नष्ट होते हैं = ते क्षयन्ति ।

२२. हम दोनों पास जाते हैं = आवां उपगच्छावः ।

२३. वह दूर करता है = सः अपनयति ।

२४. मैं ऊपर उठता हूँ = अहं उत्पतामि ।

२५. मैं कूदता हूँ = अहं कूर्दामि ।

२६. वह उत्तर देता है = सः प्रतिवदति ।

२७. वे दोनों पाते हैं = तौ अधिगच्छतः ।

२८. वह सामने जाता है = सः अभिगच्छति ।

२९. राम उत्तर देता है = रामः प्रतिभाषते ।

३०. वे अलग होते हैं = ते विश्लिस्यन्ति ।

३१. यह मिलता-जुलता है = इदं सङ्गच्छते ।

३२. दुःख दूर होते हैं = दुःखानि गलन्ति ।

३३. चोर धन चुराता है = चोरः धनं चोरयति ।

३४. योद्धा बाण चलाता है = योधः बाणं क्षिपति ।

३५. वीर बाण चलाता है = शरमस्यति वीरः ।

३६. बेटा बाप को तसल्ली देता है = पुत्रः जनकं सान्त्वयति ।

३७. कौवा बलि को खाता है = काकः बलिं खादति ।

३८. सुनार सोना तौलता है = स्वर्णकारः सुवर्णं तोलयति ।
३९. मूर्ख बकवाद करते हैं = मूढाः जल्पन्ति ।
४०. लोग राजा को प्रसन्न करते हैं = नृपतिं प्रीणयन्ति ।

अभ्यास ११

[संज्ञा-जनित क्रियाओं के कुछ प्रयोग]

१. मोहन पट-पट शब्द करता है = मोहनः पटपटायते (पटपटा) ।
२. बेल हरी हो रही है = लता हरितायते (हरित) ।
३. अस्त होता हुआ सूर्य लाल हो रहा है = अस्तयान् रविः लोहितायते (लोहित) ।
४. घोड़ा पूँछ उठा रहा है = अश्वः उत्पुच्छयते (पुच्छ) ।
५. महरा बर्तन इकट्ठा कर रहा है = पात्रमार्जकः सम्भाण्डयते (सम + भाण्ड) ।
६. नाई माणवक के बाल बनाता है = छुरिकः नापितः वा माणवकं मुण्डयति (मुण्ड) ।
७. रसोइया खाने में नमक मिलाता है = पाचकः व्यञ्जनं लवणयति (लवण) ।
८. मेरी माँ दूध पीकर ही रहने का व्रत लेती हैं = मम माता पयः व्रतयति (व्रत) ।
९. किसान हल चलाता है = कृषकः हलयति (हल) ।
१०. राम झगड़ा करता है = राम कलयति (कलि = झगड़ा) ।
११. बालिका वीणा के साथ ही गाती है = बालिका उपवीणयति (वीणा) ।
१२. बन्दर अपनी देह खुजलाता है = वानरः स्वगात्रं कण्डूयते वा (कण्डू = खुजली) ।
१३. वह द्वेष करता है = सः असूयति असूयते वा (असु = द्वेष, वैर) ।
१४. पुजारी पूजा करता है = पूजकः सपर्यति (सपर्या = पूजनसामग्री) ।
१५. वैद्य दवा करता है = वैद्यः भिषज्यति (भिषज् = दवा) ।
१६. प्रातःकाल होता है = उषस्यति (उषस् = प्रातःकाल) ।

१७. बच्चे की लीलाओं से माता सुखी होती है = बाललीलाभिः माता सुखायते (सुख)।

१८. पुत्र के आचरण को देख कर पिता दुःखी होता है = पुत्राचरणं विलोक्य पिता दुःखायते (दुःख)।

१९. विद्वान् सभी जगह पूजा जाता जाता है = विद्वान् सर्वत्र महीयते (मही)।

२०. चोर गायब हो जाता है = चौरः तिरस्यति (तिरस)।

अभ्यास १२

[प्रेरणार्थक क्रियायें]

१. तुम्हें कौन पढ़ाता है ? = कस्त्वां पाठयति ।

२. माँ बच्चे को चलाती है = माता शिशुं चालयति ।

३. गाय बछड़े को दूध पिलाती है = धेनुः वत्सं पयः पाययति ।

४. तुम्हें कौन भेजता है = कः त्वां गमयति व्राजयति वा ।

५. ईश्वर मुझे व्यर्थ जिलाता है = ईश्वरः मां व्यर्थमेव जीवयति ।

६. पेड़ से फल मत गिराओ = वृक्षात् फलानि मा पातय ।

७. यहाँ पर कुआँ मत खुदवाओ = अत्र कूपं मा खानय ।

८. राम ने लक्ष्मण से तप करवा कर मेघनाथ का वध करवाया = रामः लक्ष्मणेन तपः कारयित्वा मेघनाथस्य वधं अकारयत् ।

९. बछड़े को दूध पिलाने के लिये गाय वहाँ गई = वत्सं दुग्धं पाययितुं धेनुः तत्र गता ।

१०. तुम मुझे कुछ भी नहीं दिलाते हो = त्वं मह्यं किमपि न दापयसि ।

११. जब तुम सुनाओगे तब सुनूँगा, जब दिखाओगे तब देखूँगा = यदा त्वं श्रावयिष्यसि तदा श्रोष्यामि, यदा दर्शयिष्यसि तदा द्रक्ष्यामि ।

१२. प्रबन्धक राम को उठाता है और कृष्ण को बैठाता है = प्रबन्धकः रामं उत्थापयति कृष्णं च उपवेशयति ।

१३. आप अपनी बहन को भेज दीजिये = भवान् स्वभगिनीं प्रेषयतु ।

१४. मैं तुम्हें नहीं छुआता हूँ = अहं त्वां न स्पर्शयामि ।

१५. इस सन्दूक को मजदूर से लिवा जाकर घर में रक्खूंगा=इमां मञ्जूषां भारवाहेन श्रमिकेन वा नाययित्वा गृहे स्थापयिष्यामि ।

अभ्यास १३

[क्त प्रत्यय]

१. किसने हँसा ? = केन हसितम् ?
२. वाल्मीकि ने सीता को देखा = वाल्मीकिना सीता दृष्टा ।
३. आपने जल पिया = भवता जलं पीतम् ।
४. दशरथ ने राम को बुलाया = दशरथेन रामः आहूतः ।
५. मैंने अभी तक कुछ नहीं खाया = मया अद्युनावधि किमपि न खादितम् ।
६. जिसने वेद पढ़ा वह विद्वान् हुआ = येन वेदः पठितः स विद्वान् अभवत् ।
७. तुमने अभी तक पत्र नहीं लिखा = त्वया अद्युनावधि पत्रं नैव लिखितम् ।
८. उसने कहा, पर किया नहीं = तेन कथितं परन्तु कृतं नैव ।
९. राम ने जब सारी विद्या पढ़ ली तब वह घर आ गये = रामेण यदा सर्वा विद्या पठिता तदा सः गृहं आगतः ।
१०. मैंने माँ से सभी कुछ कह दिया = मया अम्बा सर्वमेव कथिता ।

अभ्यास १४

[क्त प्रत्यय सम्बन्धी वाक्य]

१. मर जाओ = क्षीणायुः क्षितायुः वा भव ।
२. यह तपस्वी बहुत दुबला हो गया है = क्षीणः क्षतः वा अयं तपस्वी
३. आग बुझ गई = निर्वाणोऽग्निः ।
४. यह वह स्थान है जहाँ कृष्ण बैठा करते थे=इदं कृष्णस्य आसितम् ।
५. यह वह मार्ग है, जिधर से राम गये थे = इदं रामस्य यातम् ।
६. बच्चा म्लान हो गया है = म्लानो बालः ।

७. लक्ष्मण राम के पीछे पैदा हुये = रामं अनुजातो लक्ष्मणः ।
८. विष्णु गरुड़ पर चढ़े = गरुडमारूढो हरिः ।
९. कृष्ण शेष नाग पर सोये = शेषं अधिशायितः कृष्णः ।
१०. मेरी माँ ने एकादशी के दिन उपास किया = एकादशीं उपोषिता मे जननी ।

अभ्यास १५

[प्रत्यय सम्बन्धी वाक्य]

"क्त, क्तवतु, तुमुन"

१. कुम्हार ने घड़ा बनाया = कुम्भकारेण घटः **कृतः** ।
२. जुलाहे ने साड़ी बनाई = तन्तुवायेन शाटी **निर्मिता** ।
३. राम ने फल खाया = रामेण फलं **भक्षितम्** ।
४. मैंने कहा = मया **कथितम्** ।
५. बन्दर पहाड़ पर चढ़ गया = वानरः पर्वतं **आरूढः** ।
६. मेरी कलम कहाँ चली गई ? = क्व **गता** मे लेखिनी ।
७. कुम्हार ने घड़ा बनाया = कुम्भकारः घटं **कृतवान्** ।
८. वे दोनों फल लाये = तौ फलानि **आनीतवन्तौ** ।
९. नहा कर तू यहाँ आ = **स्नात्वा** त्वं अत्र आगच्छ ।
१०. सिद्धार्थ घोड़े पर चढ़ कर वन को गया = सिद्धार्थः अश्वं **आरुह्य** वनं **गतः** ।
११. शत्रुओं को जीत कर राजा लौट रहा है = शत्रून् **विजित्य** निवर्तते राजा ।
१२. योगी इन्द्रियों को जीतने के लिये प्रयत्न करता है = योगी इन्द्रियाणि **जेतुं** यतते ।
१३. मैं स्नान करने के लिये नदी पर जाता हूँ = अहं **स्नातुं** नदीं गच्छामि ।
१४. झोपड़ी में घुस कर वह मर गया = उटजं **प्रविश्य** स **मृतः** ।
१५. मेरा घोड़े पर बैठने का विचार हो गया है अश्वं आरोढुं मे मतिजाता ।

१६. पथिक आधा रास्ता पार करके आराम करता है = पान्थः मार्गार्धं अतिक्रम्य श्राम्यति ।

१७. देवदत्त जल में डूब गया = जले निमग्नः देवदत्तः ।

१८. गोपाल दलदल में पड़ी गाय को छुड़ाता है = गोपालः पङ्के पतितां धेनुं उद्धरति ।

१९. प्रतिदिन प्रातःकाल उठ कर पढ़ाई शुरू करनी चाहिये = प्रत्यहं प्रातरुत्थाय अध्ययनं आरभेत् ।

२०. जनक ने राम आदि को बुलाने के लिये दूत भेजे = जनकः रामादीन् आनेतुं दूतान् प्रहितवान् ।

२१. राजा ने बहुत से कुयें और तालाब खुदवाये = नृपतिना बहवः कूपाः तडागाश्च खाताः ।

२२. वन से लौट कर राम ने राज्य करना प्रारम्भ किया = वनात् प्रतिनिवृत्य रामो राज्यं कर्तुं आरभत ।

२३. दलदल में फँसा हुआ हाथी मर गया=पङ्के निमग्नः कुञ्जरो मृतः ।

२४. राजा शिकार करने के लिये घोड़े पर चढ़ कर वन को गया = अश्वं आरुह्य राजा मृगयां कर्तुं वनं गतः ।

२५. पृथ्वी पर चरने के लिये घोड़ा छोड़ दिया गया = पृथिव्यां चरितुं अश्वो मुक्तः ।

अभ्यास १६

[मुहावरेदार प्रयोग]

१. दिन ढल गया = परिणतो दिवसः ।

२. आप कुशल से तो हैं = अपि कुशलं भवतः ?

३. घने अन्धकार में कहाँ जा रहे हो = सूचीभेद्ये तमसि क्व यासि ?

४. समय जानने के लिये वह बाहर आया = वेलोपलक्षणार्थं स बहिरागतः ।

५. हमें चाहिये कि हम समय के पाबन्द बनें = वयं सामयिका भवेम ।

६. वह आकाश के फूल चुनता है अर्थात् मन के लड्डू फोड़ता है = गगनकुसुमानि अवचिनोति सः ।

७. ऐसी अफवाह फैल गई = इति वार्ता प्रसृता ।
८. यह अपने को विद्वान् समझता है = पण्डितं मन्योऽयम् ।
९. मेरे सिर में दर्द है = शिरोवेदना मां बाधते ।
१०. यह बेसिर पैर की बातें मत करो = अलम् अनेन असम्बद्धेन आलापेन ।
११. वह मुझे जाने नहीं देता = मां स गन्तुं न ददाति ।
१२. जब गायें दुही जा रही थीं तब वह गया = स गोषु दुह्यमानासु गतः ।
१३. मुँह पर चाटा मारता है = मुखे चपेटां ददाति ।
१४. यह तो नाम लेते समय भूल हो गई = गोत्रस्खलितम् एतत् ।
१५. तुम देर क्यों लगा रहे हो = त्वं कथं चिरायसे ।

अभ्यास १७

[मुहावरेदार प्रयोग]

१. मैं भरसक कोशिश करूँगा = अहं **यावच्छक्यं** प्रयतिष्ये ।
२. मैं अपने आप से ही लज्जित हूँ = **स्वहृदयेनापि** जिह्रेमि ।
३. उसे मरे हुए आज दस महीने हो गये = अद्य दशमो मासः तस्योपरतस्य ।
४. तुम तो स्वभाव से ही सुन्दर हो = प्रकृत्या चारुदर्शनस्त्वम् ।
५. यह सब प्रेम के अनुरूप ही है = सदृशम् एतत्सर्वं स्नेहस्य ।
६. तुम्हें न देखे हुये बहुत समय बीत गया = महती वेला व्यतीता तव अदृष्टस्य ।
७. बस अब उलहना मत दीजिये = अलमलम् उपालम्भेन ।
८. मेरे देखते-देखते वह मर गई = पश्यतो मे सा मृता ।
९. मुझे स्वेच्छाचारी न समझिये = न मयि कामचारः शंकनीयः ।
१०. यह कोई आश्चर्य की बात नहीं = नैतच्चित्रम् ।
११. कुछ समय इन्तजार कर लीजिये = कश्चित् कालः प्रतीक्ष्यताम् ।
१२. यह ऐसा फिर कभी न करेगा = नैवं वारान्तरं स करिष्यति ।
१३. मेरा मन चञ्चल हो रहा है = दोलायते मे मनः ।

१४. कैसे जिन्दा रहूँगा = कथं जीवितं धारयिष्यामि ।
१५. मेरा हृदय बैठा जा रहा है = सीदति मे हृदयम् ।

अभ्यास १८

[मुहावरेदार प्रयोग]

१. कितने बजे हैं = का वेला वर्तते ?
२. रात कितनी बाकी है = कियदवशिष्टं रजन्याः ।
३. यह बात मेरे कान तक पहुँच गई है = इदं मे कर्णपथं आयातम् ।
४. आप क्या काम करते हैं = कां वृत्ति उपजीवित आर्यः ?
५. इस विषय में जो कुछ आप कहेंगे, वही किया जायगा = अत्र भवन्तः प्रमाणम् ।
६. मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है = मया ते किं प्रतिकूलं आचरितम् ?
७. ऊपर-ऊपर से अच्छा लगने वाला = आपातरमणीयम् ।
८. मैं स्वयं अपने वश में नहीं हूँ = न प्रभवामि आत्मनः ।
९. उसके गुणों की सीमा नहीं है = तस्य गुणानां इयत्ता न वर्तते ।
१०. गलती हर इन्सान से होती है = मनुष्याः स्खलनशोलाः ।
११. यह कोई अटूट नियम नहीं है = नायमेकान्तो नियमः ।
१२. निन्दा होती है = वाच्यतां याति ।
१३. मर गया = पञ्चत्वं गतः ।
१४. तुम्हें मैं कुछ भी नहीं समझता = त्वामहं तृणाय मन्ये ।
१५. डंडों से लड़ाई हुई = दण्डादण्डि युद्धं जातम् ।

अभ्यास १९

[विविध]

१. क्या आज्ञा है ? = का आज्ञा वर्तते ?
२. क्या दवात में पानी है ? = किं मसीपात्रे जलं अस्ति ?
३. इतनी कृपा ही बहुत है = इयती एव कृपा पर्याप्ता ।
४. यह सोना कैसा है ? इदं सुवर्णं कीदृशं अस्ति ?
५. मेरे पेट में दर्द है = मम उदरे पीडा वर्तते ।

६. तुम्हारे लड़के की संगति खराब है=तव पुत्रस्य संगतिः बहुदूषिता ।
७. यह वस्त्र कहाँ का है ? = इदं वस्त्रं कुत्रत्यम् ?
८. दाल में नमक अधिक है = द्विदले लवणं अधिकं विद्यते ।
९. क्या यह गेहूँ की रोटी है ? = किं इयं गोधूमस्य रोटिका अस्ति ?
१०. मनुष्य और स्त्री में क्या भेद होता है ? = मनुष्ये महिलायां च को भेदः ?

अभ्यास २०

[विविध]

१. क्या है ? कुछ नहीं = किमस्ति ? किंचिदपि न ।
२. कुछ तो है ही—कुछ भी नहीं=किंचितत् तु अस्त्येव—किंचिदपि न।
३. मेरा स्वभाव चिड़चिड़ा है = मम स्वभावः कोपनः ।
४. नारंगी कैसी है ?—मीठी है = नारङ्गं कीदृशम् ? मधुरं अस्ति ।
५. इस सुराही का मुख बहुत छोटा है = अस्या घटिकायाः मुखं बहु संकुचितं अस्ति ।
६. मोहन आपका कौन लगता है ? = मोहनः भवतः को भवति ?
७. पानी ठंडा है ?—है = जलं शीतलं अस्ति किम् ?—अस्त्येव ।
८. तुम्हारी परीक्षा कब होगी ?—परसों होगी = तव परीक्षा कदा भविष्यति ?—परश्वः भविष्यति ।
९. आप उदास क्यों हैं ? = भवान् उदासीनः कथम् ?
१०. कौन भाषा अच्छी है ?—संस्कृत = का भाषा श्रेष्ठा ?—संस्कृत भाषा ।

अभ्यास २१

[विविध]

१. पुस्तक कहाँ है ? = पुस्तकं कुत्र अस्ति ?
२. संदूक में है = पेटिकायां अस्ति ।
३. तुम्हारे हाथ में क्या है ? = तव करे किमस्ति ?
४. गोपाल के साथ कौन है ? सुभद्रा है । = गोपालेन सह का अस्ति ? सुभद्रा अस्ति ।

५. साबुन कहाँ है ? कुयें पर है । = फेनिलः कुत्र वर्तते ? कूपे अस्ति ।
६. तुम्हारी कन्या के साथ कोई नहीं है = तव कन्यया सह कोपि नास्ति ।
७. भक्त राम से अलग नहीं है = भक्तः रामात् पृथक् नास्ति ।
८. यदि ऐसा है तो अच्छा है = यदि एवं अस्ति तर्हि वरं अस्ति ।
९. कल्लू प्रसन्न है = कल्लूः प्रसन्नः अस्ति ।
१०. मैं उदास हूँ = अहं दुर्मनायमानो ऽस्मि ।

अभ्यास २२
[विविध]

१. गाय बछड़े को दूध पिलाती है = धेनुः वत्सं दुग्धं पाययति ।
२. राम ने लक्ष्मण से तप करवा कर मेघनाथ का वध करवाया = रामः लक्ष्मणेन तपः कारयित्वा मेघनादस्य वधं अकारयत् ।
३. मैंने अब तक कुछ नहीं खाया है = मया अधुनावधि किमपि न खादितम् ।
४. तुमने अभी दूध पिया है = त्वया अधुनैव दुग्धं पीतं अस्ति ?
५. तुमने उसे कैसे हँसा दिया ? = त्वया सः कथं हासितः ?
६. मैंने अवश्य इस स्कूल में पढ़ा होगा = मया अस्मिन् विद्यालये अवश्यं पठितं भवेत् ।
७. तुम्हें पराई औरत को नहीं देखना चाहिये = त्वया पर-स्त्री नैव दर्शनीया ।
८. यह बात कहने लायक नहीं है = एषा वार्ता भाषितव्या नास्ति ।
९. ब्राह्मण को तेल न बेचना चाहिये = ब्राह्मणेन तैलं न विक्रेतव्यम् ।
१०. क्या यह गन्ना चूसने लायक है ? = किं अयं इक्षुदण्डः चूष्यः अस्ति ?

अभ्यास २३
[विविध]

१. दूसरे की लड़की बहन के समान होती है = परकीया बालिका भगिनी तुल्या वर्तते ।

२. तुम्हारे समान इस नगर में कोई नहीं है = युष्मत्समः अस्मिन् नगरे कोऽपि नास्ति ।

३. आपका यह कहना ठीक है = भवदीयं कथनं इदं यथार्थं अस्ति ।

४. आज तुम्हारी सूरत कैसी है ? = अद्य युष्माकं आकारः कीदृशः अस्ति ?

५. आज तुम्हारा क्या हाल है ? = अद्य युष्माकं कः समाचारः ?

६. आपका नाम क्या है ? = भवतः किं नाम ?

७. क्या तुम्हारी लड़की गूंगी है ? = किं तव कन्या मूका अस्ति ?

८. क्या आप बीमार हैं ? = किं भवान् रुग्णः ?

९. आप दुवले क्यों हैं ? निर्बलः कथमस्ति भवान् ?

१०. यह औरत कितनी मोटी है = इयं स्त्री कियती स्थूला !

[ख] संस्कृत में अनूदित कुछ आदर्श वाक्य

अभ्यास १

(कारक-नियम सम्बन्धी कुछ वाक्य)

१. वह पैरों से चलता है = सः पादाभ्यां चलति ।

२. मैं फलों के लिये जाता हूँ = अहं फलेभ्यो गच्छामि ।

३. पोखरों से सुअर उठते हैं (निकलते हैं) = पल्वलेभ्यः वराहाः उत्तिष्ठन्ति ।

४. कुम्हार दण्ड से घड़ा बनाता है = कुम्भकारः दण्डेन घटं रचयति ।

५. विद्यार्थी पढ़ने के लिये यहाँ रहते हैं = छात्राः अध्ययनेन अत्र निवसन्ति ।

६. सीता रावण पर कुपित होती है = सीता रावणाय कुप्यति ।

७. हरि पर राम की मोहरें उधार हैं = हरिः निष्कान् धारयति रामाय ।

८. राजा महल से अपराधी को देखता है = नृपः प्रसादात् अपराधिनम् पश्यति ।

९. बच्चा लड्डुओं की इच्छा करता है = बालः मोदकेभ्यः स्पृहयति ।

१०. किसान तिल के बदले में उड़द देता है = कृषीवलः तिलेभ्यः माषान् प्रतियच्छति ।

११. सूर्य से संसार को सुख मिलता है = रवेः सुखं अधिगच्छति लोकः ।

१२. कलह से दुःख पैदा होते हैं = कलिभ्यः दुःखानि उद्भवन्ति ।

१३. काफिला एक द्वीप से दूसरे द्वीप में घूमता फिरता है = द्वीपाद् द्वीपं अटति सार्थः ।

१४. योद्धा पैदल सैनिकों के साथ जाता है = योधः पत्तिभिः सार्धं गच्छति ।

१५. क्रोध के कारण राम नौकर को मारता है = रामः क्रोधात् भृत्यं ताडयति ।

१६. सिपाही घोड़े से उतरता है = यामिकः अश्वाद् अवतरति ।

१७. सिंह नखों से हाथी को फाड़ डालता है = सिंहः नखैः गजान् दारयति ।

१८. बिल्ली कुत्ते से डरती है = बिडाली कुक्कुराद् बिभेति ।

१९. हाथी पहाड़ पर से गिर पड़ा = गजः पर्वतात् अपतत् ।

२०. मैं बगीचे से वापस आता हूँ = अहं उद्यानात् प्रत्यागच्छामि ।

२१. बन्दर पूँछ हिलाता है = वानरः लाङ्गूलं चालयति ।

२२. मैं हाथियों के समूह को देखती हूँ = अहं गजयूथं पश्यामि ।

२३. वन में हिंसक जन्तु घूमा करते हैं = वने श्वापदाः सञ्चरन्ति ।

२४. हम ईश्वर की कृपा से जीवित रहते हैं = वयं ईश्वरस्य प्रसादेन जीवामः ।

२५. झील में कमल पैदा होते हैं = कासारे कमलानि उद्भवन्ति ।

२६. गर्मी में सूर्य का प्रकाश प्रचण्ड हो जाता है = निदाघकाले सूर्यस्य प्रकाशः चण्डो भवति ।

२७. दुष्टों का चरित्र निन्दनीय होता है=शठानां चरितं गर्ह्यम् भवति ।

२८. कविगण विश्व में वीरों के पराक्रमों की प्रशंसा करते हैं = कवयः लोकेषु वीराणां पराक्रमान् प्रथयन्ति ।

२९. बादलों से जल की बूंदें गिरती हैं = मेघेभ्यः जलस्य बिन्दवः पतन्ति ।

३०. भौंरे फूलों की गन्ध चुराते हैं = अलयः कुसुमानां गन्धं हरन्ति ।

३१. मनुष्यों के रोग दवा से नष्ट होते हैं = मनुष्याणां अगदेन व्याधयः नश्यन्ति ।

३२. चन्द्रमा का प्रकाश लोगों के लिये आनन्दकारक होता है = चन्द्रस्य प्रकाशः जनानां आह्लादकः भवति ।

३३. योद्धा के हाथ में तलवार है = योधस्य पाणौ खड्गोऽस्ति ।

३४. मूर्ख मनुष्य साधुओं के वचनों का उल्लंघन करते हैं=मूर्खाः साधूनां वचनं अतिक्राम्यन्ति ।

३५. दो वीरों में युद्ध होता है = वीरयोः युद्धं भवति ।

३६. नदियों में गंगा श्रेष्ठ है = नदीनां गंगा श्रेष्ठा ।

३७. आचार्य जी विद्यार्थियों से स्नेह करते हैं=आचार्य छात्रेषु स्निह्यन्ति ।

३८. दो बन्दर पेड़ों से फल गिराते हैं = कपी वृक्षेभ्यः फलानि क्षिपतिः ।

३९. समुद्र का पानी खारा होता है = समुद्रस्य जलं लवणम् ।

४०. जब जब धर्म का अभाव होता है, तब तब किसी न किसी उपाय से अधर्म का नाश होता है = यदा यदा धर्मस्य अभावः भवति तदा तदा केनापि उपायेन अधर्मः नश्यति एव ।

अभ्यास २

(कुछ धातुयें)

१. कितने बजे हैं = का वेला वर्तते ।

२. भक्त मुक्ति चाहता है = भक्तः मुक्ति समीहते ।

३. गंगा प्रयाग में यमुना से मिलती है = गंगा प्रयागे यमुनया सङ्गच्छते ।

४. लोभ से बुद्धि डिग जाती है = लोभेन बुद्धिः चलति ।

५. स्त्री के नेत्रों से आंसू टपकते हैं = नार्याः नेत्राभ्यां अश्रूणि गलन्ति ।

६. अच्छे मनुष्यों का यश संसार में फैलता है = सुजनस्य कीर्तिः लोके प्रसरति ।

७. आकाश धूल से भरा जाता है = आकाशः पांशुभिः भ्रियते ।

८. शंकरजी की मूर्ति बनाई जाती है = शिवस्य प्रतिमा (प्रतिकृतिः) निर्मीयते ।

९. शत्रु की सम्पदा राजा द्वारा अधिकार में की जाती है = शत्रुसम्पदा राज्ञा अधिक्रियते ।

१०. लड़की का पति दामाद कहलाता है = कन्यायाः भर्ता जामाता इति अभिधीयते ।

११. आप किस गोत्र के हैं = भवान् कं गोत्रं सनाथीकरोति ?

१२. शेर गरजता है = सिंहः संस्वरते ।

१३. घोड़ें में बपौती के गुण आते हैं = अश्वाः पैतृकं अनुहरन्ते ।

१४. राम अपने पिता (के किसी गुण विशेष) की नकल करता है = रामः स्वपितरं अनुहरति ।

१५. कृष्ण कंस को ललकारते हैं = कृष्णः कंसं आह्वयते ।

१६. पिता पुत्र को पुकारता है = पिता पुत्रं आह्वयति ।

१७. मालिक नौकर को सान्त्वना देता है = स्वामी सेवकं उपवदते ।

१८. भिखारी दाता की प्रशंसा करता है = भिक्षुकः दातारं उपवदते ।

१९. ब्राह्मण लोग परस्पर जोरों से बातचीत कर रहे हैं = ब्राह्मणाः संप्रवदन्ते ।

२०. मुर्गे बांग दे रहे हैं = कुक्कुटाः संप्रवदन्ति ।

अभ्यास ३

(कुछ धातुयें)

१. इस प्यारे मित्र से विदा ले लो = आपृच्छस्व प्रियसखं अमुम् ।

२. राजा ने केवल पृथ्वी का ही भोग किया = पृथ्वीपालः केवला पृथ्वीमेव बुभुजे ।

३. बूढ़े आदमी को सैकड़ों दुःख भोगने पड़ते हैं = वृद्धो जनो दुःखशतानि भुङ्क्ते ।

४. राजा पृथ्वी का पालन करता है = राजा महीं भुनक्ति ।

५. पेड़ फैलता है = तरुः आयच्छते ।

६. सीता अपना हाथ फैलाती है = सीता आयच्छते स्वपाणिम् ।

७. उमा कुएँ से रस्सी खींचती है = उमा कूपाद् रज्जुं आयच्छति ।

८. तुम्हारे पिताजी कपड़े पहनते हैं = तव पिता वस्त्रं आयच्छते ।

९. मजदूर बोझा उठाता है = श्रमिकः भार उद्यच्छते ।

१०. ब्राह्मण धान इकट्ठा करता है = विप्रः व्रीहीन् संयच्छते ।

११. पुरोहित दान को स्वीकार कर लेता है = पुरोहितः दानं उपयच्छते ।

१२. जनक अपनी लड़की का विवाह करते हैं = जनकः स्वकन्यां उपयच्छते ।

१३. देवदत्त दूसरे की स्त्री को अपनी स्त्री बनाता है = देवदत्तः परस्य भार्यां उपयच्छति ।

१४. बेटा ! यह काम रहने दो = वत्स ! एतस्मात् विरम ।

१५. कुत्ता डण्डे से डराया जाता है = श्वा दण्डेन लापयते ।

१६. जटाओं के कारण मुनि का आदर किया जाता है = जटाभिः लापयते मुनिः ।

१७. मूर्खता की वजह से ब्राह्मण ठगा जाता है = मौर्ख्येण लापयते ब्राह्मणः ।

१८. वह ठग बच्चे को ठग लेता है = स धूर्तः बालं उल्लापयते ।

१९. वह बदमाश देवदत्त को ठगता है = सः धूर्तः देवदत्तं वञ्चयते ।

२० पथिक सर्प से बचता है = पान्थः अहिं वञ्चयति ।

अभ्यास ४

(संज्ञा-जनित क्रियाओं के कुछ प्रयोग)

१. अध्यापक शिष्य को पुत्र की तरह चाहता है = अध्यापकः छात्रं पुत्रीयति (पुत्र) ।

२. भिखारी अपनी झोंपड़ी को महल मानता है = भिक्षुः स्वकुट्यां कुटीं वा प्रासादीयति (प्रासाद) ।

३. राजा अपने महल को कुटी ही मानता है = राजा स्वप्रासादं कुटीयति (कुटी) ।

४. वह लोगों को आश्चर्यचकित कर देता है = स लोकान् चित्रीयते (चित्र) ।

५. मुनि तपस्या करता है = मुनिः तपस्यति (तप) ।

६. वह कृष्ण की भांति लीला करता है = सः कृष्णायते (कृष्ण) ।

७. वह एक विद्वान् की तरह काम करता है = सः विद्वायते (विद्वस्) ।

८. वह अप्सरा की तरह व्यवहार करती है = सा अप्सरायते (अप्सरस्) ।

९. वह लड़कियों की सी अदा दिखाती है = सा कुमारायते (कुमारी) ।

१०. वह हरिणी के समान आचरण करती है = सा हरिणायते (हरिणी) ।

११. वह युवती का सा दम भरती है = सा युवायते (युवति) ।

१२. वह सौत की तरह व्यवहार करती है = सा सपत्नायते सपत्नीयते वा ।

१३. वह आंसू बहाता है = सः वाष्पायते (वाष्प) ।

१४. अँगीठी गर्मी देती है = अंगारशकटिका उष्मायते (उष्मा) ।

१५. साबुन फेना देता है = फेनिलः फेनायते (फेन) ।

१६. मेरे पिता जी सुख का अनुभव करते हैं = सुखायते मम पिता (सुख) ।

१७. बादल शब्द करता है = मेघः शब्दायते (शब्द) ।

१८. मूर्ख कलह करता है = मूर्खः कलहायते (कलह) ।

१९. दुर्दिन आ रहा है = दुर्दिनायते (दुर्दिन) ।

२०. कोहरा छा रहा है = नीहारायते (नीहार) ।

अभ्यास ५

(संज्ञा-जनित क्रियाओं के कुछ प्रयोग)

१. सोमदत्त पुत्र की इच्छा करता है = सोमदत्तः पुत्रीयति (पुत्र) ।

२. भोजदेव कवि की इच्छा करते हैं = भोजदेवः कवीयति (कवि) ।

३. ग्वाला गाय की इच्छा करता है = गोपः गव्यति (गो) ।

४. प्रजा राजा की इच्छा करती है = प्रजाः राजीयन्ति ।

५. वह मधु (शहद एवं शराब) की इच्छा करता है = सः मधुस्यति मध्वस्यति वा (मधु) ।

६. बिल्ली दही की इच्छा करती है = मार्जारी दधिस्यति दध्यस्यति वा (दधि) ।

७. घोड़ी घोड़े की इच्छा करती है (भोग के लिये) = बडवा अश्वीयति (अश्व) ।

८. वह घोड़े की इच्छा करता है (रखने के लिए) = सः अश्वीयति (अश्व) ।

९. गाय सांड की इच्छा करती है (भोग के लिये)=गौः वृषस्यति (वृष) ।

१०. वह घोड़े की इच्छा करता है (रखने के लिये) = स वृषीयति (वृष) ।

११. बालक दूध की इच्छा करता है (पीने के लिये) = बालः क्षीरस्यति (क्षीर) ।

१२. ग्वाला दूध की इच्छा करता है (पाने के लिये) = गोपः क्षीरीयति (क्षीर)।

१३. वह भोजन करना चाहता है = सः अशनायति (अशन)।

१४. वह भोजन पाना चाहता है = सः अशनीयति (अशन)।

१५. वह पानी पीना चाहता है = सः उदन्यति (उदक=पानी, उदन्या= प्यास)।

१६. वह पानी लेना चाहता है = सः उदकीयति (उदक)।

१७. वह धन पाना चाहता है = सः धनायति (धन)।

१८. वह धनी होना चाहता है = सः धनीयति (धन)।

अभ्यास

(प्रेरणार्थक क्रियायें)

१. गुरु जी हमें पढ़ाते हैं = गुरुः मां पाठयति।

२. सीता पुस्तक दिखलाती है = सीता पुस्तकं दर्शयति।

३. राम मुझे आसन पर बैठाता है = रामः मां आसने आसयति।

४. वह नौकर से चावल पकवाता है = सः भृत्येन ओदनं पाचयति।

५. तुम मुझे क्यों वहाँ भेज रहे हो = त्वं किमर्थं मां तत्र गमयसि ?

६. पुरोहित धनमित्र से यज्ञ करवाता है = याजकः धनमित्रं याजयति।

७. वह अपने लड़के से भीख दिलवाता है=सः स्वपुत्रेण भिक्षां दापयति।

८. कृष्ण ने अर्जुन को अपना विराट्रूप दिखलाया = कृष्णः स्वीयं विराट्रूपं अर्जुनं अदर्शयत्।

९. धर्म धर्मशील पुरुष को स्वर्ग भेजता है = धर्मस्तु धार्मिकं स्वर्गलोकं गमयति।

१०. गर्मी में धूप शरीर को तपाती है, पसीने को पैदा करती है और प्यास को बढ़ाती है = निदाघकाले घर्मोऽङ्गानि तापयति स्वेदं प्रवर्तयति तृष्णा च परिवर्धयति।

अभ्यास ७

लट् लकार (वर्तमानकाल)

१. बादल बरसता है = मेघः वर्षति, मेघः जलं क्षरति ।

२. तुम क्या चुराते हो ? = त्वं किं चोरयसि ?

३. आप किसको बुलाते हैं ? = भवान् कं आह्वयति ?

४. मोहन जल भरता है = मोहनः जलं भरति ।

५. श्यामा जल क्यों नहीं भरती ? = श्यामा कथं जलं न भरति ।

६. मैं अभी जाता हूँ = अहं अधुनैव गच्छामि ।

७. तुम क्यों नहीं जाते हो ? = त्वं कथं न गच्छसि ?

८. बच्चा गिरता है = बालकः पतति ।

९. तुम क्या याद करती हो ? = त्वं किं स्मरसि ?

१०. जब वर्षा होती है, तब ठण्ड होती है = यदा वर्षा भवति, तदा शैत्यं भवति ।

११. गर्मी कब होती है ? = उष्णता कदा भवति ?

१२. रोटी क्या होती है ? = रोटिका किं भवति ?

१३. कुत्ता क्यों भूंकता है ? = कुक्कुरः कथं बुक्कति ?

१४. माता कहाँ घूमती है ? = माता क्व भ्रमति ?

१५. मैं व्यर्थ जीता हूँ = अहं व्यर्थं जीवामि ।

१६. क्या गिनते हो ? = त्वं किं गणयसि ?

१७. मैं राम से नहीं बोलता = अहं रामं न वदामि ।

१८. तुम मुझ से क्या कहती हो ? = त्वं मां किं कथयसि ?

१९. मैं गोपाल के साथ जाता हूँ = अहं गोपालेन सह गच्छामि ।

२०. तुम किसके लिये जल भरते हो ? = त्वं कस्मै जलं भरसि ?

२१. वह व्यर्थ में पहाड़ खोदता है = सः व्यर्थमेव पर्वतं खनति ।

२२. धोबी धोती धोता है = रजकः धौतं प्रक्षालयति ।

२३. मैं तुम्हारे साथ खेलता हूँ = अहं त्वया सह क्रीडामि ।

२४. लड़के स्कूल जाते हैं = बालकाः विद्यालयं गच्छन्ति ।

२५. जो वेद पढ़ता है, वह विद्वान् होता है = यः वेदं पठति सः विद्वान् भवति ।

अभ्यास ८

(लट् लकार = वर्तमानकाल)
(आत्मनेपद)

१. तुम लोग झूठ बोलते हो = यूयं असत्यं **भाषध्वे** ।

२. आकाश में पक्षी उड़ते हैं = आकाशे पक्षिणः **उड्डीयन्ते** ।

३. विद्या धर्म से शोभा पाती है = विद्या धर्मेण **शोभते** ।

४. डर के मारे मेरा कलेजा कांप रहा है = भयात् **वेपते** मे हृदयम् ।

५. भिखारी धनिक से पैसा माँगता है = याचकः धनिकं द्रव्यं **याचते** ।

६. बुद्धिमान लोग मोक्ष पाते हैं = बुधाः मोक्षं **विन्दन्ते** (= लभन्ते) ।

७. मित्रों की उन्नति से लोग प्रसन्न होते हैं = मित्राणां अभ्युदये नराः मोदंते ।

८. हम गुरुजनों की सेवा करते हैं = वयं गुरून् **सेवामहे** ।

९. इस बच्चे को तो दूध अच्छा लगता है = अस्मै बालकाय तु क्षीरं रोचते ।

१०. जौहरी मणियों को परखता है = मणिकारः मणीन् **परीक्षते** ।

११. साधु लोग मोक्ष के लिये यत्न करते हैं = साधवः मोक्षाय **यतन्ते** ।

१२. हवा से पेड़ कांपने लगते हैं = वातेन वृक्षाः **कम्पन्ते** ।

१३. पापी लोग बदनामी की परवाह नहीं करते = पापाः वचनीयं न **ईक्षन्ते** ।

१४. पुष्पा सदैव मधुरता से बोलती है = पुष्पा सदैव मधुरं **भाषते** ।

१५. शिक्षक लोग अनुशासन का भंग होना नहीं सहन करते = शिक्षकाः अनुशासनभङ्गं न **क्षमन्ते** ।

अभ्यास

(लङ् लकार = अनद्यतन भूतकाल)

१. मंत्रियों ने राजा से बातचीत की = सचिवाः भूपं अभाषन्त ।

२. बाघ की आवाज़ से स्त्री का हृदय कांप उठा = व्याघ्रस्य विरावेण प्रमदायाः हृदयं अवेपत ।

३. कृष्ण गोपियों के साथ यमुना किनारे क्रीड़ा किया करते थे = कृष्णः गोपीभिः सार्धं यमुनातीरे अरमत ।

४. उसने तो राजा के आगे भी झूठ बोल दी = स तु राज्ञः पुरतोऽपि असत्यं अवदत् ।

५. स्त्री की चोटी से फूल गिर पड़े = ललनायाः कबर्याः कुसुमानि असंस्रन्त ।

६. राम का रावण के साथ युद्ध हुआ = रामस्य रावणेन सह युद्धं अभवत् ।

७. मैंने अपनी गलती समझ ली = अहं स्वस्खलितं अवागच्छम् ।

८. पहले मैं कानपुर में रहता था = पुरा अहं कान्ययकुब्जपुरे अवसम् ।

९. जनक ने अपनी लड़की को बुलाया = जनकः स्वकन्यां आह्वयत् ।

१०. योधागण रथ को युद्धभूमि में ले गये = योधाः रथं समराङ्गणं अनयन् ।

११. दशरथ पुत्रशोक से मर गये = दशरथः पुत्र-शोकेन अम्रियत ।

१२. दशरथ ने राम के वियोग में प्राण त्याग दिये = दशरथः रामस्य वियोगेन प्राणान् अत्यजत् ।

१३. हमने जंगल में भैंसों को देखा = वयं अरण्ये महिषान् अपश्याम ।

१४. सांप ने उस लड़के को डस लिया = नागः तं बालं अदशत् ।

१५. तुमने कलाओं में परम प्रवीणता पा ली थी = त्वं कलासु परं प्रावीण्यं अविन्दः ।

१६. दो लड़कियाँ छाया में बैठ गईं = बालिके छायायां उपाविशताम् ।

१७. सूर्य अस्त हो गया = सूर्यः अस्तं अगच्छत् ।

१८. बादलों से जल की बूंदे गिरीं = मेघेभ्यः जलबिन्दवः अपतन् ।

१९. शिकारी ने वाण से हिरण को घायल किया = व्याधः बाणेन मृगं अविध्यत् ।

२०. व्यापारियों ने परिश्रम से बहुत धन पाया = वणिकाः परिश्रमेण प्रभूतधनं अलभन्त ।

अभ्यास १०

(लोट् लकार)

१. आप इतमिनान के साथ जाइये = स्वैरं गच्छतु भवान् ।

२. बिल्ली धीरे धीरे चूहे के पास जावे = बिडाली स्वैरं स्वैरं मूषक-समीपं गच्छतु ।

३. चकोर चांदनी का पान करें = चकोराः चन्द्रिकां पिबन्तु ।

४. पथिकजन वृक्ष की छाया में विश्राम करें = पथिकाः (पान्था) तरोः छायायां विश्राम्यन्तु ।

५. मनुष्य की व्याधियाँ नष्ट हो जायें = नराणां व्याधयः नश्यन्तु ।

६. बतलाओ कि फिर क्या हुआ = ततः किं अभवत् इति कथय ।

७. विनय-शीलता मत छोड़ो = विनयं मा त्यजत ।

८. हे चकवी ! तू अपने साथी को बुला ले = भो चक्रवाकि ! स्वसहचरं आमन्त्रयस्व ।

९. तुम सब गुरुजनों की वन्दना करो = यूयं गुरून् वन्दध्वम् ।

१०. हम लोग कीर्ति के लिये यत्न करें = वयं कीर्तये यतामहे ।

११. दो सियार मर जायें = शृगालौ म्रियेताम् ।

१२. अपराधी को कभी मत क्षमा करो = अपराधिनं कदापि मा क्षमस्व ।

१३. राजा लोग अनाज की बढ़ती से प्रसन्न होवें = नृपाः धान्यस्य समृद्धया मोदन्ताम् ।

१४. दो लड़कियाँ गाना सीखें = कन्ये गीतं शिक्षेताम् ।

१५. बावड़ी की शोभा देखो = वाप्याः शोभां प्रेक्षस्व ।

अभ्यास ११

(लृट् लकार = भविष्यत्काल)

१. मैं कानपुर जाऊँगा = अहं कान्यकुब्जपुरं गमिष्यामि ।

२. हम दोनों सेवा करेंगे = आवां सेविष्यावहे ।

३. स्त्रियाँ खिड़कियों से उत्सव को देखेंगी = नार्यः वातायनेभ्यः उत्सवं द्रक्ष्यन्ति ।

४. तुम्हारी लड़की विविध प्रकार के हुनर सीखेगी = ते कन्या विविध-कलाः शिक्षिष्यते ।

५. राम जनक की लड़की से ब्याह कर लेंगे = रामः जनकस्य कन्यां परिणेष्यति ।

६. राजा की सेना के भार से पृथ्वी काँप उठेगी = नृपतेः बलस्य भरेण मही कम्पिष्यते ।

७. दासियाँ रानी की सेवा करेंगी = दास्यः महिषीं सेविष्यन्ते ।

८. तुम सब कानपुर से कब लौटोगे = यूयं कान्यकुब्जपुरतः कदा प्रतिनिवर्तिष्यध्वे ।

९. दुष्ट मनुष्य लज्जा त्याग देगा = लज्जां त्यक्ष्यते अविनीतः ।

१०. स्त्रियाँ अटारी पर चढ़ेंगी = ललनाः प्रासादतलं आरोक्ष्यन्ति ।

११. हम विभिन्न कथाओं से रात गुजार लेंगे = वयन्तु ताभिः ताभिः कथाभिः रजनीं नेष्यामः ।

१२. तुम किस बालक को इनाम दोगे = कस्मै बालकाय पारितोषिकं दास्यसि ।

१३. हम बाणों से शत्रुओं पर प्रहार करेंगे = वयं बाणैः शत्रुन् प्रहरिष्यामः ।

१४. वे दोनों कभी भी झूठ नहीं बोलेंगे = तौ कदापि असत्यं न वदिष्यतः ।

१५. वह पानी पियेगा = सः जलं पास्यति ।

अभ्यास १२

(विधिलिङ्)

१. हमें रस्सी को साँप न समझ लेना चाहिये = वयं रज्जुं पंसन मन्येमहि ।

२. सम्पत्ति में प्रसन्न और विपत्ति में दुःखी न होना चाहिये = सम्पत्तौ न हृष्येत् विपत्तौ च न विषीदेत् ।

३. तुम्हें कभी भी ऋषियों का तिरस्कार न करना चाहिये = ऋषीन् मा कदापि अवधीरयेः ।

४. स्त्रियों पर क्रोध न करना चाहिये=स्त्रीभ्यः न क्रुध्येत् ।

५. धैर्य का सहारा लेकर तुम्हें शत्रुओं से लड़ना चाहिये = धैर्यं आश्रित्य यूयं शत्रुभिः सह युध्येध्वम् ।

६. तुम्हें अपने धर्म से विलग न होना चाहिए=त्वं स्वधर्मात् मा निवर्तेथाः ।

७. राजा लोग धर्म से पृथ्वी का शासन करें = नृपाः धर्मेण पृथिवीं शिष्युः ।

८. विद्वानों के समाज में मूर्खों को चुप रहना चाहिये = पण्डितानां समाजे मूर्खाः मौनं भजेयुः ।

९. सभी जगह से जीत की इच्छा करे किन्तु शिष्य से हार की ही इच्छा करनी चाहियें = सर्वतो जयमिच्छेत् शिष्याद् इच्छेत् पराजयम् ।

१०. दुष्ट मनुष्य को भलाई करके शान्त करना चाहिये, बुराई करके नहीं = दुर्जनः उपकारेण शाम्येत् प्रत्यपकारेण तु न ।

अभ्यास १३

पठ् धातु के सभी रूप

लट् लकार

(१) राम किताब पढ़ता है = रामः पुस्तकं **पठति** ।

(२) सीता और गीता रामायण पढ़ती हैं = सीतागीते रामायणं **पठतः** ।

(३) विद्यार्थी एक श्लोक पढ़ते हैं = विद्यार्थिनः श्लोकमेकं **पठन्ति** ।

(४) तुम क्या पढ़ते हो = त्वं किं **पठसि** ?

(५) तुम दोनों एक कथा पढ़ते हो = युवां कथामेकां पठथः ।

(६) तुम सब महाभारत पढ़ते हो = यूयं महाभारतं **पठथ** ।

(७) मैं एक गीत पढ़ता हूँ = अहं गीतिमेकां **पठामि** ।

(८) हम दोनों दशवीं कक्षा में पढ़ते हैं = आवां दशमायां कक्षायां **पठावः** ।

(९) हम सब आज कुछ भी नहीं पढ़ते = वयं अद्य किमपि न **पठामः** ।

अभ्यास १४

लिट् लकार

(१) अध्यापक ने श्लोक पढ़ा = अध्यापकं श्लोकं **पपाठ**।
(२) दोनों लड़कों ने पद्य पढ़ा = द्वौ बालकौ पद्यं **पेठतुः**।
(३) विद्यार्थियों ने पुस्तक पढ़ी = विद्यार्थिनः पुस्तकं **पेठुः**।
(४) तुमने रामायण पढ़ी = त्वं रामायणं **पेठिथ**।
(५) तुम दोनों ने यह नाटक पढ़ा = युवां नाटकमिदं **पेठथुः**।
(६) तुम सबने श्लोक पढ़ा = यूयं श्लोकं **पेठ**।
(७) मैंने श्लोक पढ़ा = अहं श्लोकं **पपाठ**।
(८) हम दोनों ने नाटक पढ़ा = आवां नाटकं **पेठिव**।
(९) हम सबने पुस्तक पढ़ी = वयं पुस्तकं **पेठिम**।

नोट :—लिट् लकार के उत्तम पुरुष का प्रयोग चित्त-विक्षेप (=अचेनावस्था) में होता है।

अभ्यास १५

लुट् लकार

(१) रमेश परसों पढ़ेगा = रमेशः परश्वः **पठिता**।
(२) वे दोनों लड़के परसों पढ़ेंगे = तौ बालकौ परश्वः **पठितारौ**।
(३) विद्यार्थी परसों पढ़ेंगे = विद्यार्थिनः परश्वः **पठितारः**।
(४) तुम परसों क्या पढ़ोगे = त्वं परश्वः किं **पठितासि** ?
(५) तुम दोनों परसों क्या पढ़ोगे = युवां परश्वः किं **पठितास्थः** ?
(६) तुम सब परसों क्या पढ़ोगे = यूयं परश्वः किं **पठितास्थ** ?
(७) मैं कल नहीं पढ़ूंगा = अहं श्वः न **पठितास्मि**।
(८) हम दोनों कल नहीं पढ़ेंगे = आवां श्वः न **पठितास्वः**।
(९) हम सब कल नहीं पढ़ेंगे = वयं श्वः न **पठितास्मः**।

अभ्यास १६

लृट् लकार

(१) रमाशंकर संस्कृत नहीं पढ़ेगा=रमाशंकरः संस्कृतं न **पठिष्यति**।
(२) वे दोनों लड़कियां बंगला पढ़ेंगी=ते बालिके बंगभाषां **पठिष्यतः**।

(३) ये छात्र अंग्रेजी पढ़ेंगे = इमे छात्राः आंग्लभाषां **पठिष्यन्ति** ।
(४) क्या तुम मृच्छकटिक पढ़ोगे = किं त्वं मृच्छकटिकं **पठिष्यसि** ?
(५) क्या तुम दोनों गीता न पढ़ोगे = किं युवां गीतां न **पठिष्यथः** ?
(६) क्या तुम लोग संस्कृत पढ़ोगे = किं यूयं संस्कृतं **पठिष्यथ** ?
(७) मैं महाभारत पढ़ूंगा = अहं महाभारतं **पठिष्यामि** ।
(८) हम दोनों इस समय नहीं पढ़ेंगे = आवां इदानीं न **पठिष्यावः** ।
(९) हम सब रामायण अवश्य पढ़ेंगे = वयं रामायणं अवश्यमेव **पठिष्यामः** ।

अभ्यास १७

लोट् लकार

(१) वह लड़की शीघ्र ही ईश्वर की स्तुति पढ़े = सा बालिका शीघ्रमेव ईशस्तुतिं **पठतु** ।

(२) मोहन और सोहन मिलकर एक श्लोक पढ़ें = मोहनसोहनौ मिलित्वा श्लोकमेकं **पठताम्** ।

(३) सब विद्यार्थी नवां पाठ पढ़ें = सर्वे छात्राः नवमं पाठं **पठन्तु** ।
(४) तुम शीघ्र एक स्तुति पढ़ो = त्वं शीघ्रं स्तुतिमेकां **पठ** ।
(५) तुम दोनों अब मेघदूत पढ़ो = युवां इदानीं मेघदूतं **पठतम्** ।
(६) तुम लोग जो मन में आवे पढ़ो = यूयं यथेच्छं **पठत** ।
(७) मैं अपनी पुस्तक पढ़ूं = अहं स्वपुस्तकं **पठानि** ।
(८) हम दोनों व्याकरण पढ़ें = आवां व्याकरणं **पठाव** ।
(९) हम लोग काव्यदीपिका पढ़ें = वयं काव्यदीपिकां **पठाम** ।

अभ्यास १८

लङ् लकार

(१) सुरेश ने इस पुस्तक को पढ़ा है अथवा सुरेश यह पुस्तक पढ़ चुका है = सुरेशः पुस्तकमिदं **अपठत्** ।

(२) उन दोनों ने रामायण पढ़ी है अथवा वे दोनों रामायण पढ़ चुके हैं = तौ रामायणं **अपठताम्** ।

(३) लड़कों ने इस काव्य को पढ़ा है अथवा लड़के इस काव्य को पढ़ चुके हैं = बालकाः काव्यमिदं **अपठन्** ।

(४) तुमने व्याकरण कब पढ़ी = त्वं व्याकरणं कदा **अपठः** ।

(५) तुम दोनों ने अपनी किताब क्यों नहीं पढ़ी = युवां स्वपुस्तकं कथं न **अपठतम्** ?

(६) तुम लोगों ने वेदान्त पढ़ा है = यूयं वेदान्तं **अपठत** ।

(७) मैंने साइन्स पढ़ी है अथवा मैं साइन्स पढ़ चुका हूँ = अहं विज्ञानं **अपठम्** ।

(८) हम दोनों ने सिद्धान्तकौमुदी पढ़ी है अथवा हम दोनों सिद्धान्तकौमुदी पढ़ चुके हैं = आवां सिद्धान्तकौमुदीं **अपठाव** ।

(९) हम सबने शृंगारतिलक पढ़ा है अथवा हम सब शृङ्गारतिलक पढ़ चुके हैं = वयं शृङ्गारतिलकं **अपठाम** ।

अभ्यास १९

लृङ् लकार

(१) यदि विद्यार्थी पढ़ता तो अवश्य पास हो जाता = विद्यार्थी **अपठिष्यत्** तदा अवश्यमेव उत्तीर्णः **अभविष्यत्** ।

(२) यदि वे दोनों विद्यार्थी पढ़ते तो अवश्य ही उत्तीर्ण हो जाते = विद्यार्थिनौ **अपठिष्यतां** तदा उत्तीर्णौ **अभविष्यताम्** ।

(३) यदि विद्यार्थी पढ़ते तो अवश्य ही पास हो जाते = विद्यार्थिनः **अपठिष्यन्** तदा उत्तीर्णाः **अभविष्यन्** ।

(४) यदि तुम पढ़ते तो अवश्य ही पास हो जाते = त्वं **अपठिष्यः** तदा उत्तीर्णः **अभविष्यः** ।

(५) यदि तुम दोनों पढ़ते तो अवश्य ही उत्तीर्ण हो जाते = युवां **अपठिष्यतं** तदा अवश्यमेव उत्तीर्णौ **अभविष्यतम्** ।

(६) यदि तुम लोग पढ़ते तो अवश्य ही पास हो जाते = यूयं **अपठिष्यत** तदा अवश्यमेव उत्तीर्णाः **अभविष्यत** ।

(७) यदि मैं पढ़ता तो अवश्य ही पास हो जाता = अहं **अपठिष्यं** तदा अवश्यमेव उत्तीर्णः **अभविष्यम्** ।

(८) यदि हम दोनों पढ़ते तो अवश्य ही पास हो जाते = आवां **अपठिष्याव** तदा अवश्यमेव उत्तीर्णौ **अभविष्याव** ।

(९) यदि हम लोग पढ़ते तो अवश्य ही उत्तीर्ण हो जाते = वयं **अपठिष्याम** तदा अवश्यमेव उत्तीर्णाः **अभविष्याम** ।

अभ्यास २०

विधिलिङ्

(१) तुम्हारा पुत्र रामायण पढ़े अथवा तुम्हारे पुत्र को रामायण पढ़नी चाहिये = तव पुत्रः रामायणं **पठेत्** ।

(२) राम और श्याम गीता पढ़ें अथवा राम और श्याम को गीता पढ़नी चाहिये = रामः श्यामश्च गीतां **पठेताम्** ।

(३) विद्वान् लोग भागवत पढ़ें अथवा विद्वान् लोगों को भागवत पढ़नी चाहिये = विद्वांसः भागवतं **पठेयुः** ।

(४) तुम अभिज्ञानशाकुन्तल पढ़ो अथवा तुम्हें अभिज्ञानशाकुन्तल पढ़नी चाहिये = त्वं अभिज्ञानशाकुन्तलं **पठेः** ।

(५) तुम दोनों व्याकरण पढ़ो अथवा तुम दोनों को व्याकरण पढ़ना चाहिये = युवां व्याकरणं **पठेतम्** ।

(६) तुम सब लोग महाभारत पढ़ो अथवा तुम सब लोगों को महाभारत पढ़नी चाहिये = यूयं महाभारतं **पठेत** ।

(७) मैं गीता पढ़ूं अथवा मुझे गीता पढ़नी चाहिये = अहं गीतां **पठेयम्** ।

(८) हम दोनों पञ्चतन्त्र पढ़ें अथवा हम दोनों को पञ्चतन्त्र पढ़नी चाहिये = आवां पञ्चतन्त्रं **पठेव** ।

(९) हम सब हितोपदेश पढ़ें अथवा हम सबको हितोपदेश पढ़नी चाहिये = वयं हितोपदेशं **पठेम** ।

अभ्यास २१

आशीर्लिङ्

(१) यह बच्चा बहुत दिनों तक पढ़े = अयं शिशुः चिरं **पठ्यात्** ।

(२) ये दोनों विद्यार्थी बहुत दिनों तक पढ़ें = इमौ छात्रौ चिरं पाठ्यास्ताम् ।

(३) तुम्हारे लड़के बहुत दिनों तक पढ़ें = तव पुत्राः चिरं **पठ्यासुः** ।

(४) तुम बहुत दिनों तक पढ़ो = त्वं चिरं **पठ्याः** ।

(५) तुम दोनों बहुत दिनों तक पढ़ो = युवां चिरं **पठ्यास्तम्** ।

(६) तुम सब बहुत दिनों तक पढ़ो = यूयं चिरं **पठ्यास्त** ।

(७) मैं बहुत दिनों तक पढ़ूँ = अहं चिरं **पठ्यासम्** ।

(८) हम दोनों बहुत दिनों तक पढ़ें = आवां चिरं **पठ्यास्व** ।

(९) हम सब बहुत दिनों तक पढ़ें = वयं चिरं **पठ्यास्म** ।

अभ्यास २२

सर्वनाम

(१) इस घर में कौन रहता है = अस्मिन् गृहे को वसति ?

(२) यह किसकी पुस्तक है = इदं कस्य पुस्तकं अस्ति ?

(३) आप कहाँ से आये हैं = कस्मात् आगतो भवान् ?

(४) किस देवता को नमस्कार है = कस्मै देवाय नमः ?

(५) तुम किस वजह से नहीं आये = केन कारणेन नागतस्त्वम् ?

(६) ये घोड़े तेज दौड़ते हैं = अमी अश्वाः तूर्णं धावति ।

(७) ये कमलिनी के फूल बड़े सुन्दर हैं = अमूनि नलिनानि शोभनानि सन्ति ।

(८) तुम इस देवदारु को देखते हो = त्वं अमुं देवदारुवृक्षं पश्यसि ।

(९) इस विद्यार्थी को इनाम दो = अस्मै बालकाय पारितोषिकं प्रयच्छ ।

(१०) उसी दिन वह मर गया = तस्मिन् एव दिवसे स मृतः ।

(११) इस नगरी में चोर नहीं रहते = अस्यां नगर्यां चौराः न वसन्ति ।

(१२) इन स्त्रियों में से तुम्हें कौन अच्छी लगती है = अमूषां ललनानां मध्ये का रोचते तुभ्यम् ?

(१३) इस आसन पर बैठ जाइये = इदं आसनं अलंक्रियताम् ।

(१४) इन दोनों कन्याओं का साथ मुझे अच्छा लगता है = अनयोः कन्ययोः सङ्गत मे रोचते ।

(१५) ये हिरन चरना छोड़कर रो रहे हैं = एते रुदन्ति हरिणाः हरितं विमुच्य ।

(१६) तुम दोनों में से कौन बलवान् है = युवयोः को बलवत्तरो विद्यते ?

(१७) ये लड़कियाँ नाचती हैं = इमाः बालिकाः नृत्यन्ति ।

(१८) इन जंगलों में शेर रहते हैं = एषु वनेषु सिंहाः निवसन्ति ।

(१९) तुम क्यों देर कर रहे हो = त्वं कथं चिरायसे ?

अभ्यास २३

संख्यावाचक शब्द

(१) एक लड़का गाता है = एकः बालकः गायति ।

(२) एक लड़की नाचती है = एका बालिका नृत्यति ।

(३) एक फल गिरता है = एकं फलं पतति ।

(४) दो लड़के हसते हैं = द्वौ बालकौ हसतः ।

(५) दो लड़कियाँ कूदतीं हैं = द्वे बालिके कूर्दतः ।

(६) दो फूल खिलते हैं = द्वे पुष्पे विकसतः ।

(७) वेद तीन होते हैं = वेदाः त्रयः सन्ति ।

(८) तीन नदियाँ बहती हैं = तिस्रः नद्यः वहन्ति ।

(९) तीन मित्र खेलते हैं = त्रीणि मित्राणि क्रीडन्ति ।

(१०) चार लड़के पढ़ते हैं = चत्वारः छात्राः पठन्ति ।

(११) चार गायें दूध देतीं हैं = चतस्रः गावः दुहन्ति ।

(१२) चार औरतें गाती हैं = चत्वारि कलत्राणि गायन्ति ।

(१३) पाँच मनुष्य यहाँ आते हैं = पञ्च मनुष्या अत्र आगच्छन्ति ।

(१४) पाँच औरतें कपड़े सिलती हैं = पञ्च स्त्रियः वस्त्राणि सीव्यन्ति ।

(१५) पाँच फ़ल पेड़ से गिरते हैं = पञ्च फलानि वृक्षात् पतन्ति ।

(१६) सुन्दरता में तीनों कन्याओं में यह श्रेष्ठ है = तिसृषु कन्यासु इयं लावण्ये श्रेष्ठा ।

(१७) इन चार फलों में से जो तुम्हें रुचे, उसे ले लो = अमीषां चतुर्णां फलानां मध्ये यत् ते रोचते तद् गृहाण ।

(१८) दशरथ के तीन रानियाँ थीं = दशरथस्य तिस्रः भार्याः आसन् ।

(१९) न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त ये छः दर्शन होते हैं = न्यायः, वैशेषिकः, सांख्यं, योगः, मीमांसा, वेदान्त इति षड् दर्शनानि सन्ति ।

(२०) आठ शरीरों से युक्त शिवजी मेरी रक्षा करें = अष्टाभिः तनुभिः प्रपन्नः शिवः मां पातु ।

(२१) ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीन वर्ण द्विजन्मा होते हैं = ब्राह्मणः, क्षत्रियः, वैश्यश्चेति त्रयो वर्णा द्विजातयः ।

(२२) चन्द्रापीड़ ने चारों विद्याओं और चौंसठ कलाओं को सीखा = चतस्रः विद्याः चतुःषष्टिः कलाश्च चन्द्रापीडोऽशिक्षत ।

(२३) सूर्य के चार घोड़े होते हैं = सूर्यस्य चत्वारः अश्वाः सन्ति ।

(२४) गुरु की सेवा करते हुये उसके बयालीस दिन बीत गये = गुरोः सेवां कुर्वतः तस्य द्विचत्वारिंशद् अहानि व्यतीयुः ।

(२५) भादों के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को देवकी ने कृष्ण को जन्म दिया = भाद्रपदस्य अष्टम्यां तिथौ देवकी कृष्णं सुषुवे ।

अभ्यास २४

पूरणार्थक संख्या शब्द

१. रघुवंश में दश से अधिक सर्ग हैं = रघुवंशे दशाधिकाः सर्गाः सन्ति ।

२. भाइयों में राम पहले, भरत दूसरे, लक्ष्मण तीसरे और शत्रुघ्न चौथे थे = भ्रातृषु रामः प्रथमो, भरतो द्वितीयः, लक्ष्मणः तृतीयः, शत्रुघ्नश्च चतुर्थः आसीत् ।

३. दशरथ की स्त्रियों में कौशल्या पहली, कैकेई दूसरी और सुमित्रा तीसरी थी = दशरथस्य भार्यासु कौशल्या प्रथमा, कैकयी द्वितीया, सुमित्रा च तृतीया आसीत् ।

४. यह पाँचवाँ फल है = इदं पञ्चमं फलं अस्ति ।

५. राम दिन में एक बार, श्याम दो बार और मोहन तीन बार खाता है = रामः दिवा सकृद् भुङ्क्ते श्यामः द्विः मोहनश्च त्रिः ।

६. मैं उसके घर पाँच या छः बार गया = अहं तस्य गृहं पञ्चकृत्वः षट्कृत्वः वा अगच्छम् ।

७. वह महीने में चार बार पढ़ता है = सः मासस्य चतुष्कृत्वः अधीते ।

८. उसके दिल के सौ टुकड़े हो गये = सहस्रधा विदीर्णं तस्य हृदयम् ।

९. सोलह वर्ष का लड़का युद्ध में गया था = षोडशवर्षीयो बालकः युद्धस्थलं गतवान् ।

१०. सत्तर वर्ष का वह मर गया = सप्ततिवार्षिकः स मृतः ।

११. वह लगभग सात वर्ष का है = स सप्तवर्षदेशीयः अस्ति ।

१२. मैंने उसे सात बार फल गिनने को कहा = स मया सप्तकृत्वः फलानि गणयतुं आदेशितः ।

१३. उन पुस्तिकाओं में से मुझे ग्यारहवीं दे दो = तासु पुस्तिकासु एकादशी मह्यं देहि ।

१४. नौमी के दिन लोग फलाहार करते हैं = नवम्यां तिथौ लोकाः फलाहारं कुर्वन्ति ।

१५. इस गली में मेरा घर पच्चीसवाँ है = अत्र रथ्यायां मे गृहं पञ्चविंशतितमं अस्ति ।

अभ्यास २५

[विशेषण का तर-तम भाव]

१. राम कृष्ण से अच्छा है = रामात् कृष्णः साधुतरः ।

२. राम और कृष्ण में कृष्ण अच्छा है = रामकृष्णयोः कृष्णः साधुतरः ।

३. लड़कों में कृष्ण सबसे अच्छा है = बालकेषु कृष्णः साधुतमः ।

४. फूलों में शिरीष का फूल सबसे कोमल होता है = कुसुमेषु शिरीषकुसुमं मृदुतमम् ।

५. भीम दुर्योधन से अधिक बलवान थे = भीमः दुर्योधनात् बलवत्तरः आसीत् ।

६. सभी पाण्डवों में अर्जुन श्रेष्ठ था = सर्वेषु पाण्डवेषु अर्जुनः श्रेष्ठः आसीत् ।

७. अर्जुन सभी पाण्डवों में श्रेष्ठ था = अर्जुनः सर्वेभ्यः पाण्डवेभ्यः श्रेष्ठः आसीत् ।

८. पक्षियों में कौआ सबसे चालाक होता है=खगेषु काकः पटुतमः भवति ।

९. मेरी लाठी अधिक लम्बी है = मम यष्टिका दीर्घतरा विद्यते ।

१०. लड़कों में मोहन सबसे दुबला है=बालकेषु मोहनः कृशतमः अस्ति ।

११. सभी भाइयों में मैं सबसे छोटा हूँ = सर्वेषु भ्रातृषु अहं कनिष्ठः ।

१२. तुम्हारा बोझा सबसे भारी है = तव भारः गुरुतमः ।

१३. मेरा कलम तुम्हारे कलम से छोटा है = मे लेखिनी तव लेखिन्याः ह्रस्वतरा ।

१४. इन दोनों लड़कों में यह छोटा है = अनयोः, बालकयोः अयं; लघुतरः ।

१५. दशरथ की पत्नियों में कौशल्या सबसे बड़ी और सुमित्रा सबसे छोटी थी=दशरथस्य पत्नीषु कौशल्या ज्येष्ठा सुमित्रा च कनिष्ठा आसीत् ।

नोट :—तरप् (Comparative) और तमप् (Superlative) प्रत्ययों के स्थान पर क्रमशः ईयसुन् और इष्ठन् प्रत्ययों का प्रयोग भी होता है :—

यथा—	पटुः	पटुतरः	पटुतमः
	पटुः	पटीयान्	पटिष्ठः
	गुरुः	गुरुतरः	गुरुतमः
	गुरुः	गरीयान्	गरिष्ठः
	अल्पः	अल्पतरः	अल्पतमः
	अल्पः	अल्पीयान्	अल्पिष्ठः

अभ्यास २६

(सम्बन्धसूचक प्रत्यय)

१. मेरा पुत्र यहाँ नहीं है = मदीय मामकः मामकीनः वा पुत्रः अत्र नास्ति ।

२. आपकी लड़की कहाँ है ? = भवदीया कन्या कुत्रास्ति ?

३. मेरी पुस्तक स्कूल में है = मदीयं मामकं मामकीनं वा पुस्तकं पाठशालायां विद्यते ।

४. तुम्हारी किताब मेरी जैसी ही है = त्वदीयं तावकं तावकीनं वा पुस्तकं मत्समं एवास्ति ।

५. उसकी आर्थिक स्थिति कष्टप्रद है = तदीया आर्थिकी स्थितिः कष्टप्रदा ।

६. यह मेरा घर है = मदीयं गृहमिदम् ।

७. हमारा देश बहुत बड़ा है = अस्मदीयः आस्माकीनः वा देशः अति विस्तृतोऽस्ति ।

८. तुम लोगों का घर अधिक दूर नहीं है=युष्मदीयं यौष्माकीणं वा गृहं नातिदूरे तिष्ठति ।

९. यह अपना देश है, किसी दूसरे का नहीं = स्वकीयः देशोऽयं, नास्ति परकीयः ।

१०. क्या तुम्हारी पुत्री मर गई = त्वदीया तावकी तावकीना वा पुत्री मृता किम् ?

अभ्यास २७

('का' बोधक शब्द-प्रयोग)

१. यह घी आज का नहीं है = इदं घृतं अद्यतनं नास्ति ।

२. यह दूध शाम का है = एतद् दुग्धं सायन्तनं अस्ति ।

३. यह वन्दर आज का नहीं है = अयं वानरः अद्यतनः नास्ति ।

४. यह लड़की आज की है = इयं कन्या अद्यतनी अस्ति ।

५. यह किताब कहाँ की है ? = इदं पुस्तकं कुत्रत्य वर्तते ?

६. यह लड़का कहाँ का है ? = अयं बालकः कुत्रत्यः विद्यते ?

७. यह लड़की कहाँ की है ? = इयं बालिका कुत्रत्या अस्ति ?

८. यह खाना कब का है ? इदं भोजनं कदातनं अस्ति ?

९. जहाँ का राम है, वहाँ की ही सीता भी हैं = यत्रत्यः रामः अस्ति, तत्रत्या सीताऽपि अस्ति ।

१०. यह मन्दिर पुराना है = इदं मन्दिरं पुरातनं वर्तते ।

११. राम यहाँ का ही है = रामः अत्रत्यः एवास्ति ।

१२. आप कहाँ के हैं ? = भवान् कुत्रत्यः अस्ति ?

१३. मैं भी यहाँ का ही हूँ = अहमपि अत्रत्यः एवास्मि ।

१४. यह छाता कहाँ का है = इदं छत्रं कुतस्तनं अस्ति ।

१५. यह लड़का आज कल का है = अयं बालः इदानीन्तनः अस्ति ।

अभ्यास २८

('सम' शब्द का प्रयोग)

१. तुम्हारे समान कौन है ? = त्वत्समः कः अस्ति ?

२. मेरे समान कोई नहीं है = मत्समः कोऽपि नास्ति ।

३. मेरी औरत तुम्हारे समान है = त्वत्समा मे पत्नी ।

४. उसके समान पराक्रमी राजा कोई नहीं हुआ=तत्समः पराक्रमशीलो राजा कोऽपि न बभूव ।

५. आप जैसा दानी मैंने नहीं देखा = न दृष्टो मया भवत्समो दानी ।

६. तुम लोगों जैसी एक भी लड़की यहाँ नहीं है = युष्मत्समा नैकापि बालिका अस्त्यत्र ।

७. उसका भाई तो अपने जैसा ही है=तस्य भ्राता तु स्वसमः एवास्ति ।

८. तुम्हारे समान मेरा कोई दोस्त नहीं है=त्वत्समं मित्रं न कोऽप्यस्ति मे ।

अभ्यास २९

('समानवाची' शब्द)

१. यह आदमी कैसा है ? = अयं पुरुषः कीदृशः अस्ति ?

२. यह फूल कैसा है ? = इदं पुष्पं कीदृशं अस्ति ?

३. यह लड़की कैसी है ? = इयं कन्या कीदृशी वर्तते ?

४. तुम वैसी हो, जैसा कि वह आदमी है = त्वं तादृशी असि, यादृशः सः पुरुषः अस्ति ।

५. इस प्रकार का कोई आदमी न होगा = न ईदृशः कोऽपि पुरुषः भविष्यति ।

६. ऐसी किताब तुम भी लाओ = एतादृशं पुस्तकं त्वमपि आनय ।

७. आप सा श्रेष्ठ विद्वान् कोई नहीं है = भवादृशः विद्वद्वरः कोऽपि नास्ति ।

८. मेरे समान ही उसके भी बेटा था = मादृशः तस्यापि पुत्रः आसीत् ।

९. इस प्रकार का आदमी सदा पूजित होता है = एतादृशः पुरुषः सदा पूज्यते ।

१०. जिस प्रकार की मनोवृत्ति होती है उसी तरह का फल भी मिलता है = यादृशी मनोवृत्तिः भवति तादृशमेव फलमपि लभ्यते ।

अभ्यास ३०

(रहा–रहे–रही)

१. वह पढ़ रहा है = सः पठन् अस्ति ।

२. राम कहाँ जा रहा है = रामः कुत्र गच्छन् अस्ति ?

३. दशरथ क्या कह रहे हैं = दशरथः किं शंसन् अस्ति ?

४. तुम क्या बोल रहे हो = त्वं किं वदन् असि ?

५. तुम क्या खा रही हो = त्वं किं खादन्ती अस्मि ?

६. मैं कुछ नहीं खा रहा हूँ = अहं न किमपि खादन् असि ?

७. वह पढ़ रही थी = सा पठन्ती आसीत् ।

८. वह कहाँ जा रही थी = सा कुत्र गच्छन्ती आसीत् ।

९. मैं क्या कह रहा था = अहं किं कथयन् आसम् ?

१०. वह इस समय पढ़ रहा होगा = सः सम्प्रति पठन् भविष्यति ।

११. रघुवीर कुछ पूछ रहा होगा=रघुवीरः किमपि पृच्छन् भविष्यति ।

१२. किसान खेत में बीज बो रहा होगा = कृषकः क्षेत्रे बीजं वपन् भविष्यति ।

१३. धोबी अब वस्त्र धोता होगा = रजकः अधुना वस्त्रं प्रक्षालयन् भविष्यति ।

१४. कमला अब लिखती होगी = कमला अधुना लिखन्ती भविष्यति ।

१५. तुम जहाँ होगे, मैं भी वहीं हूँगा = त्वं यत्र भविष्यसि, अवमपि तत्रैव भविष्यामि ।

अभ्यास ३१

(क्त प्रत्यय)

१. मैंने फल खाया था = मया फलं खादितं आसीत् ।

२. तुमने अभी दूध पिया है=त्वया अधुनैव दुग्धं पीतं अस्ति ।

३. जनक ने दशरथ को क्या लिखा था=जनकेन दशरथाय किं लिखितं आसीत् ?

४. उसने मुझसे कुछ नहीं कहा था=तेन अहं किमपि न कथित आसम् ।

५. वह काम राम ने किया है=तत् कार्यं रामेण कृतम् अस्ति ।

६. तुमने उसे क्यों हँसाया=त्वया सः कथं हासितः ?

७. तुम पढ़े हुये हो=त्वं शिक्षितः असि ।

८. उसने गीता पढ़ी है=तेन गीता पठिता अस्ति ।

९. उस पढ़े हुये पण्डित में बहुत भक्ति है=तस्मिन् शिक्षिते पण्डिते अधिका भक्तिः अस्ति ।

१०. जनक ने पढ़ी लिखी सीता से कहा=शिक्षितां सीतां जनकः अवदत् अथवा शिक्षिता सीता जनकेन कथिता उक्ता वा ।

११. चम्पा के लाये हुये हार का मूल्य क्या है=चम्पया आनीतस्य हारस्य मूल्यं किमस्ति ?

१२. कौन बैठा हुआ था=कः उपविष्टः आसीत् ।

१३. राम ने भोजन किया होगा=रामेण भोजनं कृतं भवेत् ।

१४. यह फूल किसी का सूँघा होगा=इदं पुष्पं केनचिद घ्रातं भवेत् ।

१५. तुम कहाँ गये थे=त्वं क्व गतः आसीः ?

अभ्यास ३२

(क्तवतु प्रत्यय)

१. मैंने गीता पढ़ी है=अहं गीतां पठितवान् अस्मि ।

२. उसने वेद पढ़ा है=सः वेदं पठितवान् अस्ति ।

३. राम से सीता ने कहा होगा=रामं सीता कथितवती स्यात् ।

४. तुम वहाँ कब गये थे=त्वं तत्र कदा गतवान् आसीः ?

५. उसने चोर को कब देखा=सः चोरं कदा दृष्टवान् ?

६. उस गिरे हुये आदमी को उठा दीजिये=तं पतितवन्तं पुरुषं उत्थापयतु (भवान्)।

७. उस गये हुये आदमी के साथ कौन गई है=तेन गतवता पुरुषेण सह का गतवती अस्ति।

८. उस आये हुये बालक के लिये यह भोजन है=तस्मै आगतवते बालकाय इदं भोजनं अस्ति।

९. यह रुमाल उस गई हुई लड़की का है=इयं मुखमार्जनी तस्याः गतवत्याः बालिकायाः अस्ति।

१०. तप किये हुये मनुष्य में कैसा तेज है=तपः चरितवति पुरुषे कीदृशं तेजः अस्ति?

अभ्यास ३३

(तव्यत् प्रत्यय)

१. उसे गीता पढ़नी चाहिये=तेन गीता पठितव्या।

२. यह बात कहने योग्य नहीं है=एषा वार्ता भाषितव्या नास्ति।

३. ब्राह्मण को तेल नहीं बेचना चाहिये=ब्राह्मणेन तैलं न विक्रेतव्यम्।

४. भैंस को क्या खिलाना चाहिये?=महिषी किं आशयितव्या?

५. यह गाय दुहने योग्य नहीं है=एषा धेनुः दोग्धव्या नास्ति।

६. नौकर द्वारा ले जाने योग्य इस सन्दूक को क्यों उठा रहे हो?=भृत्येन वहनीयां इमां मञ्जूषां कथं उत्तोलयसि?

७. भक्ति से सुनने योग्य इस कथा का सर्वत्र आदर है=भक्त्या श्रोतव्यायाः अस्याः कथायाः सर्वत्र आदरः अस्ति।

८. तुम्हारे जाने योग्य स्थान से वह स्थान अच्छा नहीं है=त्वया गन्तव्यात् स्थानात् तत् स्थानं शोभनतरं नास्ति।

९. सदा स्मरण करने योग्य आपके उपकार को मैं नहीं भूलूंगा=सदा स्मर्तव्यं भवतः उपकारं न विस्मरिष्यामि।

१०. यहाँ तुम्हारे पाने योग्य कुछ भी नहीं है=अत्र त्वया प्राप्तव्यं किंचिदपि नास्ति।

अभ्यास ३४

(अनीयर् प्रत्यय)

१. तुम्हें किताब पढ़नी चाहिये=त्वया पुस्तकं पठनीयम् ।

२. हमें पर-स्त्री नहीं देखनी चाहिये=अस्माभिः पर-स्त्री नैव दर्शनीया।

३. सुअर का मांस किसी को न खाना चाहिये=सूकरस्य मांसं केनापि न भक्षणीयम् ।

४. यह चित्र देखने काबिल है=दर्शनीयं अस्ति इदं चित्रम् ।

५. पीने योग्य इस जल में रंग किसने डाल दिया=पानीये अस्मिन जले रङ्गं कः अपातयत् ?

६. आपकी प्रशंसा-योग्य बातचीत से मुझे सन्तोष हुआ=प्रशंसनीयेन भवतः वार्तालापेन मम सन्तोषः अभवत् ।

७. यह बात पत्र में लिखने लायक नहीं है=एषा वार्ता पत्रे लेखनीया नास्ति ।

८. शक्कर से भरे जाने लायक इस बर्तन को पानी से किसने भर दिया? =शर्करया भरणीयं इदं पात्रं जलेन कः अपूरयत् ?

९. यह चना चबाने योग्य नहीं है=एतत् चणकान्नं चर्वणीयं नास्ति ।

१०. दुहने योग्य उस गाय के लिये यह अन्न है=दोहनीयायै तस्यै धेनवे इदं अन्नं अस्ति ।

अभ्यास ३५

(वाच्य सम्बन्धी)

१. वह जाता है=सः गच्छति ।
उससे जाया जाता है=तेन गम्यते ।

२. हम ठहरते हैं=वयं तिष्ठामः ।
हमसे ठहरा जाता है=अस्माभिः स्थीयते ।

३. मैं देता हूँ=अहं ददामि ।
मुझसे दिया जाता है=मया दीयते ।

४. वह करता है=सः करोति ।
उससे किया जाता है=तेन क्रियते ।

५. चोर धन चुराता है=चोरः धनं हरति ।
चोर से धन चुराया जाता है=चोरेण धनं ह्रियते ।

६. किसान बोता है=कृषकः वपति ।
किसान से बोया जाता है=कृषकेण उप्यते ।

७. मुनि यज्ञ करता है=मुनिः यजते ।
मुनि से यज्ञ किया जाता है=मुनिना इज्यते ।

८. बालिकायें गाती हैं=बालिकाः गायन्ति ।
बालिकाओं से गाया जाता है=बालिकाभिः गीयते ।

९. रसोइये चावल पकाते हैं=सूदाः ओदनं पचन्ति ।
रसोइयों से चावल पकाया जाता है=सूदैः ओदनः पच्यते ।

१०. आग लकड़ी को जला देती है=अग्निः काष्ठं दहति ।
अग्नि से लकड़ी जलाई जाती है=अग्निना काष्ठं दह्यते ।

११. लोग दो बदमाशों को पीटते हैं=जनाः शठौः ताडयन्ति ।
लोगों से दो बदमाश पीटे जाते हैं=जनैः शठौ ताड्येते ।

१२. गुरुजन धर्म का उपदेश देते हैं=गुरवः धर्मं उपदिशन्ति ।
गुरुजनों से धर्म का उपदेश दिया जाता है=गुरुभिः धर्मः उपदिश्यते ।

१३. नौकर-चाकर तुम्हारी सेवा करते हैं=किङ्कराः त्वां सेवन्ते ।
नौकर-चाकरों से तुम्हारी सेवा की जाती है=किङ्करैः त्वं सेव्यसे ।

१४. राजा धनुष से शत्रुओं को जीतता है=नृपतिः चापेन अरीन् जयति ।
राजा के द्वारा धनुष से शत्रु जीते जाते हैं=नृपतिना चापेन अरयः जीयन्ते ।

१५. लोग ऋषियों की वन्दना करते हैं=जनाः ऋषीन् वन्दन्ते ।
लोगों से ऋषि वन्दित होते हैं=जनैः ऋषयः वन्द्यन्ते ।

१६. सूर्य प्रकाशित होता है=सूर्यं प्रकाशते ।
सूर्य द्वारा प्रकाशित हुआ जाता है=सूर्येण प्रकाश्यते ।

१७. विद्यार्थी श्लोक पढ़ते हैं=छात्राः श्लोकान् पठन्ति ।
विद्यार्थियों से श्लोक पढ़े जाते हैं=छात्रैः श्लोकाः पठ्यन्ते ।

१८. राम पुस्तक लिखता है=रामः पुस्तकं लिखति ।
राम द्वारा पुस्तक लिखी जाती है=रामेण पुस्तकं लिख्यते ।

१९. मेरे पिता जी जाते हैं=मे पिता गच्छति ।
मेरे पिता द्वारा जाया जाता है=मे पित्रा गम्यते ।

२०. हे बेटा ! यहाँ आओ और आसन पर बैठो=भो वत्स ! अत्रागच्छ आसने च उपविश ।
हे बेटा ! तुम से यहाँ आया जाय और आसन पर बैठा जाय=भो वत्स त्वया अत्र आगम्यताम् आसने च उपविश्यताम् ।

२१. विद्वान् तत्त्व को जानते हैं=बुधाः तत्त्वं आगच्छन्ति ।
विद्वानों द्वारा तत्त्व जाना जाता है=बुधैः तत्त्वं अवगम्यते ।

२२. राजा लोग पण्डितों के साथ वार्तालाप करते हैं=नृपाः पण्डितैः सह भाषन्ते ।
राजाओं द्वारा पण्डितों के साथ बातचीत की जाती है=नृपैः पण्डितैः सह भाष्यते ।

२३. सज्जन कभी भी झूठ नहीं बोलते=सज्जनाः न कदापि असत्यं वदन्ति ।
सज्जनों द्वारा कभी भी झूठ नहीं बोला जाता=सज्जनैः न कदापि असत्यं उच्यते ।

२४. वनदेवियाँ राजाओं की कीर्ति गाती हैं=वनदेवताः नृपाणां कीर्ति गायन्ति ।
वनदेवियों द्वारा राजाओं की कीर्ति गाई जाती है=वनदेवताभिः नृपाणां कीर्तिः गीयते ।

२५. आप जो चाहते हैं वह सब मैं करता हूँ=यद् भवान् इच्छति तत्सर्वं अहं करोमि ।
आप से जो चाहा जाता है वह सब मुझ से किया जाता है=यद् भवता इष्यते तत्सर्वं मया क्रियते ।



तृतीयोऽध्यायः

(हिन्दी से)

[क] संस्कृत में अनुवाद करो

अभ्यास १

(लट् लकार)

वे सब पढ़ते हैं। तू जाता है। वे दोनों पढ़ते हैं। तुम जाते हो। मैं देखता हूँ। हम सब देखते हैं। वह नमस्कार करता है। तू **याद करता** है। घोड़े दौड़ते हैं। तुम दोनों भागते हो। वे सब **पीते** हैं। पानी गिरता है। आग **जलती** है। बालक खाता है। बालक खेलते हैं। राजा **देता** है। मनुष्य **बोलते** हैं। मूर्ख हंसते हैं। दो मोर नाचते हैं। हाथी जाते हैं। बादल **बरसते** हैं। प्रातःकाल होता है। सूरज निकलता है। हवा **चलती** है। चिड़ियाँ **चहचहाती** हैं।

सहायतार्थ टिप्पणी—यदि करना। स्मृ। पीना = पिब्। जलना = ज्वल्। देना = दा, यच्छ्। बोलना = ब्रू, वद्। बरसना = वर्ष्। चलना = चल्, वह्, प्र + वह्। चहचहाना = कूज्।

अभ्यास २

(लट् लकार)

१. गधे दौड़ते हैं।

२. चूहे बिल में घुसते हैं।

३. चोर धन चुराता है।

४. सीता गाती है।

५. लड़कियाँ कमरे में नाचती हैं।

६. मुनि जंगल में रहते हैं।

७. पेड़ से पत्ते गिरते हैं।
८. चिड़ियाँ आसमान में उड़ती हैं।
९. हम संस्कृत पढ़ते हैं।
१०. बन्दर **कूदते** हैं।
११. तुम दोनों हँसते हो।
१२. मैं ईश्वर को प्रणाम करता हूँ।
१३. वे दोनों गाते हैं।
१४. बच्चा **पलंग** पर सोता हैं।
१५. माँ **धीरे-धीरे** गाती है।

सहायतार्थ टिप्पणी—गधा = गर्दभः । बिल = बिलं । घुसना = विश् , प्र + विश् । कमरा = प्रकोष्ठं, कक्षः । कूदना = कूर्द । पलंग = पर्यंकः । धीरे-धीरे = मन्दं मन्दम् ।

अभ्यास ३

(लट् लकार)

मैं लिखता हूँ। वे हँसते हैं। तुम **कहाँ** खेलते हो? राम कब दौड़ता है? फूल **फूलते** हैं। हम यहाँ दौड़ा करते हैं। तुम गिरते हो। हम दोनों चलते हैं। कुत्ते **भूँकते** हैं। लड़की रोती है। वे अभी जीते हैं। बुड्ढा **थूकता** है। खेल हो रहा है। **बादल** गरजते हैं। देवता फूल बरसाते हैं। तू बोलता है। वीर रक्षा करता है। दुष्ट लोग सदा दूसरों की निन्दा किया करते हैं। जानवर जंगल में चरा करते हैं।

सहायतार्थ टिप्पणी—कहाँ = कुत्र । फूलना = वि + कस् । भूँकना = बुक्क् । थूकना = ष्ठीव् । जानवर = श्वापदः । बादल = मेघः ।

अभ्यास ४

(लट् लकार)

आम एक मधुर फल है। हम फल खाते हैं। **कुत्ता बिल्ली** को पकड़ता है। यह मेरा भाई है। यह उसकी **बहिन** है। कृष्ण **खेत में** खेलता है।

सूरज **पूर्व में निकलता है।** माता अपने बच्चे को प्यार करती है। इस फल का रस मीठा है। तुम दोनों पुस्तक पढ़ते हो। कमल-विमल साथ पढ़ते हैं। मेरी सहेली संस्कृत **जानती है।** मोर जंगल में नाचता है। पिता जी बच्चों को मिठाई **बाँटते हैं।**

सहायतार्थ टिप्पणी—कुत्ता = कुक्कुरः। बिल्ली=मार्जारी। बहिन= स्वसा, भगिनी। खेत में = क्षेत्रे, वप्रे, केदारे। पूर्व में=पूर्वदिशि। निकलता है = उदयति। जानती है = अवजानाति। बाँटता है = वितरति।

अभ्यास ५

(लङ् लकार)

हम सब देखते थे। तुम सब जाते थे। तू देखता था। वायु चलती थी। वे दोनों बोलते थे। **अग्नि** जलाती थी। हम सब पढ़ते थे। मैं पढ़ता था। तुम दोनों जाते हो। हम सब याद करते थे। बालक दूध पीते थे। मैं देता था। **बादल** वर्षा करते थे। हम सब **पूँछते** थे। **मोर** नाचते थे। वे सब सोते थे। हम दोनों चिन्ता करते थे। प्रातःकाल होता था। हम सब रोते थे। तू भागता था। मैं नमस्कार करता था। वे दोनों खेलते थे। हरिण भागते थे। हम सब खाते थे। मनुष्य **प्रसन्न होते** थे।

सहायतार्थ टिप्पणी—अग्नि = अग्निः, पावकः। बादल = मेघः, जलदः। पूँछना = पृच्छ्। मोर = मयूरः, शिखी। प्रसन्न होना = प्रसीद्, मुद्, हृष्।

अभ्यास ६

(लङ् लकार)

यह पथिक **कहाँ ठहरा?** क्या कल तुम्हारे घर में चोर **घुसे थे?** नानी ने **कथा सुनाई।** कल आप बाहर गये। उसने उसको पत्र लिखा। उन्होंने मीठा **शरबत पिया।** आपने लड़कों पर क्या **फेंका था?** सुनार ने मुकुट बनाया। **नाई ने हजामत बनाई।** सब चोर-बालकों ने मिल कर यह सन्दूक **चुराई।** आपने स्नान नहीं किया। माली ने बाग और तालाब

दिखाये। अध्यापक ने उसे **दण्ड दिया**। चोर को मार पड़ी। तुमने पाठ **याद किया**।

सहायतार्थ टिप्पणी—कहाँ ठहरा = कुत्र अधिष्ठत्। घुसे थे = प्राविशन्। कथा सुनाई = कथां अकथयत्। शरबत = शर्करोदकम्। (उन्होंने) पिया = अपिबन्। (तुमने) फेंका था = प्राक्षिपः। नाई = नापितः, छुरिकः। हजामत बनाई = क्षौरं अकरोत्। (सबने) चुराई = अचोरयन्। (माली ने) दिखाये = अदर्शयत्। (अध्यापक ने) दण्ड दिया = अदण्डयत्। (तुमने) याद किया = अस्मरः।

अभ्यास ७

(लृट् लकार)

चन्द्र निकलेगा। रात्रि होगी। अमृत बरसेगा। पक्षी **चहचहायेंगे**। वायु **चलेगा**। हम दोनों पढ़ेंगे। तुम दोनों जाओगे। मैं **गाऊँगा**। वे सब जायेंगे। वह देखेगा। वे सब नाचेंगी। घोड़े दौड़ेंगे। हम दोनों दौड़ेंगे। राम रोवेगा। लड़के हँसेंगे। मूर्ख बोलेंगे। मोर नाचेंगे। मैं तुम्हें लड्डू दूँगा। तुम सब खेलोगे। हम सब खायेंगे। अग्नि जलायेगी। मैं गिर जाऊँगा। तू दूध पियेगा। हम सब **याद करेंगे**। मैं नमस्कार करूँगा। राम अनुवाद करेगा।

सहायतार्थ टिप्पणी—चहचहाना = कूज्। चल् = प्र + चल्, प्र + चल, वह्। गाना = गै। लड्डू = मोदकः। याद करना = स्मृ।

अभ्यास ८

(लृट् लकार)

१. तुम कब घर जाओगे?

२. मैं प्रयाग जाऊंगा।

३. सीता का **विवाह** कब होगा?

४. तुम दोनों कब से पढ़ोगे?

५. लड़कियाँ अवश्य ही गायेंगी।

६. हम दोनों तुम्हारे साथ नहीं खेलेंगे।
७. हम रात को **दस बजे** सोयेंगे।
८. मैं कभी **झूठ** नहीं बोलूंगा।
९. मैं तो यहाँ पर ही खेलूंगा।
१०. सुबह हम लोग **टहलने** चलेंगे।
११. ये लड़कियाँ **गवैये** से गाना सीखेंगी।
१२. मैं तुम्हें **मिठाई** दूंगा।
१३. पुलिस चोर को **डंडे** से पीटेगा।
१४. मेरे पिता जी कल **कलकत्ता** जायेंगे।
१५. बेटे की सफलता पर माँ बहुत खुश होगी।

सहायतार्थ टिप्पणी—विवाह = परिणयः। दस बजे = दशवादने। झूठ = अलीकं, अनृतं, असत्यम्। टहलने = परिभ्रमणार्थम्। गवैया = गायकः। मिठाई = मिष्ठान्नम्। डंडा = दण्डः, लगुडः। कलकत्ता = कलिकाता।

अभ्यास ९

(लोट् लकार)

वे पढ़ें। तू जा। तुम पढ़ो। तुम सब **गाओ**। तुम दोनों जाओ। वे सब जायें। वे दोनों देखें। सूर्य **निकले**। प्रातःकाल होवे। रात **नष्ट हो**। बादल वर्षा करें। वायु चले। मोर नाचे। पक्षी बोलें। वे सब हँसे। मैं गाऊँ। घोड़े दौड़े। वे सब खेलें। बालक खाये। अग्नि जलायें। हम दूध पियें। वे दोनों गिर पड़ें। तू दूध पी। वे दोनों हँसे। वे दोनों **भागे**। हम दोनों **याद करें**। मैं नमस्कार करूँ। वे सब देखें। तुम दोनों पुस्तक पढ़ो।

सहायतार्थ टिप्पणी—नष्ट होना = वि + नश्। याद करना = स्मृ। देखना = दृश् (= पश्य)। गाना = गै। निकल = उदय। भागना = धाव।

अभ्यास १०

(लोट् लकार)

वे यहाँ पढ़ें। तू **अब** न जा। मैं जल्दी-जल्दी लिखूं। वे **चुपचाप** खायें। बार-बार न बोल। बेकार में **शोर** मत कर। लड़के आम **चूसें**।

माली आज न खोदे। तू मत **रो**। वे दोनों अच्छी तरह गावें। **पराया** धन मत चुराओ। तुम शत्रुओं को जीतो। वे सवेरे ईश्वर का कीर्तन करें। सीता से कहो कि वह कुछ गावे। इस **प्रकार** न बोलो। **दरवाजा** खोलो। पिता को प्रणाम करो।

सहायतार्थ टिप्पणी—अब = इदानीम् , अधुना। चुपचाप=तूष्णीम्। शोर = कोलाहलम्। चूसना = चूष्। माली = मालाकारः। रोना रुद्। पराया = परकीयम्। इस प्रकार = इत्थम्।

अभ्यास ११

(विधि लिङ्)

वे सब जाएँ। हम सब देखें। वे दोनों भागें। क्या वह गिरे? वे दोनों जाएँ। वे सब पढ़ें। अग्नि जलायें। वे दोनों नमस्कार करें। क्या मैं पीऊँ? वह देखें। क्या मैं दूँ? हम दोनों हँसें। वायु चले। सब प्रसन्न हों। क्या घोड़ा दौड़े? क्लेश **नष्ट हों**। कोई दुखी न हों। बादल वर्षा न करें। वह पढ़े। मनुष्य सुखी हों। मोर नाचे। क्या हम दोनों खेलें? क्या हम दोनों **बोलें**। क्या हम सब खाएं? हमें सदा सच बोलना चाहिये। तुम्हें प्रातः-काल उठना चाहिये। इसे बड़ों का आदर करना चाहिये। राजा को प्रजा का पालन करना चाहिये। हमें अपने धर्म और संस्कृति की रक्षा करनी चाहिये।

सहायतार्थ टिप्पणी—गिरना = पत् , नि + पत्। जलाना = दह्। नष्ट होना = नश् , वि + नश्। बोलना = ब्रू , कथय् , वद् , वि + आ + हृ = व्याहर्। सच = सत्यम्। पालन करना=पाल् , परि+पाल् , अव्, पा।

अभ्यास १२

(विधिलिङ्)

उसे घर जाना चाहिये। तुझे पुस्तक लिखनी चाहिये। मुझे वन्दना करनी चाहिये। तुझे पत्र लिखना चाहिये। हमें **रोज** पाठ याद करना चाहिये। छात्रों को सायंकाल खेलना चाहिये। हम दोनों को अब जाना

चाहिये। मित्र को देख कर खुश होना चाहिये। **शायद** वह फल लावे। गुरुजनों को प्रणाम करना चाहिये। हमें **शुद्ध** जल पीना चाहिये। मुझे पढ़ना चाहिये या खेलना। बुरे मित्र को छोड़ देना चाहिये। हमें रास्ता देख कर चलना चाहिये।

सहायतार्थ टिप्पणी—रोज = नित्यम् , अनुदिनम्। शायद = स्यात् , कदाचित् , सम्भवतः। शुद्ध = निर्मलम्।

अभ्यास १३

(कर्त्ता कारक)

१. तुम्हारा (**विवाह**) **कब** होगा ?
२. **आज** मेरा (**दोस्त**) घर आवेगा।
३. (हम दोनों) तुम्हारे साथ नहीं रहेंगे।
४. सीता और लक्ष्मण के साथ (राम) वन को जायेंगे।
५. (सिंह) **जंगल में घूमता है।**
६. (मनुष्य) अपने पैरों से चलते हैं।
७. (पिता) लड़कों को **मिठाई** देता है।
८. (राम) **नौकरों** के साथ गाँव जाता है।
९. (मूर्ख) विद्वानों की **निन्दा करते हैं।**
१०. (**आग**) जंगल को **जलाती है।**

सहायतार्थ टिप्पणी—विवाह = विवाहः, परिणयः। कब = कदा। आज = अद्य। दोस्त = मित्रं, वयस्यः। जंगल में = वने, अरण्ये। घूमता है = भ्रमति, अटति, चरति। मिठाई = मिष्ठान्नम्। नौकर = सेवकः, अनुचरः, परिचरः। निन्दा करते हैं = निन्दति। आग = अग्निः। जलाती है = दहति।

अभ्यास १४

(कर्म कारक)

१. बन्दर (पेड़ों) पर **चढ़ते हैं।**
२. गोपाल (पत्र) लिखता है।
३. (गाँव) के **दोनों तरफ** नदी **बहती है।**

४. विद्यार्थी **कल** (काशी) **गया**।
५. मैं आज **जरूर** (चिट्ठी) **लिखूँगा**।
६. गंगा यमुना के **बीच में** प्रयाग है।
७. नगर के **पास** एक **बाग था**।
८. छात्र (गुरु) के **पीछे जाता है**।
९. चोर (धन) **चुराता है**।
१०. लड़के (फल) **गिनते हैं**।

सहायतार्थ टिप्पणी—बन्दर = वानराः, कपयः। चढ़ते हैं = आरोहन्ति। दोनों तरफ = उभयतः। बहती है = वहति। कल = ह्यः। गया = अगच्छत्। जरूर = अवश्यमेव। लिखूंगा = लिखिष्यामि। बीच में = अन्तरा; मध्ये। पास = समया, निकषा, समीपं। बाग = उद्यानम्। था = आसीत्। पीछे जाता है = अनुगच्छति। चुराता है = चोरयति। गिनते हैं=गणयन्ति।

अभ्यास १५

(करण कारक)

१. वह (कलम से) चिट्ठी लिखता है।
२. मैं (**साबुन से**) नहाता हूँ।
३. सिपाही ने (**बन्दूक से**) **चिड़िया** मारी।
४. मोहन ने (**लाठी से**) **साँप को** मार डाला।
५. हम (मूर्खों) के साथ नहीं खेलेंगे।
६. लड़कों ने (लड़कियों) के साथ पढ़ा।
७. लड़के (दोस्तों) के साथ **गेंद** खेलते हैं।
८. मनुष्य (मुख से) खाते हैं।
९. (विद्या से) हीन मनुष्य शोभा नहीं पाता।
१०. **किसान** (**हल से**) **खेत जोतता है**।

सहायतार्थ टिप्पणी—साबुन से=फेनिलेन। बन्दूक से=द्विनालिकया। चिड़िया = चटका। लाठी से = लगुडेन। साँप को = सर्पं। गेंद = कन्दुकः। किसान = कृषकः, कृषीवलः। हल से = हलेन। जोतता है = कर्षति। खेत = क्षेत्रम्।

अभ्यास १६

(सम्प्रदान कारक)

१. शठ लोग (सब से) **द्रोह करते** हैं।
२. सीता जी ने (रावण के ऊपर) **कोप किया**।
३. मालिक (नौकर पर) **क्रोध करता** है।
४. यजमान (ब्राह्मण को) गाय **देता** है।
५. मैंने (पिता जी को) पत्र **भेजा**।
६. गुरु (शिष्यों को) धर्म का उपदेश देता है।
७. बलि (वामन को) पृथ्वी देता है।
८. मैं (मोहन को) **लड्डू** देता हूँ।
९. मेरा (आपके लिये) नमस्कार है।
१०. मैं (धर्म पर) अपना शरीर दे दूँगा।

सहायतार्थ टिप्पणी—द्रोह करना = द्रुह्। कोप करना = कुप्। क्रोध करना = क्रुध्। देना = दा। भेजना = प्र + इष् (= प्रेषय्)। लड्डू = मोदकः।

अभ्यास १७

(अपादान कारक)

१. (पेड़ से) **पत्ते गिरते** हैं।
२. विद्यार्थी (अध्यापक से) गणित पढ़ते हैं।
३. हम लोग (शेर से) **डरते** हैं।
४. गंगा नदी (हिमालय से) **निकलती** है।
५. (बीज से) अंकुर निकलते हैं।
६. माता और जन्मभूमि (स्वर्ग से) भी मान्य है।
७. (गाँव से) **बाहर शिव जी का मन्दिर** है।
८. बिना (परिश्रम के) विद्या नहीं **प्राप्त होती**।
९. गोविन्द (श्याम से) अधिक बुद्धिमान् है।
१०. **ससुर से बहू लज्जा करती** है।

सहायतार्थ टिप्पणी—पत्ता = पर्णम्, पत्रम् । गिरना = पत् । डरना = भी । निकलना = नि + सृ (= निस्सर्) । निकलना = रुह् । बाहर = बहिः । शिव जी का मंदिर = शिवालयः । प्राप्त होना = आप् । ससुर = श्वसुरः । बहू = वधूः । लज्जा करना = लज्ज्, त्रप् ।

अभ्यास १८

(सम्बन्ध कारक)

१. (हिमालय की) **गुफाओं** में ऋषि रहते हैं ।
२. मनुष्य अपने (परिश्रम का) फल **पाते हैं** ।
३. यह (किसकी) पुस्तक है ।
४. (तुम्हारा) भाई **कब** जायेगा ?
५. (आपका) घर **कहाँ** है ?
६. (तुम्हारा) विवाह कब होगा ?
७. गोपाल का भाई **बीमार** है ।
८. आज (मेरा) दोस्त (मेरे) घर **आवेगा** ।
९. (गुरु की) निन्दा करना पाप है ।
१०. (लड़के के) हाथ में **लड्डू** है ।

सहायतार्थ टिप्पणी—गुफा = गुहा, कन्दरा । पाना = प्र + आप्, लम् । कब = कदा । आना = आ गम् । कहाँ = कुत्र, क्व । बीमार = रुग्णः, अस्वस्थः । लड्डू = मोदकः ।

अभ्यास १९

(अधिकरण कारक)

१. (सूर्य के अस्त हो जाने पर) **ग्वाले** अपने घर चले गये ।
२. (राम के वन चले जाने पर) दशरथ ने प्राण **छोड़** दिये ।
३. (कवियों में) कालिदास **सबसे बड़े** हैं ।
४. (गायों में) **काली गाय बहुत दूध देने वाली** होती है ।
५. मेरा मन इस (बालक से) **स्नेह करता** है ।
६. लड़के (**मैदान में**) खेलते हैं ।

७. (वर्षा ऋतु में) **मोर नाचते हैं।**

८. (**सड़क पर**) घोड़े दौड़ रहे हैं।

९. (पेड़ों पर) **चारों तरफ** फल लगे हैं।

१०. हमारा घर (गोमती तट पर) है।

सहायतार्थ टिप्पणी—ग्वाले = गोपाः। छोड़ना = हा, त्यज्। सबसे बड़े = श्रेष्ठः। काली = कृष्णा। गाय = गौः, धेनुः। बहुत दूध देने वाली = बहुक्षीरा। स्नेह करना = स्निह्। मैदान में = क्षेत्रे, क्रीडास्थले, क्रीडाङ्गणे। मोर = मयूरः। नाचना = नृतः। सड़क पर = राजमार्गे, घण्टापथे। चारों तरफ = सर्वतः।

अभ्यास २०

(उपपद विभक्तियाँ)

हमारे घर के **सामने** बाग है। बहुत **झगड़े** से बस। तुम किसके **साथ** कानपुर जाओगे ? तुम्हारे साथ मैं पुस्तक पढ़ूंगा। शहर के **चारों ओर घोर** वन है। पिता की आज्ञा के बिना पुत्र स्थान से हिला तक नहीं। हम दोनों के साथ तेरा भाई बाग को गया। उसके **सिवाय** इसको कोई नहीं कर सकता। परम-पिता परमात्मा को नमस्कार। क्या तू मेरे साथ **बाजार** को चलेगा ? तेरे इस **निरर्थक** जीवन को धिक्कार है। मैंने बचपन **से लेकर** उनका आदर किया है। मछलियाँ जल के बिना जी नहीं सकतीं। भाइयों में शत्रुघ्न सब से छोटा था। राम के तुल्य आदर्श पुत्र किस पिता का होगा। वह सब भाइयों में बड़ा था।

सहायतार्थ टिप्पणी—सामने = पुरतः। झगड़ा = विवादः, कलिः। साथ = सह, सार्धम्। कानपुर = कान्यकुब्जपुरः। चारों ओर = अभितः, सर्वतः, परितः। घोर = गहन (विशे०)। सिवाय = विना, ऋते। बाजार = हट्टम्, आपणम्। निरर्थक = मुधा, वृथा। से लेकर = आरभ्य।

अभ्यास २१

(उपपद विभक्तियाँ)

१. कौवा **बलि** खाता है।

२. राम जल सींचता है ।
३. कमल भौरों को **प्रसन्न करता है** ।
४. सिपाही **तलवार** धारण करते हैं ।
५. मूर्ख मनुष्य व्यर्थ में **बकवाद करते हैं** ।
६. दो **कछुवे रेंगते हैं** ।
७. कमल तालाबों को विभूषित करते हैं ।
८. **नौकर** मालिकों का अनुसरण करते हैं ।
९. भिखारी **अनाज** चुराता है ।
१०. वे पर्वतों पर **चढ़ते हैं** ।
११. ईश्वर हमारी रक्षा करता है ।
१२. मनुष्य कछुवे को खाता है ।
१३. वे अपने पैर **धोते हैं** ।
१४. दो मूर्ख **विष** पीते हैं ।
१५. राम को उसके **मित्र** याद करते हैं ।

सहायतार्थ टिप्पणी—वलि = वलिम् । प्रसन्न करता है = प्रीणयति । तलवार = असिः, कृपाणः, खड्गः । बकवाद करते हैं = प्रजल्पन्ति । दो कछुवे = कूर्मौ, कच्छपौ । रेंगते हैं = रिङ्गतः, सर्पतः । नौकर = भृत्यः, सेवकः, अनुचरः । अनाज = धान्यम् । चढ़ते हैं = आरोहन्ति । धोते हैं = क्षालयन्ति, प्रक्षालयन्ति । विष = विषम्, गरलम् । मित्र = मित्राणि ।

अभ्यास २२

(सर्वनाम)

इस बाग में हरिण **खेलते** हैं । उसका क्या नाम है ? जिस विद्यालय में तू पढ़ेगा उसी में मैं भी पढ़ूँगा । ये फूल उस **बेल** में **खिलते** हैं । उस बालक को पुस्तक दे । जो जैसा करता है वह वैसा फल **पाता** है । यह पुस्तकें **कहाँ** पर थीं ? उस घर में कौन रहता है ? इन बालकों का पिता कौन है ? यह घोड़ा किसका है ? जिस बालक की पुस्तक हो वह इसे ले ले । तेरा घर किस स्थान में है ? तुम्हारा चाचा प्रयाग में रहता है । हमारा

गंगा में दृढ़ विश्वास है। तुम्हारा देश कौन-सा है? हमारे लिये आप गंगा जल लाएँ। तुम्हारी श्रेणी में कौन-कौन-सी कन्यायें दिल्ली में रहने वाली हैं? जो पुस्तक वह पढ़ता था वह मैं भी पढ़ता था। किन-किन नदियों में निर्मल जल होता है? कौन-कौन से नगर भारत में **प्रसिद्ध हैं?**

सहायतार्थ टिप्पणी—खेलना = क्रीड्। बेल = लता। खिलना = फुल्ल्। पाना = प्राप्, लभ्। कहाँ = कुत्र। प्रसिद्ध = प्रथित (विशे०), विख्यात (विशेषण)।

अभ्यास २३
(विशेषण)

वह हाथी सुन्दर है। वह सुन्दर मकान है। वह सुन्दर **धोती** है। मेरे घर में दो श्वेत **खरगोश** हैं। ये सुन्दर फूल हृदय को **हरते** हैं। सुरेश भूरे घोड़े पर **चढ़ता** है। **गन्दे** कपड़ों से मनुष्य **जहाँ-तहाँ बैठ जाता** है। **ठण्डे** पानी से हृदय शान्त होता है। यह मेरी **छोटी बहन** है। तुम दोनों में कौन बड़ा है? उसका पानी सबसे अधिक निर्मल है। मेरा घर हिमालय से बहुत दूर है। वह बालक कक्षा में सबसे अधिक योग्य है। **भूखा** क्या पाप नहीं करता? सब नदियों में गंगा अधिक पवित्र है। इन दोनों कन्याओं में कौन अधिक चतुर है? हिमालय भारतवर्ष का सबसे ऊँचा पहाड़ है। **थके** पथिक वृक्ष की छाया में बैठ गये। **प्यासा** आदमी कुएँ पर गया।

सहायतार्थ टिप्पणी—धोती = धौतम, अधोंशुकम्। खरगोश = शशः, शशकः। हरना = हृ। चढ़ना = आ + रुह्। गन्दा = मलिन (विशे०)। जहाँ-तहाँ = यत्र-कुत्र, यत्रकुत्रचित्। बैठना = सीद्, उप + विश्। ठण्डा = शीतल (विशे०)। छोटी बहन = अनुजा। भूखा = बुभुक्षितः। थका = परिश्रान्तः, श्रान्तः। प्यासा = पिपासितः)।

अभ्यास २४
(संख्यावाची विशेषण)

देव विहारी की **एक ही** पुत्री है। दो घोड़ों पर कोई नहीं **चढ़ता**। लगभग **पचास** पशु इस चरागाह में **चरते हैं**। दस आम खाओ। **चार**

लड़कों की **नौ** पुस्तकें हैं। **दो सौ** बालक इस मकान में रहते हैं। चार कुओं में स्नान करो। यह **नौ नदियों का** जल है। **तीन फल** या **तीन वृक्ष** एक जगह हैं। सभी लड़कियों को **एक-सा** पाठ पढ़ाओ। दो छात्रों की एक पुस्तक है। इस बाग के सभी वृक्षों से फल गिरे हैं। आठ तालाबों से पानी लाओ। **बीस** छात्र यहाँ हैं। मेरे तीन भाई और एक बहन है। इस मकान में **ढाई सौ** आदमी रहते हैं। तुम्हारे घर में **कितने** बच्चे हैं?

सहायतार्थ टिप्पणी—एक ही = एक एव। दो घोड़ों पर = द्वयोः अश्वयोः। चढ़ता = आरोहति। पचास = पञ्चाशत्। चरते हैं = चरन्ति। चार (लड़कों) की = चतुर्णाम्। नौ पुस्तकें = नव पुस्तकानि। दो सौ = शतद्वयम्। नौ नदियों का = नवानां नदीनाम्। तीन फल = त्रीणि फलानि। तीन वृक्ष = त्रयः वृक्षाः। एक-सा = समानम्। बीस = विंशतिः। ढाई सौ = सार्धशतद्वयम्। कितने = कियन्तः।

अभ्यास २५

(अव्यय-शब्द)

पुस्तकालय में **चुपचाप** पढ़ो। **धोबी** कपड़ों को साफ धोता है। **जल्दी** भागो। गुरु जी **उत्तमता** से पढ़ते हैं। **देर लगा कर** मत आओ। **जोर से** वेदपाठ करो। किसान **अच्छी तरह से** जमीन जोतता है। राम जोर से रोया। हमें **शीघ्र** जाना चाहिये। कुम्हार ने **अलग-अलग** घड़े बनाये। चमार **खुशी-खुशी** जूते बनाता है। **धीरे-धीरे** बात करो। **तेजी से** क्यों भागते हो। हिरन तेजी से भागते हैं। सीता बहुत **अच्छा** गाती है। गधे **बेफिक्र होकर** चरते हैं।

सहायतार्थ टिप्पणी—चुपचाप = तूष्णीम्। धोबी = रजकः। जल्दी = त्वरितम्। उत्तमत्ता से = साधु। देर लगा कर = विलंबितम्। जोर से = उच्चैः। अच्छी तरह से = साधु। शीघ्र = शीघ्रं, त्वरितम्। अलग-अलग = पृथक्। खुशी-खुशी = समोदम्। धीरे-धीरे = मन्दं मन्दम्। तेजी-से = सत्वरं; सरभसम्। अच्छा = मधुरं। बेफिक्र होकर = विश्रब्धम्।

अभ्यास २६

(प्रेरणार्थक धातुयें)

१. गुरु शिष्य को **पढ़ाता** है ।
२. माता पुत्र को विद्यालय **भेजती** है ।
३. माँ बच्चे को दूध **पिलाती** है ।
४. मैं पुस्तक को भूमि पर **रखता** हूँ ।
५. कैकेयी दशरथ को पिछले दो वरदानों की **याद दिलाती** है ।
६. राजा भिखारियों को धन **दिलवाता** है ।
७. ईश्वर हमारे दुःखों का **नाश करता** है ।
८. सच्चाई हमें सुख **प्राप्त कराती** है ।
९. बुढ़िया बच्चों को **कहानी** सुनाती है ।
१०. तृष्णा मनुष्य से पाप **कराती** है, वही चोर से **चोरी करवाती** है, पिता से पुत्र को और पुत्र से पिता को **छुड़वाती** है ।
११. माँ बच्चे को **सुलाती** है ।
१२. वह अपने छोटे भाई को **रुलाता** है ।
१३. राम लक्ष्मण को चित्र **दिखलाते** हैं ।
१४. इस दुष्ट पेट के लिये लोग अपनी वाणी को बन्दरिया के समान घर-घर में **नचाते** हैं ।
१५. शिष्य सेवा से गुरु को **प्रसन्न करता** है ।
१६. चूहा शेर को बन्धन से **छुड़वाता** है ।
१७. विद्यार्थी अपनी कलम **नीचे गिराता** है ।
१८. बहन अपने छोटे भाई को सुलाती है ।
१९. राम सीता से चावल **पकवाता** है ।
२०. चालाक मनुष्य अपने शत्रु को दूसरों से **मरवाता** है ।

सहायतार्थ टिप्पणी—पढ़ाता है = पाठयति, शिक्षयति, अध्यापयति । भेजती है = प्रेषयति । पिलाती है = पाययति । रखता हूँ = स्थापयामि । याद दिलाती है = स्मारयति । दिलवाता है = दापयति । नाश करता है =

नाशयति। प्राप्त कराती है = प्रापयति। सुनाती है=श्रावयति। कराती है= कारयति। चोरी करवाती है = चोरयति। छुड़वाती है=त्याजयति। सुलाती है = स्वापयति। रुलाता है = रोदयति। दिखलाता है = दर्शयति। नचाते हैं = नर्तयन्ति। प्रसन्न करता है = प्रीणयति। छुड़वाता है = मोचयति। नीचे गिराता है = पातयति। पकवाता है = पाचयति। मरवाता है = मारयति, घातयति।

अभ्यास २७

(उपसर्ग युक्त धातुयें)

मित्र मित्रों की **भलाई करते** हैं। राम ने सीता को वन में जाने की **आज्ञा दे दी**। मैं **आक्षेप** नहीं करता केवल सत्य कहता हूँ। कृष्ण अर्जुन पर **कृपा करता है**। **प्रतिज्ञा करो** कि तुम भरत को राज्य और राम को वनवास दोगे। गिद्ध ने बिल्ले से कहा—यहाँ से **परे हट**। सुख दुःखों के **पीछे आता** है। जब समय **समीप आता** है काम सिद्ध हो जाता है। आपके दर्शन से वह **प्रसन्न है**। वीर की कीर्ति सारे संसार में **फैलती है**। पाण्डव कौरवों से **युद्ध करते थे**। आप इस दुःख का क्या **प्रतिकार करेंगे** ? अपनी जबान **रोको**। दुश्मन बुराई **करते** हैं। यमुना नदी किस स्थान से **निकलती है** ? बच्चे अपने बड़े का **अनुकरण करते** हैं। देश की दुर्दशा देख कर किसका चित्त **अशान्त न होगा**।

सहायतार्थं टिप्पणी—भलाई करना = उप + कृ। आज्ञा देना = अनु + ज्ञा। आक्षेप करना = आ + क्षिप्। कृपा करना = अनु + गृह्। प्रतिज्ञा करना = प्रति + ज्ञा। परे हटना = अप + सृ। पीछे आना अथवा पीछा करना = अनु + सृ। समीप आना = प्रति+आ+सीद् (= प्रत्यासीद्)। प्रसन्न होना = प्र + सीद्। फैलना = प्र + सृ। युद्ध करना = वि + गृह्। प्रतिकार करना = प्रति + कृ। रोकना = नि + गृह्। बुराई करना = अप+ कृ। निकालना = निः + सृ (= निस्सर्)। अनुकरण करना = अनु + कृ। दुःखी होना अथवा अशान्त होना = वि + सीद् (= विषीद्)।

अभ्यास २८

(शतृ और शानच् प्रत्यय)

शिष्य **नमस्कार करता हुआ** अपने घर गया । **मरता** क्या न करता । धन **पाया हुआ** कौन अभिमानी नहीं हो जाता ? हम दोनों बाग को **देखते हुये** पाठ **याद करते हुये** घर को गये । **जाते हुये** पथिक ने तालाब के किनारे पर एक वृद्ध व्याघ्र देखा । बालक ने **हँसते हुये** दण्ड को ग्रहण किया । वह तालाब से पानी **पीता हुआ** आगे चला । राजा रघु दान **देता हुआ** अति प्रसन्न होता था । पथिक मार्ग **पूँछता हुआ** मुनि के आश्रम में पहुँच गया । **नष्ट होता हुआ** धर्म वंश का नाश कर देता है । सिंह **सोता हुआ** भी भयानक होता है । सीता राम **ध्यान करती हुई** समय बिताती थी । कृपा **पाता हुआ** शिष्य ही विद्या को सफल करता है । **सेवा करता हुआ** शिष्य गुरु से विद्या ग्रहण करता है । **बढ़ता हुआ** चन्द्रमा आँखों को आनन्दित करता है । मनुष्य **काम करता हुआ** ही शोभा पाता है ।

सहायतार्थ टिप्पणी—नमस्कार करता हुआ = नमन् । मरता = म्रियमाणः । पाता हुआ = आप्नुवन् । देखते हुये = पश्यन् । याद करते हुये = स्मरन् । जाते हुये = गच्छन् । हँसते हुये = हसन् । पीता हुआ = पिबन् । देता हुआ = ददत् । पूँछता हुआ = पृच्छन् । नष्ट होता हुआ = नश्यन् । सोता हुआ = शयानः । ध्यान करती हुई = चिन्तयन्ती । पाता हुआ = लभमानः । सेवा करता हुआ = सेवमानः । बढ़ता हुआ = वर्धमानः । काम करता हुआ = कुर्वन् ।

अभ्यास २९

(प्रत्यय सन्बन्धी वाक्य)

क्त, क्तवतु, तुमुन्

१. **जुलाहे** ने **साड़ी** बनाई ।
२. वन में गये हुये राम ने ऋषियों को प्रणाम किया ।
३. राजा शत्रुओं को जीतकर पृथ्वी पाता है ।
४. **योगी** इन्द्रियों को जीतना **प्रारम्भ करता है** ।

५. मैं गाँव जाने की इच्छा करता हूँ ।
६. मैं **नित्य** प्रातः उठ कर पढ़ना शुरू करता हूँ ।
७. राजा ने बहुत से **कुयें** और **तालाब खुदवाये**।
८. **जाल लेकर कबूतर** उड़ गये ।
९. बाग से फूल लेकर देवदत्त **मन्दिर** को जाता है ।
१०. हम दोनों गुरु जी को प्रणाम करने जायँगे ।
११. स्त्रियाँ घड़े लेकर पानी के लिये कुयें पर जाती हैं ।
१२. उस **लड़ाई में** बहुत से **सिपाही** मारे गये ।
१३. अपने मरे हुये पति का स्मरण कर वह फिर मोहित हो गई ।
१४. वह बालक समुद्र के किनारे छोड़ दिया गया था ।
१५. हमारे दुःख **हरने के लिये** ईश्वर ही समर्थ है ।

सहायतार्थ टिप्पणी—जुलाहा = तन्तुवायः । साड़ी = शाटी । योगी = योगिन् । प्रारम्भ करता है = उपक्रमते । नित्य = प्रत्यहम् । कुआँ = कूपः । तालाब = तडागः । खुदवाये = खाताः । कबूतरः = कपोतः । जाल=जालम् , पाशम् । लेकर = आदाय, गृहीत्वा । मन्दिर = देवालयः । लड़ाई में = संगरे, युद्धे । सिपाही = सैनिकः, योधः । हरने के लिये = हर्तुम् , अपहर्तुम् , परिहर्तुम् ।

अभ्यास ३०

[विविध शब्द]

१. हमारे स्कूल के विद्यार्थी **बम्बई** गये हैं ।
२. मैं तो **कानपुर** का रहने वाला हूँ, तुम कहाँ रहते हो ?
३. मेरे पिताजी परिवार के साथ **लखनऊ** में रहते हैं ।
४. हम सब **आने वाली** गर्मी की छुट्टियों में **बनारस** जायेंगे ।
५. तुम दोनों पिछले महीने **इलाहाबाद** क्यों गये थे ?
६. एक बार मैं अपने मित्र के साथ **लखीमपुर** गया था ।
७. अशोक का एक सुन्दर स्तम्भ **पटना** में भी है ।

८. भारतीयसंस्कृति और धर्म के प्रचार के लिये ही **गोरखपुर** में एक बहुत बड़ा **छापाखाना खोला गया है** ।

९. वे दोनों मूर्ख पण्डित **कन्नौज** से ही आये थे ।

१०. क्या तुम्हारे मामाजी **कलकत्ता** में रहते हैं ।

११. **पेशावर** नाम के नगर में फल खूब पैदा होते हैं ।

१२. **पंजाब** प्रान्त में पाँच नदियाँ बहती हैं ।

१३. **बंगाल** में चावल और जूट की खेती बहुत सफलता पूर्वक की जाती है ।

१४. **गुजरात** प्रान्त के पोरबन्दर नामक स्थान में गान्धी जी ने जन्म लिया था ।

१५. **मालवा** की काली मिट्टी में कपास पैदा होती है ।

सहायतार्थ टिप्पणी—बम्बई = मोहमयी । कानपुर = कान्यकुब्जपुर । लखनऊ = लक्ष्मणपुर । आनेवाली=आगामि । बनारस=वाराणसी, काशी । इलाहाबाद = प्रयाग । लखीमपुर = लक्ष्मीपुर । पटना = पाटलिपुत्र । गोरखपुर=गोरक्षपुर । छापाखाना = मुद्रणालयः । खोला गया है=स्थापितः । कन्नौज=कान्यकुब्ज । कलकत्ता = कलिकाता । पेशावर=पुरुषपुर । पञ्जाब= पञ्चनदप्रदेश । बंगाल = बंगप्रदेश । गुजरात = गुर्जरप्रदेश । मालवा = मालवाप्रदेश ।

अभ्यास ३१

[विविध शब्द]

१. मेरे नाना-नानी और दादा-दादी सभी मर गये ।

२. लक्ष्मण राम के छोटे भाई, शत्रुघ्न के बड़े भाई और सीता जी के देवर थे ।

३. सीता और गीता क्रमशः मेरी बड़ी और छोटी बहनें हैं ।

४. रमेश के चाचा जी कानपुर में और मामा जी **गोरखपुर** में रहते हैं ।

५. प्रेमनाथ राजकपूर का साला है और राजकपूर प्रेमनाथ का बहनोई।
६. तुम मेरी मामी हो और मैं तुम्हारा भानजा।
७. सास ससुर अपने दामाद को अपने सगे बेटे के समान **मानते हैं**।
८. ननद-भौजाई में नाना प्रकार की **हँसी-मजाकें** हुआ करती हैं।
९. मेरा मित्र और तुम्हारी सहेली परस्पर भाई-बहन हैं।
१०. नौकर को मालिक की आज्ञा का पालन करना चाहिये।
११. प्रायः यह देखा गया है कि सौतें आपस में झगड़ती रहती हैं।
१२. अर्जुन के पोते परीक्षित विद्वानों का बड़ा आदर किया करते थे।
१३. सीता जी जनक की बेटी, दशरथ की पतोहू, राम की पत्नी, लक्ष्मण की भौजाई और लव-कुश की माँ थीं।
१४. घर आये हुये मेहमान का यथाशक्ति सत्कार करना चाहिये।
१५. मेरे चाचा जी मुझे बहुत **प्यार करते हैं**।

सहायतार्थ टिप्पणी—गोरखपुर=गोरक्षपुर। मानते हैं=आमनन्ति। हँसी-मजाक=परिहास। प्यार करते हैं=स्निह्यति, स्नेहं करोति।

अभ्यास ३२

[विविध शब्द]

१. सर्प **आँख** से देखता भी है और सुनता भी।
२. मोहन **कानों** से बहरा है।
३. तुम **नाक** से फूल सूँघते और **जीभ** से **स्वाद लेते हो**।
४. हमारे **शरीर** की **त्वचा** पर बहुत से **रोंगटे** हैं।
५. गान्धी जी के **हाथ** बहुत लम्बे थे।
६. पहाड़ी लोगों के **पैर** बहुत छोटे होते हैं।
७. गणेश जी का **मुँह** हाथी के मुँह के समान है।
८. शंकर जी की **जटाओं** में गंगा, **मस्तक** पर चन्द्रमा और **गले** में **खोपड़ियों की माला** शोभा देती है।
९. भृगु जी ने भगवान् विष्णु की **छाती** पर पाद-प्रहार किया था।

१०. **लार** बहना बच्चों की तन्दुरुस्ती का सूचक है।
११. मैंने उस लड़के के **गाल** पर **तमाचा** जमा दिया।
१२. उसने भी **बदले में** मुझे **दाँत** से काट लिया।
१३. शेर के लिये उसके **नाखून** बड़े उपयोगी हैं।
१४. मेरी **कोहनी** आज **बड़ी जोर से दुःख रही है**।
१५. हनुमान जी ने **मुट्ठी** के एक ही प्रहार से उसके प्राण हर लिये।

सहायतार्थ टिप्पणी—आँख = नेत्रम्। कान = कर्णः। नाक = नासा। जीभ = जिह्वा। स्वाद लेते हो = स्वादं जानासि। शरीर = शरीरं। त्वचा = त्वक्। रोंगटे = तनूरुहाः। हाथ = करः। पैर = पादः। मुँह = मुखं। जटाओं में = जटाजूटेषु। मस्तक = ललाटं। गला = ग्रीवा। खोपड़ियों की माला = मुण्डमाला। छाती पर = वक्षसि, उरसि। लार बहना = लालास्रावः। गाल = कपोलः। तमाचा = चपेटः। बदले में = प्रतीकाररूपेण। दाँत = दन्तः। काट लिया = दंशनं कृतः। नाखून = नखं, नखः। कोहनी = कफोणी। बड़ी जोर से = अतिशयेन। दुःख रही है = दूयते। मुट्ठी = मुष्टिका।

अभ्यास ३३

[विविध शब्द]

१. मैं **मोटर** से इलाहाबाद गया था।
२. बच्चों के स्वभाव में **शरारत** तो जुड़ी ही होती है।
३. करीम ने **बन्दूक** से दो चिड़ियाँ मार गिराईं।
४. चोर ने **सिपाही** की नाक काट ली।
५. किसी से **मर्मभेदी** बात न कहनी चाहिये।
६. उसका **शाप** धीरे-धीरे क्षीण हो रहा है।
७. किसी से **ईर्ष्या** न करनी चाहिये।
८. आकाश में कई **धूम्रकेतु** घूम रहे हैं।
९. तुम्हारे **आंगन** में **अनार** का पेड़ है।
१०. वह स्वभाव से बड़ा **रूखा** है।
११. मैं **रूखी** रोटी न खाऊँगा।

१२. **जंगल** में शेर भी रहते हैं।
१३. सुरेश पक्का **कर्जदार** है।
१४. मैं पूर्ण **स्वस्थ** हूँ।
१५. बन्दर **नकल** में निपुण होते हैं।
१६. मेरे हृदय में भी **अँधेरा** ही अँधेरा है।
१७. शक्ति का **घटना** चिन्ताजनक होता है।
१८. लोग अपराध छिपाने में सौ-सौ **बहाने** ढूंढ़ते हैं।
१९. गुरु की **निन्दा** न करनी चाहिये।
२०. जन्म से सोलहवें **वर्ष** कन्या का विवाह कर देना।

सहायतार्थ टिप्पणी—मोटर = मरुत्तायनम्। शरारत = उत्पातः। बन्दूक = द्विनालिका। सिपाही = यामिकः। मर्मभेदी = अरुन्तुद (विशे०)। शाप = शापम् (नपुं०)। अकरणिः (स्त्री०)। ईर्ष्या = ईर्ष्या, अशान्तिः (स्त्री०)। धूमकेतु = अग्न्युत्पातः। आँगन = अङ्गणम्, अजिरम्। जंगल = अटवी, अरण्यम्। कर्जदार = अधमर्णः। स्वस्थ = निरामय (विशे०)। नकल = अनुहारः। अँधेरा = अन्धकारः, अन्धकारम्। घटना = अपचयः। बहाना = अपदेशः। निन्दा = अपवादः। वर्ष = अब्दः।

अभ्यास ३४

[विविध शब्द]

१. हमें किसी सांसारिक वस्तु में विशेष **आसक्ति** न रखनी चाहिये।
२. यह **सभामण्डप** खूब सजाया गया है।
३. **गाली देना** तुम्हें शोभा नहीं देता।
४. **बहेलिया** अपना **जाल** लेकर चल पड़ा।
५. मेरी गाय **गाभिन** है।
६. **रोग न होना** बहुत बड़ा वरदान है।
७. यह और कुछ नहीं, बल्कि **हाथी का खूँटा** है।
८. शिमला कितनी **ऊँचाई** पर बसा है?
९. मैं तो हमेशा मरने के लिये **तैयार** हूँ।

१०. चुप रहो, यह **ग्रहण का समय** है।

११. आज मेरी माँ का एकादशी **व्रत** है।

१२. तुम बेकार का **ताना** क्यों मार रहे हो ?

१३. **घूसखोरी** में उसका बड़ा नाम है।

१४. नदियों की **घाटियों** में खूब खेती होती है।

१५. यह प्रदेश **ऊबड़-खाबड़** है।

१६. यह **कर्जदार** है और यह **कर्ज देने वाला**।

१७. सोशलिस्ट पार्टी का चुनावचिह्न **झोंपड़ी** है।

१८. **उत्कण्ठा** के कारण मेरा हृदय **बेचैन** है।

१९. हिमालय पहाड़ की **उत्पत्ति** कब हुई ?

२०. **घबड़ाहट** में उसके हाथ से **कटोरा** छूट गया।

सहायतार्थ टिप्पणी—आसक्ति=आसक्तिः। सभामण्डप=आस्थानम्। गाली देना = आक्रोशनम्। बहेलिया = व्याधः। जाल = आनायः। गाभिन= आपन्नसत्वा। रोग न होना = आरोग्यम्। हाथी का खूँटा = आलानम्। ऊँचाई = उत्सेधः, उत्कर्षः। तैयार = उन्मुख (विशे०)। ग्रहण = उपरागः। ग्रहण का समय = उपराग-वेला। व्रत = उपवासः। ताना = उपालम्भः। घूसखोरी=उत्कोचः। घाटी=उपत्यका। ऊबड़-खाबड़=उन्नतानत (विशे०)। कर्जदार = अधमर्णः। कर्ज देने वाला = उत्तमर्णः। झोपड़ी=उटजः, उटजम्। उत्कण्ठा = उत्कण्ठा, उत्कलिका। बेचैन = अस्थिर (विशे०)। उत्पत्ति = उद्भवः, उत्पत्तिः। घबड़ाहट = उद्वेगः। कटोरा = कंसः।

अभ्यास ३५

[विविध शब्द]

१. अभी दूध **कुछ-कुछ गरम** है।

२. मोहन का मामा **गंजा** है।

३. किसी ने **खलिहान** में आग लगा दी।

४. यह भिखारी **लँगड़ा** है।

५. रमेश की बहन **लूली** है।

६. मेरी **अर्थी** बड़े शान से निकलेगी।
७. इस **चरागाह** की घास बहुत मुलायम है।
८. गाय का **गोबर** बड़ा गुणकारी होता है।
९. उस **गुफा** में शेर रहता है।
१०. **ज्योतिषी** बड़े चालबाज होते हैं।
११. **घाट** पर जाकर कपड़े धो लाओ।
१२. **चौराहे** पर प्रकाश होना चाहिये।
१३. चिड़ियाँ **चोंच** से खाती हैं।
१४. यह पत्थर बड़ा **चिकना** है।
१५. यह मोर का **पंख** है।
१६. मेरी **जाति के लोग** अशिक्षित हैं।
१७. **झरने** की शोभा भी देख लो।
१८. ये मिरचे बड़े **तीखे** हैं।
१९. मेरी **गलती** को माफ कर दीजिये।
२०. आकाश में **तारे** चमकते हैं।

सहायतार्थ टिप्पणी—कुछ-कुछ गरम = कवोष्णम्। गंजा = खल्वाटः। खलिहान = खल्या। लँगड़ा = खञ्जः। दोनों पैरों से लँगड़ा = गड्डुलः। लूला = खञ्जः। अर्थी = खट्वा (स्त्री०)। चरागाह = गोचरः। गोबर = गोमयः, गोमयम्। गुफा = गुहा, कन्दरा, गह्वरम्। ज्योतिषी = गणकः। घाट = घट्टः। चौराहा = चतुष्पथम्। चोंच = चंचूः (स्त्री०)। चिकना = चिक्कणम्। पंख = छदः, छदम्। जाति के लोग = ज्ञातयः। जाति = ज्ञातिः। झरना = झरः, जलप्रपातः। तीखा = तिक्तम्। गलती = दूषणम्, स्खलितम्। तारा = नक्षत्रम्।

अभ्यास ३६

[विविध शब्द]

१. हमें कभी **झूठ** न बोलना चाहिये।

२. नगर में **उपद्रव** मच गया।

३. वह **शोक** में **डूबा हुआ** था।
४. **साँप** ने उसे घर **खाया**।
५. **आकाश** में चाँद मुस्करा रहा था।
६. अर्जुन का **निशाना** अचूक था।
७. बादल तो **धुआँ,** प्रकाश, जल और वायु का **समूह** मात्र है।
८. **शव** के पीछे-पीछे विशाल जन-**समुदाय** चला जा रहा था।
९. मैं तो तुम्हारी **तरक्की** की ही **कामना करता** हूँ।
१०. **घबढ़ाहट** की वजह से उसने थाली गिरा दी।
११. वनदेवता मेरी **गवाही** देंगे।
१२. वह **डर** के मारे घुला जा रहा है।
१३. मकान बनाने में **बालू** का प्रयोग भी होता है।
१४. राजा ने नदी पर **पुल** बनवाया।
१५. बादल की **गड़गड़ाहट** सुन कर स्त्रियाँ डर जाती हैं।
१६. शेर को देख कर हमारे हृदय की **स्थिरता** भाग गई।
१७. घोड़े की **हिनहिनाहट** सुन कर सैनिक जाग पड़ा।
१८. उसके शरीर पर **हरी साड़ी** बहुत अच्छी लगती है।
१९. राम और श्याम में गहरी **दोस्ती** है।
२०. मनोहर की **सज्जनता प्रसिद्ध** है और सुरेश की **दुष्टता**।

सहायतार्थ टिप्पणी—झूठ = वितथम्, असत्यम्। उपद्रव = विप्लवः। शोक = विषादः, शोकम्। डूबा हुआ = निमग्न (विशे०)। साँप = व्यालः। आकाश = वियत्, अम्बरम्। निशाना = सन्धानम्। धुआँ = धूमः, धूम्रः। समूह = सन्निपातः। शव = शवः। समुदाय = समवायः, राशिः। तरक्की = समुन्नतिः (स्त्री०)। कामना करना = कम् धातु। घबड़ाहट = संभ्रमः। डर = साध्वसम्। बालू = सिकता। पुल = सेतुः। गड़गड़ाहट = स्तनितम्। स्थिरता = स्थैर्यम्। हिनहिनाहट = हेषा। हरी = हरिता (विशे०)। साड़ी = शाटी। दोस्ती = सौहार्दम्। सज्जनता = सौजन्यम्। प्रसिद्ध = प्रथित (विशे०)। दुष्टता = दौर्जन्यम्।

अभ्यास ३७

[विविध शब्द]

१. **पाप** का घड़ा भर चुका है।
२. चाँद के चेहरे पर भी एक काला **दाग** है।
३. **अधिक इज्जत** से भी डरना चाहिये।
४. कुछ लड़के **अत्यन्त लज्जालु** होते हैं।
५. प्रसाद की कविता **बेजोड़** है।
६. यह **खबर** सरासर **झूठ** है।
७. उद्योगी के उन्नतिपथ में कोई **बाधा** नहीं आती।
८. हमने जनमेजय जी को **नये** कालिदास की उपाधि दी है।
९. गरीबों को **ठगना** तुम्हें शोभा नहीं देता।
१०. एनासिन सिरदर्द की **अचूक** दवा है।
११. नाटक की **समाप्ति** सुखद रही।
१२. यहाँ मांस **खाना मना है**।
१३. उसका हृदय **वज्र** के समान कठोर है।
१४. मैंने **काले** वस्त्र पहने एक पुरुष को देखा।
१५. रमेश का बड़ा भाई **नकचपटा** है।
१६. हरिमोहन पैदाइश से ही **नकटा** है।
१७. मेरा मित्र **बेहोश** था।
१८. यह आम बहुत **खट्टा** है।
१९. **आजकल की** दुनियाँ में किसी का सिर काट लेना कोई बड़ी बात नहीं है।
२०. पेड़ पर एक बन्दर **लटका हुआ है**।

सहायतार्थ टिप्पणी—पाप = पापं, अघं, अहस्। दाग = अंकः। अधिक इज्जत = अत्यादरः। अत्यन्त लज्जालु = अतिह्रेपणः। बेजोड़ = अनुत्तमः, अनुत्तमा, अनुत्तमम्। झूठा = अनृतम्। खबर = उदन्तम्। बाधा= अन्तरायः। नया = अभिनव (विशे०)। ठगना = अतिसन्धानम्। अचूक = अमोघ (विशे०)। समाप्ति = अवसानम्। खाना = अशनम्। मना है =

वर्जितम् अस्ति । वज्र = अशनिः । काला = असित (विशे०) । नकचपटा= अवनाटः, अवटीटः । नकटा = छिन्ननासिकः । बेहोश = अपगतचेतनः । खट्टा= अम्लम् । आजकल की=आधुनिक (विशे०), अर्वाचीन (विशे०) । लटका हुआ = अवलम्बितः ।

अभ्यास ३८

[विविध शब्द]

१. मैं तुम्हारा **मतलब** न समझ पाऊँगा ।
२. **नालिश** के कारण उसे कचहरी जाना पड़ा ।
३. आज **आकाश** बिल्कुल मेघरहित है ।
४. यह मकान **टेढ़ा** है ।
५. हम अपनी माँ का **तिरस्कार** सहने में असमर्थ हैं ।
६. तुम **रनिवास** में प्रवेश न कर सकोगे ।
७. आजकल **फूहड़** गीतों का बड़ा प्रचलन है ।
८. सीता गुड़िया खरीदने **बाज़ार** गई है ।
९. यह **जौहरी** की **दुकान** है ।
१०. यह **दुकानदार** बड़ा **ठग** है ।
११. इस पौधे के **थल्हे** में पानी भर दो ।
१२. रमेश **भँवर** में फँस कर डूबने लगा ।
१३. मैसूर में सोने की **खानें** हैं ।
१४. आजकल कनपटीमार का **आतंक** फैल रहा है ।
१५. तुम इस कड़ी **धूप** में कहाँ जा रहे हो ?
१६. राम ने शबरी की **मेहमानगीरी** मंजूर कर ली ।
१७. आजकल बाज़ार पर सिन्धी और पंजाबियों का ही एकमात्र **अधिकार** है ।
१८. **आमदनी** के अनुसार ही खर्च भी करना चाहिये ।
१९. सूर्य निकलते ही **उजाला** फैलने लगता है ।
२०. हमारी आँखों के सामने अज्ञान का **पर्दा** पड़ा है ।

सहायतार्थं टिप्पणी—मतलब = अभिप्रायः । नालिश = अभिहारः । आकाश = अम्बरम् । तिरस्कार = अवज्ञा । रनिवास = अवरोधः । फूहड़ = अश्लीलम् । बाजार = आपणम् , आपणः । जौहरी = मणिकारः । दुकान = आपणः, आपणम् । दूकानदार = आपणिकः । ठग = वञ्चकः । पौधा = पादपः । थलहा = आलवालम् । भँवर = आवर्तः । खान = आकरः । आतंक = आतंकः । धूप = आतपः । मेहमानगीरी = आतिथ्यम् । अधिकार = आधिपत्यम् । आमदनी = आयः । उजाला = आलोकः, प्रकाशः । परदा = आवरणम् ।

अभ्यास ३९

[विविध शब्द]

१. मेरी इस छोटी सी **भेंट** को स्वीकार कर लीजिये ।
२. बेटा ! अब **आचमन** कर डालो ।
३. राजा ने ब्राह्मणों को **ऊनी कम्बल** दिये ।
४. राम का भाई बड़ा **पेटू** है ।
५. कुछ ऊँटों के दो **कूबड़** होते हैं ।
६. उसने घर-बार छोड़ **गेरुये कपड़े** पहन लिये ।
७. पेड़ की **खोह** में उल्लू रहता है ।
८. **बदनामी** किसी की भी हो, मुझे नहीं **भाती** ।
९. किसान **खेत** जोतता है ।
१०. तुम्हारे कुकर्म के कारण मुझे महान् **असन्तोष** है ।
११. **कीचड़** में भी कमल उगते हैं ।
१२. आज तो खूब **ओलों** की **वर्षा** हुई ।
१३. तुम चिड़ियों के **घोसले** क्यों नष्ट करते हो ?
१४. हरिमोहन **कपास** खरीदने जा रहा है ।
१५. कभी-कभी तो मजदूरों को बहुत कम **मजदूरी** मिलती है ।
१६. सारथी **चाबुक** के बल से घोड़ों को काबू में रखता है ।
१७. **लगाम** ढीली करने पर घोड़े बहकने लगते हैं ।
१८. मुझे केवल एक **बालिश्त** कपड़ा दे दो ।

१९. जूते पहन लो, नहीं तो **काँटा** चुभ जायगा ।

२०. **कमखर्ची** ठीक है लेकिन **कंजूसी** ठीक नहीं ।

सहायतार्थ टिप्पणी—भेंट = उपहारः, उपदा । आचमन=उपस्पर्शः । ऊन = ऊर्णा । ऊनीकम्बल = ऊर्णाकम्बलम् । पेटू = औदरिकः (त्रिशे०) । कूबड़ = ककुदम्, ककुदः । गेरुवा कपड़ा = काषायम् । खोह = कोटरः, कोटरम् । बदनामी = कौलीनम् । भाति = रोचते । खेत = क्षेत्रम्, केदारः । असन्तोष = क्षोभः । कीचड़ = कर्दमः, पंकः । ओले = करका । वर्षा = वृष्टिः । घोसला = कुलायः, नीडः । कपास = कार्पासः, तूलम् । मजदूरी = कर्मण्या, पारिश्रमिकम् । चाबुक = कशा । बालिश्त = किष्कु । काँटा = कण्टकम्, कण्टकः । कमखर्ची = मितव्ययता । कंजूसी = कार्पण्यम् । लगाम = कणिका, खलीनम्, खलीनः ।

अभ्यास ४०

[विविध शब्द]

१. मेरे पास किसी की कोई **धरोहर** नहीं है ।

२. तोतों को **पिंजरे** में रख दो ।

३. इस **पिटारी** में क्या है ?

४. यह मुर्गा खूब **मोटा-ताजा** है ।

५. लड़की **कमरे** में नाचती है ।

६. औरतों ने रात में **जागरण** किया ।

७. तुम बड़े **जिद्दी** हो ।

८. कोई **उपाय** सोचो ।

९. मुझे **ताजे** फल अच्छे लगते हैं ।

१०. बीरबल बड़े **हाजिर जवाब** थे ।

११. यहाँ पानी का **छिड़काव** किया गया है ।

१२. हम लोग **साबुन** से हाथ धोते हैं ।

१३. अजी, यह तो **भूसे** का ढेर है ।

१४. जीवन पानी के **बुलबुले** के समान है ।

१५. स्त्रियाँ बड़ी **डरपोक** होती हैं।
१६. कल रात में **पाले** से खेत नष्ट हो गये।
१७. हाथियों का **झुण्ड** इधर ही आ रहा है।
१८. धोबी गधे को **लाठी** से पीटता है।
१९. **बुढ़ापा** बड़ा कष्टदायक होता है।
२०. मुझे एक **बालिश्त** ही कपड़ा दे दो।

सहायतार्थ टिप्पणी—धरोहर=न्यासः, निक्षेपः। पिंजरा = पञ्जरः। पिटारी = पिटः, करण्डिका। मोटा-ताजा = पीवरः, पीनः (विशे०)। कमरा = कक्षः, प्रकोष्ठः। जागरण = प्रजागरः, जागरणम्। जिद्दी = प्रतिनिविष्टः (विशे०)। उपाय = प्रतीकारः। ताजा = प्रत्यग्रः (विशे०)। हाजिर जवाब = प्रत्युत्पन्नमतिः (विशे०)। छिड़काव = प्रश्चोतनम्। साबुन = फेनिलः। भूसा = बुसः। बुलबुला = बुदबुदः। डरपोक = भीरु (विशे०)। पाला = मिहिका। झुण्ड = यूथः, यूथम्। लाठी = लगुडः, यष्टिका। बुढ़ापा = वार्धकम्। बालिश्तभर = वितस्तिमात्रम्।

अभ्यास ४१

[छीछालेदर]

एक पुरुष के दो स्त्रियाँ थीं। एक **बूढ़ी** थी और **दूसरी जवान**। वह स्वयं भी **वृद्ध होने को** था। उसके सिर के बाल कुछ सफेद और कुछ काले थे। एक दिन जवान स्त्री उसके **सिर में तेल मालिश** कर रही थी। उसने **सोचा** कि मैं तो जवान हूँ। इसलिये मेरा पति भी जवान होना चाहिये। ऐसा **निश्चय करके** उसने अपने पति के सिर से सफेद बाल **उखाड़ डाले**। एक दिन बूढ़ी स्त्री उसके सिर में तेल लगा रही थी। उसने सोचा कि मैं बूढ़ी हूँ। इसलिये मेरा पति भी बूढ़ा होना चाहिये। ऐसा निश्चय करके उसने भी उसके सिर से काले बाल उखाड़ डाले। इस प्रकार वह मनुष्य सर्वथा केश रहित हो गया। लोग उसे देखकर हँसते थे। **सच है कि** दो स्त्री वालों की यही **दशा** होती है।

सहायतार्थ टिप्पणी—बूढ़ी = वृद्धा। दूसरी = अपरा। जवान =

वृद्ध होने को = वृद्ध प्रायः । सिर में = सिरसि । तेल मालिश = तैल मर्दनम् । सोचा = अचिन्तयत् । निश्चय करके = निश्चित्य । उखाड़ डाले गये = उत्पाटिताः, उत्खनिताः । सच है = सत्यमिदम् । कि = यत् । दशा = अवस्था ।

अभ्यास ४२

[उस्ताद जी]

किसी गाँव में एक **उस्ताद** जी रहते थे। वे कुछ **शागिर्दों** को पढ़ाया करते थे। लड़के उस्ताद जी से वहुत डरते थे। वे अपने घर से कुछ न कुछ लाया करते थे और उस्ताद जी को दिया करते थे। रहीम नाम का भी एक शागिर्द था। वह उस्ताद जी के लिये कभी कुछ नहीं लाता था। इसलिये उस्ताद जी उसपर नाराज रहते थे। एक दिन रहीम एक **मिट्टी के कटोरे** को भरकर उस्ताद साहब के लिये दूध लाया। उस्ताद जी ने कटोरे को **जल्दी से** मुंह में लगा लिया और दूध **पीने लगे**। मगर कटोरा बहुत बड़ा था। उस्ताद जी सारा दूध **एक दम से** न पी सके। कुछ रुक कर उन्होंने रहीम से पूछा—"सुन तो रहीम, आज क्या बात है ? तू आज दूध कैसे ले आया ?" रहीम ने उत्तर दिया—"उस्ताद साहब, आज मेरी माँ दूध दुह रही थी। उसने ज्यों ही दूध दुह कर नीचे रखा कि एक **कुत्ता** आया और दूध पीने लगा। मेरी माँ ने सोचा कि वह दूध फेंकना बेकार है। इसी लिये उन्होंने यह दूध आपके लिये भेजा है।" उस्ताद ने सुनते ही कटोरा जमीन पर **पटक दिया** और लगे रहीम को **गाली** देने। रहीम ने **जोर-जोर** रोते हुये कहा—"उस्ताद साहब, आपने कटोरा फोड़ कर बड़ा **नुकसान** कर दिया है, क्योंकि मेरी माँ इस कटोरे में मेरे **छोटे भाई** को रात में पेशाब करवाया करती थीं।"

सहायतार्थ टिप्पणी—उस्ताद = शिक्षकः । शागिर्द = शिष्य । मिट्टी का कटोरा = मृन्मयपात्रम्, मृन्मय-कंसः । जल्दी से = क्षिप्रं एव । पीने लगे= पातुं प्रारभत् । एक दम से=एकपदेव । कुत्ता = कुक्कुरः । गाली=आक्रोशनं । जोर-जोर से = उच्चैः । नुकसान = हानिः । छोटा भाई = अनुजः । पटक दिया = अपातयत्

अभ्यास ४३

[दो मुसाफिर]

दो **मुसाफिर कहीं** जा रहे थे। उन्होंने **प्रतिज्ञा की** कि **मुसीबत में एक दूसरे का** साथ देंगे। वे एक **घने** जंगल में पहुँचे। वहाँ पहुँचते ही उनके **सामने** एक **रीछ आया**। उसे देखकर एक आदमी **फौरन ही** पेड़ पर चढ़ गया। दूसरा न चढ़ पाया। वह पेड़ पर चढ़ना न जानता था। उसने पेड़ पर चढ़े हुये अपने साथी से कहा—"मित्र, अब मैं क्या करूँ? मेरी मदद करो।" उसने उत्तर दिया—"मैं कुछ नहीं कर सकता। अपने **बचाव** का उपाय **खुद** सोचो।

उस असहाय व्यक्ति को एक **तरकीब** सूझ गई। वह प्राणायाम चढ़ाकर **लेट गया**। रीछ आकर उसे सूँघने लगा। उसने उसे मरा **समझ कर** छोड़ दिया। रीछ के चले जाने के बाद वह आदमी नीचे **उतरा** और दूसरे से पूछने लगा कि—"हे मित्र! वह रीछ तुम्हारे कान में क्या कह रहा था?" उसने उत्तर दिया कि—"रीछ कह रहा था कि **दगाबाजों** का कभी विश्वास **मत** करो।"

सहायतार्थ टिप्पणी—मुसाफिर = पथिक, पंथिन्। कहीं = कुत्रचित्। प्रतिज्ञा की = प्रतिज्ञातम्। मुसीबत् में = संकटे, आपात्काले। एक दूसरे का = अन्योन्यस्य। घना = सघनम्। सामने = पुरतः। रीछ = भल्लूकः। आया = समायातः। फौरन ही=तत्क्षणमेव। पेड़ पर चढ़ना=वृक्षारोहणम्। बचाव = रक्षा। खुद = स्वयमेव। तरकीब = युक्तिः। लेट गया = भूमौ पतितः। समझ कर = मत्वा। नीचे उतरा = अवततार। दगाबाज = विप्रलम्भकः। मत = मा।

अभ्यास ४४

[दुष्ट भेड़िया]

किसी नदी के **किनारे** एक **भेड़िया** और एक **भेड़ का बच्चा** पानी पी रहे थे। भेड़िया ऊपर की ओर और भेड़ का बच्चा नीचे की ओर था। भेड़िये ने भेड़ के बच्चे से कहा—"ओ **बेवकूफ**! पानी क्यों **जूठा** कर रहा

है, देखता नहीं कि मैं पानी पी रहा हूं ?" भेड़ के बच्चे ने जवाब दिया—भगवन् ! मैं आपके **नीचे की ओर** हूं, पानी तो ऊपर से मेरी ओर आ रहा है। फिर वह जूठा कैसे हो सकता है। भेड़िये ने कहा—"**ठीक है, परसाल** तूने मुझे **गाली** दी थी।" भेड़ के बच्चे ने जवाब दिया—"महाराज ! मैं केवल नौ महीने का हूं, पर के साल तो मैं पैदा भी नहीं हुआ था। भेड़िये ने कहा—"तेरा बाप रहा होगा।" भेड़ के बच्चे ने कहा—"मेरा बाप तो एक वर्ष पहले ही मर चुका है।" भेड़िये ने यह कहकर कि वह तेरी **जाति** का और कोई रहा होगा, भेड़ बच्चे को पकड़-कर **मार डाला** और **खा गया**। दुष्ट अपनी दुष्टता के लिए कोई न कोई **बहाना** बना ही लेता है।

सहायतार्थ टिप्पणी—किनारे = तीरे। भेड़िया = वृकः। भेड़ का बच्चा = मेष शावकः, अविसुतः। ओ बेवकूफ = अयि मन्दबुद्धे !। नीचे की ओर = अधस्तात्। ठीक है = भवतु, युक्तं। परसाल = गत-वर्षे, गते वर्षे। जाति = ज्ञाति। बहाना = व्याजः, अपदेशः। जूठा = अशुद्धं। गाली=गालिः। मार डाला = व्यापादितः। खा डाला = खादितः।

अभ्यास ४५

[शठ के साथ शठता]

किसी **तालाब** के किनारे एक बालक खेल रहा था। बालक के **बहुमूल्य** वस्त्रों और जेवरों को देखकर एक **ठग** उसके पास गया। बालक ने जब जाना कि वह ठग है, तब वह बहुत घबराया। वह कुछ सोचकर **रोने लगा**। बालक को रोते देख ठग ने उसके रोने का कारण पूछा। बालक ने कहा कि—"मेरी एक सोने की **अँगूठी** इस तालाब में गिर गई है।" ठग ने कपड़े उतारे और पानी में **घुस गया**। बालक ने ठग के कपड़े उठाये और भाग गया।

ठीक है, शरारती के साथ **शरारत** करना ही **ठीक है**।

सहायतार्थ टिप्पणी—तालाब = तडागः। बहुमूल्य = महार्ह। ठग = वञ्चकः। रोने लगा = रोदनं प्रारभत। अँगूठी = मुद्रिका। घुस गया = प्राविशत। शरारत = उत्पातः। ठीक है = उचितमस्ति।

अभ्यास ४६

[बोपदेव]

बोपदेव **बचपन** में बहुत मन्दबुद्धि था। **बार-बार** अभ्यास करने पर भी अपना पाठ **याद न कर सकता था**। उसने बड़े परिश्रम से व्याकरण के अनेक ग्रन्थ पढ़े, परन्तु उसे ज्ञान न प्राप्त हुआ। एक दिन वह निराश हो, पाठशाला **त्याग कर** एक सरोवर के किनारे जा बैठा और विचारमग्न हो गया।

थोड़ी देर बाद उसने एक युवती देखी, जिसने घड़ा जल से **भर कर** एक **पत्थर पर** रक्खा और वह स्नान करने लगी। स्नान करने के बाद वह घड़ा उठाकर अपने घर को चली गई।

प्रतिदिन घड़े की **रगड़** से उस पत्थर में एक **गड्ढा** हो गया था। यह देखकर बोपदेव के हृदय में एक नवीन भाव उदित हुआ और वह प्रसन्नचित्त हो गुरु के पास गया और बोला—

"गुरु जी! यदि प्रतिदिन घड़े की रगड़ से पत्थर में गड्ढा हो सकता है तो अवश्य ही निरन्तर परिश्रम से मेरी बुद्धि भी तीक्ष्ण हो जायेगी।"

बोपदेव का कथन सत्य निकला और एक दिन वह एक बहुत बड़ा विद्वान् हो गया।

सहायतार्थ टिप्पणी—बचपन=शैशवम्; बाल्यम्। बार-बार= पुनः पुनः (अव्यय)। याद न कर सकता था=स्मर्तुं नाशक्नोत्। त्याग कर=त्यक्त्वा। विहाय। भर कर=प्रपूर्य। पत्थर पर=प्रस्तरखण्डोपरि। पाषाण=शिलायाम्। रगड़=घर्षणम्। गड्ढा=गर्तः।

अभ्यास ४७

[मीरा]

मीरा एक राठौर सामन्त की कन्या थीं। **दो बातों के लिये** तो वह **बचपन** से ही विख्यात हो गई थी। एक तो अलौकिक रूपसौन्दर्य के लिये और दूसरे मधुर वाणी के लिये। उसके ये दो गुण देश-विदेश सब जगह

फैल गये। यहाँ तक कि उसकी सुन्दरता को देखने के लिये और उसके **सुरीले** गानों को **सुनने के लिये** दूर-दूर से लोग उसके पिता के **पास** आया करते थे। मीरा अपने रूपलावण्य और संगीत माधुर्य के द्वारा सबको मुग्ध कर देती थी।

मीरा बचपन से ही ईश्वर की भक्ति में लीन रहती थी। उसके जी में सांसारिक भोग-विलास की **लालसा** थी ही नहीं। वह सबको साथ लेकर भगवान् के गुणों का ही गान किया करती थी।

सहायतार्थ टिप्पणी—दो बातों के लिये = गुणद्वयेन, द्वाभ्यां गुणाभ्याम्। बचपन = बाल्यम् (नपुं०)। फैल गये = ख्यातिं गताः, प्रसिद्धाः, प्रसिद्धिगताः, विश्रुताः। सुरीला = मधुर (विशे०)। सुनने के लिये = श्रोतुम्। पास = समीपम्, अन्तिकम्। लालसा = तृष्णा।

अभ्यास ४८

[एक सरल सम्वाद]

तुम कौन हो? मैं एक लड़का हूँ। तुम्हारा क्या नाम है? मेरा नाम रमेश है। तुम क्या करते हो? मैं एक **विद्यार्थी** हूँ। किस कक्षा में पढ़ते हो? मैं दसवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। किस स्कूल में पढ़ते हो? मैं कान्यकुब्ज कालेज में पढ़ता हूँ। तुम्हारा घर कहाँ पर है? मैं **लखनऊ** में रहता हूँ। तुम यहाँ पर किस लिये आये हो? मेरे चाचा जी यहाँ पर रहते हैं। मैं **उनसे मिलने** आया हूँ। तुम्हारे चाचा जी **इस समय** कहाँ हैं? वे इस समय अपने **दफ्तर** में हैं। तुम्हारे कितने **मित्र** हैं? मेरे केवल दो मित्र हैं। उन दोनों के क्या नाम हैं? उनमें से एक का नाम रणधीर है और **दूसरे का** बज्रांगबली। इस समय तुम कहाँ जा रहे हो? इस समय मैं अपने **मामा** जी के यहाँ जा रहा हूँ। कब तक **लौटोगे?** मैं शाम को लौट आऊँगा। तुम मेरे घर कब आओगे? मैं तुम्हारे घर **परसों** आऊँगा। तुम अपने साथ और किसको लाओगे? मैं **अकेला ही** आऊँगा। ऐसा ही सही। **अच्छा,** नमस्ते।

सहायतार्थ टिप्पणी—विद्यार्थी = छात्रः, लखनऊ=लक्ष्मणपुर। किस लिये = कथं, किमर्थं। चाचा = पितृव्यः। उनसे मिलने के लिये = तस्य दर्शनाय। इस समय = इदानीं। दफ्तर = कार्यालयः। मित्र = मित्रं, वयस्यः। दूसरे का = अपरस्य। मामा = मातुलः। लौटोगे = प्रत्यागमिष्यसि। परसों= परश्वः। अकेला ही = एकाकी एव। अच्छा = भवतु।

अभ्यास ४९

[प्रातःकाल का उपयोग]

सवेरे का समय बड़ा ही **सुहावना** होता है। **रंग-बिरंगी चिड़ियों का** मधुर गान चित्त को **प्रसन्न कर देता है**। शीतल-मन्द-सुगन्ध वायु बल को **बढ़ाने वाली** होती है। जो लोग सूर्योदय के पूर्व **उठते हैं** वे स्वस्थ और चिरजीवी होते हैं। कोयल की तान मन को हर लेती है। फूलों की महक **दिमाग को** ताजा करती है और हरी-हरी घास आँखों को तरावट देती है। सवेरे **टहलना** या नदी-स्नान अवश्य करना चाहिये।

प्रातःकाल का काम सर्वश्रेष्ठ होता है। जिस मनुष्य का शरीर निर्बल है, उसे प्रातःकाल ही **कसरत** करनी चाहिये। जिसका दिमाग कमजोर है उसे प्रातःकाल मानसिक परिश्रम करना चाहिये। प्रातःकाल ईश्वर की प्रार्थना करने से मन दिन भर स्थिर, शान्त और प्रसन्न रहता है।

सहायतार्थ टिप्पणी—सुहावना=सुरम्यः। रंग-बिरंगी चिड़ियों का= विविधवर्णानां खगानाम्। प्रसन्न कर देता है = प्रसादयति। बढ़ाने वाली = वर्धिका, वर्धकः। उठते हैं = प्रबुध्यते, उत्तिष्ठन्ति। दिमाग को = मस्तिष्कम्। टहलना = परिभ्रमणम्। कसरत = व्यायामः।

अभ्यास ५०

[रामचरितमानस]

हम सब के लिये रामचरित एक निर्मल **दर्पण** है। इसमें हम देख सकते हैं कि बालकों को माता-पिता की आज्ञा का किस प्रकार पालन करना चाहिये? भाइयों को आपस में किस प्रकार प्रेम रखना चाहिये?

पतिव्रता स्त्री को अपने पति की सेवा कैसे करनी चाहिये ? अभिमानी और हठी मनुष्यों को हठ का क्या फल मिलता है ? सत्य पालन से क्या लाभ और असत्य से कैसी हानि होती है ?

प्यारे बालकों ! परम पवित्र रामायण का पढ़ना और उसके अनुसार सुनीति का **बर्ताव करना** तुम्हारे लिये हितकारी होगा और तुम अपनी संसार यात्रा का निर्वाह सुख से कर सकोगे ।

सहायतार्थ टिप्पणी—

दर्पण = दर्पणः, आदर्शः । किस प्रकार = कथम् । हठी = दुराग्रहशील (विशे०) । बर्ताव करना = वर्तनम् , व्यवहारः ।



[ख] हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करो

अभ्यास १

(लट् लकार = वर्तमान काल)

१. विद्यार्थी **अखबार** पढ़ते हैं।
२. **मेहनती** लड़के सदा सुखी रहते हैं।
३. **भौंरे** कमलों पर बैठते हैं।
४. **बाघ** मनुष्यों को खाता है।
५. पेड़ से **पके हुये** फल गिरते हैं।
६. हम दो **बन्दरों** को देखते हैं।
७. **चिड़ियाँ** आसमान में उड़ती हैं।
८. क्या तुम दोनों दौड़ते हो ?
९. वर्षा काल में **बादल** पानी **बरसाते** हैं।
१०. वह लड़की एक गीत गाती है।
११. **चोर** दूसरों का धन चुराता है।
१२. जंगल में **मोर** नाचते हैं।
१३. दवा से **रोग** नष्ट होते हैं।
१४. राजा की सभा में दो वेश्यायें नाचती हैं।
१५. हम दोनों संस्कृत पढ़ते हैं।

सहायतार्थ टिप्पणी—अखबार = समाचारपत्रं। मेहनती = परिश्रमशीलः। भौंरा = भ्रमरः। बाघ = व्याघ्रः। पके हुये = पक्वानि। बन्दर = वानरः। चिड़ियाँ = पक्षिणः। बादल = मेघः, बलाहकः। बरसाते हैं = कटन्ति। चोर = चोरः, तस्करः। मोर = मयूरः। रोगः = व्याधिः। सभा में = सदसि, सभायां। वेश्या = गणिका।

अभ्यास २

(लट् लकार = वर्तमान काल)

१. तुम दुःख **सहते** हो ।
२. योधा शत्रुओं से **युद्ध करता** है ।
३. तू **इनाम** की **इच्छा करता** है ।
४. मनुष्य प्रायः धन के लिये **यत्न करता** है ।
५. भक्त को ईश्वर की पूजा **अच्छी लगती** है ।
६. मैं आचार्य से अपना कर्तव्य **सीखता** हूँ ।
७. पर्वत कभी नहीं **हिलते** ।
८. नीले आकाश में तारे **चमकते** हैं ।
९. हम अपने माता पिता की **सेवा करते** हैं ।
१०. मूर्ख के अङ्ग **बढ़ते** हैं, ज्ञान नहीं ।
११. माता को देखकर बालक **मुस्कराता** है ।
१२. **सुनार** सोने की **परख करता** है ।
१३. हम अपने किये कर्मों का फल **पाते** हैं ।
१४. **गोबर से** बिच्छू **पैदा होते** हैं ।
१५. लोग देवताओं से भोगों की **याचना करते** हैं ।
१६. बुद्धिमान् ऐश्वर्य में **प्रसन्न नहीं होते** ।
१७. सत्य सदा **विजयी होता** है ।
१८. अपनी गाय को मोहन **खोजता फिरता है** ।
१९. हम सत्कर्मों से मोक्ष **प्राप्त करते** हैं ।
२०. दुःख और सुख संसार से ही **उत्पन्न होते** हैं ।

सहायतार्थ टिप्पणी—सहन करना = सह (आ०) । युद्ध करना = युध् (आ०) । इनाम = पारितोषिकम् । इच्छा करना = अप + ईक्ष् (आ०) । यत्न करना = यत् (आ०), प्र + यत् (आ०) । अच्छा लगना = रुच् = रोच् (आ०) । सीखना = शिक्ष् (आ०) । हिलना = कम्प् (आ०) । चमकना = प्र + काश् (आ०) । सेवा करना = सेव् (आ०) । बढ़ना = वृध् = वर्ध् (आ०) ।

मुस्कराना = स्मि = स्मय् (आ०)। सुनार = कलादः, हेमकारः, स्वर्णकारः। परखना = परि + ईक्ष् (आ०)। पाना = लभ् (आ०), विन्द् (आ०)। गोबर से = गोमयात्। पैदा होना = जन् = जाय् (आ०)। माँगना = याच् (आ०)। प्रसन्न होना = मुद् = मोद् (आ०)। विजयी होना = वि + जि = विजय् (आ०)। खोजना = मृग् = मृगय् (आ०)।

अभ्यास ३

(लट् लकार = वर्तमान काल)

अध्यापक कक्षा में आज इतिहास पढ़ाता है। **माली बाल्टी से** बाग को सींचता है। तुम घर में घुसते हो। अभिमानी पुरुष अपने अभिमान का फल **खाते हैं**। पेड़ फल आने पर **झुक जाते हैं**। राजा अपने विवेक से प्रजा पर शासन करता है। विद्यार्थी गुरु जी को प्रणाम करता है। सोहन मोहन के साथ गाँव को सवारी से जाता है। भक्त ईश्वर की पूजा करते हैं। इन्द्र की सभा में अप्सरायें नाचती हैं, गन्धर्व **गाते हैं**, किन्नर **बजाते हैं**। बालक आपस में मिलकर मैदान में खेलते हैं। तुम अपनी माता के पत्र में क्या लिखती हो ? पिता पुत्र की विजय से प्रसन्न है। वामन राजा **बलि से पृथ्वी माँगते हैं**। परिश्रमी छात्र जीवन में अवश्य सफल होता है। सेनापति सैनिकों को **कूच करने की** आज्ञा देता है। तुम सब प्रातःकाल स्वास्थ्य के लिये बाहर **घूमते हो**। ग्वाले जंगलों में गायों को **चराते हैं**।

सहायतार्थ टिप्पणी—माली = मालाकारः। बाल्टी से = जलपात्रेण। खाते हैं = भुञ्जते। झुक जाते हैं = अवनमन्ति। गाते हैं = गायन्ति। बजाते हैं = वादयन्ति। बलि से पृथ्वी माँगते हैं = बलिं वसुधां याचते। कूच करने के लिये = अभियानाय। घूमते हो = परिक्रामसि। चराते हैं = चारयन्ति।

अभ्यास ४

(लट् लकार = वर्तमान काल)

१. सूर्य अपने प्रकाश से अन्धकार को दूर करता है।

२. विद्वान् का यश सारे संसार में फैलता है।

३. गंगा नदी हिमालय से निकलती है।
४. **बच्चा** माँ की **गोद में निःशंक भाव से** सोता है।
५. इस सुन्दर वृक्ष की शीतल छाया में हरिण विश्राम करते हैं।
६. सेनापति सैनिकों को **कूच करने के लिये** आज्ञा देता है।
७. **ग्वाले** जंगलों में गायों को **चराते हैं**।
८. अध्यापक कक्षा में आज गणित पढ़ाता है।
९. नौकर मालिक का अनुसरण करता है।
१०. मैं याचकों को धन देता हूँ।
११. **किसान** धान्य के लिये खेत जोतते हैं।
१२. इन्द्र अपने **वज्र** से पर्वतों पर प्रहार करता है।
१३. सीता अपनी कलम से एक चिट्ठी लिखती है।
१४. हम दोनों गंगा स्नान करने जाते हैं।
१५. सज्जन लोग अपकार करने पर भी उपकार ही करते हैं।

सहायतार्थ टिप्पणी—बच्चा = शिशुः। गोद में = अंके। निःशंक भाव से = विश्रब्धेन। कूच करने के लिये = अभियानाय। ग्वाले = गोपालकाः। चराते हैं = चारयन्ति। किसान = कृषकः। वज्र = कुलिशम्।

अभ्यास ५

(लङ् लकार = अनद्यतन भूतकाल)

१. किसी जंगल में एक शेर रहता था।
२. तुमने उस दुष्ट को दण्ड क्यों नहीं दिया?
३. लक्ष्मण ने सीता को जंगल में छोड़ दिया।
४. ईश्वर ने सूर्य, चन्द्रमा और तारे बनाये।
५. शेर **कुयें** में गिर गया और मर गया।
६. उन्होंने हमारी **तारीफ** की।
७. पेड़ से दो **बन्दर** पृथ्वी पर गिर पड़े।
८. हम बनारस गये और वहाँ पर शिव का **मन्दिर देखा**।
९. लड़के ने **तीर** से चिड़िया मारी।

१०. कैकेयी ने मन्थरा को सोने के गहने दिये ।
११. क्या वह मेरी पुस्तक लाया ?
१२. कालिदास ने सात ग्रन्थ लिखे ।
१३. **जज** की आज्ञा से चोर को **पुलिस** वालों ने खूब पीटा ।
१४. रात में एक चोर घर में घुस आया ।
१५. मुझको देखकर बन्दर भाग गया ।

सहायतार्थ टिप्पणी—कुआँ = कूपः । तारीफ़ = प्रशंसा । बन्दरः = वानरः । मन्दिर = देवालयः । शिव का मन्दिर = शिवालयः । तीर=बाणः । जज = न्यायाधीशः । पुलिस वाला = यामिकः, राजपुरुषः ।

अभ्यास ६

(लङ् लकार = अनद्यतन भूतकाल)

१. हम दोनों **शेर** को देखकर भय से **काँप उठे** ।
२. **व्यापारियों** ने अपने परिश्रम से बहुत सा धन कमाया ।
३. हम सब आपके दर्शन से बहुत **प्रसन्न हुये** ।
४. नौकर ने मालिक की आज्ञा की **अवहेलना की** ।
५. मैंने भोजन के लिये तुम्हें **न्यौता दिया** था ।
६. पाण्डवों ने कौरवों के साथ **युद्ध किया** ।
७. **शिकारी** ने हिरन पर बाण **चलाया** ।
८. मैं तुम्हारी उन्नति पर बड़ा आनन्दित हुआ ।
९. सीता ने गीता से गाना **सीखा** ।
१०. तुम दोनों ने अपनी पुस्तकें क्यों **जला दीं** ?
११. **मैं पिछले वर्ष** इटारसी में **रहता था** ।
१२. **बुढ़िया** ने बच्चों से एक कहानी **कही** ।
१३. तुम मेरी कलम क्यों ले गये ।
१४. दो **परीक्षकों** ने कन्याओं की नृत्य में **जाँच की** ।
१५. सेनापति अपनी सेना युद्धभूमि में ले गया ।
१६. हम दोनों ने जनता को **शांत किया** ।

१७. शिवाजी ने शत्रु की स्त्रियों की भी रक्षा की।

१८. उस लड़की ने अनाज की **मुट्ठियों** से उस हिरन का **पोषण किया**।

१९. उदार मालिक ने नौकरों के सभी अपराध **क्षमा कर** दिये।

२०. **माली** ने राजा के लिये फूल **गूँथना प्रारम्भ किया**।

सहायतार्थ टिप्पणी—शेर = शार्दूलः, सिंहः। काँपना = कम्प्, वेप्। व्यापारी = वणिक्। प्रसन्न होना = मुद् (मोद्)। अवहेलना करना = अव + मन्। न्योता देना = नि + मंत्र। युद्ध करना = युध्। शिकारी = व्याधः। चलाना = क्षिप्, अस्। सीखना = शिक्ष्। जलाना = दह्। पिछले वर्ष = गते वर्षे, गतवर्षे। रहना = नि + वस्, प्रति + वस्। बुढ़िया = वृद्धा। कहना = कथय्। लेजाना = नी (= नय्), हृ (= हर्)। परीक्षक = प्राश्निकः। जाँच करना = परि + ईक्ष्। जाँच = परीक्षणम्। शान्त करना = सान्त्व। मुट्ठी = मुष्टिः। पोषण करना = पुष्। क्षमा करना = क्षम्। माली = मालाकारः। गूँथना = ग्रथनम्। प्रारम्भ करना = प्र + आ + रभ्।

अभ्यास ७

(लृट् लकार = भविष्यत् काल)

बालक बूढ़ी दादी से कहानी सुनेंगे। तुम बाहर टहलने जाओगे। अशोक परीक्षा में **उत्तीर्ण होगा**। क्या तुम सब **मोटरकार में** बैठोगे। हम सब झूठ नहीं बोलेंगे। दानी गरीबों को धन देगा। **सिपाही** वीरता से लड़ेंगे। कल हम **मेला देखेंगे**। आज माता जी और पिता जी **लौटेंगे**। श्याम पत्र कब लिखेगा? वे प्रतिदिन टहलने जायेंगे। वे दीनों की सहायता नहीं करेंगे। डाक्टर तुम्हें कब **दवा** देंगे? हम तुम्हारे विद्यालय जायेंगे। वे दोनों इस **बुरी आदत** को छोड़ देंगे।

सहायतार्थ टिप्पणी—टहलने = भ्रमणाय। उत्तीर्ण होगा = उत्तीर्णः भविष्यति। मोटरकार में = मरुत्तरयाने। झूठ = अनृतम्, असत्यम्। सिपाही = सैनिकाः। मेला देखेंगे (हम) = मेलापकं द्रक्ष्यामः। (पिता और माता जी) लौटेंगे = प्रत्यागमिष्यतः। दवा = औषधम्। बुरी आदत = दुर्व्यसनम्।

अभ्यास ८

(लृट् लकार = भविष्यत् काल)

गर्मियों की छुट्टियों में हम सभी नैनीताल जायेंगे। शायद आज बरसा होगी। अब तुम मेरे आशय को **समझ जाओगे**। कुम्भ के मेले में लाखों मनुष्य **इलाहाबाद** जायेंगे। पुत्र माता की सेवा करेगा। कल मैं **बाजार से** अर्थशास्त्र की पुस्तक **खरीदूँगा**। आज यहाँ वसन्त महोत्सव होगा। जैसा सोचोगे वैसा ही बनोगे। इस माह तक हमारा काम समाप्त हो जायेगा। अगले सप्ताह में इस बालक का **परीक्षाफल निकलेगा**। लड़को की सफलता से गुरु जी प्रसन्न होंगे। बलवीर पढ़ता तो नहीं है, क्या वह दसवीं कक्षा में जावेगा? तुम्हें कोई मार न **सकेगा**। धर्म तुम्हारी रक्षा अवश्य करेगा। जितना गुड़ डालोगे उतना ही मीठा होगा।

सहायतार्थ टिप्पणी—गर्मी की छुट्टियों में = ग्रीष्मावकाशे। आशय को = मन्तव्यम्। समझ जाओगे = अवगमिष्यसि। इलाहाबाद = प्रयागं। बाजार से = आपणात्। खरीदूंगा = क्रेष्यामि। परीक्षाफल निकलेगा = परीक्षाफलं प्रकाशिष्यते। सकेगा = शक्ष्यति।

अभ्यास ९

(लोट् लकार = आज्ञा)

१. तुम स्कूल जाओ।
२. राजा प्रजा का पालन करे।
३. तुम लोग सदा सत्य की **खोज करो**।
४. हम अपने पापों पर **लज्जित होवें**।
५. पक्षी उस पेड़ पर से **उड़ जायें**।
६. मैं मित्रों की उन्नति पर **आनन्द मनाऊँ**।
७. हम दोनों आम चखें।
८. तुम दोनों **बेकार में बातें मत करो**।
९. वह अपनी माँ का **स्मरण करे**।
१०. राम की जीत में सन्देह मत करो।

११. वे **सब** सोमरस पियें।

१२. लड़कों को लड्डू दो।

१३. तुम दोनों विद्याध्ययन में **प्रमाद मत करो**।

१४. यात्री वृक्ष की छाया में **आराम करें**।

१५. तुम्हारी सफलता पर तुम्हारे माँ बाप प्रसन्न होवें।

सहायतार्थ टिप्पणी—लज्जित होना = लज्ज्। खोज करना = मृग्। उड़ना = उत् + पत्, उत् + डी = उड्डी। प्रसन्न होना = मुद्। चखना = आ + स्वद्। बेकार की बात करना = जल्प्, प्र + जल्प्। स्मरण करना = स्मृ। लड्डू = मोदकः। प्रमाद करना = प्र + मद्। आराम करना = वि + श्रम्।

अभ्यास १०

(लोट् लकार = आज्ञा)

१. **बगीचे** से **फूल** ले आओ।

२. सदा सच बोलो।

३. तुम अपना पाठ याद करो।

४. अपनी माँ को पानी दो।

५. द्वारपाल यहाँ आवे।

६. वे दोनों दूसरों की भलाई करें।

७. पिता लड़की का विवाह करे।

८. हम दोनों अपना काम करें।

९. मुझे उसके घर का मार्ग दिखाओ।

१०. दीन दुःखियों को वस्त्र दो।

११. तुम सब बड़ों की आज्ञा मानो।

१२. प्रातःकाल उठो, हाथ मुंह **धोओ** और पढ़ो।

१३. आलस छोड़ो और परिश्रम करो।

१४. मैं साधुओं का उपदेश ग्रहण करूँ और उन पर चलूँ।

१५. निरक्षरों को पढ़ाओ और दुर्बलों की रक्षा करो।

सहायतार्थ टिप्पणी—बगीचा = वाटिका । फूल = पुष्पम् । धोना = क्षल् (= क्षः लय्) । छोड़ना = मुञ्च् ।

अभ्यास ११

(विधिलिङ् = चाहिये)

१. छोटों को बड़ों के सामने न बोलना चाहिये ।
२. हमें **मुसीबत** मे धैर्य नहीं छोड़ना चाहिये ।
३. बिना विचारे कभी काम न करें ।
४. गरीबों के साथ दया का वर्ताव करें ।
५. पराये धन का लोभ कभी न करें ।
६. विद्यार्थी को हमेशा समय पर पढ़ना और समय पर खेलना चाहिये ।
७. मुझे **बाजार** जाना चाहिये ।
८. प्रातःकाल सबको उठना चाहिये और पढ़ना चाहिये ।
९. हमें दीन दुःखियों की सेवा करनी चाहिये ।
१०. तुमको सूर्य की पूजा करनी चाहिये ।
११. तुम दोनों को अपने कार्य पर ध्यान देना चाहिये ।
१२. सुख में हमें ईश्वर को न भूलना चाहिये ।
१३. उसे अपने से बड़ों का सम्मान करना चाहिये ।
१४. कभी भी **धीरज को** न छोड़ें ।
१५. अपने मित्रों की **भलाई** के लिये तुम दोनों को यत्न करना चाहिये ।

सहायतार्थ टिप्पणी—मुसीबत = आपत् । बाजार = आपण, हट्टम् । धीरज को = धैर्यम् । भलाई = हितम् ।

अभ्यास १२

(विधिलिङ् = चाहिये)

१. हमें वृक्ष की छाया में बैठना चाहिये ।
२. किसी को दूसरे के धन की इच्छा न करनी चाहिये ।

३. तुम दोनों को भगवद्गीता पढ़नी चाहिये ।
४. मनुष्य को धर्म पथ से न **हटना** चाहिये ।
५. तुम्हें माता पिता की आज्ञा **माननी** चाहिये ।
६. मुझे दरिद्रों को धन देना चाहिये ।
७. मनुष्य को बिना कारण **क्षोभ** न करना चाहिये ।
८. हम दोनों को सदा सत्य बोलना चाहिये ।
९. उन लोगों को उद्योग कभी भी न **छोड़ना** चाहिये ।
१०. राजा को चाहिये कि प्रजा को कष्टों से **बचावे** ।
११. उन दोनों को गुरु जी से व्याकरण पढ़नी चाहिये ।
१२. हमें दुर्बलों को कभी न **सताना** चाहिये ।
१३. सज्जनों से किसी को भी **द्वेष** न करना चाहिये ।
१४. महाराज का यश पृथ्वी पर फैले, यह हमारी इच्छा है ।
१५. आपको **गुनगुना** दूध पीना चाहिये ।

सहायतार्थं टिप्पणी—बैठना = सीद् (परस्मैपद), आस् (आत्मनेपद) । हटना = प्र + वि + चल् । मानना = मन् । क्षोभ करना = क्षुभ् । छोड़ना = त्यज्, मुञ्च्, हा । बचाना = रक्ष्, पा, प्रति + पल् । सताना = परि + पीड़; त्रस् । द्वेष करना = द्रुह् । फैलना = प्र + सृ । गुनगुना = कवोष्णम् ।

अभ्यास १३

(लुङ् लकार = सामान्य भूतकाल)

१. उसके चार रानियाँ थीं ।
२. वे दोनों हँसे थे ।
३. तुमने गीता पढ़ी थी ।
४. राम ने सुग्रीव की रक्षा की थी ।
५. मैं अचानक बोल पड़ा था ।
६. ब्राह्मणों ने भोजन पकाया था ।
७. हम सब रामेश्वर जी गये थे ।
८. चन्द्रापीड ने उस मन्दिर में महाश्वेता को देखा था ।

९. सभी ने उनका चरणोदक पिया था।
१०. मैंने फूलों की सुगन्ध सूँघी थी।
११. माता ने अन्त समय में तुम्हारी याद की थी।
१२. मैंने वहाँ पर एक कोलाहल सुना था।
१३. तुम वहाँ कितने दिन रहे थे?
१४. लक्ष्मण ने राम और सीता की सेवा की थी।
१५. मैंने अपने किये का फल पाया था।

सहायतार्थ टिप्पणी—थीं = अभूवन्। हँसे थे = अहसिष्टाम्। पढ़ी थी = अपठीः। रक्षा की थी = अरक्षीत्। बोल पड़ा था = अवादिषम्। पकाया था = अपाक्षुः। गये थे = अगमाम। देखा था = अद्राक्षीत्। पिया था = अपुः। सूँघी थी = अघ्रासिषम्। याद की थी = अस्मार्षीत्। सुना था = अश्रौषम्। रहे थे = अवात्सीः (वस् धातु)। सेवा की थी = असेविष्ट। पाया था = अलप्सि।

अभ्यास १४

(लुङ् लकार = सामान्य भूतकाल)

१. उसका कर्ज बहुत बढ़ गया था।
२. मेरी बात सुनकर गुरु जी बहुत प्रसन्न हुये थे।
३. तुम लोगों ने बड़े कष्ट सहे थे।
४. मैंने उसके कवच और कुण्डल मांगे थे।
५. तुम मेरी किताब ले गये थे।
६. रावण ने वन से सीता को चुराया था।
७. उन्होंने जाते-जाते यह कहा था।
८. ग्वाले ने दूध दुहा था।
९. उसे देखकर मैं बहुत रोई थी।
१०. वह चादर तानकर खूब सोया था।
११. तुमने मेरी माँ को मार डाला था।

१२. तुम लोग शेर को देखकर डर गये थे।

१३. राजा ने मुझे गाय दी थी ।

१४. मीरां कृष्ण के सामने बहुत देर तक नाची थी ।

१५. मित्र ने मित्र के कुशल समाचार पूछे थे ।

सहायतार्थ टिप्पणी—बढ़ गया था = अवर्धिष्ट । प्रसन्न हुये थे = अमोदिष्ट । सहे थे = असहिष्वम् । माँगे थे = अयाचिषम् । ले गये थे = अनैषीः । चुराया था = अहार्षीत्, अहृत । कहा था = अवोचन् , अवोचन्त (ब्रू धातु) । दुहा था = अधुक्षन् । रोई थी = अरोदिषम् । सोया था = अस्वाप्सीत् । मार डाला था = अवधीः । डर गये थे = अभैष्ट । दी थी = अदात् । नाची थी = अनर्तीत् । पूंछे थे = अप्राक्षीत् ।

अभ्यास १५

(लिट् लकार = परोक्ष भूतकाल)

१. शूद्रक नाम के एक राजा हुये ।

२. दो कवियों ने श्लोक पढ़े ।

३. चाँद हँस पड़ी ।

४. देवों ने भक्तों की रक्षा की ।

५. बीरबल ने खिचड़ी पकाई ।

६. राम लक्ष्मण ने परशुराम को प्रणाम किया ।

७. मैं घबराकर जंगल को चला गया ।

८. दिलीप ने एक शेर को देखा ।

९. पार्वती न गईं और न रुकीं ।

१०. कृष्ण ने पूतना का दूध पिया ।

११. हम सबने फैलती हुई महक को सूंघा ।

१२. महाश्वेता ने कपिञ्जल का रुदन सुना ।

१३. कृष्ण ने सांदीपन ऋषि की सेवा की ।

१४. पाण्डवों ने अपना राज्य नहीं पाया ।

१५. राम को पाकर दशरथ बहुत खुश हुये ।

सहायतार्थं टिप्पणी—हुये = बभूव । पढ़े = पेठतुः । हँस पड़े = जहास । रक्षा की = ररक्षुः । पकाई = पपाच । प्रणाम किया = नेमतुः । चला गया = जगाम । देखा = ददर्श । रुकी = तस्थौ । पिया = पपौ । सूँघा = जघ्रिम । सुना = शुश्राव । सेवा की = सिषेवे । पाया = लेभिरे । खुश हुये = मुमुदे ।

अभ्यास १६

(लिट् लकार = परोक्ष भूतकाल)

१. विश्वामित्र ने राम लक्ष्मण को माँगा ।
२. राजा नल ने हार चुरा लिया ।
३. करकट और दमनक बोले ।
४. नारद ने कामधेनु को दुहा ।
५. महाश्वेता की हालत देख कादम्बरी बहुत रोई ।
६. अज ने एक सुअर मारा ।
७. अंगिरा आदि ऋषि हिमालय के पास गये ।
८. मैं तख्त पर बैठ गया ।
९. अथर्वन ऋषियों ने हवन किया ।
१०. शिक्षक ने एक तमाचा दिया ।
११. शंकर जी नाच उठे ।
१२. उसका राज-पाट सब नष्ट हो गया ।
१३. शिकार की तलाश में राजा इधर उधर घूमता रहा ।
१४. रघु ने इन्द्र पदवी पाई ।
१५. पार्वती ने मर जाने की इच्छा की ।

सहायतार्थं टिप्पणी—माँगा = ययाच, ययाचे । चुरा लिया = जहार, जह्रे । बोले = ऊचतुः । दुहा = दुदोह, दुदुहे । रोई = रुरोद । मारा = जघान । गये = ईयुः । बैठ गया = आसांचक्रे । हवन किया = जुहुवः । तमाचा = चपेटः । दिया = ददौ । नाच उठे = ननर्त । नष्ट हो गया = ननाश । घूमता रहा = बभ्राम । पाई = आप । इच्छा की = इयेष ।

अभ्यास १७

(आशीर्लिङ् = आशीर्वाद)

१. तुम्हारा कल्याण हो।
२. तुम्हारे लड़के बहुत दिनों तक पढ़ें।
३. तुम बड़े आदमी बनो।
४. वे दोनों प्रसन्न रहें।
५. शंकर जी हम पर कृपा करें।
६. भगवान् तुम दोनों की रक्षा करें।
७. तुम्हारा काम कभी न रुके।
८. सदा फूलो फलो।
९. ईश्वर सबकी याद रक्खे।
१०. उसे युद्ध में विजय मिले।
११. अपनी मेहनत का मीठा फल पाओ।
१२. उन सबों की कीर्ति बढ़े।
१३. भक्त जन प्रसन्न रहें।
१४. भगवान् तुम्हारे कष्ट हरें।
१५. उसका भला हो।
१६. तुम्हारे शत्रु सो जायें।
१७. ईश्वर हमें मुक्ति दे।
१८. तुम तेजस्वी बनो।
१९. राजा का यश चारों ओर फैले।
२०. गुणी आदर पावें।

सहायतार्थ टिप्पणी—हो = भूयात्। पढ़ें = पठ्यासु। बनो = भूयाः। प्रसन्न रहें = मोदिषीयास्ताम्। करें = क्रियात्। रक्षा करें = रक्ष्यात्। रुकें = स्थेयात्। फूलो फलो = वर्धिषीष्ठाः। याद रक्खें = स्मर्यात्। मिलें = आप्यात्, लप्सीष्ट। पाओ = आप्याः, लप्सीष्ठाः। बढ़ें = वर्धिषीष्ट। प्रसन्न रहें = मोदिषीरन्। हरें = ह्रियात्। सो जायें = सुप्यासु। दें = देयात्। फैलें = तन्यात् (तन धातु)। पावें = आप्यासुः, लप्सीरन्।

अभ्यास १८

(लुट् लकार = अनद्यतन भविष्यत्)

१. लड़के जाते होंगे ।
२. विद्यार्थी परसों पढ़ेंगे ।
३. मैं कल इन्दौर जाऊंगा ।
४. शीला रो रही होगी ।
५. थोड़ी देर में वह आयेगा ।
६. शाम को हम सिनेमा जायेंगे ।
७. गीता गाना गा रही होगी ।
८. तुम्हारा नुकसान होगा ।
९. सबेरे कलियाँ हँसेंगी ।
१०. दो ब्राह्मण वेद पढ़ेंगे ।
११. राजा अवश्य ही मेरी रक्षा करेगा ।
१२. रुको रुको ! माँ खाना पकायेगी ।
१३. तुम कहाँ जाओगी ?
१४. तुम सब खेल देखोगे ।
१५. तुम्हारी बहन मेरी याद करेगी ।
१६. हम लोग रामायण सुनेंगे ।
१७. मैं स्कूल में इनाम पाऊँगा ।
१८. वे दोनों किताब माँगेंगे ।
१९. तुम दोनों मेरे शव को ले जाओगे ।

सहायतार्थं टिप्पणी—जाते होंगे = गन्तारः । पढ़ेंगे = पठितारः । जाऊँगा = गन्तास्मि । होगी = भविता । आयेगा = आगन्ता । जायेंगे = गन्तास्मः । नाच रही होगी = नर्तिता । हँसेगी = हसितारः । पढ़ेंगे = पठितारौ । रक्षा करेगा = रक्षिता । पकायेगी = पक्ता । जाओगी = गन्तासि । देखोगे = द्रष्टास्थ । याद करेगी = स्मर्ता । सुनेंगे = श्रोतास्मः । पाऊँगा = लब्धास्मि । माँगेंगे = याचितारौ । ले जाओगे = नेतास्थः ।

अभ्यास १९

(लृङ् लकार = हेतुहेतुमद् भविष्यत् काल)

१. यदि तुम पढ़ते तो पास हो जाते ।
२. अगर वह हँसता तो उसे भी मार पड़ती ।
३. अगर वह रक्षा करता तो उसका भी नाम होता ।
४. अगर वह कहता तो मैं उसकी मदद करता ।
५. यदि वह पकाती तो मैं भी खाता ।
६. अगर मैं प्रणाम करता तो वह खुश हो जाता ।
७. अगर मैं चला जाता तो वह मान जाता ।
९. अगर दूध पी लिया होता तो मोटा हो जाता ।
१०. यदि फूल सूँघ लेता तो मैं बेहोश हो जाता ।
११. अगर वह मेरी याद कर लेती तो मैं जी उठता ।
१२. यदि तुम मेरी बात सुन लेते तो मैं चुप हो जाता ।
१३. अगर वे दोनों माँग लेते तो वह दे देता ।
१४. अगर तुम दोनों उसका धन चुरा लेते तो वह कष्ट में पड़ जाता ।
१५. यदि वह रो पड़ती तो राजा का दिल पसीज जाता ।

सहायतार्थ टिप्पणी—(तुम) पढ़ते = अपठिष्यः । हो जाते = अभविष्यः । (वह) हँसता = असहिष्यत् । (वह रक्षा) करता = अरक्षिष्यत् । (वह) कहता = अवदिष्यत् । (मैं) मदद करता = अकरिष्यत् । (वह) पकाती = अपक्ष्यत् । (मैं) खाता = अभोक्ष्यम् । (मैं) प्रणाम करता = अनस्यम् । (वह) खुश हो जाता = अमोदिष्यत् । (मैं) चला जाता = अगमिष्यम् । (वे दोनों) बैठ जाते = आसिष्येताम् । (मैं) बैठ जाता = आसिष्ये । (तुमने) पी लिया होता = अपास्यः । (मैं) सूँघ लेता = अघ्रास्यम् । (वह) याद कर लेती = अस्मरिष्यत् । (तुम) सुन लेते = अश्रोष्यः (वे दोनों । माँग लेते = अयाचिष्यताम् , अयाचिष्येताम् । (वह) दे देता = अदास्यत् । (तुम दोनों) चुरा लेते = अचोरयिष्यतम् , अचोरयिष्येथाम । (वह) रो पड़ती = अरोदिष्यत् । पसीज जाता = आर्द्रं अभविष्यत् ।

अभ्यास २०

(कर्ता कारक)

१. प्रकाश अन्धेरे को **नष्ट करता** है।
२. शिष्य खेलते हैं ।
३. मोहन स्कूल जाता है।
४. मोहिनी पुत्री के दोषों का **अनुभव करती** है।
५. हमें आज इसका ज्ञान हुआ।
६. हम पढ़ते हैं।
७. तुम हँसते हो ।
८. **हमको नींद आती** है।
९. **दिया** रात में जलता है।
१०. वर्षा से गर्मी शान्त होती है।
११. सोहन नदी से जल **लाता** है।
१२. कौशल के मित्र आज कानपुर से आते हैं।
१३. कमजोर भी संघटित होकर सबल बन जाते हैं।
१४. **आप अभी** यहाँ से नहीं जा सकते ।
१५. उधार पैसा मनुष्य को जकड़ लेता है।
१६. कमला विमला की दो सौ की **ऋणी** है।
१७. सब जगह परिश्रम सफल होता है।

सहायतार्थं टिप्पणी—नष्ट करता है = नाशयति। हमको नींद आती है = वयं निद्रामः। अनुभव करती है = अनुभवति। दिया = दीपः, दीपकः। लाता है = आनयति। आप = भवान्। विमला की = विमलायै। ऋणी है = धारयति।

अभ्यास २१

(कर्म कारक)

१. बलवीर ग्राम को **पैदल** जाता है।

२. आप **इसका** अनुभव करिये।

३. किसान लोग अपने-अपने खेत **जोतते** हैं।
४. **दर्जी** हमारे कपड़े नहीं **सीता**।
५. **सुनार** सोना **पिघलाता** है।
६. वे हमसे **बातें करते** हैं।
७. अधिकतर चोर **रात को** धन चुराते हैं।
८. सोहन **लाठी से** शेर मारता है।
९. तुम रात को अपने घर **वापिस आते हो**।
१०. भौंरा फूलों का रस लेता है।
११. लड़कियाँ मधुर गीत गाती हैं।
१२. लड़की अपनी माता को बाहर **ले जाती** है।
१३. पपीहा बादल देखकर बोलता है।
१४. डाक्टर रोगी की **चिकित्सा करता** है।
१५. गुरु कक्षा में आते हैं।

सहायतार्थ टिप्पणी—पैदल = पादाभ्याम्। जोतते हैं = कर्षन्ति। इसका = इदम्। दर्जी=सूचीकारः। सीता है=सीव्यति। सुनार=स्वर्णकारः। पिघलाता है = द्रावयति। रात को = रात्रौ। लाठी से = लगुडेन। वापस आते हो = प्रत्यागच्छति। ले जाती है = नयति। बातें करते हैं = वार्ता कथयन्ति। चिकित्सा करता है = चिकित्सति।

अभ्यास २२

(करण कारक)

१. तुम **चाकू से** आम **काटते** हो।
२. मोहनी सहेली के साथ **आयी**।
३. **समय पर** सब **ठीक हो जाता** है।
४. साधु विनय से सबको अपनी ओर आकर्षित करते हैं।
५. महाराज अशोक नें धर्म से विजय पाई।
६. शिकारी बाण से हरिण को **मारता** है।
७. **कवि** अपनी कविता से मनुष्य का मन हरता है।

८. सदाचार से उन्नति होती है।

९. आदमी पैर से **लँगड़ा** और आँख का **काना** है।

१०. चित्रकार रेखाओं से शब्द का काम लेता है।

११. हम आज साथियों के साथ तालाब में तैरे।

१२. राम ने हरिण को बाण से मारा।

१३. क्या आप **मोटर से** जायेंगे ?

१४. वे कर्म से शूद्र और जाति से वैश्य हैं।

सहायतार्थ टिप्पणी—चाकू से = लवित्रेण, छुरिकया। काटते हो = छिन्दसि। आई = आगच्छत्। ठीक हो जाता है=स्थिरीभवति। समय पर= समयेन। मारता है = विध्यति। लँगड़ा = खञ्जः। काना = काणः। मोटर से = मरुत्तरयानेन।

अभ्यास २३

(सम्प्रदान कारक)

१. **मित्र से बैर** मत करो।

२. सब पुराने विद्वानों को नमस्कार है।

३. राम रावण के लिये **पर्याप्त** हैं।

४. ऐसे दुष्ट पुरुषों को दूर से ही नमस्कार करो।

५. देवताओं को नमस्कार है।

६. परोपकारी पुरुष का **कल्याण हो**।

७. यजमान का कल्याण हो!

८. यह चावल और **घृत** इन्द्र की आहुति के लिये हैं।

९. **हारा हुआ** मनुष्य जीते हुये मनुष्य से द्वेष रखता है।

१०. यह आदमी विना कारण ही मित्रों पर क्रोध करता है।

११. मुझे लड्डू बहुत **अच्छे लगते** हैं।

सहायतार्थ टिप्पणी—मित्र से = मित्राय। वैर करना=द्रुह्। पर्याप्त है = अलम्। दूर से ही = दूरादेव। कल्या हो = स्वस्ति भवतु। घृत=घृतम्। हारा हुआ = पराजितः। तिल और जल = तिलोदकम्। अच्छे लगते हैं= रोचन्ते।

अभ्यास २४

(सम्प्रदान कारक)

१. यह **कापी** सीता को दे दो ।
२. माताजी हमारे लिये पुस्तक लाईं ।
३. भाई हमारे लिये **खिलौने** लाये ।
४. राम ने अपवाद के लिये सीता को छोड़ा ।
५. यह पुस्तकें विद्यार्थियों के लिये हैं ।
६. भूखों को भोजन दो ।
७. ये पुस्तकें विद्यार्थी के लिये **कठिन हैं** ।
८. सफलता के लिये परिश्रम परम आवश्यक है ।
९. हमको चार कपड़े दो ।
१०. ये वस्त्र **वर को** दिये जायेंगे ।
११. तुम्हारे लिये प्रयाग से कुछ नहीं आया ।
१२. **प्यासे को** पानी और भूखे को खाना अवश्य दिया जाय ।
१३. तुम लोगों का **व्यवहार** अपनी माता के प्रति अच्छा नहीं है ।

सहायतार्थ टिप्पणी—कापी = पुस्तिका । खिलौने = क्रीडनकानि । कठिन हैं = क्लिष्टानि सन्ति । वर को = वराय । दिया जाय = देयम् । व्यवहार = व्यवहारः ।

अभ्यास २५

(अपादान कारक)

१. **कल** मोहन हाथी से गिर पड़ा ।
२. सीता **महल से देखती है** ।
३. ये चोर विद्यार्थी बनारस से आये हैं ।
४. घसियारा घास लाया है ।
५. किसान खेत से **लौटता है** ।
६. भरत राम के छोटे और लक्ष्मण के बड़े भाई थे ।
७. हेमन्त में पेड़ से पत्ते गिरते हैं ।

८. कानपुर से लखनऊ अधिक दूर नहीं है।
९. **भेड़िये** शेर से **डरते हैं**।
१०. पानी से **सिवाल** और कीचड़ से कमल **पैदा होता है**।
११. कठिनाई में मित्र की सहायता करनी चाहिये।
१२. सोना **खान से** निकलता है।
१३. बरसात में पानी बरसता है।
१४. मेहनती विद्यार्थी परीक्षा से नहीं डरते हैं।
१५. इसका राज्य **समुद्र तक** है।

सहायतार्थ टिप्पणी—कल = ह्यः। गिर पड़ा = अपतत्। देखती हैं = प्रेक्षते। महल से = प्रासादात्। लौटता है = निवर्तते। भेड़िये = वृकाः। डरते हैं = बिभ्यन्ति। सिवाल = शैवालम्। पैदा होता है = जायते। खान से = खनितः। समुद्र तक = आसमुद्रात्।

अभ्यास २६
(सम्बन्ध कारक)

१. **विद्वानों का सब जगह** आदर होता है।
२. यह पुस्तक कमला की है।
३. यह बालकों में श्रेष्ठ है।
४. आपका क्या नाम है?
५. हम सदा आपके गुणानुवाद करते हैं।
६. वे सब पर ईश्वर की कृपा चाहते हैं।
७. पुत्र अपने पिता की **याद करता** है।
८. गुणों का सर्वत्र आदर होता है।
९. हनुमान जी की पूंछ ने लंका स्वाहा कर दी।
१०. बच्चों का मन **खेल में** अधिक **लगता है**।
११. परिश्रम का फल **मीठा** होता है।
१२. उनका नाम समाचारपत्रों में है।
१३. अभिमानी का सिर सदा **नीचे झुकता है**।

१४. वे तुम्हारा आशय **ठीक तरह से समझते हैं**।

१५. उस पुस्तकालय में संस्कृत की पुस्तकें बहुत ही कम हैं।

१६. शिवाजी का नाम इतिहास में अमर है।

सहायतार्थं टिप्पणी—विद्वानों का = विदुषाम्। सब जगह = सर्वत्र। याद करता है = स्मरति। खेल में = क्रीडासु, खेलासु। लगता है = रमते, सज्जते। मीठा = मधुरम्। नीचे झुकता है = नीचैः नमति। ठीक तरह से = साधु। समझते हैं = अवगच्छन्ति।

अभ्यास २७

(अधिकरण कारक)

१. इस आश्रम में पाँच सौ पुरुष और तीन सौ स्त्रियाँ रहती हैं।

२. इस मकान में **कितने आदमी** रहते हैं?

३. दानियों में कर्ण सबसे अधिक प्रसिद्ध है।

४. इस कक्षा में **पचास** विद्यार्थी पढ़ते हैं।

५. विश्व में वीर मनुष्य की पूजा होती है।

६. विपत्ति में धैर्य नहीं छोड़ना चाहिये।

७. **तालाब में मेढक** रहते हैं।

८. पहाड़ की चोटियों पर **बर्फ पड़ी है**।

९. यमुना नदी में **मगर** अधिक रहते हैं।

१०. पेड़ों पर बन्दर और पक्षी **बैठते हैं**।

११. इस समय **दूकानें** बन्द हैं।

१२. बाग में **कोयल** बोल रही है।

१३. इस रास्ते में हाथी, घोड़े, गधे सभी भागते हैं।

१४. विनय में अनेक गुण रहते हैं।

१५. आप एक माह में स्वस्थ हो जायेंगे।

१६. आसन पर साधु जी विराजमान हैं।

सहायतार्थं टिप्पणी—कितने आदमी = कियन्तः पुरुषाः। पचास = पञ्चाशत्। तालाब में = तडागे, जलाशये। मेढक = दर्दुराः, भेकाः, मण्डूकाः। बरफ = हिमम्। पड़ी है = तिष्ठति। मगर = नक्राः। बैठते हैं = सीदन्ति, तिष्ठन्ति। दूकानें = विपणयः। कोयल = पिकः।

अभ्यास २८

(कर्ता और कर्म कारक)

१. मैं राम को देखता हूं ।
२. वे **फिर** घर जाते हैं ।
३. वे पाठ याद करते हैं ।
४. वे पुस्तक पढ़ते हैं ।
५. वह मनुष्यों को देखता है ।
६. बालक भोजन करते हैं ।
७. राजा दान देता है ।
८. घोड़े **बाग** को दौड़ते हैं ।
९. बालक चित्रों को देखते हैं ।
१०. मुनि उपदेश करते हैं ।
११. राजा प्रजा को पालता है ।
१२. सीता राम का चिन्तन करती है ।
१३. पिता पुत्र से पूछता है ।
१४. **चोर** धन चुराता है ।
१५. कवि काव्य लिखते हैं ।
१६. पिता पुत्र से कहता है ।
१७. मित्र मित्र को **चाहता** है ।
१८. वे पानी पीते हैं ।
१९. बालक विद्यालय को जाते हैं ।
२०. सूर्य प्रकाश को देता है ।
२१. शिष्य गुरु को नमस्कार करते हैं ।
२२. अग्नि लकड़ी को जलाती है ।
२३. बाघ हरिणों को **मारता** है ।
२४. मोहन वस्त्रों को **धोता** है ।
२५. राजा प्रजा को प्रसन्न करता है ।

सहायतार्थ टिप्पणी—फिर=पुनः । बाग=उद्यानम् । उपदेश करना=

उप + दिश्। चोर = चौरः, तस्करः। चाहना = कम्, अभि + लष् इच्छ्। मारना = मृ + णिच् (मारय्), वि + आ + पद् (व्यापादय्), हन्। धोना = क्षल् (क्षालय्)।

अभ्यास २९

(करण और सम्प्रदान कारक)

१. मनुष्य आँखों से देखता है।
२. राम बाण से रावण को **मारता** है।
३. राम स्वभाव से नम्र है।
४. **कुम्हार** दण्ड से घड़ा **बनाता** है।
५. पुण्य से सुख होता है।
६. वह नाम से राम है।
७. हाथ से काम करो।
८. मैं हर्ष से घर गया।
९. निर्धनों को धन दो।
१०. रावण जाति से ब्राह्मण था।
११. मनुष्य बुद्धि से सोचता है।
१२. मैं ईश्वर को **भजता** हूँ।
१३. पुरुष फलों से वृक्षों को **जानता** हैं।
१४. परिश्रम से धन **कमाओ**।
१५. तू मुझे पुस्तक दे।
१६. स्त्रियाँ पानी **लाने** जाती हैं।
१७. राम ने सीता के लिये रावण को मारा।
१८. क्रोध नाश के लिये होता है।
१९. वह माता के लिये भोजन **लाया**।
२०. राजा कल्याण के लिये राज्य करे।
२१. राजा विद्वान् को धन देता है।
२२. श्रवण पिता के लिये पानी लाया।
२३. पत्नी पति के लिये दुख सहे।

सहायतार्थ टिप्पणी—मारना = मारय्, हन् । कुम्हार = कुम्भकारः । बनाना = रच् । सोचना = चिन्त् । भजना = भज् । जानना = ज्ञा, अव + गम् । कमाना = अर्ज् । लाने = आ + नी + तुमुन् प्रत्यय । लाना = आनय् । सहना = सह् ।

अभ्यास ३०

(अपादान और सम्बन्ध कारक)

१. राम घर से जाता है ।
२. बालक बाग से आता है ।
३. तुम बुरे काम से **हटो** ।
४. स्वर्ग से देवता देखते हैं ।
५. गंगा हिमालय से आती है ।
६. राम का घर प्रयाग में है ।
७. वृक्ष के पत्ते गिरते हैं ।
८. मेरा घर यहाँ है ।
९. पाठशाला शहर के **बाहर** है ।
१०. पुत्र का नाम राम था ।
११. युधिष्ठिर का भाई अर्जुन था ।
१२. मैं बनारस से अयोध्या गया ।
१३. चूहे **बिल्ली** से **डरते** हैं ।
१४. वृक्ष से पत्ता गिरता है ।
१५. मेरे भाई का नाम यज्ञदत्त है ।
१६. मित्र के वचन का पालन करो ।
१७. नदियाँ पहाड़ों से **निकलती हैं** ।
१८. परिश्रम का फल तुम **पाओगे** ।
१९. फूल लता से गिरते हैं ।
२०. तेरा घर **कहाँ** पर है ?
२१. यमुना का जल नीला है ।

२२. यह किसकी कलम है ?

२३. ईश्वर मनुष्य का पालन करता है ।

२४. **कुएँ** का पानी **मीठा** होता है ।

सहायतार्थ टिप्पणी—हटना = अप + सृ, वि + रम् । बाहर = बहिः; बहिस्तात् । बिल्ली = मार्जारी, विडाली । डरना = भी । निकलना = निः + सृ । पाना = प्राप्, आप्, लभ् । कहाँ = कुत्र । कुआँ=कूपः । मीठा=मिष्ठम् ।

अभ्यास ३१

(अधिकरण और सम्बोधन कारक)

१. वन में **जंगली** जानवर रहते हैं ।

२. नगर में आदमी रहते हैं ।

३. ऋषि मुनियों में ज्ञान होता है ।

४. हिमालय पर वृक्ष होते हैं ।

५. समुद्र में जल होता है ।

६. हाथ में पुस्तक लो ।

७. **तालाबों** में फूल **खिलते** हैं ।

८. क्रान्ति में देश का कल्याण है ।

९. पानी में **मछलियाँ** जीती हैं ।

१०. वे जंगलों में रहते हैं ।

११. हमारी कक्षा में २० लड़के पढ़ते हैं ।

१२. स्वदेश में सुख मिलता है ।

१३. महाकवि कालिदास की कविता में रस होता है ।

१४. उपवन में मोर नाचता है ।

१५. तुम्हारे विद्यालय में कितनी श्रेणियाँ हैं ?

१६. हे भगवान् ! भारत का भाग्योदय **कब** होगा ?

१७. हे बालक ! तू पढ़ ।

१८. अरे लोगों ! भागो, शेर **आ रहा** है ।

१९. हे मनुष्यों ! तुम प्रेम से रहो ।

२०. हे मुने ! उपदेश कीजिये ।
२१. हे पिता ! आप भोजन कीजिये ।
२२. उनके हृदय में शान्ति और चित्त में सन्तोष होता है ।
२३. राम ! वहाँ जाओ ।
२४. हे गुरुजी ! मैं नमस्कार करता हूँ ।

सहायतार्थ टिप्पणी—जंगली = वन्य (विशे०) । तालाब = तडागः, जलाशयः । खिलना = वि + कस्, फुल्ल् । मछली = मीनः, शफरी । कब = कदा । आना = आ + गम् ।

अभ्यास ३२

(उपपद विभक्तियाँ)

१. राम अपने शरीर को रत्नों से **सजाता है**।
२. लोग अपने शरीर को **अन्न से** पालते हैं ।
३. मनुष्य अपने **शत्रुओं** को तलवार से मारता है ।
४. **झील** कमलों से **शोभित होती है**।
५. हम **रथ में बैठकर** ग्राम को जाते हैं ।
६. वह **मन से** ईश्वर का **चिन्तन करता है**।
७. इन्द्र अपने वज्र से पर्वतों पर प्रहार करता है ।
८. झीलें **धूप से** सूख जाती हैं ।
९. राम भोजन के लिये घर जाता है ।
१०. हरि को अश्वपति का सौ रुपया देना है ।
११. ब्राह्मण राजा से धन पाते हैं ।
१२. देव **पापियों को** स्वर्ग से **गिरा देते हैं**।
१३. विद्यार्थी अध्यापकों से ज्ञान प्राप्त करते हैं ।
१४. किसान धान्य के लिये **खेत जोतते हैं**।
१५. मूर्ख **अज्ञान से** बकते हैं ।

सहायतार्थ टिप्पणी—सजाता है = अलंकरोति, विभूषयति । अन्न से=

धान्येन, अन्नेन। शत्रुओं को = शत्रून्, अरीन्। झील = कासारः। शोभित होती है = शोभते। रथ में बैठकर = रथेन। मन से = मनसा। चिन्तन करता है = ध्यायति। धूप से = आतपेन, घर्मेण। पापियों को = पापिनः, पापशीलान् जनान्। गिरा देते हैं = क्षिपन्ति, पातयन्ति। खेत = क्षेत्रं। जोतते हैं = कर्षन्ति। अज्ञान से = अज्ञानाद्।

अभ्यास ३३

(उपपद विभक्तियाँ)

१. समुद्र में बहुत से **रत्न** हैं।
२. कमल जल में **उगते हैं**।
३. मैं अग्नि में **घी** डालता हूँ।
४. कवियों में कालिदास **पहला** है।
५. चोर ब्राह्मण का धन चुराता है।
६. बादल आकाश में **चलते हैं**।
७. झीलों का पानी **खारा** होता है।
८. फूल **बगीचे में** वृक्षों को भूषित करते हैं।
९. हरि के दोनों पुत्रों का आचरण प्रशंसनीय है।
१०. बन्दरों की **पूँछें** लम्बी होती हैं।
११. राजा लोग **महलों में** रहते हैं।
१२. मैं बगीचों की सुन्दरता से प्रसन्न हूँ।
१३. ईश्वर पापियों के पापों को क्षमा कर देता है।
१४. बुद्धिमान् मनुष्य अपने मन में क्रोध को **स्थान नहीं देता**।
१५. हे हरि! विनय से लोग प्रसन्न होते हैं।

सहायतार्थ टिप्पणी—रत्न=रत्नानि। उगते हैं=उद्भवन्ति, रोहन्ति। घी = घृतम्। पहला = श्रेष्ठः। चलते हैं=सरन्ति। खारा = लवणम्, क्षारम्। बगीचे में = उद्याने। पूँछें = लाङ्गूलानि। महलों में = प्रसादेषु, हर्म्येषु। स्थान नहीं देता = प्रसरो न ददाति।

अभ्यास ३४
(सर्वनाम)

१. इस पेड़ पर एक **कौवे** का **घोंसला** है ।
२. इस **कुयें** का पानी **खारा** है ।
३. इस पेड़ से यह **आम** गिरा है ।
४. इस **कंगले** को भिक्षा दे दो ।
५. इन कानों से मैं नहीं **सुनता** ।
६. इस पत्र को पढ़ लो ।
७. यह मेरी पुस्तक है ।
८. ये लड़कियाँ मधुर गीत गाती हैं ।
९. मैंने उन्हें वहाँ से भागते देखा ।
१०. ये दोनों लड़कियाँ भी विवाह के योग्य हैं ।
११. तुम बहुत दुष्ट हो ।
१२. इन पर्वतों से बहुत से **पत्थर गिरे** हैं ।
१३. हम दोनों स्कूल जाते हैं ।
१४. मैंने इस **छड़ी** से चोर को **पीटा** ।
१५. वह **गाय** उस **रास्ते** से गई है ।
१६. हम दोनों किसके साथ **खेलें** ?
१७. इस नदी में बहुत पानी है ।
१८. वे लड़के इस घर में रहते हैं ।
१९. यह कलम उसकी नहीं, मेरी है ।
२०. इन दोनों **गड्ढों** को **मिट्टी** से **भर दो** ।

सहायतार्थ टिप्पणी—कौवा = काकः । घोंसला = नीडः । कुआँ = कूपः । खारा = क्षारम् (विशेषण) । आम = आम्रः । कंगला = याचकः, भिक्षुकः । सुनना = श्रु । भागना = धाव्, अप् + सृ । पत्थर = पाषाणम् । गिरना = पत्, आ+पत् । छड़ी = यष्टिः, यष्टिका । पीटना = ताड् । गाय = गौः, धेनुः । रास्ता = मार्गम्, पथस्, वर्त्मन् । खेलना = क्रीड् । गड्ढा = गर्तम् । मिट्टी = मृत्तिका । भर देना = पूर्, आ + पूर् ।

अभ्यास ३५

(विशेषण)

१. **अनुभवी** विद्वानों का सब जगह आदर होता है ।
२. **गन्दी** पुस्तकों को मत पढ़ो ।
३. **अँधेरी रातों को** बहुत चोरी होती है ।
४. इस बूढ़े व्यक्ति को देखो ।
५. उस मकान में **कौआ** बैठा है ।
६. चंचल बच्चे पढ़ते नहीं हैं ।
७. उसने नीली स्याही से सफे **कागज** पर लिखा है ।
८. इनके कुल प्रसिद्ध हैं ।
९. राम ने पूज्य गुरुजनों का आदर किया है ।
१०. निर्धन व्यक्ति को अधिक धन दो ।
११. बडे कुलों में ही बड़े व्यक्ति होते हैं ।
१२. पुत्रवती स्त्रियों का हृदय बहुत ही कोमल होता है ।
१३. बालक **ऊँचे पेड़ से** फल **गिराते हैं** ।
१४. धीर पुरुष का मन कभी चंचल नहीं होता है ।

सहायतार्थ टिप्पणी—अनुभवी (का) = अनुभविनाम् । गन्दी = अश्लीलानि । अँधेरी रातों में = अन्धासु रात्रिषु । कौआ = काकः । कागज = कर्गलम् । ऊँचे पेड़ से = उन्नतात् वृक्षात् । गिराते हैं = पातयन्ति ।

अभ्यास ३६

(विशेषण का तर-तम भाव)

१. सब जन्तुओं में हाथी **बड़ा** होता है ।
२. वह मुझसे **छोटा** नहीं है ।
३. ये बैल दूसरों से **मोटे** हैं ।
४. मुझे तो धन से धर्म **प्यारा** है ।
५. सत्यभामा की अपेक्षा कृष्ण को रुक्मिणी अधिक **प्यारी** थी ।

६. दशरथ की रानियों में कौशल्या सबसे **बड़ी** और सुमित्रा सबसे छोटी थी।
७. पहाड़ों में हिमालय सबसे **ऊँचा** है।
८. राम से श्याम अधिक **बुद्धिमान्** है।
९. **कौरवों** से पाण्डव अधिक **बलवान्** थे।
१०. फूलों में शिरीष का फूल सबसे अधिक **कोमल** होता है।
११. सदानन्द रामानन्द से **अच्छा** है।
१२. चारों वर्णों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है।
१३. कंस तो रावण से भी अधिक दुष्ट था।
१४. पक्षियों में कौआ सबसे **चालाक** होता है।
१५. नदियों में गंगा सबसे **लम्बी** और अच्छी है।

सहायतार्थ टिप्पणी—बड़ा = महत्। छोटा = लघु। मोटा = स्थूल। प्यारा = प्रिय। प्यारी = प्रिया। ऊँचा = उन्नत। बुद्धिमान् = बुद्धिमत्। बलवान् = बलवत्। कौरव = धार्तराष्ट्राः। कोमलम् = मृदु। अच्छा = साधु। चालाक = पटुः। लम्बी = दीर्घा। अच्छी = वरा।

अभ्यास ३७
(संख्यावाचक शब्द)

१. शंकर जी के तीन नेत्र हैं।
२. सूर्य के सात घोड़े होते हैं।
३. हिन्दुओं में चार वर्ण पाये जाते हैं।
४. इन्द्र ने सौ यज्ञ किये थे।
५. मनुस्मृति में बारह अध्याय हैं।
६. सत्व, रज और तम ये तीन गुण हैं।
७. रावण के दस सिर थे।
८. आठों **दिशाओं** के आठ **अलग-अलग मालिक** हैं।
९. मैंने एक कम पचास आम **खरीदे**।
१०. राम तेरह लड़कों के साथ खेलता है।

११. चार ब्राह्मणों को कपड़े दो।
१२. आज केवल बत्तीस लड़के हाजिर हैं।
१३. अठारह पुराण और चौबीस स्मृतियाँ होती हैं।
१४. वेद केवल चार होते हैं।
१५. महाभारत के अठारह पर्वों में **तीसरा** सब से अच्छा है।

सहायतार्थ टिप्पणी—दिशा = दिक्। अलग-अलग = पृथक् पृथक्। मालिक = स्वामिन्। खरीदना = क्री। हाजिर = उपस्थितः (विशे०)। तीसरा = तृतीय।

अभ्यास ३८
(पूरणार्थक संख्या शब्द)

१. कवियों में कालिदास पहले हैं।
२. मैं दिन में **एक बार** खाता हूँ।
३. उसके **खिलौने** के चार **टुकड़े** हो गये।
४. मेरा भाई करीब पाँच साल का है।
५. वह पाँच-छः बार मेरे घर आया।
६. एकादशी को मैं फलाहार करता हूँ।
७. जन्म से दसवें दिन नामकरण करना चाहिये।
८. महीने की सत्ताइसवीं **तारीख** को एक सभा हुई।
९. रघुवंश में दस से अधिक सर्ग हैं।
१०. उसके पिता का **श्राद्ध** बारहवीं तारीख को होगा।
११. परशुराम ने इक्कीस बार क्षत्रियों को हराया।
१२. उन पुस्तकों में से आठवीं पुस्तक मुझे दो।
१३. इस **गली** में मेरा घर बीसवाँ है।
१४. साठ वर्ष का बुड्ढा रहीम अब भी **दौड़ता** है।
१५. मुझे तो इन लड़कों में पाँचवाँ **पसन्द** है।

सहायतार्थ टिप्पणी—एक बार = सकृत्। खिलौना = क्रीड़नकम्। टुकड़ा = खण्डम्। तारीख = तिथिः। श्राद्ध=श्राद्धम्। गली=रथ्या, वीथिका। दौड़ना = धाव्। पसन्द होना = रुच्।

अभ्यास ३९

(अव्यय शब्द)

१. तुम दोनों कब आओगे ?
२. **आप कैसे** इस प्रश्न का उत्तर न देंगे ?
३. आप हमारे लिये पुस्तकें कब लायेंगे ?
४. जहाँ राम जायगा **वहीं** उसकी पत्नी सीता जायगी ।
५. जब वसन्त ऋतु आती है, तब सुन्दर पुष्प खिलते हैं ।
६. हमारे देश भारत में ऋषि-मुनि रहते थे ।
७. विद्वान् सब जगह पूजा जाता है ।
८. मनुष्य कभी भी असत्य न बोले, चोरी न करे ।
९. **जब तक** मैं उस नगर से नहीं आता **तब तक** आप यहीं ठहरें ।
१०. **कल** वहाँ कौन सोया था ?
११. यदि तू फिर ऐसा करेगा तो अच्छा न होगा ।
१२. क्योंकि वह तुम्हारा बड़ा भाई है अतः तुम्हें उसका सम्मान करना चाहिये ।
१३. **जैसे-तैसे** आप बी० ए० परीक्षा अवश्य पास कर लें ।
१४. तुम सब यहीं **चुपचाप** बैठो, मैं अभी आता हूँ ।
१५. कल मैं सोऊँगा ।
१६. आज मेरे भाई जायेंगे ।
१७. आज तू यहाँ इस मकान में सोओ ।

सहायतार्थ टिप्पणी—कैसे = कथम् । आप = भवान् । वहीं = तत्रैव । पूजा जाता है = पूज्यते । जब तक = यावत् । तब तक = तावत् । ठहरना = स्था (तिष्ठ) । कल = ह्यः (बीता हुआ) । जैसे-तैसे = यथाकथा, येनकेन प्रकारेण । चुपचाप = तूष्णीम् ।

अभ्यास ४०

(प्रेरणार्थक क्रियायें)

१. गुरु शिष्यों को वेद पढ़ाता है ।

२. जो भूखों को **भोजन** कराता है, उस पर ईश्वर प्रसन्न होता है।
३. राजा ने गरीबों को कपड़े **दिलाये**।
४. माता अपने पुत्र को अपने हाथ से पानी **पिलाती** है।
५. माँ ने पुत्र को कुछ सुन्दर चित्र **दिखलाये**।
६. पिता ने पुत्र को पढ़ने विद्यालय **भेजा**।
७. जब मैं कल यहाँ आऊँ, मुझे इस विषय का **स्मरण करना**।
८. सीता ने श्री राम से हरिण को **मरवाया**।
९. अपने धन का **नाश मत करो**।
१०. मैंने अपना कार्य अपने भाई से **करवाया**।
११. तुम मेरे लिये कब भोजन **पकाओगे** ?
१२. पण्डित जी आज रात को रामायण की कथा **सुनायेंगे**।

सहायतार्थ टिप्पणी—पढ़ाता है=पाठयति। भोजन कराता है=भोजयति, भोजनं कारयति। दिलाये=अदापयत्। पिलाता है=पाययति। दिलवाने=अदर्शयत्। भेजा=आगमयत्। स्मरण करना=स्मारय। मरवाया=घातयत। नाश करो=नाशय। करवाया=अकारयत्। पकवाओगे=पाचयिष्यसि। सुनायेंगे=श्रावयिष्यति।

अभ्यास ४१

(प्रेरणार्थक क्रियायें)

१. वशिष्ठ दशरथ को **यज्ञ करवाते** हैं।
२. राजा ब्राह्मणों से धन **ग्रहण करवाता** है।
३. ग्वाला गाय को घास **खिलाता** है।
४. वह गरीबों पर दया **दिखाता** है।
५. राम रहीम से धन **चुरवाता** है।
६. सञ्जय युद्ध का वर्णन धृतराष्ट्र को **सुनाता** था।
७. दुर्भाग्य कभी-कभी मित्रों को आपस में **लड़वाता** और एक दूसरे का गला **कटवाता** है।
८. वह ब्राह्मणों को भोजन **कराता** है।

९. गाय अपने बछड़ें को दूध **पिलाती** है।

१०. पुष्पा मुझसे पत्र **लिखवाती** है।

११. तुम्हारे दुष्टता भरे काम हमें लज्जित करते हैं।

१२. भक्त भगवान् को **बुलवाता** है।

१३. मानसिंह अकबर को गुस्सा दिखवाता है।

१४. माता अपने पुत्र को धीरे-धीरे **चलाती** है।

१५. मदारी बन्दर को नचाता है।

सहायतार्थ टिप्पणी—यज्ञ करना = यज्। ग्रहण करना=प्रति+ग्रह्। खाना = खाद्। देखना = दृश्। चुराना = चुर्। सुनना = श्रु। लड़ना=युध्। काटना = कर्त्। करना=कृ। पीना = पा। लिखना = लिख्। बुलाना = आ + कृ, आ + ह्वे। चलना = चल्। नाचना = नृत्।

अभ्यास ४२

(उपसर्ग युक्त धातुयें)

१. राम ने रावण को युद्ध में **हराया**।

२. क्रोध से मोह **पैदा होता** है।

३. तू विद्यालय में विद्या **पायेगा** या घर में।

४. नगर से **निकल** वन को **आ**।

५. अपने कर्मों का फल सब **अनुभव करते** हैं।

६. क्या मेरे प्रश्न को **समझते** हो ?

७. भगवान् बुद्ध **तप करते** हैं।

८. दुष्टों के **पीछे मत जाओ**।

९. क्या यह **सम्भव** है कि युधिष्ठिर असत्य बोले।

१०. अज्ञान विवेक को **चुराता** है।

११. पार्वती पति को फूल **अर्पित करती** है।

१२. वर्षा धूल को **दूर कर देती** है।

१३. समुद्रगुप्त दिग्विजय के लिये **रवाना हुआ**।

१४. मेरे पास अपने भाई को **ला**।

१५. मैं **फैसला करता** हूँ कि आप दोषी नहीं हैं।

१६. मैं काव्य **बनाता** हूँ।

१७. जब मैं प्रातः **उठता** हूँ मेरा चित्त अति प्रसन्न होता है।

१८. सुदामा श्री कृष्ण जी के लिये चावल **लाया**।

१९. अपने मित्र को **मनाओ**।

२०. नल ने दमयन्ती के साथ **विवाह किया**।

२१. पिता पुत्र को **उपदेश देता** है।

२२. पति के पीछे पत्नी **चले**।

२३. आप **विस्तार न करें,** कथा को **संक्षेप में कर दें**।

२४. आप क्या **सन्देश देते** हैं?

२५. आप क्या **आज्ञा देते** हैं?

२६. पत्नी सदा पति की **सेवा करें**।

२७. मैं तुम्हें **जनेऊ पहनाऊँगा**।

२८. वायु सर्वत्र **घूमती** है।

२९. सोलह वर्ष के पुत्र के साथ मित्र जैसा **व्यवहार करे**।

सहायतार्थ टिप्पणी—हराना = परा + भू। पैदा होना = प्र + भू। पाना = अधि + गम्। निकलना = निर् + गम्। आना = आ + गम्। अनुभव करना = अनु + भू। समझना = अव + गम्। (तप) करना = अनु + स्था (अनुतिष्ठ)। पीछे-पीछे जाना = अनु + गम्। सम्भव होना = सम् + भू। चुराना = अप + हृ।

भेंट करना = उप + हृ। दूर करना = अप + नी = (अपनय्)। रवाना होना = प्र + स्था। लाना = आ + नी। फैसला करना = निः + नय् = (निर्णय)। बनाना = प्र + नय् = (प्रणय्)। उठना = उत् + तिष्ठ = (उत्तिष्ठ्)। लाना = आ + हृ = (आहर्)। मनाना = अनु + नी = (अनुनय्)। विवाह करना = परि + नी = (परिणय्)।

उपदेश देना = उप + दिश्। पीछे-पीछे चलना = अनु + चर्। संक्षेप करना = सम् + क्षिप् = (संक्षिप्)। सन्देश देना = सम् + दिश् = (संदिश्)। आज्ञा देना = आ + दिश्। सेवा करना = परि + चर्। जनेऊ पहनना अथवा

जनेऊ करना = उप + नी = (उपनय्)। घूमना = सम् + चर् = (संचर्)। आचरण करना = आ + चर्।

अभ्यास ४३

(शतृ और शानच् प्रत्यय)

१. किसान खेतों में हल चला रहा है।
२. सीता रामायण **पढ़ रही** है।
३. बादल आकाश में छा रहे हैं।
४. चोर डर से भाग रहा है।
५. पर्वतों पर **भेड़ और बकरियाँ चढ़ रही** हैं।
६. कंगूरों पर मोर **नाच रहे** हैं।
७. बालिकायें गेंद खेल रही हैं।
८. यमुना में सैकड़ों यात्री स्नान कर रहे हैं।
९. ये दोनों घोड़े गाड़ी को **खींच** रहे हैं।
१०. प्रेमलता **रसोईघर में** भोजन **पका रही** है।
११. मेरा भाई **धूप में** कपड़े **सुखा रहा** है।
१२. इन्द्र देव आकाश से जल बरसा रहे हैं।
१३. कुलदीप और श्याम इस नदी में **तैर रहे** हैं।
१४. उसके बड़े भाई बालकों को मिठाई दे रहे हैं।
१५. तुम इन कुत्तों को यहाँ से क्यों **भगा रहे** हो?
१६. सूर्य अपनी किरणों से पृथ्वी पर गर्मी फैला रहा है।
१७. **साबुन के बिना** तुम दोनों कपड़े क्यों **धो रहे हो?**
१८. शेर जंगल में घूम रहा है।

सहायतार्थ टिप्पणी—पढ़ रही है=पठन्ती अस्ति। भेड़ और बकरियाँ=अवयश्च अजाश्च। चढ़ रही है=आरोहन्त्यः सन्ति। नाच रहे हैं=नृत्यन्तः सन्ति। खींच रहे हैं (द्विवचन) कर्षन्तौ स्तः। पका रही है=पचन्ती अस्ति। धूप में=घर्मे। सुखा रहा है=शोषयन् अस्ति। तैर रहे हैं (द्विवचन)= तरन्तौ स्तः। रसोईघर में=महानसे, पाकशाले। भगा रहे हो=वारयन्

असि। साबुन के बिना = फेनिलं बिना। धो रहे हो (तुम दोनों) = क्षालयन्तौ स्थः।

अभ्यास ४४

[शतृ और शानच् प्रत्यय]

१. यह मकान अब **गिरने वाला है**।

२. पं० जवाहरलाल वायुयान से अमेरिका **जाने वाले हैं**।

३. वर्षा होने वाली है।

४. देखो, ये वीर सिपाही इस नदी में **कूदने ही वाले हैं**।

५. आकाश में सूर्य **निकलने ही वाला है**।

६. अब ऊषा **आने ही वाली है**।

७. देखो, सन्ध्या **बढ़ती जाती** है।

८. क्या तुम भोजन अभी करने वाले हो?

९. दस महीने बाद तुम ही वहाँ **जाने वाले हो**।

१०. कुछ भारतीय हिमालय की यात्रा करने **जाने वाले हैं**।

११. सरोज रोने ही वाली है।

१२. हम लोग यहाँ से शीघ्र **जाने वाले हैं**।

१३. राष्ट्रपति भाषण देने वाले हैं।

१४. अभी समाचार पत्रों में कुछ सूचनायें निकलने वाली हैं।

सहायतार्थ टिप्पणी—गिरने वाला है = पतिष्यन् अस्ति। जाने वाला है = गमिष्यन् अस्ति। कूदने ही वाले हैं = कूर्दिष्यन्तः सन्ति। निकलने ही वाला है = उदेष्यन् अस्ति। आने ही वाली है = आगमिष्यन्ती अस्ति। बढ़ती जाती है = वर्धमाना अस्ति। करने वाले हो = क्रियमाणः असि। जाने वाले हो = गमिष्यन् असि। जाने वाले हैं = गमिष्यन्तः सन्ति। (हम) जाने वाले हैं = गमिष्यन्तः स्मः।

अभ्यास ४५

[क्त प्रत्यय]

१. राम ने पुस्तक पढ़ी।

२. राजा ने गरीबों को धन **दिया** ।
३. हम सब ने आपका उपदेश सुन कर अति आनन्द **पाया** ।
४. क्या तूने घर जाने के लिये गुरु जी से आज्ञा **ली** ।
५. क्या तूने पिता जी की आज्ञा **सुन ली** ?
६. राम ने रावण को **मारा** ।
७. माता ने पुत्र से **कहा** ।
८. शिष्य ने गुरु से **पूछा** ।
९. मैंने चार गायें **देखीं** ।
१०. कमला ने पुस्तकें **पढ़ीं** ।
११. क्या आपने **भोजन किया** ?
१२. मनुष्य ने पिछले जन्म में जो काम **किये** हैं उनका फल वह अब भोगता है ।
१३. सीता ने कौन-कौन से दुःख **सहन नहीं किये** ।
१४. शिष्य ने गुरु से दीक्षा **ग्रहण की** ।
१५. इन्द्र ने रघु का घोड़ा **चुरा लिया** ।
१६. क्या तुमने इस काम का परिणाम **सोचा** है ?
१७. तूने यह गाय कितने की **खरीदी** ।

सहायतार्थ टिप्पणी—पढ़ी = पठित । दिया = दत्त । पाया = प्राप्त । ली = लब्ध । सुन ली = श्रुत । मारा = हत । कहा = उक्त । पूछा = पृष्ठ । देखीं = दृष्ट । पढ़ी = पठित । किया = कृत । सहन किये = सोढ़ । ग्रहण की = गृहीत । चुरा लिये = चोरित । सोचा = चिन्तित । खरीदी = क्रीत ।

नोट—(१) उक्त शब्दों के रूप लिंग विभक्ति और वचन के अनुसार चला लो ।
(२) प्रत्येक तुमन् युक्त वाक्य में 'कर्ता' में तृतीया विभक्ति लगती है ।

अभ्यास ४६

[क्तवतु प्रत्यय]

१. कर्ण इन्द्र से वरदान ले चुका है ।

२. गुरु जी व्याख्यान दे चुके हैं।
३. रूपा पूजा **कर चुकी** है।
४. क्या तुम्हारी दादी गीता **पढ़ चुकी** है?
५. एशिया महाद्वीप के अधिकतर भाग **स्वतन्त्र हो चुके** हैं।
६. तुम सब अब नाटक **देख चुके** हो।
७. मोर ने साँप को **मार दिया** है।
८. सब लड़कियाँ स्कूल **जा चुकी** हैं।
९. महिलायें कुयें से जल **ले आई हैं**।
१०. तुमने अपनी बात **कह दी** है।
११. मास्टर अपनी कक्षा को पढ़ा चुका है।
१२. वे लोग बाहर जा चुके हैं।
१३. अध्यापक ने सब अपराधी विद्यार्थियों को दण्ड दिया है।
१४. सिपाही ने **बन्दूक से** शेर को मार दिया है।
१५. क्या तुम भी विद्यालय में पढ़ चुके हो?

सहायतार्थ टिप्पणी—ले चुका है = प्राप्तवान् अस्ति। कर चुकी है = कृतवती अस्ति। पढ़ चुकी है = पठितवती अस्ति। स्वतन्त्र हो चुके हैं = मुक्तिं स्वातंत्र्यं वा प्राप्तवन्तः सन्ति। (तुम सब) देख चुके हो = दृष्टवन्तः स्थः। मार दिया है = हतवान् अस्ति। जा चुकी हैं = गतवत्यः सन्ति। ले आई हैं = आहृतवत्यः सन्ति। (तुमने) कह दी है = कथितवान् असि। बन्दूक से = द्विनालिकया।

अभ्यास ४७

[तुमुन् प्रत्यय]

१. बालकों! प्रातःकाल हो गया, **स्नान के लिये** नदी पर जाओ।
२. रघु शत्रुओं को **जीतने के लिये** पश्चिम दिशा में गये।
३. **नमस्कार करने के लिये** गुरु के पास जाओ।
४. भीम दुःशासन का रक्त **पीने के लिये** व्याकुल हो गया।
५. **पढ़ने के लिये** विद्यालय जाओ।
६. चोर **चोरी करने के लिये** धनी के घर में गया।

७. कौन **मरना** चाहता है ?
८. सब कोई **जीना** चाहते हैं ।
९. क्या आप मेरे घर **काम करने के लिये** आयेंगे ?
१०. मैं कुछ **बोलना** चाहता हूँ, क्या समय होगा ?
११. विद्या **ग्रहण करने के लिये** शिष्यं सदा उद्यत रहें ।
१२. वेद मन्त्रों को **सुनने के लिये** मैं पाठशाला आऊँगा ।
१३. दान **देने के लिये** हरिश्चन्द्र ने विश्वामित्र को बुलाया ।
१४. रावण सीता को **हरने के लिये** आश्रम को आया ।
१५. राजा जनक प्रश्न **पूछने के लिये** ऋषि याज्ञवल्क्य के पास गये ।
१६. बच्चा **सोने के लिये** माता की गोद में जाता है ।

सहायतार्थ टिप्पणी—स्नान के लिये = स्नातुम् । जीतने के लिये = जेतुम् । नमस्कार करने के लिये = नन्तुम् । पीने के लिये = पातुम् । पढ़ने के लिये = पठितुम् । चोरी करने के लिये = चोरयितुम् । मरना = मर्तुम् । जीना = जीवितुं । करने के लिये = कर्तुम् । बोलना = वक्तुम् । ग्रहण करने के लिये = ग्रहीतुम् । सुनने के लिये = श्रोतुम् । हरने के लिये = हर्तुम । पूछने के लिये = प्रष्टुम् । सोने के लिये = स्वप्तुम् । देने के लिये = दातुम् ।

अभ्यास ४८

[क्त्वा प्रत्यय]

१. निर्धन **होकर** कौन सुखी होता है ।
२. **सोच कर** काम करो ।
३. राम रावण को **जीत कर** अयोध्या में वापिस आ गये ।
४. मनुष्य विद्या **पढ़ कर** योग्य हो सकता है ।
५. **जाकर** बाहर देखो कि कौन बाहर खड़ा है ?
६. यह **कह कर** राजा अपने आसन पर बैठ गया ।
७. **देख कर** शीघ्र मेरे पास आओ ।
८. रसोइया भोजन **पका कर** स्वामी के पास ले जाता है ।
९. यहाँ **ठहर कर** गायत्री जाप करो ।

१०. सम्मान **पाकर** ही मनुष्य महान् बनता है।

११. देवेन्द्र से यह **पूछ कर** जल्दी मालूम करो कि वह कब घर जायगा ?

१२. शिष्य गुरु को **नमस्कार करके** घर जाता है।

१३. गौ का दूध **दुह कर** लाओ और बच्चे को पिलाओ।

१४. अनेक कष्टों को **सहन कर** सीता घर आईं।

१५. जल **पीकर** पथिक मार्ग पर चल पड़ा।

१६. ईश्वर का **स्मरण कर** मनुष्य का हृदय शान्त होता है।

सहायतार्थ टिप्पणी—होकर = भूत्वा। सोच कर = चिन्तयित्वा। जीत कर = जित्वा, विजित्य। पढ़ कर = पठित्वा। जाकर = गत्वा। कह कर = उक्त्वा। देख कर = दृष्ट्वा। पका कर = पक्त्वा। ठहर कर = स्थित्वा। पाकर = आप्त्वा। पूछ कर = पृष्ट्वा। नमस्कार करके = नत्वा। दुहकर = दुग्ध्वा। सहन कर = सहित्वा। पीकर = पीत्वा। स्मरण कर = स्मृत्वा।

अभ्यास ४९

[तव्यत् प्रत्यय]

१. मुझे अब घर **जाना चाहिये**।

२. प्रातःकाल उठकर प्रतिदिन माता-पिता को नमस्कार **करना चाहिये**।

३. तुझे पुस्तक **पढ़नी चाहिये**।

४. आज का पाठ आज ही **याद करना चाहिये**।

५. यतियों को इन्द्रियों का **दमन करना चाहिये**।

६. हमें प्रातःकाल उठकर वन्दना **करनी चाहिये**।

७. रसोइये को अब भोजन **पकाना चाहिये**।

८. तुम दोनों भाइयों को कुयें पर जाकर पानी **पीना चाहिये**।

९. क्या यह पुस्तक मुझे घर ले जानी चाहिये।

१०. मनुष्य को व्यर्थ की चिन्ता नहीं **करनी चाहिये**।

११. राजन् यह आश्रम का मृग है।
१२. इसे न **मारना चाहिये।**
१३. कभी किसी का धन नहीं **चुराना चाहिये।**
१४. दरिद्र को दान **देना चाहिये,** धनिक को नहीं।
१५. वही वस्तु **लेनी चाहिये** जो अपनी है।
१६. तुमसे जो मैं कहता हूँ वह तुम्हें ध्यान से **सुनना चाहिये।**
१७. गुरु जी से **पूछना चाहिये,** जैसा वह कहें वैसा काम करना चाहिये।

सहायतार्थ टिप्पणी—पढ़ना चाहिये = पठितव्यम्। करना चाहिये = कर्त्तव्यम्। जाना चाहिये = गन्तव्यम्। याद करना चाहिये = स्मर्तव्यः। दमन करना चाहिये = जेतव्यानि। ले जानी चाहिये = नेतव्यम्। करनी चाहिये = कर्त्तव्या। पकाना चाहिये = पक्तव्यम्। पीना चाहिये=पातव्यम्। मारना चाहिये = हन्तव्यः। चुराना चाहिये = चोरयितव्यः। देना चाहिये= दातव्यम्। लेनी चाहिये = ग्रहीतव्यम्। सुनना चाहिये = श्रोतव्यम्। पूछना चाहिये = पृष्टव्यम्।

अभ्यास ५०

[विविध शब्द]

१. **बेईमान** लोग बहुत सी **दौलत** इकट्ठा कर लेते हैं।
२. हिरन **निश्चिन्त होकर** चर रहे थे।
३. पशुओं के **सींग** ही उनके हथियार हैं।
४. बच्चे को **बिछावन** पर लिटा दो।
५. राहगीरों को **लूटना** ही वाल्मीकि की **जीविका** थी।
६. यह कुलवधू नहीं **वेश्या** है।
७. जरा रुक जाओ, **अपशकुन** हो गया।
८. उसका **भाषण बड़ा** प्रभावजनक रहा।
९. गोविन्द बड़ा **बातूनी** है।
१०. **गन्ने** का एक **टुकड़ा** मुझे भी दो।

११. मैंने समुद्र से एक **सीप** ढूंढ निकाली।

१२. राजा **रनिवास** में चला गया।

१३. **महावत अंकुश** से हाथी को **वश में रखता है।**

१४. इस तालाब में **काई** उग आई है।

१५. सभी सैनिक **छावनी** को लौट गये।

१६. फूलों का यह **गुच्छा** कितना सुन्दर है।

१७. उसकी आँखों से **चिनगारियाँ** निकल रही थीं।

१८. पड़ोसियों से **मेलजोल** बनाये रखना चाहिये।

१९. उस **बेचारे** पर तो **मुसीबतों** का पहाड़ टूट पड़ा।

२०. सभी **जीवों** पर दया करनी चाहिये।

सहायतार्थ टिप्पणी—बेईमान = वितथप्रियः। दौलत = विभवः। निश्चिन्त होकर = विश्रब्धम्। सींग=शृङ्गः, विषाणः, विशाणम्। बिछावन= विष्टरः। लूटना = लुण्ठनम्। जीविका = वृत्तिः। वेश्या = वेशवनिता, रूपजीवा, पण्य भोज्या। अपशकुन = वैकृतम्। भाषण = व्याहृतिः (स्त्री०), व्याहारः (पु०), व्याख्यानम् (नपुं०)। बड़ा=महत्। बातूनी=वाचालः। गन्ना=इक्षुः। टुकड़ा=खण्डम्, शकलम्। सीप=शुक्तिः (स्त्री०)। रनिवास= शुद्धान्तः। महावत = हस्तिपः। अंकुशः = शृणिः (स्त्री०)। वश में रखना = शास्। काई = शैवलम्। छावनी = स्कन्धावारः। गुच्छा=स्तवकः। चिनगारी=स्फुल्लिंगः। मेल-जोल = संसर्गः। बेचारा = वराकिन् = वराकी। मुसीबत = विपत्। जीव = सत्वम्।

अभ्यास ५१

[दो कुत्ते]

सूर्य की किरणों से **व्याकुल होकर** दो कुत्ते एक वृक्ष की छाया में बैठ गये और **बातचीत** करने लगे। एक ने कहा—'भाई! संसार में मूर्ख लोग **व्यर्थ ही** लड़ते और **दुःखी होते हैं।**' दूसरे ने उत्तर दिया—'मित्र तुम सत्य कहते हो। कलह करना अनुचित है। सदा सबसे प्रेम के साथ **रहना चाहिये।** आओ हम दोनों प्रतिज्ञा करें कि परस्पर कभी कलह न करेंगे।

तब दोनों ने परमात्मा का ध्यान करके उक्त प्रकार से **प्रतिज्ञा की**। ठीक उसी समय मांस का एक **टुकड़ा ऊपर से** उनके **सामने** आ गिरा। दोनों कुत्ते उसे देख कर दौड़े। क्योंकि दोनों ही मांस खाना चाहते थे। इसलिये उनमें **लड़ाई** होने लगी। यहाँ तक कि दोनों के शरीर खून से **सन गये**।

उनकी यह दशा देखकर एक कौआ **उड़ा** और मांस का टुकड़ा **चोंच से पकड़कर** ले गया। सच है, संसार में मित्रता उसी समय तक रहती है जब तक स्वार्थ नहीं होता। स्वार्थ होने पर स्नेह और मित्रता का नाश हो जाता है।

सहायतार्थ टिप्पणी—व्याकुल होकर = व्याकुलीभूय, सन्तप्तौ। बातचीत करना = आ + लप् (परस्मै०)। दुःखी होते हैं = सीदन्ति, दुःखं अनुभवन्ति। व्यर्थ ही = व्यर्थमेव, वृथैव। रहना चाहिये=वस्तव्या। प्रतिज्ञा की = प्रतिज्ञातम्। टुकड़ा = खण्डः। ऊपर से = उपरिष्टात् (अव्यय)। सामने = पुरतः। लड़ाई = कलह। सन गये = लिप्ताः, आलिप्ताः। उड़ा = उत्पतितः। उड़ना = उत् + पत्, उत् + डी। चोंच से = चञ्च्वा। पकड़-कर = आदाय, गृहीत्वा।

अभ्यास ५२

[दो बकरे]

एक पहाड़ के **नीचे** एक नदी बहती थी। नदी के **किनारे** पहाड़ से मिला हुआ एक **तंग** रास्ता था। **संयोगवश** दो बकरे एक ही समय उस राह से आ निकले, एक इधर से और दूसरा उधर से।

जब वे **एक दूसरे के सामने** आये, तब बड़ी कठिनाई में पड़ गये। न कोई **मुड़कर** लौट सकता था और न दूसरे की **बगल से** आगे ही निकल सकता था। एक ओर ऊँचा पहाड़ रोकता था और दूसरी ओर नदी का भय था कि पैर **फिसलते** ही नदी में गिर जायेंगे।

तब उनमें से एक बकरा राह में लेट गया और दूसरा **धीरे-धीरे** उस पर पाँव रखकर उतर गया। अब जो लेटा हुआ था उसके लिये भी मार्ग

साफ हो गया। जहाँ जाना था उठकर चला गया। इस प्रकार मेल-जोल से दोनों ने अपनी जान बचा ली।

सहायतार्थ टिप्पणी—नीचे=अधस्तात्, अधः (अव्यय)। किनारे-किनारे = तटेन, तीरेण। तंग = संकुचित (विशे०)। संयोगवश = संयोगात्। एक-दूसरे के = अन्योन्यस्य। सामने = पुरतः। मुड़कर=परिवृत्य। बगल से= पार्श्वप्रदेशात्। फिसलना = स्खलनम्। धीरे-धीरे = शनैः शनैः।

अभ्यास ५३

[असली मजाक]

एक दिन गोपाल और शंकर **सैर-सपाटे को** निकले। गर्मी का दिन था। वे एक पेड़ के **नीचे** बैठ गये। **थोड़ी-सी दूर पर** एक **घसियारा** मैदान में **घास** काट रहा था। उसके **जूते** उसी पेड़ के नीचे पड़े थे।

दोनों लड़के **बहुत देर तक** उसे ताकते रहे, पर उसने उनकी तरफ ध्यान न दिया। केवल **दिल्लगी के लिये** ही वे उसे छेड़ना चाहते थे।

गोपाल ने शंकर से कहा 'दोस्त, उसके जूते **टरका दें**। जब वह यहाँ आयेगा तो उसे मालूम होगा कि जूते **गायब** हैं। जरूर ही वह इस **नटखटी का** दोष हम पर ही लगावेगा और फिर हम उसे सबक सिखा देंगे।'

शंकर स्वभाव से दयालु था। वह बोला 'दोस्त, तुम अमीर आदमी के लड़के हो। किसी को **सताना** तुम्हें **शोभा नहीं देता**। वह गरीब आदमी है। इस **नुकसान** से उसका दिल दुःखेगा। वह थोड़ा **कमाता** है और यह **मालूम पड़ता** है कि बड़ा **कुनबा** पालता है। अगर तुम मजाक ही करना चाहते हो तो दूसरी जगह से भी कर सकते हो। जूतों में एक-एक रुपया रख दो और फिर देखना कि वह क्या करता है? बड़ा मजा आयेगा।'

गोपाल ने वैसा ही किया। दोनों लड़के झाड़ी में छिप गये। घसियारा काम कर चुकने के बाद जूते पहनने के लिये वहाँ आया। जूतों में रुपये देखकर **भौंचक्का-सा रह गया**। पहले तो वह उन्हें उठाते हुए हिचकिचाया, फिर उसने सोचा कि इन्हें ले लेने में कोई पाप नहीं है। यह तो ईश्वर की कृपा है। वह उन्हें जेब में डालकर सिर पर घास का गट्ठा लादे हुये घर की तरफ चल दिया।

जब वह कुछ दूर निकल गया तब गोपाल ने शंकर से कहा 'हमारी हँसी उपकारी है। आज उसके बीवी-बच्चे बहुत खुश होंगे। शायद उसने जिन्दगी भर एक दिन में दो रुपये न कमाये होंगे।

सहायतार्थं टिप्पणी—सैर-सपाटे को=परिभ्रमणाय। नीचे=अधस्तात्। थोड़ी ही दूर पर=नातिदूरे। घसियारा=शस्यकर्तकः। घास=दूर्वा, शस्यम्। जूता=उपानत्। बहुत देर तक=चिराय। दिल्लगी के लिये=विनोदाय, परिहासाय। टरका दें=अपनयावः। गायब=लुप्तः। नटखटी का=दुर्ललितस्य कर्मस्य। सताना=परिपीडनम्। शोभा नहीं देता=न शोभते। नुकसान=हानिः। कमाता है=अर्जति। मालूम पड़ता है=प्रतीयते। कुनबा=परिवारः। रुपया=रुप्यकः। भौंचक्का-सा रह गया=स्तम्भितः, चकितचकितः।

अभ्यास ५४

[पेट]

एक बार पेट और दूसरे अंगों में झगड़ा हो गया। शरीर से दूसरे अंगों ने कहा कि पेट कुछ काम नहीं करता, **चुपचाप** बैठा रहता है। एक दिन **सलाह** करके उन सबने अपना-अपना काम छोड़ दिया। यह **हाल** देखकर पेट चुप रह गया। इसी तरह कई दिन बीत गये। पेट में खाना न पहुँचने से सभी अंग शिथिल पड़ गये। उनकी यह दशा हो गई कि कान सुन नहीं सकता था, जबान बोल नहीं सकती थी, हाथ काम नहीं कर सकते थे, पाँव चल नहीं सकते थे और आँखों से दिखाई नहीं देता था।

एक दिन पेट ने उनकी यह दुर्दशा देखकर कहा—"भाइयों! तुम बड़ी **भूल में हो**। तुम समझते हो कि मैं कोई काम नहीं करता। पर वास्तव में यह सत्य नहीं। जो कुछ तुम मुझे खिलाते हो, मैं उनमें से हरएक को **हिस्सा** पहुँचा देता हूँ।"

सहायतार्थं टिप्पणी—एक बार=एकदा। चुपचाप=तूष्णीम्। हाल=दशा। (तुम) भूल में हो=(यूयं) भ्रान्ताः स्थ। झगड़ा होना=विग्रहः, कलिः। सलाह करके=मन्त्रयित्वा, सम्मन्त्र्य। हिस्सा=भागः, अंशः।

अभ्यास ५५

[दिलीप]

सूर्य वंश में दिलीप नामक एक विख्यात राजा था। वह प्रजापालन में सदा **रत** रहता था और सभी गुणों से अलंकृत भी था। किन्तु पुत्र के अभाव से उसका हृदय सदा **दुःखी रहता था**।

एक दिन कुछ **सोचकर** महर्षि वशिष्ठ ने दिलीप से कहा—"राजन्! नन्दिनी नामक गाय की सेवा कर। **इसके प्रसन्न होने पर** तेरे पुत्र उत्पन्न होगा।" ऐसा सुनकर दिलीप नन्दिनी के पास गया और उसकी सेवा करने लगा।

एक बार नन्दिनी राजा सहित हिमालय की एक **गुफा** में चली गई। वहाँ एक सिंह ने उसे पकड़ लिया। राजा ने बाण चलाने की **इच्छा की**, किन्तु उसका हाथ शिथिल पड़ गया। सिंह ने हँसकर कहा—

हे राजन्! तेरे तीर से मैं नहीं मर सकता। मेरे रक्षक शिव जी हैं। मेरे भोजन के लिये यह गाय मेरे **पास** आई है। मैं इसे नहीं छोड़ूँगा।"

राजा ने कहा—"हे सिंह! तू मुझे खा ले। किन्तु इस गाय को छोड़ दे।" यह सुनकर सिंह प्रसन्न हुआ। उसने अपना असली रूप धारण कर लिया। वह वस्तुतः नन्दिनी ही थी जो कि सिंह बनकर राजा दिलीप की परीक्षा कर रही थी।

सहायतार्थं टिप्पणी—रत = तत्परः। दुःखी रहता था = दूयते स्म। सोचकर = विचिन्त्य, विचार्य। इसके प्रसन्न होने पर = अस्यां प्रसन्नायाम्। गुफा = कन्दरा, गह्वरम्। इच्छा की = ऐच्छत्। पास = समीपं, अन्तिकम्।

अभ्यास ५६

[राजा नल]

निषध देश के राजा नल अपने बाग में खड़े हुये थे। उन्होंने एक राजहंस को देखा जो सरोवर में **विहार कर रहा था**। राजा ने उसे **पकड़ लिया**। हंस ने कहा—

"राजन् मुझे छोड़ दो। मैं तुम्हारा गुण-गान दमयन्ती के **सामने** करूँगा। वह अत्यन्त रूपवती कन्या है और तुम्हारे साथ विवाह करने के योग्य है।"

राजा ने हंस को छोड़ दिया। हंस उड़ता हुआ दमयन्ती के **पास** पहुँचा और उसके सम्मुख **नल** के रूप, बल, विद्या आदि गुणों की **चर्चा की**।

दमयन्ती के पिता राजा भीम ने अपनी पुत्री का स्वयंवर-समारोह रचाया। उसमें दूर-दूर देश से अनेक राजा लोग **पहुँचे**। दमयन्ती ने उन सब राजाओं को देखा और उनके गुणों का वर्णन भी सुना। जब वह नल के पास पहुँची, उसने जयमाला उसी नल को पहनाई। अन्य राजा लोग निराश होकर वापस घर चले गये।

सहायतार्थ टिप्पणी—विहार कर रहा था = विहरन् आसीत्। पकड़ लिया = जग्राह, ग्रहीतः। सामने = समक्षं, सम्मुखं, पुरतः। पास = समीपं, अन्तिकं। चर्चा की = चर्चाञ्चकार। पहुँचे = प्राप्ताः, आगताः।

अभ्यास ५७

[रणजीतसिंह]

रणजीत सिंह एक वीर और **निडर सिपाही** था। उसे युद्ध में बड़ा आनन्द आता था। वीर पुरुषों का वह सम्मान करता था। उन्हें **इनाम** दिया करता था। वह एक सफल **जनरल** था। उसके सिपाही उससे बहुत प्रेम करते थे। वे उसकी आज्ञा का पालन करते थे और उसके लिये **प्राण** तक देने के लिये तैयार रहते थे। वह अपना सब काम नियत समय पर करता था। वह **सिक्ख धर्म को मानने वाला था,** लेकिन उसने कभी किसी को सिक्ख होने के लिये **विवश नहीं किया**। फिर भी उसकी कृपा प्राप्त करने के लिये बहुत से लोग सिक्ख **बन गए**।

वह **पढ़ा-लिखा** न था, फिर भी शिक्षा के महत्व को जानता था और विद्वानों का आदर करता था। उसकी **बुद्धि** बहुत **तेज** थी और नई बातों को **जानने के लिए** वह सदा उत्सुक रहता था। उसे इतिहास से प्रेम था। वह अपने भाग्य का निर्माता था। वह **युद्ध में** निडर रहता था।

रणजीत सिंह एक योग्य शासक भी था। उसने **पंजाब में** स्थायी शासन स्थापित किया। उसने सिक्खों को संगठित किया। **अँग्रेज** उससे बहुत डरते थे। वह भी अँग्रेजों के साथ मित्रता रखने के लाभ को **खूब** जानता था। भारतवर्ष रणजीत सिंह को कभी **नहीं भूल सकता।**

सहायतार्थ टिप्पणी—निडर=निर्भीकः। सिपाही=सैनिकः, यामिकः। इनाम=पुरस्कारः। जनरल=सेनानी, नायकः। सिक्ख धर्म को मानने वाला=सिक्खधर्मानुयायी। विवश नहीं किया=न अप्रेरयत्। बन गये=अभवन्। पढ़ा लिखा=शिक्षितः। तेज=प्रखरा। जानने के लिये=अवगन्तुं। युद्ध में=युधि, युद्धस्थले, सङ्गरे। पंजाब में=पञ्चनदप्रान्ते। अँग्रेज=आङ्ग्लदेशीयाः। खूब=सम्यक् प्रकारेण। नहीं भूल सकता=विस्मर्तुम् न शक्नोति।

अभ्यास ५८

[सदुपदेश]

अपना कर्तव्य प्रसन्नता से करो। उसके करने में उदास वा निराश मत हो। अपने कार्य को **भरसक** मनोरंजन बनाओ। इस प्रकार वह कार्य **आसानी से** सिद्ध होगा। **कुछ न कुछ** कार्य सदा करते रहो। किसी उद्देश्य को दिल में बनाये रक्खो। इससे निःसन्देह सफलता मिलेगी।

धर्मात्मा **बनो**। जो धर्मशील हैं वे स्वार्थी नहीं होते। वे लोग विपत्ति में भी अपने धर्म पर दृढ़ रहते हैं। इसी लिये उनका यश **वृद्धि पाता है।**

तुम्हें उद्यमपूर्वक विद्या लाभ करना चाहिये। आलस तुम्हारे मार्ग का बहुत बड़ा शत्रु है। तुम पढ़-लिखकर विद्वान् बनो। विद्वान् चाहे बालक हो या वृद्ध, चाहे रूपवान् हो या कुरूप, सदैव **आदर के योग्य** है। परन्तु विद्वान् को अपनी विद्या का अहंकार कभी न करना चाहिये।

सहायतार्थ टिप्पणी—भरसक=यथाशक्ति (अव्यय)। आसानी से=अनायासेन। कुछ न कुछ=यत्किमपि, यत्किञ्चित्। बने=भव। वृद्धि पाता है=वर्धते, वृद्धिं गच्छति। आदर के योग्य=आदरणीयः।

अभ्यास ५९

[कविता]

विचारशील मनुष्यों के मुख से ऐसा **सुना जाता है** कि कविता और मानव जाति का अनादि सम्बन्ध चला रहा है। मनुष्य के बिना अन्य कोई प्राणी कविता रचनें, सुनने या **समझने में** समर्थ नहीं है। मनुष्यों में भी सभी कविता के **पारखी** नहीं होते। कोई-कोई सहृदय पुरुष ही उसकें **मर्म** को जान सकता है। कविता ज्ञान से रहित मनुष्य पशुवत् होते हैं।

संसार में ऐसी कोई भाषा नहीं, जिसमें कुछ न कुछ कविता न पाई जाय। संगीत भी कविता का मित्र है। संगीत कविता प्रेम में बड़ा सहायक है और प्रेम ही सृष्टि का मूल मन्त्र है।

आजकल के नवशिक्षित युवकों में से कई एक अपनी मातृभाषा की कविता से **घृणा करते हैं**। इसका कारण यही **प्रतीत होता है** कि वे कविता के मर्मज्ञ तथा अपनी मातृभाषा के स्नेही नहीं।

सहायतार्थं टिप्पणी—पारखी = परीक्षकः, तत्त्वज्ञः। सुना जाता है= श्रूयते। समझने में = अवगन्तुम्। घृणा करते हैं = जुगुप्सन्ते, घृणां कुर्वन्ति। प्रतीत होता है = प्रतीयते, अवभासते।

अभ्यास ६०

(बुद्धि और स्वास्थ्य)

बुद्धि के साथ-साथ **हमें शरीर को भी बढ़ाना चाहिये**। जो लोग इनमें से किसी एक पर ही बल **देना चाहते हैं**, वे सफल नहीं होते। मनुष्य का **काम** बुद्धि और शरीर दोनों से ही **चलता है**। पश्चिमी देशों में लोग शारीरिक बल के महत्व को अच्छी प्रकार **समझते हैं**। खेलना उनके दैनिक कार्यों में आवश्यक होता है। **अस्सी** वर्ष का बूढ़ा अँग्रेज खेल में युवकों की तरह **उछलता है**। जब तक खेलता है, तब तक खेल के **आनन्द में डूब जाता है**। सब चिन्ताओं को **भूल जाता है**। इसी से उन लोगों का **स्वास्थ्य उत्तम होता है**। हम भारतीय खेलों का महत्त्व बहुत कम

समझते हैं। **फलस्वरूप** न हमारा शरीर बढ़ता है और न बुद्धि ही। वस्तुतः बुद्धि भी स्वस्थ शरीर में ही विकास पाती है।

सहायतार्थं टिप्पणी—हमें = अस्माभिः। शरीर को=शरीरं। बढ़ाना चाहिये = वर्धनीयम्। देना चाहते हैं = दित्सन्ति। काम चलता है = कार्यं सरति। समझते हैं = अवगच्छन्ति। अस्सी = अशीतिः। उछलता है = उच्छलति, उत्कूर्दते। आनन्द में = आनन्दे। डूब जाता है = निमज्जति। भूल जाता है = विस्मरति। फलस्वरूप = फलतः, परिणामतः। बढ़ता है = वर्धते। विकास पाती है = विकसति।

अभ्यास ६१

(महाश्वेता और पुण्डरीक)

श्वेतकेतु नाम के एक परम रूपवान् ऋषि थे। लक्ष्मी जी के संसर्ग से उनके पुण्डरीक नाम का पुत्र हुआ। वह एक दिन स्नानार्थं अपने बालमित्र कपिञ्जल के साथ अच्छोद झील पर गया। वहाँ पर उसने गन्धर्वराज हंस की अपनी धर्मपत्नी गौरी से उत्पन्न महाश्वेता नाम की रूप-यौवन-सम्पन्न कन्या को देखा। वह भी अपनी माँ के साथ स्नान करने के लिये वहाँ पर आई थी और सखियों के साथ उपवन में घूम रही थी। एक दूसरे को देख कर दोनों को प्रेम हो गया। परिचय आदि हो जाने पर पुण्डरीक ने अपनी कर्ण कुसुममञ्जरी को महाश्वेता के कान में खोंस दिया। स्पर्श सुख के कारण अनजाने में उसके हाथ से अक्षमाला गिर पड़ी। भूमि पर गिरने के पूर्व ही महाश्वेता ने उसे पकड़ कर गले में पहन लिया और बदले में अपना कीमती एकावली हार देकर चली गई।

चन्द्रोदय होने पर कामपीड़ित अपने मित्र की चिन्तनीय दशा को देख कर पुण्डरीक को महाश्वेता के घर जाना पड़ा। वह भी अत्यन्त कामातुर हो रही थी। अँधेरा होने पर वह छिपती-छिपाती पुण्डरीक के पास आई, किन्तु उसका प्राणान्त हो चुका था। वह भी चिता बना कर मरने का उपक्रम करने लगी। इसी समय आकाशवाणी हुई कि "हे महाश्वेते! प्राण मत त्याग! कालान्तर में तेरा प्रिय समागम होगा।" इसके बाद ही चन्द्रमा

से एक दिव्य ज्योति निकली और आकर पुण्डरीक के मृत शरीर को उठाकर चल पड़ी। कपिञ्जल ने उसका पीछा किया। चलते-चलते वह मार्ग में ध्यानावस्थ बैठे एक ऋषि को लाँघ गया। उसने श्राप दिया कि "जा, घोड़ा हो जा।" कपिञ्चल सचमुच समुद्र में गिर कर इन्द्रायुध नाम का घोड़ा हुआ। इधर महाश्वेता घर न जाकर अच्छोद के किनारे स्थित शिव मन्दिर में रह कर तपस्या करने लगी।

सहायतार्थं टिप्पणी—झील = महाह्लदम्। प्रेम=राग। कान में खोंस दिया=कर्णे अकरोत्। पहन लिया=आधारयत्। वदले में=प्रतिदानरूपेण। छिपती छिपाती = अन्यजन-दृष्टि परिहरन्ती, निलीयन्ती इव। उठाकर = उत्तोलयित्वा। पीछा किया = अन्वसरत्। लाँघ गया = अलंघयत्।

अभ्यास ६२

(चन्द्रापीड और वैशम्पायन)

तारापीड़ नाम के एक राजा हो चुके हैं। उनके शुकनास नाम का एक परम प्रवीण मन्त्री था। राजा के घर में चन्द्रापीड और मन्त्री के घर वैशम्पायन नाम के पुत्र पैदा हुये। रानी के मर जाने से शुकनास की पत्नी मनोरमा ने ही चन्द्रापीड का भी अपने ही पुत्र की तरह स्तनपान पूर्वक पालन किया। दोनों में घनी मित्रता थी। ये दोनों ही पूर्व जन्म में चन्द्र और पुण्डरीक थे। पूर्व जन्म का कपिञ्जल अब इन्द्रायुध घोड़ा बनकर राजकुमार की सवारी में आ रहा था।

एक दिन शिकार खेलते समय किन्नर-मिथुन का पीछा करते-करते चन्द्रापीड़ मार्ग भूल गया। इन्द्रायुध उसे अपनी सुपरिचित अच्छोद झील पर ले आया। वहाँ पर राजकुमार ने महाश्वेता को देखा और उसका जीवन वृत्त जाना। वह उसे अपने घर ले गई और अपनी सहेली कादम्बरी से मिलाया। दोनों में प्रेम हो गया।

वैशम्पायन भी सेना सहित राजकुमार को खोजते-खोजते वहाँ आ पहुँचा। चन्द्रापीड कादम्बरी को आश्वासन देकर घर लौट गया। घर पहुँच कर मालूम हुआ कि वैशम्पायन लापता है। टोह लगाते-लगाते चन्द्रापीड

पुनः अच्छोद झील पर आये और महाश्वेता से अपने मित्र के विषय में पूछा। उसने बतलाया कि 'वह तो तोते की तरह बार-बार प्रेम-प्रस्ताव कर रहा था। इसलिये मैंने श्राप दिया कि तोता हो जा। इसलिये उसका देहान्त हो गया।' मित्र का मरण सुनकर राजकुमार की छाती फट गई। वह भी गिर कर मर गया।

सहायतार्थ टिप्पणी—मार्ग भूल गया = दिग्भ्रमो जातः। खोजते-खोजते = अन्विष्यन्। लापता है = नास्ति, न प्रत्यागतोऽस्ति। तोते की तरह = शुकवत्, शुक इव। छाती फट गई = वक्षविदीर्णो जातः। मर गया = मृतः।

अभ्यास ६३

(शाप का अन्त)

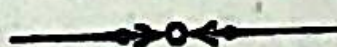
शूद्रक नाम के एक बड़े प्रतापी राजा थे। एक दिन राजदरबार में आकर एक चाण्डाल कन्या ने राजा को एक तोते का बच्चा भेंट किया। राजा उसे लेकर दुलार करने लगे। वह भी अपनी भाषा में बोलने लगा। वह कह रहा था कि—'मैं अपने पूर्व जन्मों में श्वेतकेतु का पुत्र पुण्डरीक और शुकनास का पुत्र वैशम्पायन था। महाश्वेता ने मेरे प्रेम-प्रस्ताव से रुष्ट होकर श्राप दिया था। इसीलिये मैं तोता बना। एक दिन एक बहेलिये ने मेरे माँ-बाप को जाल फैलाकर पकड़ लिया। मैं पेड़ के नीचे जा गिरा, एक मुनि-कुमार मुझे पकड़कर अपने पिता जाबालि के पास ले गया। उन्होंने उसे मेरे पूर्वजों की कथा सुनाई। मैंने भी सब कुछ सुन लिया। महाश्वेता की याद आते ही मैं उड़ चला। किन्तु यह चाण्डाल कन्या मुझे पकड़कर यहाँ ले आई।'

इतना कहते-कहते वह तोता शोक की अधिकता से मर गया। राजा शूद्रक को भी अपने पूर्व जन्मों का स्मरण हो आया। उनका सन्ताप भी इतना बढ़ा कि वे मरकर काठ बन गये।

वास्तविकता तो यह थी कि श्राप का अन्त हो चुका था। फलतः चन्द्रापीड ने पुनर्जीवन पाकर कादम्बरी से विवाह किया। जो कि उसके शव

की अब तक रक्षा कर रही थी। उधर पुण्डरीक भी अपने मित्र कपिञ्जल के साथ जी उठा और महाश्वेता से उसका विवाह हुआ। सब लोग सुखपूर्वक रहने लगे।

सहायतार्थ टिप्पणी—दुलार करने लगे=लालनं अकरोत्। बहेलिया=व्याधः, शाकुनिकः। फैलाकर=प्रसार्य, विस्तीर्य। पकड़कर=गृहीत्वा। कहते-कहते=आचक्षन्नेव, ब्रुवन्नेव। शोक की अधिकता से=शोकाधिक्यात्, शोकाधिक्येन। काठ=काष्ठः। विवाह किया=पर्यणयत्, विवाहं अकरोत्।



चतुर्थोऽध्यायः

[ख] संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद करो

अभ्यास १

(कारकचिह्न)

फले । ग्रहयोः । जले । वृक्षे । ब्राह्मणाः । पवनेषु । मृगौ । अश्वानाम् । व्याघ्राभ्याम् । **शठैः** । **शरेण** । नरान् । वस्त्राणि । वेदाः । **पर्यङ्के** । ग्रामौ । गजस्य पादः । बुधानां पुस्तकानि । रामस्य हस्तौ । **शुकस्य** नेत्रे । सिंहात् भयम् । मुखे ओदनम् । ईश्वरस्य धर्मः । वीराणां क्रोधः । पर्वतेषु सुवर्णम् । सुखाय । शास्त्रेभ्यः । शासकैः । वेदानां ज्ञानम् । वनस्य वृक्षाः । **ओदने** विषम् । वनेषु तृणानि । ईश्वरस्य ध्यानम् । वचनात् । नेत्राभ्याम् । **काणः** । ब्राह्मणाय आसनम् । क्षेत्रेषु जलम् । करैः । नराय । ब्राह्मणेभ्यः दानम् । राजपुरुषाभ्याम् । बालकयोः पुस्तके । मे भ्राता । तुभ्यं फलानि । धनस्य प्राप्तिः । मुनीनां तपस्या ।

सहायतार्थ टिप्पणी—शठ = धूर्त । शर = बाण । पर्यङ्क = पलँग । शुक = तोता । ओदन = भात, चावल । काणः = काना ।

अभ्यास २

(कुछ धातुयें)

(क) वसन्ति । भवथ । स्मरामि । वदतः । पतति । **बोधय** । नयामः । रक्षसि । गच्छन्ति । भवावः । वन्दे । कम्पे । लभेते । नयन्ति । वहतः । वसथ । रक्षति । पतामि । बोधावः । स्मरथः । त्यजसि । फलन्ति । नमतः । पचन्ति । **यजामः** । पश्यामि । जयावः । भवामि । पिबन्ति । स्मरसि । **सरन्ति** । गच्छथः । बोधति । सेवामहे । कम्पध्वे । **यतामहे** । लभावहे । वन्दन्ते । **वेपसे** । शोभते । **मोदन्ते** । रोचते । **वर्तामहे** । शंकसे । **क्षमे** । स्वादध्वे । **त्रपावहे** । [illegible] । [illegible] । [illegible] । वहेथे । वहसे ।

(ख) पण्डिताः सत्यं वदन्ति। पवनः तृणानि नयति। बालकाः पुस्तकं पठन्ति। **तरवः** पवनेन पतन्ति। वृक्षात् फले पततः। नराः ज्ञानं लभन्ते। मृगाः वनेषु वर्तन्ते। शठात् राजा रक्षति। नृपः **पर्यङ्के** वर्तते। पादौ दुःखेन कम्पेते। कुक्कुराः जलं मुखैः पिबन्ति। भिक्षुकाः धनं याचन्ते। व्याघ्रात् भयं **जायते**। कमलानि जलेषु शोभन्ते।

सहायतार्थ टिप्पणी—बुध् = जगाना। यज् = यज्ञ करना। सृ = सरकना। यत् = कोशिश करना। वेप = काँपना। मुद् = प्रसन्न होना। वृत् = होना। क्षम् = क्षमा करना, सहन करना। वप् = बोना। तरवः = पेड़। पर्यङ्के = पलँग पर। जायते = पैदा होता है।

अभ्यास ३

(कर्ता और क्रिया का साम्य)

मूर्खाः निन्दन्ति। बुधाः **शंसन्ति**। समुद्रः **क्षुभ्यति**। अहं नगरं गच्छामि। त्वं **स्वीयानि** मित्राणि स्मरसि। **व्याधयः** श्रेष्ठान् नरान् न पीडयन्ति। स यूयं च कुत्र गच्छथ? यूयं वयं च पठामः। अहं युवां च क्रीडामः। एषः मां ताडयति। तौ मां निन्दतः। रामः अस्मान् **श्लिष्यति**। आवां युवां **सान्त्वयावः**। कृषकाः अस्माकं **धान्यं** तोलयन्ति। ममात्मजः पाठशालां गच्छति। तवोपरि ईश्वरस्य कृपा भवति। युवां किं **जल्पथः**?

सहायतार्थ टिप्पणी—शंस् = कहना, उपदेश या आज्ञा देना। क्षुभ् = क्षुब्ध होना। स्वीयानि=अपने। व्याधयः=व्याधियाँ। श्लिष् = गले लगाना, आलिंगन करना। सान्त्वय् = तसल्ली या धीरज बंधाना। धान्यं = अनाज। जल्प् = बकवाद करना।

अभ्यास ४

(सर्वनाम)

सः पत्रं लिखति। तौ गृहं गच्छतः। ते पुस्तकं पठन्ति। त्वं फलं खादसि। युवां गृहं गच्छथः। यूयं गीतां पठथ। अहं कार्यमिदं करोमि। आवां पाठशालां गच्छावः। वयं ईश-स्तवनं कुर्मः।

तत् नगरं गच्छ। तं अश्वं पश्य। कस्य **एषा** कन्या? तानि पुस्तकानि कस्य सन्ति? तस्याः कः पिता? एतत् उपवनं अस्ति। एतानि फलानि पश्य। यः परिश्रमं करोति सः सुखी भवति। यस्मिन् नगरे त्वं वससि। तस्मिन् एव नगरे अहं अपि वसामि।

यत् पत्रं सा पठति तत् कस्य अस्ति? कासु लतासु पुष्पाणि भवन्ति? का का नगरी भारते प्रसिद्धा अस्ति? तव किं नाम? युष्माकं कुत्र गृहम्? **युष्मभ्यं** किं **रोचते**?

सहायतार्थ टिप्पणी—स्तवनं = स्तुति। कुर्मः = करते हैं। एषा = यह। युष्मभ्यं = तुम्हें। रोचते = अच्छा लगता है।

अभ्यास ५

(कारक—कर्ता और कर्म)

पुत्राः पितरं **प्रीणयन्ति**। **रजकः** वस्त्राणि **क्षालयन्ति**। चिन्ता चित्तं दहति। ते विद्यां यच्छन्ति। पुत्राः सुखं यच्छन्ति। आवां गृहं धावावः। सिंहः पशुं **हन्ति**। मूषकाः **मार्जारं** पश्यन्ति। मोहनः रामं वदति। आवां गृहं गच्छावः। ते उपवनं गच्छन्ति। तौ पुस्तकं पठतः। सः गुरुं नमति। वयं ईश्वरं स्मरामः।

ते फलानि खादन्ति। बालकाः दुग्धं पिबन्ति। रामः **चित्रमेकं** पश्यति। वयं अश्वान् पश्यामः। ऋषयः उपदेशं **कुर्वन्ति**। कालिदासः मेघदूतं लिखति। त्वं किं इच्छसि? भवान् **कुत्र** गच्छति? गुरुः कुशलं **पृच्छति**। माता पुत्रान् पालयति। पिता स्वसुतं **लालयति**। रजकः **गर्दभं** ताडयति। कृष्णः नवनीतं चोरयति।

सहायतार्थ टिप्पणी—प्रीणयन्ति = प्रसन्न करते हैं। रजकः = धोबी। क्षालयन्ति = धोता है। हन्ति = मारता है। मार्जारं = बिल्ली को। चित्रमेकं = एक चित्र को। कुर्वन्ति = करते हैं। कुत्र = कहाँ। पृच्छति = पूंछता है। लालयति = खिलाता है। गर्दभम् = गधे को।

अभ्यास ६

(कारक—करण और सम्प्रदान)

अहं **तुभ्यं** धनं **दास्यामि**। कल्याणाय धर्मं **कर्तव्यम्**। **जलानयनाय**

गृहं गच्छ । **मात्रे** जलमानय । कृष्णः चक्रेण शिशुपालं हन्ति । **कुम्भकारः** चक्रेण घटं रचयति । स्वमत्या चिन्तय । स्वभावेन सः सुशीलः । मनसा ईश्वरं भज । **विदुषे** धनं यच्छत ।

जनाः मुखेन भक्षयन्ति । पुण्यैः पुत्राः जायन्ते । नाम्ना अहं यदुनन्दनः । जन्मना सः शूद्रः अभवत् । करेण **गृहाण** पुस्तकम् । दरिद्रेयः अन्नं **यच्छ** ।

सहायतार्थ टिप्पणी—तुभ्यं = तुम्हें । दास्यामि = दूंगा । कर्तव्यम् = करना चाहिये । जलानयनाय = जल लाने के लिये । मात्रे = माता के लिये । कुम्भकारः = कुम्हार । विदुषे = विद्वान् को । गृहाण = लो । यच्छ = दो ।

अभ्यास ७

(कारक—अपादान और सम्बन्ध)

रामस्य भ्राता लक्ष्मणः । वृक्षात् फलं पतति । मित्राणां वचनं **शृणु** । पापस्य फलं पश्य । वृक्षाणां **शाखाः** पतन्ति । तस्य नाम देवदत्तः । तव किं नाम ? तव पितुः किं नाम ? पर्वतात् जलं पतति । मेघात् **वृष्टिः** भवति । रामः **उपवनात्** आगच्छति । मार्जारात् सः **बिभेति** ।

मूषिकाः बिलेभ्यः **निस्सरयन्ति** । **विरमति** । नगराद् **बहिः देवालयो वर्तते** । स्वर्गात् पुष्पाणि पतन्ति ।

इदं देवदत्तस्य पुस्तकं अस्ति । ईश्वरस्तु नराणां रक्षकः । गंगायाः जलं शीतलं भवति । समुद्रस्य जलं **क्षारं** भवति तस्य गृहं **तत्र** अस्ति ।

सहायतार्थ टिप्पणी—शृणु = सुनो । शाखाः = डालियाँ । अधः = नीचे । वृष्टिः = वर्षा । उपवनात् = बगीचे से । बिभेति = डरता है । निस्सरन्ति = निकलते हैं । मूषिकाः चूहे । मलयात् = मलय पर्वत से । विरमति = रुकता है । बहिः = बाहर । देवालयः = मन्दिर । वर्तते = है । क्षारं = खारा । तत्र = वहाँ पर ।

अभ्यास ८

(कारक—अधिकरण और सम्बोधन)

धनिकाः नगरे वसन्ति । अस्मिन् **पात्रे** जलं अस्ति । तस्मिन् ग्रामे

उत्सवः भविष्यति । तव **करे** किं अस्ति ? वनेषु ऋषयः अवसन् । शान्त्यां सुखं वसति । पर्वते हिमं भवति । **तडागे** कमलानि **विकसन्ति ।**

भो भो जनाः । कुत्र गच्छथ । भ्रातरः । परस्परं **स्नेहेन** वसत । हे पितः । भवान् जलमिदं पिबतु । भो नृपाः । युद्धं न कुरुत । बालकाः । अत्र न क्रीडत । भो पुत्रि । अत्रागच्छ । भगवन् ! **कदा मयि** कृपां करिष्यसि ?

मीनाः नदीषु भवन्ति । समुद्रस्य **क्षारे** जले अपि मीनाः वसन्ति । अस्यां **श्रेण्यां कति** बालकाः पठन्ति ? वने वनजन्तवः वसन्ति । **रसाले** पिकः **कूजति ।**

सहायतार्थ टिप्पणी—पात्रे = बर्तन में । तडागे = तालाब में । विकसन्ति = खिलते हैं । स्नेहेन = प्रेमपूर्वक । कदा = कब । मयि = मुझ पर । मीनाः = मछलियाँ । क्षारे = खारे । श्रेण्यां = कक्षा में । कति = कितने । रसाले = आम के पेड़ पर । कूजति = कूकती है ।

अभ्यास ९

(लट् लकार)

अहं पठामि । युवां पठथः । सः गच्छति । वयं गच्छामः । आवां पश्यावः । त्वं नृत्यति । ते नमन्ति । अहं **स्मरामि ।** मृगः **धावति ।** बालकाः धावन्ति । वयं जलं पिबामः । फलानि **पतन्ति ।** चिन्ता दहति । रामः खादति । बालिका **क्रीडति ।** गुरवः **यच्छन्ति ।** अहं सत्यं **वदामि ।** सः हसति । खगाःनृत्यन्ति । अश्वः धावत्ति । मेघः वर्षति । चन्द्रः उदयति । वानरः चलति । **पिकः** कूजति । मे पिता **शेते ।** सः धनं लभते । वयं संस्कृतं पठामः ।

सहायतार्थ टिप्पणी—स्मरामि = याद करता हूँ । धावति = दौड़ता है । पतन्ति = गिरते हैं । क्रीडति = खेलता है । यच्छन्ति = देते हैं । वदामि = बोलता हूँ । पिकः = कोयल । शेते = सोता है ।

अभ्यास १०

(लङ् लकार)

मयूरः अनृत्यत् । तौ अगच्छताम् । मेघः अवर्षत् । रात्रिः **अभवत् ।** ते

अहृष्यन् । बालः अस्वपत् । शिष्याः **अपृच्छन्** । माता अचिन्तयत् । अहं अपश्यम् । ते अपश्यन् । वयं **अनमाम** । ते अस्मरन् । मृगः अधावत् । अहं जलं अपिबम् । वयं वृक्षात् **अपताम** ।

सः अपठत् । तौ अपठताम् । ते अपठन् । वयं अगच्छाम । ते **अदहन्** । युवां अक्रीडतम् । वयं **अयच्छाम** । ते अखादन् । सः अधावत् । अश्वाः अधावन् । अहं **अवदम्** । ते अहसन् ।

त्वं **अपठः** । युवां अपठतम् । यूयं अपठत । स अपठत् । तौ अपठताम् । ते अपठन् । अहं अपठम् । आवां अपठाव । वयं अपठाम ।

सहायतार्थं टिप्पणी—अपृच्छन् = पूछा । अभवत् = हुआ । अनमाम= प्रणाम किया । अपताम = गिर पड़े । अदहन् = जलाया । अयच्छाम = दिया । अवदम् = कहा, बोला । अपठः = पढ़ा ।

अभ्यास ११

(लृट् लकार)

सूर्यः उदेष्यति । बालकाः फलं खादिष्यन्ति । ते पुस्तकं पठिष्यन्ति । खगः **नर्त्स्यति** । ते स्मरिष्यन्ति । त्वं **द्रक्ष्यसि** । मेघः वर्षिष्यन्ति । अहं जलं **पास्यामि** । आवां गृहं गमिष्यावः । नृपः दानं दास्यति । अहं पठिष्यामि । तौ धाविष्यतः । पिकः कूजिष्यति । वयं गमिष्यामः । चिन्ता **धक्ष्यति** । अहं **उच्चैः** हसिष्यामि । ते क्रीडिष्यन्ति । दुःखं तु अवश्यमेव भविष्यति । फलानि **पतिष्यन्ति** । युवां चलिष्यथः । यूयं वदिष्यथ । वयं नंस्यामः ।

सहायतार्थं टिप्पणी—नर्त्स्यति=नाचेगा । द्रक्ष्यसि=देखोगे । पास्यामि= पिऊँगा । धक्ष्यति = जलावेगी । उच्चैः = जोरों से । पतिष्यन्ति = गिरेंगे ।

अभ्यास १२

(लोट् लकार)

सत्यं वद । धर्मं **चर** । स्वाध्यायाद् **मा प्रमदः** । पिकः नृत्यतु । सुखं भवतु । ते फलानि खादन्तु । तौ **स्मरताम्** । यूयं पश्यत । अन्धकारः

नश्यतु। युवां पठतम्। ते गीतां पठन्तु। राजा धनं **यच्छतु**। चन्द्रः उदयतु। मृगाः धावन्तु। यूयं गृहं **गच्छत**। ते नमन्तु। त्वं हस। प्रातः कालो भवतु। खगाः हृष्यन्तु। मेघाः जलं **कटन्तु**। अहं दुग्धं **पिबन्ति**। वृक्षाः पतन्तु। चिन्ता शरीरं न दहतु। तौ गच्छताम्। त्वं पश्य। ते नारायणं **स्तुवन्तु**।

सहायतार्थ टिप्पणी—चर = आचरण कर। मा = मत। प्रमदः = आलस कर। स्मरताम् = (वे दोनों) स्मरण करें। यच्छतु = देवें। गच्छत = (तुम सब) जाओ। कटन्तु = बरसावें। पिबानि = पिऊँ। स्तुवन्तु = स्तुति करें।

अभ्यास १३

(विधिलिङ्)

सः धनं सत्यं वदेत्। तौ धावेताम्। सः सत्यं वदेत्। तौ हसेताम्। मयूरः वने नृत्येत्। मेघः जलं वर्षेत्। सः सुखी भवेत्। ते दुःखिनः न **भवेयुः**। तौ **हृष्येताम्**। ते नश्येयुः।

वयं धावेम। किं सः पिबेत्? किं ते पतेयुः। चिन्ता दहेत् किम्? ते खादेयुः। तौ **क्रीडनकेन** क्रीडेताम्। आवां पठेव। ते नमेयुः। त्वं पुस्तकं **पठेः**। युवाम् रामायणं लिखेतम्।

सः गृहं गच्छेत्। ते पश्येयुः। त्वं पिबेः जलम्। आवां पश्येव। यूयं स्वपुस्तकानि पठेत।

सहायतार्थ टिप्पणी—भवेत् = होवें, होना चाहिये। हृष्येताम् = (वे दोनों) प्रसन्न होवें, प्रसन्न होना चाहिये। क्रीडनकेन = खिलौने से। पठेः = पढ़ो, (तुम्हें) पढ़ना चाहिये।

अभ्यास १४

(विद्या)

ज्ञानस्य प्राप्तेः साधनं विद्यां वदन्ति। विद्यारूपं धनं सर्वेषु धनेषु श्रेष्ठं धनं अस्ति। चोरः इदं चोरयितुं न **शक्नोति**। न च भ्राता **वण्टयितुं** शक्नोति। विद्यायाः कोशे अयमेको महान् **विशेषो** वर्तते यत् व्यये कृते अपि नित्यं वर्धते, व्ययाभावे **क्षीयते** च।

सर्वे देशाः जातयश्च विद्याबलेनैव उन्नतिं गच्छन्ति। यस्मिन् देशे विद्यायाः प्रचारो न भवति स देशः कदापि **समृद्धो** भवितुं न शक्नोति। प्राचीना नवीनाश्च सर्व एव आविष्काराः विद्यावृक्षस्यैव फलानि सन्ति। **इत्थं** विद्या सर्वप्रकाराणां उन्नतीनां साधनमस्ति।

विद्या अज्ञानान्धकारं दूरी करोति। कठिनानि कार्याणि विद्या सरलानि करोति। विद्या एकतां मैत्रीं च परस्परं स्थापयति। विदेशे च **बन्धुरिव सहाया** भवति। विद्यावान् नरः सर्वत्र **नृपादपि** अधिकतरं सम्मानं **लभते**। विद्याधनेन विहीनः नरः **पशुरेवास्ति**। अतः सर्वे एव विद्यायाः **उपार्जनं कुर्युः**।

सहायतार्थ टिप्पणी—शक्नोति = सकता है। वण्टयितुम् = बँटाने में; बँटाने के लिये। विशेषो = विशेषता। क्षीयते = नष्ट हो जाता है, क्षीण हो जाता है। समृद्धो = धन-दौलत से भरा-पूरा। इत्थम् = इस प्रकार से। बन्धुरिव = बन्धुः + इव = भाई के समान, बिरादरी वालों के समान। सहाया = सहायता करने वाली। नृपादपि = नृपात् + अपि = राजा से भी। लभते = पाता है। पशुरेवास्ति = पशुः + एव + अस्ति = पशु के समान है; पशु ही है। उपार्जनम् = पैदा। कुर्युः = करना चाहिये।

अभ्यास १५

(सदाचारः)

सतां पुरुषाणां आचरणं सदाचार **उच्यते**। सदाचारे दैवी शक्तिः **निहिता** अस्ति। उत्तमजीवनस्य सर्वोत्तमं साधनं सदाचार एवास्ति।

मातापित्रोः, **शुश्रूषा,** गुरूणां च वन्दनं, तेषां आज्ञायाः पालनं, सत्य-भाषणं, अहिंसा, **भूतेषु** दया, क्षमा, परोपकारादयः सर्वे गुणाः सदाचारस्य अङ्गानि सन्ति।

सदाचारात् **आयुषः** वृद्धिः भवति सदाचारवान् नरः सर्वासां सुखसम्पदां **आस्पदं** भवति। तस्य सर्वे दोषाः नाशं यान्ति गुणाश्च **प्रादुर्भवन्ति**।

आचारः **परमो** धर्मः इति वचनं सर्वथा सत्यमस्ति।

सहायतार्थ टिप्पणी—सतां = सज्जनों का। उच्यते = कहलाता है।

शुश्रूषा = सेवा : भूतेषु = प्राणियों पर। आयुषः = आयु की, उम्र की। आस्पदं = स्थान। प्रादुर्भवन्ति = पैदा होते हैं। परमो = सर्वोत्तम।

अभ्यास १६

(सत्सङ्गतिः)

अस्मिन् संसारे मानवानां उन्नतेः **बहूनि** साधनानि सन्ति। तेषु सर्वेषु = सज्जनानां सङ्गतिः सर्वोत्तमं अस्ति साधनम्। सत्सङ्गतेः प्रभावः जीवने आश्चर्यकरं परिवर्तनं करोति। **सत्सङ्गत्या** दुष्टाः दुराचाराः च मानवाः सदाचारिणो भवन्ति। पापकार्याणि च **त्यजन्ति**। सत्सङ्गेन मनुष्यस्य ज्ञानं वर्धते।

नीचोऽपि सत्सङ्गतिबलेन महत्वं **प्राप्नोति**। नीचकुले **जाताः** अपि निर्धनाः अपि मूर्खाः अपि दुराचाराः अपि सत्सङ्गेन श्रेष्ठतमाः भवन्ति। यथा च **व्याधः** बाल्मीकिः अपि **आदिकविः** अभवत्।

उत्तमपुस्तकानां अध्ययनं अपि सत्सङ्गतेः तुल्यं अस्ति। तेषां अध्ययनेन ज्ञानकोषस्य पूर्तिः भवति। शुभेषु कार्येषु च मनः **प्रवर्तते**। दुःसङ्गतिः तु जीवनं दुःखमयं करोति। बुद्धिं **मलिनयति**। कुविचारान् **उत्पादयति**। अत एव **दुःसङ्गं** त्यक्त्वा सत्सङ्गतिं कुर्यात्। सत्सङ्गतिः खलु **स्वर्गापवर्गयोः** द्वारं; सुखसम्पदां जननी चास्ति।

सहायतार्थ टिप्पणी—बहूनि = बहुत से। सत्सङ्गत्या=अच्छी सङ्गति से। त्यजन्ति = छोड़ देते हैं। प्राप्नोति = पाता है। जाताः = पैदा हुये। व्याधः = बधिक। आदिकविः = सर्वप्रथम कवि। प्रवर्तते = लगता है। मलिनयति = मलिन करती है। उत्पादयति = पैदा करती है। दुःसङ्गम् = बुरी संगति को। स्वर्गापवर्गयोः = स्वर्ग + अपवर्गयोः=स्वर्ग और मोक्ष का।

अभ्यास १७

(परस्परं प्रीतिः)

परस्परं युद्धं न कर्तव्यम्। क्रोधेन शरीरं दुर्बलं भवति। यो विद्यार्थी अन्यैः सह युद्धं करोति तम्प्रति कोऽपि न **वदति**। सर्वैः तस्माद् घृणा क्रियते।

द्रुमेषु शान्त्या निवसन्ति पक्षिणः। शरीरहानिश्च **भवत्यशान्तितः**। ततः कुतश्चन-छात्र-जनैः परस्परं कदापि न कार्यः **कलहो** निजे कुले। सहाध्यायिभिः सह सर्वदा प्रीत्या **वर्तनीयम्**। **ऐक्ये** बहवो गुणा निवसन्ति।

सहायतार्थं टिप्पणी—वदति = बोलता है। द्रुमेषु=पेड़ों पर। भवत्यशान्तितः = भवति + अशान्तितः = अशान्ति या कलह से होती है। कलहो–कलहः=झगड़ा। सहाध्यायिभिः=सह + अध्यायिभिः=सहपाठियों के (साथ)। वर्तनीयम् = रहना चाहिये। ऐक्ये = एकता में।

अभ्यास १८

(परोपकाराय सतां विभूतयः)

परोपकारः मनुष्यस्य मुख्यो धर्मं अस्ति। परोपकारेण तुल्यः कश्चित् द्वितीयो धर्मो नास्ति।

परेषां हितस्य साधनं, दीने जने दया, असहायस्य सहायता, दानं, क्षमा परोपकारस्य एव अङ्गानि सन्ति। परोपकारेण नरस्य लोके आदरः कीर्तिश्च भवति। परोपकारात् मनसि महत् सुखं शान्तिश्च उत्पद्यते। परोपकारिणां **कृते** तु **वसुधैव** कुटुम्बकं भवति। तेषां मनसि **स्वकीयस्य परकीयस्य** वा भेदज्ञानं न भवति। ते तु मूर्खे पण्डिते : **ईश्वरे** दरिद्रे, दुर्बले **बलवति** च सर्वत्र **समं** पश्यति।

अचेतनाः अपि परोपकारं कुर्वन्ति। नद्यः परोपकाराय जलं वहन्ति। तरवः पुष्पैः फलैः छायाभिश्च जनान् उपकुर्वन्ति। **जलधरोऽपि अयाचितः** एव **लोकाय** जलं ददाति।

अस्माकं देशे अनेके परोपकारकाः महापुरुषाः उत्पन्नाः। दधीचिः महर्षिः लोकहिताय सहर्षं **स्वास्थीनि** समर्पयामास। महाराजं शिविं कर्णं वा को न जानाति। रन्तिदेवस्य कीर्तिः समस्तं जगत् **अद्यापि** धवलीकरोति। अस्माभिः अपि तेषां अनुगमने प्रयत्नः कर्तव्यः।

सहायतार्थं टिप्पणी—विभूतयः = सम्पत्तियाँ, धन-दौलत। कृते = लिये। वसुधैव = वसुधा + एव = सारी दुनियाँ ही। स्वकीयस्य = अपना। परकीयस्य = पराया। ईश्वरे = सामर्थ्यवान् मनुष्य में, समृद्ध मनुष्य में।

बलवति = बलवान् मनुष्य में । समं = एक समान । जलधरः = बादल । अयाचितः = बिना माँगे । लोकाय = संसार को । स्वास्थीनि = स्व + अस्थीनि = अपनी हड्डियाँ । अद्यापि = अद्य + अपि = आज भी ।

अभ्यास १९

(ग्रीष्मः)

अधुना ग्रीष्मकालो वर्तते । शरीरे बहु **प्रस्वेदो** वर्तते । वायुः अपि उष्णो वर्तते । शीतलं जलं **पातुं** इच्छामि । अस्मिन् काले गङ्गायाः जलं शीतलं भवति । सायंकाले गङ्गाजलेन स्नानं कृत्वा **शैत्यं जायते** । **मध्याह्ने** कोपि गृहात् बहिर्गन्तुं न इच्छति । अन्ये मनुष्याः **छत्रं धारयित्वा** बहिर्गच्छन्ति । **पादुके धारयित्वा बहिर्गन्तव्यम्** । अन्यथा **आतपेन पादौ ज्वलतः** ।

सहायतार्थ टिप्पणी—प्रस्वेदो = पसीना । पातुम्=पीने को । शैत्यम्= ठण्डक, तरावट । जायते = आती है, पैदा होती है । मध्याह्ने = दोपहर में । छत्रम् = छाता । धारयित्वा = लेकर । पादुके = जूते । धारयित्वा = पहन कर । बहिर्गन्तव्यम् = बहिः + गन्तव्यम् = बाहर जाना चाहिये । आतपेन = तपन से । ज्वलतः = जलने लगते हैं ।

अभ्यास २०

(मूर्खाणां नेता महामूर्खः)

एकस्मिन् ग्रामे **बहवः** मूर्खा जनाः निवसन्ति । तेषां प्रधानः "लालबुझक्कड़" नामा एकः महामूर्खः अस्ति । सर्वे तम् सदा सत्कुर्वन्ति । आपत्ति समये तस्य परामर्शं ग्रहणाय तम् एव **उपगच्छन्ति** । सः प्रधानः अज्ञानवशात् तेभ्यः सदा हानिकारकं **असत्परामर्शं** एव ददाति, तथापि मूर्खाणां सम्मानपात्रं भवति ।

एकस्मिन् दिवसे एकस्य मूर्खस्य **महिषी** यदा **काष्ठपात्रे तृणं** चरति, तदैव तस्याः शृङ्गयोः तत्पात्रं **संलग्नं भवति** । बहुभिः प्रयत्नैः च मुक्तं न भवति ।

सर्वे मूर्खाः लालबुझक्कड़ उपगच्छन्ति, कथयन्ति च वृत्तान्तं, पृच्छन्ति

च तं काष्ठपात्रमोचनोपायम् । सः विचारयति, कथयति च **"दात्रं** आनयत, अस्याः महिष्याः ग्रीवां **कर्तयत** च ।"

सर्वे इदं कुर्वन्ति, पश्यन्ति च यद् यद्यपि महिषी मृता, तथापि काष्ठ-पात्रं शृङ्गयोः मुक्तं नास्ति । तदा कथयन्ति, **"इदानीं** किं कुर्मः ?" मूर्खाणां नेता कथयति, "इदानीं काष्ठपात्रस्य छेदनं कुरुत ।"

सर्वे इदं कुर्वन्ति, लाल बुझक्कड़ं प्रशंसन्ति च । मूर्खाणां मध्ये **एतादृशाः** महामूर्खाः सम्माननीयाः भवन्ति ।

सहायतार्थ टिप्पणी—बहवः = बहुत से । उपगच्छन्ति = पास जाते थे । असत्परामर्शम् = गलत सलाह । महिषी = भैंस । काष्ठपात्रे = कठौते में । तृणम् = घास । शृङ्गयोः = दोनों सींगों में । संलग्नं भवति = फँस गया । दात्रम् = गँड़ासा, कुल्हाड़ी । ग्रीवां = गर्दन को । कर्तयत = काट दो । इदानीं = अब । एतादृशाः = इस प्रकार के ।

अभ्यास २१

(धर्मबुद्धिः पापबुद्धिश्च)

कस्मिंश्चिद् **अधिष्ठाने** धर्म्मबुद्धिः पापबुद्धिश्च द्वे मित्रे प्रतिवसतः स्म । अथ कदाचित् पापबुद्धिना चिन्तितम्—

"अहं तावत् मूर्खो **दारिद्र्योपेतश्च** । तदेनं धर्म्मबुद्धिं **आदाय** देशान्तरं गत्वा **अस्याश्रयेण** अर्थोपार्जनं कृत्वा, एनमपि **पञ्चयित्वा,** सुखी भवामि" इति ।

अथान्यस्मिन् दिने पापबुद्धिः धर्म्मबुद्धिं उक्तवान्—

"भोः मित्र ! देशान्तरं अदृष्ट्वा **वार्द्धके** शिशुजनाय कां वार्तां कथयिष्यसि ? विद्या वित्तं **शिल्पं** तावत् **सम्यक् नाप्नोति** मानवः यावत् स भूमौ देशात् देशान्तरं उत्साह-पूर्वकं न **व्रजति"** इति ।

अथ च तस्य तद्वचनं **आकर्ण्य** प्रहृष्टमना, तेनैव सह गुरुजनैः **अनुज्ञातः** शुभे दिने देशान्तरं **प्रस्थितः** । तत्र च धर्म्मबुद्धि प्रभावेण भ्रमता पापबुद्धिना **प्रभूततरं** वित्तं **आसादितम्** ।

ततश्च **तावपि** तौ प्रहृष्टौ स्वगृहं प्रति औत्सुक्येन **निवृत्तौ** ।

सहायतार्थं टिप्पणी—अधिष्ठाने = नगर में। दारिद्र्योपेतश्च = दारिद्र्य + उपेतः + च = दरिद्रता से युक्त। आदाय = साथ लेकर। अस्याश्रयेण = इसके सहारे। वञ्चयित्वा = ठग कर। वार्द्धके = बुढ़ापे में। शिल्पं = कारीगरी। सम्यक् = भली प्रकार से। नाप्नोति = न + आप्नोति = नहीं प्राप्त होती। व्रजति = जाता है।

आकर्ण्य = सुनकर। अनुज्ञातः = आज्ञा पाकर। प्रस्थितः = चल पड़ा। प्रभूततरं = बहुत अधिक। आसादितम् = पाया, प्राप्त किया। द्वावपि = द्वौ + अपि = दोनों ही। निवृत्तौ = लौट पड़े।

अभ्यास २२

(कृतघ्नतायाः फलम्)

अस्ति गौतमस्य महर्षेः तपोवने महातपा नाम मुनिः। तत्र तेन मुनिना **काकेन नीयमानः** तस्य मुखात् पतितो मूषक**शावको** दृष्टः। ततः स्वभावदयात्मना तेन मुनिना स नीवारकणैः सम्बर्द्धितः। ततो **बिडालः** तं खादितुं उपधावति। तं दृष्ट्वा मूषकः तस्य **मुनेः क्रोडे** प्रविवेश। ततो मुनिना उक्तम्।

"मूषक त्वं **मार्जारो** भव।" ततः स बिडालः कुक्कुरं दृष्ट्वा **पलायते**। ततो मुनिना उक्तम्—"कुक्कुराद् **बिभेषि,** त्वमेव कुक्कुरो भव।" स च कुक्कुरो व्याघ्रात् बिभेति। ततस्तेन मुनिना कुक्कुरो व्याघ्रः कृतः।

अथ तं व्याघ्रं मुनिः मूषकोऽयं इत्येव **पश्यति**। अथ तं मुनिं व्याघ्रं च दृष्ट्वा सर्वे वदन्ति—"अनेन मुनिना मूषको व्याघ्रतां नीतः।"

एतत् **श्रुत्वा** दुःखितः व्याघ्रोऽचिन्तयद् यद् यावदयं मुनिः तिष्ठति तावदिदं मे **स्वरूपाख्यानं** अकीर्तिकरं **न पलायिष्यते**।" इति **विचार्य** स व्याघ्रः तं मुनिं **हन्तुं** गतः।

ततो मुनिनापि तत् **ज्ञात्वा** "पुनर्मूषको **भव**" इत्युक्त्वा पुनः स मूषक एव कृतः। अत एवोच्यते—"नीचः **श्लाघ्यपदं प्राप्य** स्वामिनं हन्तु**मिच्छति**।"

सहायतार्थं टिप्पणी—काकेन = कौवे के द्वारा। नीयमानः = ले जाये जाते हुये। शावकः = बच्चा। बिडालः = बिल्ली। क्रोडे = गोद में। मार्जारो =

बिल्ली। पलायते = भागता है। बिभेषि = डरते हो। पश्यति = देखता है। श्रुत्वा = सुन कर। स्वरूपाख्यानम् = अपने स्वरूप की कथा। न पलायिष्यते = नहीं दूर होगी। विचार्य = सोच कर। हन्तुम् = मारने के लिये। ज्ञात्वा = जानकर। भव = हो जा। श्लाघ्यपदम् = प्रशंसा का स्थान। प्राप्य = पाकर।

अभ्यास २३

१. नक्षत्रभूषणं चन्द्रो नारीणां भूषणं पतिः।
पृथिवीभूषणं राजा विद्या सर्वस्य भूषणम्॥
२. **त्यजेदेकं** कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्।
ग्रामं च **जनपदस्यार्थे** आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत्॥
३. **शैले शैले** न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे।
साधवो न हि सर्वत्र चन्दनं न वने वने॥
४. विद्वत्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं **कदाचन**।
स्वदेशे **पूज्यते** राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते॥
५. **त्वमेव** माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या **द्रविणं** त्वमेव
त्वमेव **सर्वं** मम देवदेव॥
६. सत्यं **ब्रूयात्** प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् **सत्यमप्रियम्**।
प्रियं च **नानृतं** ब्रूयात् एष धर्मः सनातनः॥
७. येषां न विद्या न तपो न दानं
ज्ञानं न शीलं गुणो न भक्तिः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता
मनुष्यरूपेण **मृगाश्चरन्ति**॥

सहायतार्थ टिप्पणी—

२. त्यजेदेकम् = त्यजेत् + एकम् = एक व्यक्ति को छोड़ देना चाहिये।
जनपदस्यार्थे = जनपदस्य + अर्थे = देश के लिये।

३. शैले शैले = प्रत्येक पहाड़ पर ।
४. कदाचन = कभी भी । पूज्यते = पूजा जाता है ।
५. त्वमेव = त्वम् + तुम ही । द्रविणम् = धन । सर्वम् = सब कुछ ।
६. ब्रूयात् = बोले, बोलना चाहिये । सत्यमप्रियम् = सत्यम्+अप्रियम्= कड़ुवा लगने वाला सत्य । नानृतं = न + अनृतम् = नहीं झूठ ।
७. मर्त्यलोके = मृत्युलोक में । भुवि भारभूताः = पृथ्वी पर बोझ स्वरूप। चरन्ति = चलतें-फिरते हैं ।

अभ्यास २४

१. **आहार** निद्रा भय मैथुनञ्च
सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम् ।
धर्मो हि तेषामधिको **विशेषो**
धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः ॥

२. **वरमेको** गुणी पुत्रो न च मूर्खशतान्यपि ।
एकश्चन्द्र**स्तमो हन्ति** न च तारागणोऽपि च ॥

३. उद्यमेन हि **सिध्यन्ति** कार्याणि न मनोरथैः ।
नहि **सुप्तस्य** सिंहस्य मुखे प्रविशन्ति मृगाः ॥

४. काकचेष्टा बकध्यानं **श्वाननिद्रा** तथैव च ।
अल्पाहारी गृहत्यागी विद्यार्थिनः पञ्चलक्षणम् ॥

५. **पयः** पानं भुजंगानां केवलं विषवर्धनम् ।
उपदेशो हि मूर्खाणां **प्रकोपाय** न शान्तये ॥

६. **श्रोत्रं श्रुतेनैव** न कुण्डलेन
दानेन **पाणिर्न** तु **कंकणेन** ।
विभाति कायः करुणापराणां
परोपकारेण न तु चन्दनेन ॥

७. यस्यास्ति **वित्तं** स नरः कुलीनः
स **पण्डितः** सः **श्रुतिमान् गुणज्ञः** ।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः
सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते ॥

सहायतार्थ टिप्पणी—

१. आहार = भोजन । सामान्यमेतत् = सामान्यम् + एतत् = यह दोनों में ही समान है । विशेषो = विशेषः, विशेषता ।

२. वरमेको = परम् + एकः = अच्छा है, एक । तमो = तमः, अँधेरे को । हन्ति = नष्ट करता है ।

३. सिध्यन्ति = पूरे होते हैं । सुप्तस्य = सोये हुये के ।

४. श्वान निद्रा = कुत्ते के समान नींद वाला । अल्पाहारी=कम भोजन करने वाला । गृहत्यागी = विद्या के लिए घर छोड़ने वाला, घरेलू बातों से अधिक सम्बन्ध और दिलचस्पी न रखने वाला ।

५. पयः = दूध । प्रकोपाय = कुपित या क्रोधित करने के लिये ही ।

६. श्रोत्रम् = कान । श्रुतेनैव = श्रुतेन + एव = सुनने से ही अर्थात् वेदों के सुनने से ही । पाणिर्न = पाणिः + न = हाथ, नहीं । कंकणेन = कड़े से । विभाति = शोभा देता है । कायः = शरीर ।

७. वित्तम् = धन । पण्डितः = बुद्धिमान् । श्रुतिमान् = पढ़ा लिखा, शिक्षित । गुणज्ञः = गुणों का पारखी ।

अभ्यास २५

१. कन्या **वरयते** रूपं माता **वित्तं** पिता **श्रुतम्** ।
बान्धवाः कुलमिच्छन्ति मिष्ठान्नमितरे जनाः ॥

२. किं **वाससैवं न** विचारणीयं
वासः प्रधानं खलु योग्यतायाः ।
पीताम्बरं **वीक्ष्य** ददौ तनूजा
दिगम्बरं वीक्ष्य विषं समुद्रः ॥

३. भोजनं कुरु दुर्बुद्धे मा शरीरे दयां कुरु ।
परान्नं दुर्लभं लोके शरीराणि तु पुनः पुनः ॥

४. स्वयं महेशः श्वसुरो नगेशः
सखा **धनेशस्तनयो** गणेशः ।
तथापि **भिक्षाटनमेव** शम्भो-
र्बलीयसी केवलमीश्वरेच्छा ॥

५. स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः
पिबन्ति नाम्भः स्वयमेव नद्यः ।
धाराधरो वर्षति नात्महेतोः
परोपकाराय सतां विभूतयः ॥

सहायतार्थ टिप्पणी—

१. वरयते = पसन्द करती है (= चाहती है कि वर में होवे)। वित्तम् = धन। श्रुतम् = विद्या।
२. वाससैवम् = वाससा + एवम् = कपड़े से, ऐसा। वीक्ष्य = देख कर। दिगम्बरम् = शिव को।
३. परान्नम् = पराया अन्न, पराई रोटियाँ।
४. धनेशः = कुवेर। तनयो = तनयः = पुत्र। भिक्षाटनमेव = भिक्षाटनम् = भीख माँगने के लिये इधर-उधर घूमना। बलीयसी= बलवती।
५. नाम्भः = न + अम्भः = नहीं, पानी को। धाराधरो = धाराधरः = बादल। नात्महेतोः = न + आत्म + हेतोः = अपने लिये नहीं। सतां = सज्जनों की। विभूतयः = सम्पत्तियाँ, धन-दौलत।

[ख] संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद करो

अभ्यास १

(कुछ धातुयें)

(क) इच्छति । पृच्छति । इच्छामः । **सृजन्ति । स्पृशथ । दिशामः ।** मुञ्चतः । कुप्यति । तुष्यावः । **शुष्यन्ति** । सिध्यति । **मन्ये** । युध्यावहे । वर्णयामि । पूजयथ । मन्यावहे । विद्यध्वे ।

(ख) नरो हस्तौ **क्षालयति** । बुधाः न चोरयन्ति । एते मृगाः धावन्ति । पुत्राः **तुष्यन्ति** । रामः पूजयति । नराणां धनं विनश्यति । वृक्षात् फले पततः । मूर्खाः मित्राय कुप्यन्ति । नेत्रे कमले इव नृत्यतः । आकाशे नक्षत्राणि शोभन्ते । नराः नृपस्य आज्ञां पालयन्ति । गंगा प्रयागे **वहति** । शठाः युध्यन्ते । वर्णयामि रामस्य कथाम् । भार्य्यायां लज्जा वर्तते । किमीश्वरो विद्यते न वा ? बुधो भार्यां पूजयति ।

सहायतार्थं टिप्पणी—सृज् = बनाना । स्पृश् = छूना । दिश् = आज्ञा देना । शुष्य् = सूखना । मन् = मानना ।

क्षल् = धोना । तुष्य = सन्तुष्ट या प्रसन्न करना । वह् = बहना । वृत् = होना ।

अभ्यास २

(कर्ता और क्रिया का साम्य)

स्तेनौ धनं चोरयतः । व्याघ्रः नरान् पीडयति । मूर्खाः धनं **लुभ्यन्ति** । मनुष्यौ अश्वौ **रोहतः** । अश्वः **तृणानि** भक्षयति । नराः जलं सिञ्चन्ति । नृपः ईश्वरं नमति । **उभौ** व्याघ्रौ मांसं भक्षयतः । रामः कुत्र वसति ? अस्मिन् **प्रांगणे** बालौ क्रीडयतः । तौ रामस्य कथां वर्णयतः । वृक्षात् **पर्णानि** नीचैः पतन्ति । मूर्खाणां धनं सर्वदैव नश्यति । ईश्वरस्य कृपया सर्वे जनाः सुखं लभन्ते ।

सहायतार्थ टिप्पणी—स्तेनौ = दो चोर। लुभ् = लोभ या लालच करना। सह् = चढ़ना या सवार होना। तृण = घास। उभौ = दोनों। प्रांगणे = आँगन में। पर्णानि = पत्ते। लभ् = पाना।

अभ्यास ३

(सर्वनाम)

अस्मिन् विश्वे सूर्यः चन्द्रश्च प्रकाशेते। वयं तं देवं वन्दामहे। अस्याः कन्यायाः हृदयं भयात् **वेपते**। अमुष्य नरस्य हृदयं न कम्पते। स शिक्षकः अमुष्यां शालायां पाठयति। जनाः अमुष्मिन् लोके मोक्षं लभन्ते। इमे पुरुषाः लाभेन **मोदन्ते**।

अयं **मोदकः** अस्यै कन्यायै न रोचते। अस्मै ब्राह्मणाय दक्षिणां देहि। अनयोः कन्ययोः पठनं मह्यं न रोचते। अमी देशाः मनोहराः। अयं बालकः स्वाचार्यं सेवते।

यदा पुरुषाः **म्रियन्ते** तदा तेषां प्राणाः **उद्गच्छन्ति**। एषु आसनेषु वयं उपविशामः अमीषु यूयम्। इमानि कार्याणि वयं आरभामहे।

सहायतार्थ टिप्पणी—वेप् = काँपना। मुद् = प्रसन्न होना। मोदकः = लड्डू। म्रियन्ते = मरते हैं। उद्गच्छन्ति = ऊपर चले जाते हैं। उपविश् = बैठना।

अभ्यास ४

(लट् लकार)

सत्संगः वाचि सत्यं सिञ्चति। बालिका **पयसा** ओदनं खादति। नभसि नक्षत्राणि उदयन्ति। विहंगानां **चंचूः** भवति। सरसि कमलानि शोभन्ते। भूपः करिणं आरोहति। शशिनि कलंकोऽपि शोभते। उपकारिणः कीर्ति **दिक्षु** प्रसरति। स्वर्णकारः **हेम्ना** भूषणानि **घटयति**। रेणु उद्गच्छति। किं न सिध्यति। मृगैः मृगेन्द्रस्य क्षुधः शान्तिः **जायते**। तस्मै **विवादो** न रोचते। गगने खगाः उड्डीयन्ते। अश्वाः पुच्छं चालयन्ति। गोपाः पशून् पालयन्ति।

सहायतार्थ टिप्पणी—पयसा=दूध से। चंचू=चोंच। दिक्षु = दिशाओं में। हेम्ना=सोने से। घटयति=बनाता है। रेणुः = धूल। जायते = होती है। विवादो = बहस।

अभ्यास ५

(लङ् लकार)

रामः सीतां **पर्यणयत्**। तां रावणोऽहरत्। रामरावणयोः युद्धं अभवत्। पञ्जरे एको मूषकः अभवत्। बहवः **श्वापदाः** अस्माद् वनात् निर्गच्छन्। गिरेः वयम् अवातराम। चौरः अलंकारं अचोरयत् तडागे **चाक्षिपत्**। पञ्जरेभ्यो विहगान् अमुञ्चाम।

ते कुसुमानां मालां कण्ठाद् **अपानयन्**। पण्डिताः नृपतेः सभां प्राविशन् **उपाविशन्** च तत्र। स धनं ऐच्छत्। आचार्यौ धर्मं उपादिशताम्। यूयं उद्यमेन धनं अलभध्वम। शृगालाः शवं अभक्षयन्। व्याघ्राणां **विरावैः** नार्याः हृदयं अवेपत्। अहं स्वपत्नया सह नद्यास्तीरे **अरमे**।

सहायतार्थ टिप्पणी—पर्यणयत् = विवाह किया। श्वापदाः = वन्य जन्तु। अक्षिपत् = फेंक दिया। अपनयन् = उतार दिये। उपादिशन् = बैठ गये। विरावैः=आवाज से। अरमे = (मैंने) विहार किया।

अभ्यास ६

(लृट् लकार)

हरिद्वारं गमिष्यामि, तत्र गंगां **द्रक्ष्यामि,** सर्वेषां **विदुषां** पूजां च कृत्वा स्वकीयं ग्रामं प्रति **निवर्तिष्ये**। अध्यापकेन उपदिष्टोऽपि स्वपाठं न पठसि, यदा स द्रक्ष्यति तदा किं **प्रतिवक्ष्यसि ?**

आवां प्रयागं गमिष्यावः, किन्तु आवयोर्गृहे बहवो मूषका भवन्ति, आवयोः पुस्तकानि **छेत्स्यन्ति** इति शंकावहे।

यदि ब्रह्मचर्यं न धारयिष्यसि तु निश्चयं **सत्वरं** मरिष्यसि। यदा त्वं पठिष्यसि तदा **चपेटिकां** न **दास्यामि**। तुभ्यं को मोद**कानि** प्रदास्यति।

सहायतार्थ टिप्पणी—द्रक्ष्यामि = दृश् + लृट् लकार। विदुषाम् = विद्वानों की। निवर्तिष्ये = नि + वृत् (उत्तमपुरुष, एकवचन) + लृट् लकार।

प्रतिवक्ष्यसि = प्रति + वच् (मध्यम पुरुष एकवचन)+लृट् लकार । छेत्स्यन्ति= काट देंगे, कुतर देंगे । सत्वरं = शीघ्र । चपेटिकाम् = चपत । दास्यामि = दूँगा, लगाऊँगा । मोदकानि = लड्डू ।

अभ्यास ७

(लोट् लकार)

अधुना पाठशालां गच्छत । तत्र पश्य एकोऽश्वो वर्तते न वा । कपीन् उद्याने मुञ्च । नरान् धर्मेण राजानः रक्षन्तु । प्रियशिष्याः स्वपूज्यान् पूजयत । बालकौ ! हस्तान् **प्रक्षालयताम्** । कन्ये ! मा लज्जां त्यज । नरौ ! अश्वमारोहताम् । वत्स ! हस्ताभ्यां स्वमातरं प्रणम । ममापराधान् क्षमस्व ।

सभायां वयं शोभामहे । ईश्वरस्य कृपायै **यतस्व** । तं अतिथिं आवां पूजयाव । यूयं गिरिं **नारोहत** । वनेषु **सायं नाट** । **कृषीबलाः** इमान् क्षेत्रान् कृशन्तु । पश्य पश्य **खञ्जः** कपिः गच्छति ।

सहायतार्थं टिप्पणी—प्र + क्षल् = धोना । यतस्व = प्रयत्न करो । नारोहत = न + आरोहत, मत चढ़ो । सायं = शाम को । नाट = न + अट = मत घूमो । कृषीवलाः = किसान लोग । खञ्जः = लँगड़ा ।

अभ्यास ८

(विधिलिङ्)

पण्डितानां समाजे अपण्डितो **मौनं भजेत्** । दुःखेषु अपि धैर्यं न त्यजेत् । **भीरुभिः** सह आवां न वसेव । कञ्चन न अवधीरयेत् । इच्छामि जलं पिबेः त्वमिति ।

धनेन च कष्टेन च विद्या **विन्देत्** । तौ **अर्घ्यैः** देवान् पूजयेताम् । रविः प्रकाशेन संसारं पूरयेत् । पण्डिताः केभ्योऽपि न द्रुह्येयुः । पशून् सायं ग्रामं प्रति नयेत् । बालकाः ! यूयं स्वमित्रैः न युध्येध्वम् । सत्यं वदेत् प्रियं वदेत् किन्तु अप्रियं सत्यं कदापि न वदेत् ।

सहायतार्थं टिप्पणी—मौनं भजेत् = मौन या चुप रहे । भीरुभिः = डरपोकों के (साथ) । कञ्चन = कम् + चन = किसी को । अवधीरयेत् =

तिरस्कार या अपमान करे। विन्देत् = पावे, प्राप्त करे। अर्घ्यैः = अर्घ्यों से जल आदि से अर्घ्य प्रदान करके। अर्घ्यः = जलाञ्जलिः।

अभ्यास ९

(वाच्य सम्बन्धी)

त्वं कुसुमैः पूज्यम्। **वायसेषु** शठैः बाणाः **क्षिप्यन्ते**। **प्रभुतेन** आतपेन जनाः पीड्यन्ते। बालकाभ्यां श्लोकः पठ्यते। सैनिकैः बाणाः **अस्यन्ते**। मया तु तल्लिख्यते यत् श्रूयते। बुधैः क्रोधः त्यज्यते। वयं मित्रेण त्यज्यामहे। यूयं सेवकैः सेवध्वे।

कमलानि नेत्राभ्यां दृश्यन्ते। व्याघ्रैः मृगो हन्यते। त्वया गृहं आगम्यते। अग्निना इन्धनं दह्यते। अस्मिन् लोके यत्क्रियते तस्य फलं **अमुष्मिन्** लोके अनुभूयते। मया अधुना पुस्तकं न पठ्यते। त्वया पुस्तके पठ्येते। ताभ्यां **नृपायोपहारः** कदा दीयते। पुरुषैः तु मुखैः एव जलं पीयते। दक्षिणा ब्राह्मणेभ्यः दीयते। नृपाणां आदेशः क्रियते। युवां जनेन **प्रेक्ष्येते**। रोगैः नराः पीड्यन्ते। सीता वने रावणेन ह्रियते। देशाः नृपेण जीयन्ते। वस्त्राणि **स्तेनेन** चोर्यन्ते। मया श्रूयते यत् युवाभ्यां संस्कृतं पठ्यते।

सहायतार्थ टिप्पणी—वायसेषु = कौओं पर। क्षिप् = फेंकना। प्रभूतेन = अत्यधिक। अस्यन्ते = फेंके जाते हैं। अमुष्मिन् = उस (लोक) में। नृपायोपहारः = नृपाय + उपहारः = राजा के लिये भेंट। प्रेक्ष् = प्र + ईक्ष् = देखना। स्तेनेन = चोर के द्वारा।

अभ्यास १०

(प्रत्यय)

शतृ—पठन् विद्यार्थी **गुरवे** रोचते। नमन् शिष्यो गुरोः प्रियः भवति। गच्छन् पुरुषः फलानि अपश्यत्। दुग्धं पिबन् बालकः बलवान् भवति। धनिको दानं ददत् शोभते। स्वदेशदुर्दशां पश्यन् को न **विषीदति**। धनं **आप्नुवतां** जनानां **प्रकृतिः** परिवर्तते। त्वं मम गृहं पृच्छन् आगच्छ। चिन्तयन्ती शकुन्तला अत्रागच्छति।

शानच्—म्रियमाणः पुरुषः स्वकर्माणि स्मरति। शयानं शिशुं न **बोधय**। वर्धमानं पुत्रं दृष्ट्वा पिता **प्रहृष्यति**। यशो लभमानाः जनाः धनं न इच्छन्ति। सेवमानाय शिष्याय गुरुः विद्यां **यच्छति**। स्वकर्म कुर्वाणः श्रमिकः मृतः। फलं भुञ्जानः वानरः वृक्षात् अपतत्।

तुमुन्—अहं स्नातुं नदीं गच्छामि। सा भगवन्तं नन्तुं अत्रागताऽस्ति। पठितुं आगतोऽहं अत्र। इन्द्रियाणि विजेतुं पुरुषः **प्रयतेत**। जलं पातुं **पान्थः** कूपं प्रति अगच्छन्। गुरोः धनं हर्तुं देवदत्तः **यतते**। किंचित् अपि वक्तुं न समर्थोऽस्मि। शिशुः स्वप्तुं इच्छति। पुत्राः पितॄन् सुखं दातुं प्रयतन्ते। वृद्धाः अपि मर्तुं न इच्छन्ति। बालकः पुस्तकं चोरयितुं प्रयतते। तस्याः सुमधुरं गानं श्रोतुं मम हृदयं समुत्सुकं विद्यते। कार्यमिदं कर्तुं सः न **प्रभवति**। इदानीं स्वगृहं गन्तुं इच्छामि। स्वभगिनीं अवलोकयितुं अस्ति मे महान् अभिलाषः। अयं छात्रः श्लोकमेकं पठितुं अत्रागतः।

सहायतार्थ टिप्पणी—(१) गुरवे = गुरु को। विषीदति = दुखी होता है। आप्नुवतां = पाने वालों की। प्रकृतिः = स्वभाव। (२) बोधय = जगाओ। यच्छति = देता है। प्रहृष्यति = खुश होता है। (३) प्रयतेत = प्रयत्न करे। पान्थः = राहगीर। यतते = कोशिश करता है। प्रभवति = समर्थ होता है।

अभ्यास ११

(कृदन्त)

क्त्वा—विद्यालये पठित्वा शिशवः गृहं गच्छन्ति। वृद्धो मृत्वा शिशुर्भूत्वा पुनर्जन्म गृह्णाति। माता मिष्टान्नं**पक्त्वा** पुत्रं **भोजयति**। पितरं नत्वा मे मनः **प्रसीदति**। लंकां गत्वा रामो रावणं हतवान्। अत्र **स्थित्वा** पाठं स्मर। **पानीयं** पीत्वा पान्थः पुनरपि **प्रस्थितः**। इन्द्रियाणि जित्वा मनुष्यः सुखी भवति। धनं **आप्त्वा** को न हृष्यति? जननी प्रसववेदनां सहित्वा पुत्रं जनयति। एवं उक्त्वा विरराम नारदमुनिः। गां दुग्ध्वा **वत्साय** अपि दुग्धं देहि।

क्त—मे **पिधानं** चोरितं रामेण, पितुर्लेखिनी चोरिता देवदत्तेन। मया **क्रीतानि** एतानि पुस्तकानि रामेण विद्यालयात् अमरकोषः गृहीता। न

कृतं किमपि अपराधं मया । मया तु अनन्तवेदना **सोढा** । स्वकर्त्तव्यं कृत्वा यशो लभते जनः । मया पृष्टा सा रोदनं प्रारभत् । रामेण हतो बालिः । मम मित्रेण अयं उपहासे दत्तो भवत्यै । मया तानि पत्राणि पठितानि ।

तव्यत्—अस्माभिः गीता अवश्यमेव पठितव्या । अद्य **ओदनं** न पक्तव्यम् । गुरवः सदा सर्वत्र नन्तव्याः । अस्माभिः प्रातःकाले उत्थातव्यम् । मनुष्येण सुकर्म एव कर्त्तव्यम् । त्वया दुग्धं पातव्यं न पानीयम् । राज्ञा शत्रवः जेतव्याः । परेभ्यः दुःख न दातव्यम् । परेषां सुगुणाः चोरयितव्या । दुर्गुणाः कदापि न ग्रहीतव्या ।

अनीयर्—पठनीयमिदं पुस्तकमस्ति । जनेषु सद्गुणाः स्पृहणीयाः सन्ति । कस्यापि कदापि **अनिष्टं न** चिन्तनीयम् । गीता तु अस्माभिः अवश्यमेव पठनीया ।

सहायतार्थ टिप्पणी—(१) पक्त्वा = पका कर । भोजयति = खिलाती है । प्रसीदति = प्रसन्न होता है । स्थित्वा = बैठकर । पानीयं=जल । प्रस्थितः= चल पड़ा । आप्त्वा = पाकर । वत्साय = बछड़े को । (२) पिधानं = तकिया । क्रीतानि = खरीदीं । सोढा=बर्दाश्त की, सहन की । (३) ओदनं= चावल, भात । (४) अनिष्टं = बुरा, अनहित ।

अभ्यास १२

(प्रेरणार्थक धातुयें)

नाहं मूर्खान् अध्यापयामि । **कर्कश**वचनैः हृदयं न दाहय । रात्रौ मातरः शिशून् **दोलायां** स्वापयन्ति । तृषितान् जलं पायय, क्षुधितान् च अन्नं भोजय । कृष्णः सर्वान् दैत्यान् अनाशयत् । सीता वनवासकालं अस्मारयत् । सः स्वकार्यं स्वयमेव न करोति अन्यैस्तु कारयति । वानरः **स्वोदरं** अदर्शयत् । बुद्धो भिक्षुभ्य उपदेशं अश्रावयत् । राजा निर्धनेभ्यः धनं दापयति । **सूपकारः** तण्डुलं **स्वदारकेण** पाचयति । राजा स्वशत्रून् घातयति । राजा स्वपुत्रान् विष्णुशर्मणः समीपं गमयति । जननी शिशुं **क्षीरं** पाययति । मूर्खाः स्वपुत्रान् न पाठयन्ति ।

सहायतार्थ टिप्पणी—कर्कश = कठोर । दोलायां = झूले में । स्वोदरं= अपना पेट । दारकेण = लड़के से । क्षीरम् = दूध ।

अभ्यास १२

(उपसर्ग धातुयें)

लोभात् क्रोधो **प्रभवति** । सज्जनाः सुखं अनुभवन्ति । ऋषयः उपदिशन्ति । बलवान् दुर्बलान् **पराभवति** । अयं उपायः **सम्भवति** । न **अवगच्छामि** ते गतिम् । जनाः स्वकर्मणां फलं **अधिगच्छन्ति** । लक्ष्मणः रामं अनुगच्छति । रामः नगरात् निर्गच्छति । सः अत्र आगच्छन्ति । मुनिः व्रतं **अनुतिष्ठति** ।

कृष्णः पीठात् **उत्तिष्ठति** । कविः काव्यं **प्रणयति** । **अपनेष्यामि** ते दर्पम् । पुस्तकं आनय । गुरुः शिष्यं **उपनयते** । रामः सीतां **पर्यणयत्** । सीता रामं **अनुनयति** । पिता पुत्राणां कलहं निर्णयति । देवदत्तः देवेभ्यः बलिं **उपहरति** । द्विजः पुष्पाणि **आहरति** ।

रावणः सीतां **अपाहरत्** । किं सन्दिशति भवान् ? किं **आदिशति** प्रभुः ? सः वैदिकं कर्म आचरति । सत्यमार्गं अनुचरेत् । सेवकाः स्वामिन अनुचरन्ति । सेविका स्वस्वामिनीं **परिचरति** । वने व्याघ्रः **संचरति** । सः स्ववक्तव्यं **संक्षिपति** ।

सः गुरुवर्यं **आक्षिपति** । महात्मनः सर्वत्र **प्रसरति** । सीता रामं वने अनुसरति । मम गृहात् दूरं **अपसर** । वानराः बालकं **अनुकुर्वन्ति** । **प्रकृत्या** उपकुर्वन्ति साधवः । असाधवः सर्वदा अपकुर्वन्ति । मे चेतः **प्रसीदति** । **विषीदति** मे मानसम् ।

सन्ध्यासमयः **प्रत्यासीदति** । यूयं अत्र प्रार्थनार्थं **निषीदत** । भगवन् ! मां **अनुगृहाण** । भ्रातरः न **विगृह्णन्तु** । इन्द्रियाणि **निगृह्णन्तु** । पितः ! **अनुजानीहि** मां वनगमनाय । राजा स्वपुत्राय राज्यं **प्रतिजानीते** ।

सहायतार्थ टिप्पणी—प्रभवति = पैदा होता है । पराभवति=अपमान करता है । सम्भवति = सम्भव है । अवगच्छामि = जानता हूँ । अधिगच्छन्ति पाते हैं । अनुतिष्ठति = करता है ।

उत्तिष्ठति = उठता है । प्रणयति = रचता है, बनाता है । अपनेष्यामि = दूर करूँगा । उपनयते = जनेऊ करता है । पर्यणयत् = विवाह किया ।

अनुनयति = चिरौरी करती है, प्रार्थना करती है। उपहरति = भेंट देता है। आहरति = लाता है।

अपाहरत् = हर लिया। आदिशति = आज्ञा देता है। परिचरति=सेवा करती है। संचरति = घूमता है। संक्षिपति=संक्षिप्त करता है। आक्षिपति= आक्षेप करता है, दोष लगाता है। प्रसरति = फैलता है।

अपसर = दूर हट। अनुकुर्वंति=नकल करते हैं। प्रकृत्या = स्वभाव से। प्रसीदति = प्रसन्न होता है। विषीदति = दुःखी होता है।

प्रत्यासीदति = समीप आता है। निषीदत = बैठ जाओ। अनुगृहाण = अनुगृह करो, दया करो। विगृह्णन्तु = लड़ाई झगड़ा करें। निगृह्णन्तु = रोकें। अनुजानीहि = आज्ञा दो। प्रतिजानीते = प्रतिज्ञा करता है।

अभ्यास १४

(उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः)

संसारे सर्वाणि **लघूनि महान्ति** च कार्याणि उद्योगेन एव सिध्यन्ति। उद्योगं विना कोऽपि किंचित् कार्यं **साधयितुं** न शक्नोति। छात्राः उद्योगेन एव परीक्षायां **उत्तीर्णाः** भवन्ति।

उद्योगिनः पुरुषस्य संसारे **महती** प्रशंसा भवति। उद्योगी मनुष्यः स्वदेशस्य स्वजातेः समाजस्य च कल्याणं करोति। उद्योगिनं पुरुषं कदापि आलस्यं न पराजयते। सः संसारे **मृत्योः** पश्चादपि यशः शरीरेण जीवन् तिष्ठति।

उद्योगस्य त्यागेन आलस्यं **उत्पद्यते**। तेन मनुष्यः जीवने सदा दुःखं एव अनुभवति। अलसस्य पुरुषस्य मनोऽपि **कुत्सितेषु कर्मसु प्रवर्तते**। अतो वयं आलस्यं शत्रुमिव **अवधूय** श्रमं आचरेम।

सहायतार्थ टिप्पणी—लघूनि = छोटे। महान्ति = बड़े। साधयितुं = पूरा करने में। उत्तीर्णाः = सफल, पास। महती = बड़ी। मृत्योः = मृत्यु के। उत्पद्यते = पैदा होता है। कुत्सितेषु = बुरे। कर्मसु = कामों में। प्रवर्तते = लगता है। अवधूय = हटाकर, दूर करके।

अभ्यास १५

(न हि सत्यात् परो धर्मः)

सत्येन तुल्यः कश्चित् अन्यो धर्मो नास्ति सत्यस्य सेवनात् **मनसो** दोषाः नश्यन्ति। मनः पवित्रं च भवति। **आत्मनि** सुखस्य शान्तेश्च **उदयो** जायते। सत्ये सर्वे सद्गुणाः वसन्ति। सत्ये क्वचित् भयं नास्ति। सत्यवादी सदा निर्भयः **तिष्ठति**।

अस्माकं भारतवर्षे अनेके सत्यस्य सेवकाः जनाः अभवन्। तेषां कीर्ति-कथा जगत् पवित्रीकरोति। हरिश्चन्द्रस्य नृपतेः नाम सर्वे जनाः सादरं **स्मरन्ति**। महात्मा गान्धिरपि सत्यस्य परमो भक्तः आसीत्।

सत्यं उन्नतेः द्वारं अस्ति। असत्यात् **परं** किमपि **अन्यत् पातकं** नास्ति। अतः सत्यं जीवनस्य **सारं ज्ञात्वा** सदा सत्यं वदेत्, सत्यं आचरेत् सत्यं सेवेत।

सहायतार्थं टिप्पणी—मनसो=मन के। आत्मनि=आत्मा में। उदयो=जन्म। तिष्ठति=रहता है। स्मरन्ति=याद करते हैं। परं=बढ़कर। अन्यत्=दूसरा। पातकम्=पाप। सारं=तत्व। ज्ञात्वा=जानकर।

अभ्यास १६

(दीपावली:)

देशेऽस्मिन् सन्ति **चत्वारः** प्रधानोत्सवाः। इमे चत्वारोऽपि उत्सवाः क्रमशः ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्राणां **कृते** निर्मिताः सन्ति। परन्तु दीपमालिका उत्सवस्य माहात्म्यं सर्वेभ्योऽप्याधिकं **वर्तते**। सर्वं एव **वर्णाः** इमं उत्सवं **आमनन्ति**। अयं उत्सवः कार्तिकमासस्य कृष्णे पक्षे भवति।

जनाः अस्मिन् दिने स्वगृहान् **लिम्पन्ति** भूषयन्ति च। परस्परं मिष्ठान्नस्य आदान-प्रदानं भवति। सायंकाले च जनाः स्व स्व गृहद्वारेषु अभ्यन्तरेषु **अट्टालिकासु** च पंक्तिवद्धान् सुशोभितान् दीपकान् **प्रज्वाल-यन्ति**। रात्रौ तु **स्वर्गायते** मृत्युलोकः।

अस्य महोत्सवस्य **'द्यूतक्रीडा'** कलंकोऽस्ति। अनया देशस्य महान् **अपकारो** भवति। बहवो जनाः द्यूते सर्वस्वं विनाशयन्ति। अस्य **निराकरणं** शीघ्रमेव कर्त्तव्यम्।

सहायतार्थ टिप्पणी—चत्वारः = चार । कृते = लिये । वर्तते = है । वर्णाः = जातियां । आमनन्ति = मानते हैं । लिम्पन्ति = लीपते हैं, पोतते हैं । अट्टालिकासु = अटारियों पर । प्रज्वालयन्ति = जलाते हैं । स्वर्गायते = स्वर्ग तुल्य दीखने लगता है । द्यूतक्रीडा = जुआ का खेल । अपकारः = नुकसान । निराकरणम् = दूर करना ।

अभ्यास १७

(ब्रह्मचर्यम्)

बालकाः विद्याध्ययनाय यत् व्रतं आचरन्ति तत् ब्रह्मचर्यनाम्ना प्रसिद्धम् । ब्रह्मचर्यं एक महत् तपोऽस्ति । अनेन **तपसा** देवाः मृत्युं जित्वा अमरत्वं **अलभन्त** । ब्रह्मचर्येण शरीरं स्वस्थं पुष्टं कान्तियुक्तं च भवति । ब्रह्मचर्येण मस्तिष्कस्य विकासो भवति । बुद्धिः शुद्धा **तीव्रा** च जायते । इदं विद्याध्ययने महती सहायतां करोति । ब्रह्मचर्येण अस्माकं पूर्वजाः बलवन्तः तेजस्विनः **विद्वांसः दीर्घजीविनश्च** अभवन् । अतएव चतुर्षु आश्रमेषु ब्रह्मचर्याश्रमः एव **प्रथमः** अस्ति । अस्य आश्रमस्य सेवनेन अन्ये आश्रमाः **सम्यक्** सेविताः सुखमयाः च भवन्ति ।

ब्रह्मचर्यस्य प्रभावेण एव **पवनतनयः** गिरिं अपि **कन्दुकमिव** अतोलयत् । अपारं सागरं च **गोष्पदम्** इव अलंघयत् । **पितामहः** भीमः अपि अस्यैव प्रतापेन स्वगुरुं **जामदग्न्यं** अजयत् । **किं बहुना** मृत्युं अपि मुष्टिगतं चकार ।

सहायतार्थ टिप्पणी—तपसा = तपस्या से । अलभन्त = पा लिया । तीव्रा = तेज । विद्वांसः = विद्वान्, ज्ञानवान् । दीर्घजीविनः = लम्बी उमर वाले । प्रथमः = सर्वोत्तम । सम्यक् = भली प्रकार से । पवनतनयः = हनुमान । कन्दुकमिव = कन्दुकम् + इव = गेंद के समान । गोष्पदम् = गाय के खुर का चिह्न । पितामहः = बाबा । जामदग्न्यं = परशुराम जी को । किं बहुना = अधिक क्या कहें ।

अभ्यास १८

(निद्रा)

निद्रा नामजीवानां हितकरी वृत्तिः **शरीरस्थितेः** सहायभूता । इयं हि यथा कालं सेविता परमानन्दं जनयति, क्लेशान् **अपहन्ति, श्रान्तिं** च अपनयति, शोकं दूरीकरोति, **शरीरावसादं** नाशयति, वातादि धातु **साम्यं** विधत्ते, चेतसि **प्रसादं** तनुते, अन्तः किमपि **ओजः** सन्दधाति, दुश्चिन्तां निवारयति विस्मारयति च चिरवैरम् । किम्बहुना कुरुते हि **स्वावसाने** सर्वथा जीवान् पुनर्नवाभूतानेव ।

निद्रानिष्ठं जीवं क्षुधा न बाधते, न तृष्णा तापयति । निद्रितस्य न विद्यते कापि शंका, नैव मनोव्यथा । निद्रा नाम स्नेहमयी जननीव सर्वथा जीवान् पुत्रानीव सुखयति कान्तेव च ब्रह्ममयी लोचने दृढं परिचुम्ब्य समानन्दयति **नितरां** जीवसमूहम् ।

सहायतार्थ टिप्पणी—शरीरस्थितिः=शरीर का निर्वाह । अपहन्ति= मिटाता या दूर करता है । श्रान्तिः = थकावट । शरीरावसादं = शरीर की थकावट या कमजोरी । प्रसादः = प्रसन्नता । ओजः = बल, तेज । साम्यं = समता । स्वावसान = अपना अन्त । निद्रानिष्ठ = सोया हुआ । क्षुधा=भूख । नितरां = बहुत अधिक ।

अभ्यास १९

(ईश्वरः)

ईश्वरोऽस्माकं सर्वेषां पिता **वर्तते** । तेन इदं सर्वं रचितम् । अहमपि तेनैव रचितः । स महघं शीतलं वायुं यच्छति । **पानाय** च निर्मलं जलमपि तेनैव दत्तम् । यथाहं पुत्रो **वर्ते** तथैव अन्येऽपि तस्य पुत्रा **भवन्ति,** अतः कोऽपि न पीडनीयः । यदा अस्माभिः शयनं क्रियते तदापि स एव अस्मान् रक्षति । स सर्वत्र व्यापको भवति । स सर्वदा मां पश्यति । **अतो** मया कदापि पापं न कर्तव्यम् ।

सहायतार्थ टिप्पणी—वर्तते = है । पानाय = पीने के लिये । वर्ते = हूँ । भवन्ति = हैं, रहते हैं । अतो = अतः, इसलिये ।

अभ्यास २०

(मूर्खसेवकः)

कस्यचित् राज्ञो नित्यमेको मूर्खः अतिभक्तिपरः अंगसेवकः **अन्तःपुरेऽपि अप्रतिषिद्धप्रसरः** अतिविश्वास**स्थानं** अभवत्। एकदा राज्ञि निद्रां गते, सेवके च **व्यजनं** नीत्वा वायुं कुर्वति, राज्ञो वक्षस्थलोपरि **मक्षिकाः उपविष्टाः।** व्यजनेन **मुहुर्मुहुः निषिध्यमाना** अपि पुनः पुनः तत्रैव उपविशन्ति स्म। ततः तेन स्वभावचपलेन मूर्खसेवकेन क्रुद्धेन सता **तीक्ष्णं खड्गमादाय** तस्योपरि प्रहारो **विहितः।**

ततो मक्षिकाः **उड्डीय** गताः, तेन **शितधारेण असिना** राज्ञो **वक्षो द्विधा** जातं, स **पञ्चत्वं गतश्च।**

तस्मात् स्वकल्याणं इच्छता केनापि मूर्खोऽनुचरः स्वकार्ये न **नियोजनीयः।**

सहायतार्थ टिप्पणी—अन्तःपुरेऽपि = रनिवास में भी। अप्रतिषिद्ध = बेरोक-टोक। प्रसरः = आना जाना। स्थानं = पात्र। व्यजनं = पंखा। मक्षिकाः = मक्खियां। उपविष्टाः = बैठ गईं। मुहुर्मुहुः = बार-बार। निषिध्यमाना = उड़ाई जाने पर भी। तीक्ष्णं = तेज, पैनी। खड्गमादाय = खड्गम् + आदाय = तलवार लेकर। विहितः = किया। उड्डीय = उड़कर। शितधारेण = तेज धार वाली। असिना = तलवार से। वक्षो = छाती। द्विधा = दो टुकड़े। पञ्चत्वं गतः = मर गया।

तस्मात् = इसलिये। नियोजनीयः = रखना चाहिये, नियुक्त करना चाहिये।

अभ्यास २१

(महाश्वेतावृत्तान्तः)

अथैकदा **मधुमास**दिवसेषु अम्बया सममिदं अच्छोदं नाम सरः स्नातुं **अभ्यागतया** मया कपिञ्जलपुण्डरीकौ नाम मुनिकुमारौ दृष्टौ, पुण्डरीककर्णे एका कुसुममञ्जरी च दृष्टा।

तं तपोधनं **कुमारमीक्षमाणा** अहं नवयौवनसुलभेन कुसुमायुधेन परवशीकृता **अभवम्। तस्मै सविभ्रमं** प्रणामश्च कृतवती।

कृतप्रणामायां मयि मद्विकारदर्शनापहृतधैर्यं तमपि कुमारं तरलतां अनयत् **अनङ्गः** ।

अथ मुहूर्तमिव स्थित्वा द्वितीयं मुनिकुमारं कपिञ्जलं नामानम् **उपसृत्य** प्रणामपूर्वकम् अपृच्छम्—

"भगवन् ! **किमभिधानः** कस्य वायं कुमारः, किं नाम्नस्तरोः इयं अनेन **अवतंसीकृता** कुसुममञ्जरी" इति ।

सहायतार्थ टिप्पणी—मधुमास = वसन्त । अभ्यागतया = आई हुई । कुमारमीक्षणमाणा = कुंवारा (अविवाहित) ही हैं ऐसा अनुमान करती हुई । सविभ्रमं = बड़ी अदा के साथ । अनङ्ग = कामदेव । उपसृत्य = पास जाकर । किमभिधानः = क्या नाम है । अवतंसीकृता = आभूषण के रूप में धारण कर रखी है ।

अभ्यास २२

(दुष्यन्तः शकुन्तला च)

पुरा किल दुष्यन्तो नाम राजा बभूव । स एकदा **मृगयां** कर्तुं वनं **इयाय** । तस्य सैनिकाः **अमात्याश्च** तं **अनुजग्मुः** । अस्मिन् कानने दुष्यन्तो बहून् मृगान् **जघान** । एकं मृगं **पलायमानं अनुसरन्** दिव्यं आश्रमं **ददर्श** । तस्य सैनिकाः पूर्वस्मिन् एव स्थाने **तस्थुः** । कण्वस्य ऋषेः आश्रमोऽयं इति ज्ञात्वा तं प्रविवेश । प्रविश्य च कोनु भो अत्र इति **पप्रच्छ** ।

कण्वस्य कृतिका **दुहिता** शकुन्तला आश्रमाद् बहिः **आगत्य** स्वागतं **व्याजहार** । शकुन्तलां चारुसर्वांगीं दृष्ट्वा दुष्यन्तः तां **चकमे** । तस्याः **पाणिं** गान्धर्वेण विधिना राजा **जग्राह** ।

अनन्तरं कश्चित् कालं **तावुभौ** तस्मिन्नाश्रमे **चिक्रीडतुः** । रममाणं राजानं **प्रेक्ष्य** सैनिकाः पुरं **निववृतिरे** । राजापि पश्चात् स्वनगरं **उपययौ** ।

तदनु कण्वाज्ञया शकुन्तला दुष्यन्तराजधानीं प्रति **प्रतस्थे** । तत्र गत्वा राजानं **सभागतं** ददर्श । दुष्यन्तः तु तां पूर्वं **विसस्मार** किन्तु पश्चात् तां **भार्यात्वेन** स्वीचकार ।

सहायतार्थ टिप्पणी—मृगया = शिकार । इयाय=गया । अमात्याश्च=

अमात्याः + च = मन्त्री लोग । अनुजग्मुः = पीछे-पीछे चलने लगे । जघान = मारा । पलायमानं = भागते हुये । अनुसरन् = पीछा करते हुये । ददर्श = देखा । तस्थुः = छूट गये, रुक गये । पप्रच्छ = पूछा ।

दुहिता = बेटी । आगत्य = आकर । व्याजहार = कहा, बोली । चकमे = इच्छा की । जग्राह = ग्रहण किया । पाणिं = हाथ को ।

तावुभौ = तौ + उभौ = वे दोनों । चिक्रीडतुः = खेलते रहे, क्रीडा करते रहे । प्रेक्ष्य = देखकर । निववृतिरे = लौट गये । उपययौ = पहुँचा, गया ।

प्रतस्थे = चल पड़ी, प्रस्थान किया । सभागतं = सभा में बैठे हुये । विसस्मार = भुला दिया, नहीं पहचाना । भार्यात्वेन = पत्नी के रूप में ।

अभ्यास २३

(चञ्चला लक्ष्मीः)

आसीत् जयन्ती नाम पुरी । तस्यां उपक्रमो नाम राजा बभूव । स च **शौर्योपार्जितबहुवित्तो नीतिनेत्रो** बहुपुत्रश्च परमकृतार्थो बभूव । एकदा रात्रौ निजगृहे सुखं **शयानः** स्त्री क्रन्दनं शुश्राव । पश्चात् तं स्त्रीक्रन्दनं एव इति निश्चित्य बहिः निर्जगाम । रोदनरवानुसारेण गच्छन् नगराद् बहिः कियत्यपि सर्वावयवसुन्दरीं स्त्रियमेकां रुदतीं ददर्श ।

राजोवाच—आर्ये सुन्दरि ! केन दुःखेन रोदिषि ?

सुन्दर्युवाच—राजन् ! तवाहं लक्ष्मीः **इयद्दिनपर्यन्तं** शूरस्य नयशालिनस्तव भुजच्छायायां स्थितास्मि । इदानीं अन्यत्र गच्छामि । इति **रोदिमि** ।

राजोवाच—तर्हि रुद्यते कुतः ।

लक्ष्मीरुवाच—तवानुरागेण ।

राजा—यदि अनुरागः तदा त्यागे को हेतुः ?

लक्ष्मीः—त्वं न जानासि । लक्ष्मीरहं **चलप्रकृतिः** नैकत्र चिरं वस्तुमिच्छामि ।

सहायतार्थ टिप्पणी—शौर्योपार्जित = पराक्रम से कमाया हुआ । बहुवित्तः = अधिक धनवान् । नीतिनेत्रो = नीतिमान् । शयानः = सोया हुआ । इयद्दिनपर्यन्तम् = आज तक । रोदिमि = रोती हूँ । चलप्रकृतिः = चंचल स्वभाव की ।

अभ्यास २४

(१) **वासांसि जीर्णानि** यथा **विहाय,** नवानि गृह्णाति नरोपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि **संयाति** नवानि **देही** ॥

(२) कुमुद**वनमपश्रि** **श्रीमदम्भो**जखण्डं,
त्यजति मुदमुलूकः प्रीतिमांश्चक्रवाकः।
उदय**महिमरश्मिर्याति शीतांशु**रस्तं,
हतविधिनिहतानां हा ! विचित्रो विपाकः ॥

(३) पद्माकरं दिनकरो **विकचीकरोति,**
चन्द्रो विकासयति कैरवचक्रवालम्।
नाभ्यर्थितो जलधरोऽपि जलं ददाति,
सन्तः स्वयं परहितेषु कृताभियोगाः ॥

(४) गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति, ते निर्गुणं **प्राप्य** भवन्ति दोषाः।
आस्वाद्यतोयाः प्रवहन्ति नद्यः, समुद्र**मासाद्य** भवन्त्यपेयाः ॥

(५) अयं **परो** म पितुरंगभूषणं, **पितामहाद्यै**रुप**भुक्त**यौवनम्।
अलंकरिष्यत्यथ पुत्रपौत्रकान्, मयाऽधुना पुष्पवदेव धार्यते ॥

सहायतार्थ टिप्पणी—(१) वासांसि = कपड़े। जीर्णानि = पुराने। विहाय = छोड़ कर। सयाति=चली जाती है। देही=आत्मा। (२) अपश्रि = शोभाहीन। श्रीमत् = शोभायुक्त। मुदम् = प्रसन्नता। अहिमरश्मि = सूर्य। शीतांशु = चन्द्रमा। (३) विकची करोति = खिला देता है। नाभ्यर्थिता = बिना माँगे ही। (४) प्राप्य = पहुँच कर। आस्वाद्यतोयाः = पीने योग्य पानी वाली। आसाद्य = प्राप्त करके, पहुँच करके। (५) पटो = कपड़ा, वस्त्र। मितामहाद्यैः = बाबा आदि ने।

अभ्यास २५

(१) प्राक् पादयोः पतति खादति पृष्ठमांसं,
कर्णे कलं किमपि रौति शनैर्विचित्रम्।
छिद्रं निरूप्य सहसा प्रविशत्यशंकं,
सर्वं खलस्य चरितं मशकः करोति ॥

(२) प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः,
प्रारभ्य विघ्नविहता **विरमन्ति** मध्याः ।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः,
प्रारब्धमुत्तमजनाः न परित्यजन्ति ॥

(३) निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा **स्तुवन्तु**,
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्याय्यात् **पथः प्रविचलन्ति** पदं न धीराः ॥

(४) उचितमनुचितं वा कुर्वता **कार्यजातं**,
परिणतिरवधार्या यत्नतः पण्डितेन ।
अतिरभसकृतानां कर्मणामाविपत्ते-
र्भवति हृदयदाहो **शल्य**तुल्यो विपाकः ॥

(५) न चौरहार्यं, न च राजहार्यं,
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि ।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं,
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् ॥

सहायतार्थ टिप्पणी :—

(१) रौति = शब्द करता है । निरूप्य = देखकर ।

(२) विरमन्ति = रुक जाते हैं । प्रारब्धम् = शुरु किये हुये काम को ।

(३) स्तवन्तु = प्रशंसा करें । समाविशतु = आवे । प्रविचलन्ति=हटाते हैं । पथः = मार्ग से ।

(४) कार्यजातं = काम । परिणतिः = परिणाम । अवधार्या = सोच लेना चाहिये । अतिभस = अत्यन्त शीघ्र । शल्य = घाव ।

अभ्यास २६

(१) कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु **कदाचन** ।
मा कर्मफल**हेतुर्भूः** मा ते **संगोऽस्त्वकर्मणि** ॥

(२) नैनं छिन्दति शस्त्राणि नैनं दहति **पावकः** ।
न चैनं **क्लेदयन्त्यापो** न शोषयति **मारुतः** ॥

(३) **देहिनो**ऽस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं **जरा** ।
तथा देहान्तरप्राप्तिः धीरस्तत्र न मुह्यति ॥

(४) यदा यदा हि धर्मस्य **ग्लानिर्**भवति **भारत** ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य **तदात्मानं** सृजाम्यहम् ॥

(५) त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणः, त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।
वेत्तासि वेद्यं च परं च **धाम,** त्वया **ततं** विश्वमनन्तरूप ॥

(६) यथा प्रदीप्तं **ज्वलनं** पतङ्गा, **विशन्ति** नाशाय समृद्धवेगाः ।
तथैव नाशाय विशन्ति लोकाः, तवापि **वक्त्राणि** समृद्धवेगाः ॥

(७) **त्रिविधं** मे नरकस्येदं द्वारं **नाशनमात्मनः** ।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥

सहायतार्थ टिप्पणी—कदाचन = कभी भी । हेतुर्भुः=हेतुः+भूः=कारण बनो । सङ्गोऽस्वकर्मणि = सङ्गः = अस्तु = अकर्मणि = अकर्मण्यता में आसक्ति होवे ।

क्लेदयन्त्यापो = क्लेदयन्ति + आपः = जल भिगो सकता है । मारुतः = हवा ।

देहिनः = शरीरधारी की, मनुष्य की, आत्मा की । जरा = बुढ़ापा ।
ग्लानिः = हानि । भारत = हे अर्जुन । तदात्मम् = तब अपने आप को ।
वेत्तासि = वेत्ता + असि = जानने वाले हो । वेद्यं=जानने योग्य । धाम = स्थान, लोक, मरणस्थान । ततम् = व्याप्त ।

ज्वलनं = आग में । विशन्ति = प्रवेश करते हैं । वक्त्राणि = मुखों में ।
त्रिविधं=तीन प्रकार का । नाशनमात्मनः=नाशनम् + आत्मनः = अपना नाश करने वाला ।

पञ्चमोऽध्यायः

[क] अशुद्धि-संशोधन

अभ्यास १

अशुद्धः	शुद्धः
१. रामः च कृष्णः गच्छति ।	१. रामः कृष्णश्च गच्छतः ।
२. जनाः महति विपदि सन्ति ।	२. जनाः महत्यां विपदि सन्ति ।
३. सर्वाः नराः खादन्ति ।	३. सर्वे नराः खादन्ति ।
४. त्रयः बालिकाः नृत्यन्ति ।	४. तिस्रः बालिकाः नृत्यन्ति ।
५. पिता मां क्रुध्यति ।	५. पिता मह्यं क्रुध्यति ।
६. हे रामागच्छ ।	६. हे राम ! आगच्छ ।
७. देवदत्तः लक्ष्मणपुरे अनिवसत् ।	७. देवदत्तः लक्ष्मणपुरे न्यवसत् ।
८. भवान् कुत्र गच्छसि ?	८. भवान् कुत्र गच्छति ?
९. हरिः मम मित्रः अस्ति ।	९. हरिः मम मित्रम् अस्ति ।
१०. सः प्राणं बिभर्ति ।	१०. सः प्राणान् बिभर्ति ।
११. त्वं आचार्यस्य प्रेमपात्रः भव ।	११. त्वं आचार्यस्य प्रेमपात्रं भव ।
१२. मम मने सन्देहो वर्तते ।	१२. मम मनसि सन्देहो वर्तते ।
१३. केन पथेन गन्तव्यम् ?	१३. केन पथा गन्तव्यम् ?
१४. रामोवाच ।	१४. राम उवाच ।
१५. रामो सुखेन वसति ।	१५. रामः सुखेन वसति ।

अभ्यास २

अशुद्ध	शुद्ध
१. अहं चन्द्रमां पश्यामि ।	१. अहं चन्द्रमसं पश्यामि ।
२. मां भोजनं देहि ।	२. मह्यं भोजनं देहि ।
३. सः पापैः मां वारयति ।	३. सः पापेभ्यः मां वारयति ।
४. नगरस्य बहिः धर्मशाला अस्ति ।	४. नगराद् बहिः धर्मशाला अस्ति ।
५. इदं मम भ्राता ।	५. अयं मम भ्राता ।

अशुद्ध	शुद्ध
६. अहं तव शतं धारयति ।	६. अहं तुभ्यं शतं धारयामि ।
७. अहं गृहस्य प्रति गच्छामि ।	७. अहं गृहं प्रति गच्छामि ।
८. नदीभिः गंगा श्रेष्ठा ।	८. नदीनां नदीषु वा गंगा श्रेष्ठा ।
९. त्वं लेखन्या लिखति ।	९. त्वं लेखन्या लिखसि ।
१०. रामः नेत्रस्य काणः अस्ति ।	१०. रामः नेत्रेण काणः अस्ति ।
११. रामस्य सह गृहं गच्छ ।	११. रामेण सह गृहं गच्छ ।
१२. ज्ञानस्य विना न मुक्तिः ।	१२. ज्ञानं ज्ञानेन ज्ञानाद् वा विना न मुक्तिः ।
१३. गुरुः मां कुप्यति ।	१३. गुरुः मह्यं कुप्यति ।
१४. सः फलस्य भोक्तुं इच्छति ।	१४. सः फलं भोक्तुं इच्छति ।
१५. देवदत्तः गृहे गच्छति ।	१५. देवदत्तः गृहं गच्छति ।

अभ्यास ३

अशुद्ध	शुद्ध
१. देवदत्तस्य ग्रामस्य बहिः एकः शिवालयः अस्ति ।	१. देवदत्तस्य ग्रामाद् बहिः एकः शिवालयः अस्ति ।
२. पिता पुत्रस्य कुप्यति ।	२. पिता पुत्राय कुप्यति ।
३. श्रीमन् ! भवन्तं नमः ।	३. श्रीमन् ! भवते नमः ।
४. अहं स्वमित्रस्य सार्धं गच्छामि ।	४. अहं स्वमित्रेण सार्धं गच्छामि ।
५. वृक्षस्य अधः कः शेते ?	५. वृक्षं अधः कः शेते ?
६. सेवकः स्वामिनः अनुगच्छति ।	६. सेवकः स्वामिनं अनुगच्छति ।
७. ग्रामस्य अभितः वृक्षाः सन्ति ।	७. ग्रामं अभितः वृक्षाः सन्ति ।
८. तस्य आगते अहं गच्छामि ।	८. तस्मिन् आगते अहं गच्छामि ।
९. सा अश्वी गच्छति ।	९. सा अश्वा गच्छति ।
१०. अहं नगरीं दृश्यामि ।	१०. अहं नगरीं पश्यामि, अहं नगरीं द्रक्ष्यामि ।
११. राजा प्रजा पाल्यते ।	११. राज्ञा प्रजाः पाल्यन्ते ।
१२. वयं पुस्तकं अपठाम स्म ।	१२. वयं पुस्तकं अपठाम ।

अशुद्ध	शुद्ध
१३. ग्रामात् आगत्वा स अरोदत् ।	१३. ग्रामात् आगत्य स अरोदत् ।
१४. स पुष्पं दृष्टः ।	१४. तेन पुष्पं दृष्टम् ।
१५. सा चित्रं दृष्टवान् ।	१५. सा चित्रं दृष्टवती ।

अभ्यास ४

अशुद्ध	शुद्ध
१. हस्तिः गच्छति ।	१. हस्ती गच्छति ।
२. त्वं मिथ्यां जल्पसे ।	२. त्वं मिथ्या जल्पसे ।
३. राजा राज्ये अधितिष्ठति ।	३. राजा राज्यम् अधितिष्ठति ।
४. सो देवो प्रयाति ।	४. सः देवः प्रयाति ।
५. अम्यजाः गच्छन्ति ।	५. अमी अजाः गच्छन्ति ।
६. मम मने दुःखं अस्ति ।	६. मम मनसि दुखम् अस्ति ।
७. शिवः राजसखा अस्ति ।	७. शिवः राजसखः अस्ति ।
८. कान्तारपथा पुरीं प्रयाहि ।	८. कान्तारपथेन पुरीं प्रयाहि ।
९. दशरथमहाराज्ञः पुत्रः ।	९. दशरथमहाराजस्य पुत्रः ।
१०. गौ प्राणं त्यजति ।	१०. गौः प्राणान् त्यजति ।
११. ते तव दाराः भवन्ति ।	११. सा तव दाराः भवति ।
१२. स वा त्वं अत्र तिष्ठतु ।	१२. स वा त्वं वा अत्र तिष्ठ ।
१३. याचकं ओदनं देहि ।	१३. याचकाय ओदनं देहि ।
१४. सा पृष्ठात् कुब्जा अस्ति ।	१४. सा पृष्ठेन कुब्जा अस्ति ।
१५. भूपत्युः कथनम् ।	१५. भूपतेः कथनम् ।

अभ्यास ५

अशुद्ध	शुद्ध
१. सः साधुः दोषास्पदः ।	१. सः साधुः दोषास्पदम् ।
२. देवस्य अन्तरेण नास्ति कोपि अत्र ।	२. देवम् अन्तरेण नास्ति कोपि अत्र ।
३. सः महति विपदि वर्तते ।	३. सः महत्यां विपदि वर्तते ।

अशुद्ध	शुद्ध
४. नगरस्य परितः उपवनं विद्यते ।	४. नगरं परितः उपवनं विद्यते ।
५. अहं फलं गृहीतुं इच्छामि ।	५. अहं फलं ग्रहीतुम् इच्छामि ।
६. याचकः मत् धनं याचते ।	६. याचकः मां धनं याचते ।
७. अहं तं वक्तुं अशृणवम् ।	७. अहं तं ब्रुवन्तम् अशृणवम् ।
८. सत्यमेव जयते ।	८. सत्यमेव जयति, सत्यमेव विजयते ।
९. स बालिका रोदति ।	९. सा बालिका रोदिति ।
१०. विद्यायाः रहितः पुरुषः ।	१०. विद्यया रहितः पुरुषः ।
११. इन्दुमुखां बालां पश्य ।	११. इन्दुमुखीं बालां पश्य ।
१२. सः गोः पयो दोग्धि ।	१२. सः गां पयो दोग्धि ।
१३. मम भगिनी रुदन्तीं गच्छति ।	१३. मम भगिनी रुदती गच्छति ।
१४. शिष्यः गुरुं सेवति ।	१४. शिष्यः गुरुं सेवते ।
१५. नृत्यतीं तां पारितोषिकं देहि ।	१५. नृत्यन्त्यै तस्यै पारितोषिकं देहि ।

अभ्यास ६

अशुद्ध	शुद्ध
१. सः गुरवे नमस्करोति ।	१. सः गुरुं नमस्करोति ।
२. छात्राणां शतं अत्र निवसन्ति ।	२. छात्राणां शतं अत्र निवसति ।
३. सा वराकी मम कृपापात्रं जातम् ।	३. सा वराकी मम कृपापात्रं जाता ।
४. कः सहृदयः मधुरगानं न शुश्रूषति ।	४. कः सहृदयः मधुरगानं न शुश्रूषते ।
५. एषः नित्यं भोजनसमये उपतिष्ठति ।	५. एषः नित्यं भोजनसमये उपतिष्ठते ।
६. मेघाः वर्षन्तु इति—सम्प्रवदन्ति कृषकाः ।	६. मेघाः वर्षन्तु इति सम्प्रवदन्ते कृषकाः ।
७. देवैः सुधां सागरं ममन्थे ।	७. देवैः सुधायै ममन्थे सागरः ।
८. इयं नगरी त्रयः क्रोशाः आयता ।	८. इयं नगरी त्रीन् क्रोशान् आयता ।
९. धिक् ते दुराचारिणे ।	९. धिक् त्वां दुराचारिणम् ।

अशुद्ध	शुद्ध
१०. खलानां संसर्गात् को न विरमते ।	१०. खलानां संसर्गात् को न विरमति ।
११. मे मनः अस्मै बालकाय स्निह्यति ।	११. मे मनः अस्मिन् बालके स्निह्यति ।
१२. गुरुं प्रार्थयित्वा गृहं गच्छ ।	१२. गुरुं प्रार्थ्य गृहं गच्छ ।
१३. ग्रामस्य परितः उपवनाः सन्ति ।	१३. ग्रामं परितः उपवनाः सन्ति ।
१४. मां फलं रोचते ।	१४. मह्यं फलं रोचते ।
१५. सीता गीतौ गायतः ।	१५. सीता गीते गायतः ।

अभ्यास ७

स्वयं करो—

(कर्ता और क्रिया-सम्बन्धी)

१. अहं पूजयसि ।
२. वयं विशामि ।
३. त्वं रक्षति ।
४. यूयं पतामः ।
५. भवान् गच्छसि ।
६. ते नयथः ।
७. ते इच्छावः ।
८. यूयं द्रवामः ।
९. वयं सिञ्चावः ।
१०. भवती मधुरं गायसि ।
११. तौ गच्छथः ।
१२. सः नश्यसि ।
१३. युवां कथं हससि ?
१४. युवां पुस्तकं पातः ।
१५. आवां गृहं गच्छामः ।
१६. सा कूर्दनं कुर्वन्ति ।
१७. त्वं मूर्खः अस्ति ।
१८. बालकाः क्रीडामः ।
१९. कुक्कुरः बुक्कन्ति ।
२०. तस्य चत्वारः पुत्राः आसीत् ।
२१. रामः प्रजापालकः आसीत् ।
२२. त्वं कुत्र आसीत् ?
२३. गर्दभौ गृहे सन्ति ।
२४. सीता नृत्यति गायन्ति च ।
२५. पूज्य-पितरौ गच्छन्ति ।
२६. कृष्णः गोपालकः आसन् ।
२७. पुष्पावलिः विकसन्ति ।
२८. पक्षियुग्मः क्रीडतः ।
२९. आवां दुग्धं पिबामः ।
३०. पथिकसमूहः विश्राम्यन्ति ।

अभ्यास ९

स्वयं करो—

(कारक-सम्बन्धी)

१. सः पर्वतः आरोहति ।
२. हरिं अरीन् ताडयति ।
३. रामः कवी नमति ।
४. लोको वह्नि विशति ।
५. रामः पर्णं गणयति ।
६. मुनयः वनं निवसन्ति ।
७. चौरः धनेन चोरयति ।
८. पुत्रः पितुः सह आगच्छति ।
९. रामः नेत्रस्य काणः अस्ति ।
१०. कस्यापि सार्धं कलहं मा कुरु ।
११. जनकस्य नमः ।
१२. शिष्याणां स्वस्ति ।
१३. पुष्पेषु वनं गच्छति ।
१४. सः नगरे गच्छति ।
१५. इदं मम रोचते ।
१६. सः तव शतं धारयति ।
१७. सा त्वां क्रुध्यति ।
१८. सः पर्वतस्य पतितः ।
१९. पुत्रः गुरवे नमति ।
२०. वधू पर्यंके अधिशेते ।

अभ्यास ८

(कारक-सम्बन्धी)

१. रामः कस्यापि साकं कलिं न करोति ।
२. तरुणी पुष्पाणां स्पृहयति ।
३. पापेन दुःखं उत्पद्यते ।
४. मानवैः ब्राह्मणः श्रेष्ठः ।
५. राजा विप्रं धनं गच्छति ।
६. यत्नस्य विना किमपि न भवति ।
७. पुत्रः स्वजनकस्य सह आपणं गच्छति ।
८. हे नृपः ! मां रक्ष ।
९. श्री गुरोः नमः ।
१०. गुरुं निन्दया शिष्यः क्रुद्धो भवति ।
११. नदी नगरात् त्रिभिः क्रोशैः विद्यते ।
१२. शास्त्रेषु तत्वं प्रज्ञो बोधति ।
१३. गिरेः शिखरेण गजः पतितः ।
१४. तडागात् कमलानि उद्भवन्ति ।
१५. ग्रीष्मस्य सूर्ये प्रकाशः चण्डो भवति ।
१६. कपयः वृक्षाय फलानि क्षिपन्ति ।
१७. चन्द्रस्य प्रकाशः जनेभ्यः आह्लादको भवति ।
१८. साधोः वचनात् अतिक्राम्यन्ति मूर्खाः ।
१९. गुरुः छात्राय स्निह्यति ।
२०. मां मिष्टान्नं अतिरोचते ।

अभ्यास १०

स्वयं करो—

(विविध)

१. सः पठन्ति ।
२. तौ लिखति ।
३. ते आगच्छति ।
४. भवान् पठन्ति ।
५. भवती हसतः ।
६. ईश्वरः भवन्ति ।
७. नराः पठति ।
८. नरौ आगच्छन्ति ।
९. विद्यालयः गच्छति ।
१०. नृप गच्छति ।
११. स्त्री गच्छन्ति ।
१२. बालक हसतः ।
१३. नरा हसति ।
१४. त्वं पठति ।
१५. युवां गच्छतः ।
१६. यूयं लिखन्ति ।
१७. यूयं वदसि ।
१८. युवां पतथ ।
१९. त्वं भोजनः पचति ।
२०. भवान् सत्यः वदति ।
२१. भवान् रक्षसि ।
२२. यूयं राज्यः रक्षथः ।
२३. त्वं राज्यस्य रक्षसि ।
२४. अहं दृश्यामि ।
२५. आवां स्थावः ।
२६. वयं पामः ।
२७. अहं सदामि ।
२८. पाठशालायां गच्छामि ।
२९. वयं पुष्पं घ्रामः ।
३०. वयं जलं पास्मि ।
३१. ईश्वरः सन्ति ।
३२. वयं अस्मि ।
३३. अहं स्मः ।
३४. त्वं स्थ ।
३५. यूयं अस्ति ।
३६. त्वं करोति ।
३७. स कुर्वन्ति ।
३८. अहं कुर्मः ।
३९. वयं करोमि ।
४०. रामः च कृष्णः पठति ।
४१. पुष्प च फलम् ।
४२. स करोषि ।
४३. आवां कुरुतः ।
४४. यूयं कुरुथः
४५. तौ गच्छावः ।

[ख] अशुद्धि-संशोधन

अभ्यास १

अशुद्ध	शुद्ध
१. बालकं विद्यालयः गच्छति ।	१. बालकः विद्यालयं गच्छति ।
२. भवान् तत्र गच्छन्ति ।	२. भवान् तत्र गच्छति ।
३. मनुष्यौ आगच्छन्ति ।	३. मनुष्यौ आगच्छतः ।
४. बालकाः पुस्तकः पठति ।	४. बालकः पुस्तकं (पुस्तकानि) पठन्ति ।
५. त्वं राज्यस्य रक्षसि ।	५. त्वं राज्यं रक्षसि ।
६. युवां आगच्छथ ।	६. युवां आगच्छथः ।
७. भवन्तौ वदथः ।	७. भवन्तौ वदतः ।
८. पत्रानि पतथ ।	८. पत्राणि पतन्ति ।
९. अहं स्थामि ।	९. अहं तिष्ठामि ।
१०. वयं दृश्यामः ।	१०. वयं पश्यामः ।
११. वयं घ्रावः ।	११. आवां जिघ्रावः ।
१२. अहं जलं पामि ।	१२. अहं जलं पिबामि ।
१३. वयं सदामः ।	१३. वयं सीदामः ।
१४. द्वौ बालकाः ।	१४. द्वौ बालकौ ।
१५. चत्वारः नरः ।	१५. चत्वारः नराः ।
१६. अष्ट लताः अस्ति ।	१६. अष्टः लताः सन्ति ।
१७. दश पुस्तकं अस्ति ।	१७. दश पुस्तकावि सन्ति ।
१८. पुष्पं च फलम् ।	१८. पुष्पं फलं च ।
१९. विद्यालये गच्छति ।	१९. विद्यालयं गच्छति ।
२०. छात्रः विद्यालयस्य प्रति गच्छति ।	२०. छात्रः विद्यालयं प्रति गच्छति ।

अभ्यास २

अशुद्ध	शुद्ध
१. ग्रामस्य निकषा नदी वर्तते ।	१. ग्रामं निकषा नदी वर्तते ।
२. धर्मस्य अनुगच्छति ।	२. धर्मं अनुगच्छति ।
३. पुष्पस्य परितः भृङ्गाः ।	३. पुष्पं परितः भृङ्गाः ।
४. त्वं पुष्पानि पश्यतु ।	४. त्वं पुष्पाणि पश्य ।
५. नगरस्य उभयतः प्राकारः ।	५. नगरं उभयतः प्राकारः ।
६. धर्मस्य विना न मुक्तिः ।	६. धर्मं विना न मुक्तिः ।
७. सः आसने अधितिष्ठति ।	७. सः आसनं अधितिष्ठति ।
८. त्वं तिष्ठिष्यसि ।	८. त्वं स्थास्यसि ।
९. नृपात् वसुधां याचते ।	९. नृपं वसुधां याचते ।
१०. नगरे अजां नयति ।	१०. नगरं अजां नयति ।
११. कविना अगायत् ।	११. कविः अगायत् ।
१२. अग्निना नगरं अदहत् ।	१२. अग्निः नगरं अदहत् ।
१३. भूपत्युः सह अगच्छत् ।	१३. भूपतिना सह अगच्छत् ।
१४. अलं हसितस्य ।	१४. अलं हसितेन ।
१५. नेत्रस्य काणः ।	१५. नेत्रेण काणः ।
१६. नेत्राभ्यां काणः ।	१६. नेत्रेण काणः, नेत्राभ्यां अन्धः ।
१७. सुखात् भारं वहति ।	१७. सुखेन भारं वहति ।
१८. गिरौ गच्छेत्	१८. गिरिं गच्छेत् ।
१९. दुग्धम् पिबेत् ।	१९. दुग्धं पिबेत् ।
२०. अहम् गृहम् गच्छामि ।	२०. अहं गृहं गच्छामि ।

अभ्यास ३

अशुद्ध	शुद्ध
१. तं बालकं दुग्धं वितर ।	१. तस्मै बालकाय दुग्धं वितर ।
२. एतं मुनिं धनं यच्छ ।	२. एतस्मै मुनये धनं यच्छ ।
३. जनकं नमः ।	३. जनकाय नमः ।

अशुद्ध	शुद्ध
४. एतं प्रश्नं तस्मात् शिष्यात् पृच्छ ।	४. एतं प्रश्नं तं शिष्यं पृच्छ ।
५. बालकं पुस्तकं रोचते ।	५. बालकाय पुस्तकं रोचते ।
६. शिष्ये क्रुध्यति गुरुः ।	६. शिष्याय क्रुध्यति गुरुः ।
७. स्वामी सेवकं कथयति ।	७. स्वामी सेवकाय कथयति ।
८. साधुः भक्तं उपदिशति ।	८. साधुः भक्ताय उपदिशति ।
९. इदं वृक्षात् एते फलानि पतन्ति ।	९. एतस्मात् वृक्षात् एतानि फलानि पतन्ति ।
१०. तेन गुरुणो अधीते ।	१०. तस्माद् गुरोः अधीते ।
११. सिंहेन बिभेति पान्थः ।	११. सिंहात् बिभेति पान्थः ।
१२. एभिः तण्डुलैः गोधूमं प्रतियच्छति ।	१२. एभ्यः तण्डुलेभ्यः गोधूमं प्रतियच्छति ।
१३. धनेन ज्ञानं गुरुतरः ।	१३. धनात् ज्ञानं गुरुतरम् ।
१४. अनेन पापेन निवारय स्वपुत्रम् ।	१४. अस्मात् पापात् निवारय स्वपुत्रम् ।
१५. भक्तः पापं जुगुप्सते ।	१५. भक्तः पापात् जुगुप्सते ।

अभ्यास ४

अशुद्ध	शुद्ध
१. स्वजनकं स्मरसि किम् ?	१. स्वजनकस्य स्मरसि किम् ?
२. वृक्षस्य एते पुष्पानि ।	२. वृक्षस्य एतानि पुष्पाणि ।
३. सः गुरोः निन्दति ।	३. सः गुरुं निन्दति ।
४. अस्य वालिकां पठनं मां न रोचते ।	४. अस्याः बालिकायाः पठनं मह्यं न रोचते ।
५. भोजनस्य पाकं अमुं रोचते ।	५. भोजनस्य पाकं अस्मै रोचते ।
६. त्वं नृपस्य सेवसे ।	६. त्वं नृपं सेवसे ।
७. साधु नृपात् अन्नं भिक्षते ।	७. साधुः नृपं अन्नं भिक्षते ।

अशुद्ध	शुद्ध
८. विद्या सत्यात् शोभते ।	८. विद्या सत्येन शोभते ।
९. मम भोजनं कृते सति सः आगच्छत् ।	९. मयि भोजने कृते सति सः आगच्छत् ।
१०. नृपेण मृगेषु शराः अक्षिपत् ।	१०. नृपः मृगेषु शरान् अक्षिपत् ।
११. भवन्तः विद्यायां प्रमाणाः सन्ति ।	११. भवन्तः विद्यायां प्रमाणं सन्ति ।
१२. भवान् सर्वेषां विद्यानां पात्राणि असि ।	१२. भवान् सर्वासां विद्यानां पात्रं अस्ति ।

अभ्यास ५

अशुद्ध	शुद्ध
१. छात्रद्वयं क्रीडतः ।	१. छात्रद्वयं क्रीडति ।
२. दम्पती पुत्रम् अभाषत ।	२. दम्पती पुत्रं अभाषेताम् ।
३. या बाला आगच्छत् सः मम भगिनी ।	३. या बाला आगच्छत्, सा मम भगिनी ।
४. नद्याः आपम् शिष्यः पिबति ।	४. नद्याः अपः शिष्यः पिबति ।
५. सः प्राणं असुं वा अत्यजत् ।	५. सः प्राणान् असून् वा अत्यजत् ।
६. दारः अक्षतः लाजः च सुखाय भवन्ति ।	६. दाराः अक्षताः लाजाः च सुखाय भवन्ति ।
७. वर्षायां सिकता जलप्लाविता भवति ।	७. वर्षासु सिकताः जलप्लाविताः भवन्ति ।
८. कतिः समा अगच्छत् ।	८. कति समाः अगच्छन् ।
९. चत्वारः कन्याः चत्वारः फलानि खादन्ति ।	९. चतस्रः कन्याः चत्वारि फलानि खादन्ति ।
१०. दुर्जनः कन्यायाः अपहरति ।	१०. दुर्जनः कन्यां अपहरति ।
११. विजेता नगरेऽधिकरोति ।	११. विजेता नगरं अधिकरोति ।
१२. दशमे कक्षायां शतानि छात्राः सन्ति ।	१२. दशम्यां कक्षायां शतं छात्राः सन्ति ।

अशुद्ध	शुद्ध
१३. बालकः फलं अदतु अदेत् वा ।	१३. बालकः फलं अत्तु अद्यात् वा ।
१४. अहं गच्छन् आस्म ।	१४. अहं गच्छन् आसम् ।
१५. तदीयं सखाय धनं वितर ।	१५. तदीयाय सख्ये धनं वितर ।

अभ्यास ६

अशुद्ध	शुद्ध
१. राजा खड्गेन अप्रहरत् ।	१. राजा खड्गेन प्राहरत ।
२. अस्य पर्वतस्य पूर्वं महावापी वर्तते ।	२. अस्य पर्वतस्य पूर्वेण महावापी वर्तते ।
३. शिशुना स्मितं पित्रोः आनन्द जनकम् भवति ।	३. शिशोः स्मितं पित्रोः आनन्द-जनकं भवति ।
४. सीता चोरान् बिभेति ।	४. सीता चौरेभ्यः बिभेति ।
५. यूयं वयं वा नदीं गमिष्यथ ।	५. यूयं वयं वा नदीं गमिष्यामः ।
६. मम आगमनस्य प्रागेव स गतः ।	६. मम आगमनात् प्रागेव स गतः ।
७. ग्रामस्य उत्तरे नदी वर्तते ।	७. ग्रामस्य पूर्वेण नदी वर्तते ।
८. सा आत्मानं हतप्राश्वा अमन्यत् ।	८. सा आत्मानं हतप्रायम् अमन्यत ।
९. सर्वेभ्यः पुत्रेभ्यः गोपालः श्रेष्ठः ।	९. सर्वेषु पुत्रेषु गोपालः श्रेष्ठः सर्वेषां पुत्राणां गोपालः श्रेष्ठः ।
१०. देवौ भक्ति रोचते ।	१०. देवाय भक्तिः रोचते ।
११. तुभ्यं सुखं भूयात् ।	११. तव सुखं भूयात् ।
१२. हिमालयेन गंगा प्रभवति ।	१२. हिमालयाद् गंगा प्रभवति ।
१३. यमुनायाः उभयतः तरवः सन्ति ।	१३. यमुनां उभयतः तरवः सन्ति ।
१४. हरिः पर्यङ्के अध्यास्ते ।	१४. हरिः पर्यङ्कं अध्यास्ते ।
१५. दीनजनाय प्रति दयां कुरु ।	१५. दीनजनं प्रति दयां कुरु ।

अभ्यास ७

अशुद्ध	शुद्ध
१. तस्य कन्यायाः शाटिका हरितम् अस्ति ।	१. तस्याः कन्यायाः शाटिका हरिता अस्ति ।

अशुद्ध	शुद्ध
२. त्वया मया तैः हस्यन्ते ।	२. त्वया मयाः तैः च हस्यते ।
३. पुस्तकस्य कर्ता ग्रन्थं लिख्यन्ते ।	३. पुस्तकस्य कर्त्रा ग्रन्थः लिख्यते ।
४. गोपः कृष्णा गां दोहति ।	४. गोपः कृष्णां गां दोग्धि ।
५. रामः भृत्यं कार्यं करोति ।	५. रामः भृत्येन कार्यं कारयति ।
६. मे भ्राता स्वपति ।	६. मे भ्राता स्वपिति ।
७. सिंहः शशकं हनति ।	७. सिंहः शशकं हन्ति ।
८. पुत्रः पितरं शुश्रूषति ।	८. पुत्रः पितरं सुश्रूषते ।
९. मया त्रीणि पुस्तकानि पठितम् ।	९. मया त्रीणि पुस्तकानि पठितानि ।
१०. बालकेन उत्थितम् ।	१०. बालकः उत्थितः ।
११. भोजनं खादन् ब्राह्मणफलं देहि ।	११. भुक्तवते ब्राह्मणाय फलं देहि ।
१२. सः भोजनस्य आस्वादयति ।	१२. सः भोजनं आस्वादयति ।
१३. सः पक्षिणं दृशन् अस्ति ।	१३. सः पक्षिणं पश्यन् अस्ति ।
१४. आगच्छतीं कन्यां पश्य ।	१४. आगच्छन्तीं कन्यां पश्य ।
१५. दासी अजां ग्रामे नयन् अस्ति ।	१५. दासी अजां ग्रामं नयन्ती अस्ति ।

अभ्यास ८

अशुद्धः	शुद्धः
१. दुःखमिदं सहितुं नैव शक्नोमि ।	१. दुःखमिदं सोढुं नैव शक्नोमि ।
२. सीतां ग्रहीत्वा रामो वनं अगच्छत् ।	२. सीतां गृहीत्वा रामो वनं अगच्छत् ।
३. रामं आह्वाय गुरुः पृष्टवान् ।	३. रामं आहूय गुरुः पृष्टवान् ।
४. अहं लेखं लेखनीयम् ।	४. मया लेखः लेखनीयः ।
५. विद्युता भेतव्यः ।	५. विद्युतः भेतव्यम् ।
६. अहं शुचिः जलं पेयम् ।	६. मया शुचिजलं पेयम् ।
७. देवदत्तः गुरुणा वेदं अधीते ।	७. देवदत्तः गुरोः वेदं अधीते ।
८. मतिः एव बलेन गरीयसी ।	८. मतिः एव बलाद् गरीयसी ।
९. बालकः मातरं स्मरति ।	९. बालकः मातुः स्मरति ।

अशुद्ध	शुद्ध
१०. मलिन जलस्य पिबनं नोचितम्।	१०. मलिनजलस्य पानं नोचितम्।
११. तस्मिन् सरे कमलाः शोभते ?	११. तस्मिन् सरसि कमलानि शोभन्ते।
१२. वर्षायां आतपत्रं वर्षया त्रायते।	१२. वर्षासु आतपत्रं वर्षाभ्यः त्रायते।
१३. गुरोः गते सति विद्यार्थिनः कोलाहलं अकुर्वम्।	१३. गुरौ गते सति विद्यार्थिनः कोलाहलं अकुर्वन्।
१४. हंसः वियते उड्डयति।	१४. हंसः वियति उड्डीयते।
१५. प्रेमाद् प्रेमः जायते।	१५. प्रेम्णः प्रेम जायते।

अभ्यास ९

अशुद्ध	शुद्ध
१. यावान् छात्राः तावन्तः बालिकाः।	१. यावन्तः छात्राः तावत्यः बालिकाः।
२. मनः सत्यात् शुध्यति।	२. मनः सत्येन शुध्यति।
३. मने ईश्वरस्य चिन्तयति भक्तः।	३. मनसि ईश्वरं चिन्तयति भक्तः।
४. वने रक्षसाः सन्ति।	४. वने रक्षांसि सन्ति।
५. त्रिलोकेषु ख्यातो यशस्तव।	५. त्रिलोके ख्यातो यशस्तव।
६. अहं पाठं शक्नोमि।	६. अहं पठितुं शक्नोमि।
७. कृष्णः त्वं च लिखतः।	७. कृष्णः त्वं च लिखथः।
८. स त्वमहं च हसथ।	८. स त्वमहं च हसामः।
९. द्विरेफः काष्ठं छेदति।	९. द्विरेफः काष्ठं छिनति।
१०. राजा राजस्य भुनक्ति।	१०. राजा राज्यं भुनक्ति।
११. समुद्रात् सुधां मन्थति।	११. सुधां समुद्रं मथ्नाति।
१२. घटमेकं क्रयति मे पिता।	१२. घटमेकं क्रीणाति मे पिता।
१३. तस्य विद्वानता ख्याता।	१३. तस्य विद्वत्ता ख्याता।
१४. ईश्वरः सर्वमेव जानति।	१४. ईश्वरः सर्वमेव जानाति।
१५. रामः प्रति जानाति।	१५. रामः प्रति जानीते।

अभ्यास १०

अशुद्ध	शुद्ध
१. रामः कृष्णेन अधिकं चतुरतरो ।	१. रामः कृष्णात् चतुरतरः ।
२. वैदिकः धर्मः सर्वधर्मात् प्राचीनः ।	२. वैदिकधर्मः सर्वधर्मेषु प्राचीनतमः ।
३. कृष्णः सर्वेभ्यः छात्रेभ्यः पटुतमः ।	३. कृष्णः सर्वेषु छात्रेषु पटुतमः ।
४. पाण्डवानां युधिष्ठिरो जेष्ठः बभूव ।	४. पाण्डवानां युधिष्ठिरो ज्येष्ठः बभूव ।
५. एका मूषका मृता ।	५. एका मूषिका मृता ।
६. आचार्या आचार्यं सेवते ।	६. आचार्यानी आचार्यं सेवते ।
७. शूद्री इतः आगच्छति ।	७. शूद्रा इतः आगच्छति ।
८. किशोरा बालिका कस्मै न रोचते ।	८. किशोरी बालिका कस्मै न रोचते ।
९. एका युवती अत्र स्वपति ।	९. एका युवतिः अत्र स्वपिति ।
१०. सप्ताहे सप्त दिना भवन्ति ।	१०. सप्ताहे सप्त दिनानि भवन्ति ।
११. एकस्मिन् वर्षे द्वादशमासानि भवन्ति ।	११. एकस्मिन् वर्षे द्वादशमासाः भवन्ति ।
१२. भरतः रामस्य कनीयान् आसीत् ।	१२. भरतः रामात् कनीयान् आसीत् ।

अभ्यास ११

स्वयं करो—

(वाच्य सम्बन्धी)

१. सूर्येण प्रकाश्यन्ते ।
२. ऋषयः जनेन वन्द्यते ।
३. मोदकौ स्वाद्यन्ते शिशुना ।
४. छात्रैः श्लोकाः पठ्यते ।
५. देवः वन्द्येते ।
६. कान्तायै सन्देशः प्रहीयन्ते ।
७. श्रमिकैः धान्यस्य राशयः नीयते ।
८. द्रुमेषु कपयः दृश्यते ।
९. अग्निः काष्ठं दह्यते ।
१०. निष्कान् ब्राह्मणेभ्यः दीयन्ते ।
११. प्रजानां नृपतिना रक्ष्यन्ते ।
१२. देवदत्तः पुस्तकं लिख्यते ।
१३. वनदेवताभिः नृपाणां कीर्ति गीयते ।
१४. तेन ग्रन्थं पठ्यते ।
१५. रामो रावणं हन्यते ।

अभ्यास १२

स्वयं करो—

(वाच्य सम्बन्धी)

१. नृपेण तत्र गच्छति ।
२. ताः सुलेखः लिख्यते ।
३. तैः शीतलं जलं पिबन्ति ।
४. राज्यपालस्य जनकः तत्र गच्छन्ति ।
५. मोदकः बालकं रोचते ।
६. देवो विजयति ।
७. अहं त्वां पृच्छयसे ।
८. वयं नदी गम्यते ।
९. कवयः श्लोकान् रच्यन्ते ।
१०. शत्रून् हन्ति श्रीकृष्णेन ।
११. प्रज्ञान् सर्वत्र पूज्यन्ते ।
१२. हरिः जनकस्य आदेशः अनुरुध्यते ।
१३. कपयः द्रुमेषु आरुह्यते ।
१४. रामः तस्य सह वनं गच्छति ।
१५. नगरे वसति जनः बहवः ।

अभ्यास १३

स्वयं करो—

(सर्वनाम सम्बधी)

१. अयं मम गृहं अस्ति ।
२. अस्मिन् नगर्यां वहवः धनिकाः वसन्ति ।
३. तस्मै बालिकायै मोदकं देहि ।
४. सर्वाणां पर्वतानां हिमालय श्रेष्ठः ।
५. सर्वेषां नदीनां गंगा श्रेष्ठा ।
६. इयं आलयं गच्छ ।
७. इदं आम्रवृक्षः अस्ति ।
८. अहं इदं गृहे वसामि ।
९. अस्मिन् निशायां स इमं स्थाने नास्ति ।
१०. इयं वालकः मे शिष्यः ।
११. एषः बालिका बुद्धिमती अस्ति ।
१२. अस्मात् नद्याः जलं मधुरं निर्मलं च ।
१३. तां बालिकायै जलं आनय ।
१४. इदं मे गृहं नास्ति, कस्यापि अन्यं गृहम् ।
१५. ते असौ वने तिष्ठन्ति ।
१६. रामः पूर्वस्माद् दिशः आगतः ।
१७. अयं पवित्रे आश्रमे एकः विदुषी नारी अस्ति ।
१८. अमूनि अश्वाः तूर्णं धावन्ति ।
१९. तानि चोराः इयं तव धनं हरन्ति ।
२०. अस्य वृक्षात् शुष्कपत्राणि पतन्ति ।
२१. सा मे भगिनी अस्ति ।

२२. एताभ्यां बालिकाभिः गीतमेकं गीयते ।

२३. एतकस्य कूर्मांगां पृष्ठप्रदेशः सुपरिपुष्टो भवति ।

२४. इयं बालिकां इमानि पुस्तकं प्रयच्छ ।

२५. तस्मै देव्यै नमो नमः ।

अभ्यास १४

स्वयं करो—

(विशेषण का तर-तम भाव)

१. कृष्णो बलदेवात् बुद्धिमत्तमः ।

२. सर्वेषु पर्वतेषु हिमालयः उन्नततरः ।

३. एषः तयोः बलिष्टः ।

४. एषा तासु बलीयसी ।

५. रामः तेषां बलवत्तरः ।

६. रामः भरतात् बलिष्ठः ।

७. हरिः बालकेषु बुद्धिमत्तरः ।

८. भ्रातृणां पटुतमः ।

९. कृष्णो बलदेवात् बुद्धित्तमः ।

१०. पुष्पेषु तु शिरीषः मृदुतरः ।

११. सीतागीतयोः सीता ज्येष्ठा ।

१२. कलिकाता मोहमयी नगराद् अपि दूरतमः (दविष्ठः) ।

१३. लक्ष्मणः रामात् कनिष्ठः ।

१४. बालगोविन्दः युष्मभ्यमपि कनीयान् ।

१५. धनधर्मयोः किं अभिमततमो मे ?

अभ्यास १५

स्वयं करो—

(कई कर्ता और उनकी सम्मिलित क्रिया)

१. कथं नाहं त्वं गोविन्दश्च पर्यटनाय गच्छेयुः ?

२. त्वं हरिः प्रतापश्च अत्रैव तिष्ठताम् ।

३. तव भ्राता त्वं वा आपणं गच्छेत् ।

४. स त्वं अहं वा इदं कर्तुं शक्नुमः ।

५. त्वं रामश्च विद्यालयं गच्छ ।

६. सः त्वं च अधुना कुत्र पठति ।

७. क्या हरि और तुम हरिद्वार में रहते हो = किं हरिः त्वं च हरिद्वार नगरे निवसंतः ?

८. माधवः त्वं च अद्य वेदान्तं पठत ।

९. वत्स ! अहं च त्वं च दण्डकारण्यं गच्छथ ।

१०. भरत ! त्वं शत्रुघ्नश्च अयोध्यायां तिष्ठताम् ।

११. वयं यूयं च कुत्र स्थास्यथ ?
१२. अहं स च तत्र गमिष्यंतः।
१३. वयं च ते च वाराणसीं अपश्यन्।
१४. अहं वा त्वं वा वेदं अपठम्।
१५. स त्वं रामश्च संगीतं शृण्वन्ति।
१६. भद्र ! त्वं दमनकश्च तत्काशे गच्छताम्।
१७. त्वं रामचन्द्रश्च राजधानीं गच्छताम्।
१८. वत्स ! न वयं वा यूयं वा कुसंगे स्थास्यामि।
१९. त्वं एषा च समाज्ञापयति।
२०. युवां मम त्रयो भृत्याश्च राजद्वारं गच्छन्ति।



षष्ठोऽध्यायः

लोकोक्तियाँ

[अ]

१. **अति सर्वत्र वर्जयेत्** = किसी भी चीज की अति बुरी होती है।

२. **अधिकन्तु न दोषाय** = जितना अधिक हो, उतना अच्छा।

३. **अल्पविद्या भयंकरी** = अध जल गगरी छलकत जाय।

४. **अहिंसा परमोधर्मः** = अहिंसा ही सबसे बड़ा धर्म है।

५. **असह्यं ज्ञाति-दुर्वचः** = जाति-बिरादरी वालों की खरी-खोटी बातें बर्दाश्त के बाहर होती है।

६. **अंगीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति** = कर्मठ मनुष्य जिस काम को अपने हाथ में ले लेते हैं उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं।

७. **अंगारः शतधौतेन मलिनत्वं न मुञ्चति** = कोयला सैकड़ों बार धोने से भी सफेद नहीं होता।

८. **अभ्यासाद् जायते नृणां द्वितीया प्रकृतिः** = किसी बात का अभ्यास करते रहने से वह धीरे-धीरे स्वभाव ही बन जाता है।

९. **अयमपरो गण्डस्योपरि पिटिका संवृत्ता** = जले पर नमक; मुसीबत पर मुसीबत।

१०. **अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्** = जैसा करोगे, वैसा भरोगे।

११. **अव्यवस्थितचित्तस्य प्रसादोऽपि भयंकरः** = क्षणिक बुद्धि वाले मनुष्य की मेहरबानी से भी डरना चाहिये।

१२. **अर्धो घटो घोषमुपैति नूनं** = अध जल गगरी छलकत जाय।

१३. **अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति** = बिना चले तो गरुड़ भी एक कदम तक नहीं चल पाता, अतः उद्योग जरूरी है।

१४. **अंकमारुह्य सुप्तं हि हत्वा किं नाम पौरुषम्** = गोद में सोये हुये को मारना ही क्या पौरुष है ?

१५. **अपन्थानं तु गच्छन्तं सोदरोऽपि विमुञ्चति** = कुमार्ग पर चलने वाले को तो उसका सगा भाई भी छोड़ देता है।

१६. **अत्यादरोऽपि परिशंकनीयः** = अधिक किये जाने वाले आदर से भी चौकन्ना रहना चाहिये।

१७. **अपि धन्वन्तरिः वैद्यः किं करोति गतायुषि** = मरने वाले को तो भगवान भी नहीं बचा सकते।

१८. **अन्ते रण्डा विवाहश्चेत् आदावेव कुतो न** = अन्त में यदि रांड़ से विवाह करना ही है, तो पहले ही क्यों न कर लिया जाय।

१९. **अर्के चेन्मधु विन्देत किमर्थं पर्वतं व्रजेत्** = यदि अकौड़े में ही शहद मिलने लगे, तो फिर लोग शहद के लिये पर्वत पर जावें ही क्यों ?

२०. **अशिक्षित पटुत्वं हि नारीणां** = स्त्रियां स्वभाव से ही पटु होती हैं।

२१. **अतिपरिचयादवज्ञा सततगमनादनादरो भवति** = अधिक परिचय बढ़ जाने से एक दूसरे के प्रति उदासीनता का भाव और कहीं पर अधिक आने जाने से अनादर का भाव आने लगता है।

२२. **अतृणे पतितो वह्निः स्वयमेवोपशाम्यति** = घास-फूस न मिलने पर आग स्वयं ही शान्त हो जायगी।

२३. **अप्रकटीकृतशक्तिः शक्तोऽपि तिरस्क्रियते** = बिना अपने गुणों को प्रदर्शित किये किसी भी गुणी का मान नहीं होता।

२४. **अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः** = अप्रिय और हितकारी बात के कहने और सुनने वाले, दोनों ही मुश्किल से मिलते हैं।

२५. **अर्धमात्रालाघवेनापि पुत्रोत्सवं मन्यन्ते वैयाकरणाः** = सूत्र बनाते समय यदि किसी वैयाकरण ने आधी मात्रा भी बचा ली, तो उसे इतनी खुशी होती है। जितनी कि किसी को पुत्र जन्म पर हो सकती है।

२६. अलब्ध-शाणोत्कषणा नृपाणां न जातु मौलौ मणयो वसन्ति= बिना कसौटी पर रगड़ खाये मणि राजा के मस्तक पर नहीं चढ़ पाते ।

२७. अलोकसामान्यं अचिन्त्यहेतुकं द्विषन्तिमन्दाश्चरितं महात्मनाम्=मूर्ख लोग अकारण ही महात्माओं के असाधारण कर्मों से द्वेष करने लग जाते हैं ।

[आ]

२८. आतुरे नियमो नास्ति = घबड़ाहट में कानून नहीं सूझता ।

२९. आपातरम्याविषयाः पर्यन्तपरितापिनः = पहली जीत मँगावै भीख ।

३०. आमृत्योः सेव्यतां हरिः=मृत्युपर्यन्त भगवत् सेवा करनी चाहिये ।

३१. आखेटस्य तु वेलायां हवनं याति कुक्कुरी = शिकार के समय कुतिया हगासी ।

३२. आतुरे व्यसने दुर्भिक्षे यस्तिष्ठति स बान्धवः = बीमारी, मुसीबत और अकाल में जो साथ दे, वही सच्चा बान्धव है ।

३३. आपन्नार्तिप्रशमनफलाः सम्पदो ह्युत्तमानाम् = सत्पुरुषों की दौलत दुःखी लोगों की पीड़ा हरने के लिये ही होती है ।

३४. आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया = गुरुजनों की आज्ञा पर आगे-पीछे या सोचविचार न करना चाहिये ।

३५. आकण्ठजलमग्नोऽपि श्वा लिहत्येव जिह्वया = किसी की कोई आदत मरने तक नहीं छूटती ।

३६. आपदि स्फुरति प्रज्ञा यस्य धीरः स एव हि = मुसीबत के समय भी जिसकी बुद्धि काम दे उसी को धैर्यवान् कहना चाहिये ।

३७. आमुखापाति कल्याणं कार्यसिद्धिं हि शंसति = पहली-पहली सफलता यह सूचित करती है कि कार्य अवश्य ही पूरा होगा ।

३८. आवेष्टितो महासर्पैः चन्दनं किं विषायते=चन्दन, विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग ।

३९. **आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्** = आहार और व्यवहार में जो लज्जा नहीं करता वही सुखी रहता है।

४०. **आचारः परमो धर्मः** = शुद्ध आचरण ही सबसे बड़ा धर्म है।

[इ]

४१. **इह प्रेत्य च नारीणां पतिरेको गतिः सदा** = इस लोक और परलोक में पति ही स्त्री की गति होता है।

४२. **इन्द्रोऽपि लघुतां याति स्वयं प्रख्यापितैर्गुणैः** = अपने मुँह मियाँ-मिट्ठू बनने से बड़ों-बड़ों की इज्जत भी धूल में मिल जाती है।

[उ]

४३. **उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्** = उदार चरित मनुष्यों के लिये तो सारा संसार ही उनका अपना परिवार है।

४४. **उद्योगिनं पुरुष-सिंहमुपैति लक्ष्मीः** = उद्यमशीलमनुष्य ही श्रेष्ठ मनुष्य है और उसी को लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

४५. **उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः** = काम करने से ही काम पूरा होता है, केवल इच्छा करने से ही नहीं पूरा हो जाता।

४६. **उष्ट्रानां विवाहेषु गीतं गायन्ति गर्दभाः** = ऊँटों के विवाह में गधे गाते हैं; वे उनके रूप की तारीफ करते हैं और वे उनके स्वर की।

४७. **उर्वशी प्रत्यादेशः श्रियः** = उर्वशी तो लक्ष्मी से भी बढ़ कर है; धन के चोर तो कहीं-कहीं मिलते हैं लेकिन रूप के चोर सभी जगह मिल जाते हैं।

४८. **उपायं चिन्तयेत् प्राज्ञः तथा अपायश्च चिन्तयेत्** = बुद्धिमान् मनुष्य को चाहिये कि कोई तरकीब सोचने के साथ ही साथ उसके आगे-पीछे भी सोच लें।

४९. **उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये** = मूर्ख उपदेश सुन कर और भी अधिक भड़क उठते हैं।

५०. उष्णो दहति चाङ्गारः शीतः कृष्णायते करम् = अंगारा यदि गरम है तो हाथ जला देगा और बुझ कर ठंढा हो गया है तो हाथ काला कर देगा।

[ए]

५१. एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवांकः = गुणों की राशि में एक दोष उसी प्रकार छिप जाता है जिस प्रकार चन्द्रमा की किरणों के बीच उसका काला धब्बा छिप जाता है।

५२. एकः प्रजायते जन्तुः एक एव प्रलीयते = प्राणी अकेला ही पैदा होता और अकेला ही मर जाता है।

५३. कर्मणा बाध्यते बुद्धिः = काम से बुद्धि मारी जाती है।

५४. कालस्य कुटिला गतिः = समय की गति टेढ़ी होती है।

५५. किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् = सुन्दर चेहरे पर सभी कुछ सुन्दर लगता है।

५६. कीर्तिर्यस्य स जीवति = मनुष्य कीर्ति से ही जीवित रहता है।

५७. क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते = फल मिल जाने से क्लेश भूल जाता है और पुनः नवस्फूर्ति मिलती है।

५८. कृशे कस्यास्ति सौहृदम् = दीन का कोई मीत नहीं।

५९. कण्टकेनैव कण्टकम् = काँटे को काँटे से ही निकालना चाहिये।

६०. केतकी गन्धमाघ्राय स्वयं गच्छन्ति षट्पदाः = केतकी के फूल की सुगन्ध सूँघ कर भौंरे खुद चले आते हैं।

६१. को न याति वशं लोके मुखे पिण्डेन पूरितः = मुँह में लड्डू खिला कर दुनियाँ में हर किसी को वश में किया जा सकता है।

६२. किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या = कल्प वृक्ष के समान ही विद्या भी सब को सब कुछ दे सकती है।

६३. किं मिष्टमन्नं खरशूकराणाम् = गधों और सुअरों को मिठाई खिलाने से क्या लाभ? अर्थात्—भैंस के आगे बीन बजावे, भैंस खड़ी पगुराय।

६४. **कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु** = काम के वशीभूत मनुष्य जड़ और चेतन के भेद को बिल्कुल भूल जाता है।

६५. **कान्तोदन्तः सुहृदुपनतः संगमात्किंचिदूनः** = अपने प्रेमी के ही किसी मित्र द्वारा यदि उसका कोई सन्देश आदि मिल जाय तो वह प्रिय-समागम से कुछ ही कम आनन्ददायक होता है।

६६. **के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः** = बेकार का काम करने पर सभी को मुँह की खानी पड़ती है।

६७. **क्रियाणां खलु धर्म्याणां सत्पत्न्यः मूलकारणम्** = धार्मिक क्रियाओं की मूलप्रेरक पतिव्रता धर्मपत्नियाँ ही होती हैं।

६८. **कस्यैकान्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा** = न किसी को सदा सुख ही मिलता है और न किसी को सदा दुःख ही।

६९. **कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन** = कर्म करना हमारा धर्म है, उसके फल की चिन्ता हमें न करनी चाहिये।

७०. **कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति**=पुत्र भले ही कुपुत्र हो जाये, किन्तु माता कभी भी कुमाता नहीं हो सकती।

७१. **क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे** = महापुरुषों की सफलता उनके सत्व के कारण होती है, बाहरी उपकरणों की प्रचुरता के कारण नहीं।

७२. **कल्पवृक्षोऽपि अभव्यानां प्रायो याति पलाशताम्**=बदनसीबों के लिये तो कल्पवृक्ष भी पलाश का पेड बन जाता है।

७३. **कष्टं निर्धनिकस्य जीवितमहो दारैरपि त्यज्यते** = गरीब की जिन्दगी भी दो कौड़ी की है, क्योंकि गरीबी में बीबी भी कन्नी काट जाती है।

७४. **किञ्चित्कालोपभोग्यानि यौवनानि धनानि च** = धन और ज़वानी कुछ दिनों ही रहती है।

७५. **कुदेशेष्वपि जायन्ते क्वचित् केचिन्महाशयाः** = कभी-कभी गुदड़ी में भी लाल मिलते हैं।

७६. **को जानाति जनो जनार्दन-मनोवृत्तिः कदा कीदृशी** = कौन जाने ऊँट किस करवट बैठता है ?

७७. **को वा दुर्जनवागुरासु पतितः क्षेमेण यातः पुमान्** = काजल की कोठरी में घूस कर कौन अछूता बच सकता है ?

७८. **क्षणे रुष्टा क्षणे तुष्टा, रुष्टा-तुष्टा क्षणे-क्षणे** = मिनट भर में खुश; मिनट भर में खफ़ा ।

७९. **क्षणविध्वंसिनः कायाः का चिन्ता मरणे रणे** = जीवन क्षणिक है, इसलिये मौत का क्या डर ?

८०. **क्षणे-क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः** = असली सुन्दरता तो वही है, जो क्षण-क्षण में बदलती रहे ।

८१. **क्षारं पिबति पयोधेः वर्षत्यम्भोधरो मधुरम्भः** = सागर का खारा पानी पीकर भी बादल लोक-हित के लिये मधुर जल बरसाता है ।

८२. **काकोऽपि न किं कुरुते चंच्वा स्वोदरपूरणम्** = अपना पेट कौन नहीं भर लेता ।

[ख]

८३. **खलः सर्षपमात्राणि परच्छिद्राणि पश्यति** = दुष्ट लोग दूसरों के छोटे-से-छोटे दोष को भी देख लेते हैं ।

८४. **खलः सत्क्रियमाणोऽपि ददाति कलहं सताम्** = दुष्ट व्यक्ति का कितना ही आदर क्यों न करो, वह लड़ाई-झगड़े से बाज नहीं आता ।

८५. **खलः करोति दुर्वृत्तं नूनं फलति साधुषु** = बुरा काम करते हैं दुष्ट लोग, किन्तु भुगतना पड़ता है सज्जनों को ।

[ग]

८६. **गतं न शोचामि** = बीती ताहि बिसारि दे ।

८७. **गण्डूषजलमात्रेण शफरी फर्फरायते** = चुल्लू भर पानी में ही मछली फुदकने लगती है, अधजल गगरी छलकत जाय ।

८८. **गण्डस्योपरि पिटकः संवृत्तः** = कोढ़ के ऊपर खाज हुई।

८९. **गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः** = गुणियों के गुण की ही कदर होती है, उनके कुल या उनकी उम्र की नहीं।

९०. **गच्छ शूकर! भद्रं ते, ब्रूहि सिंहो मया जितः** = तू सूअर, मैं शेर। तुझसे क्या लड़ूँ! जा, तुझे छोड़ दिया। चला जा और जाकर अपने साथियों से कहना कि मैंने शेर को हरा दिया।

[च]

९१. **चक्रवत् परिवर्तन्ते सुखानि च दुःखानि च** = सुख और दुःख क्रमशः आते-जाते रहते हैं।

९२. **चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः** = भाग्य में उतार-चढ़ाव आया ही करता है।

९३. **चाण्डालोऽपि नरः पूज्यो यस्यास्ति विपुलं धनम्** = यदि पैसा है तो चाण्डाल का भी आदर किया जाता है।

[छ]

९४. **छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति** = मुसीबत अकेले नहीं आती।

[ज]

९५. **जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः** = जो पैदा हुआ वह मरेगा अवश्य।

९६. **जल बिन्दु निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः** = बूँद-बूँद करके घड़ा भर जाता है।

९७. **जानीयात् व्यसने मित्रम्** = मुसीबत मित्रों की कसौटी है।

९८. **जननीजन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी** = माँ और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़ कर हैं।

९९. **त्याज्यं न धैर्यं विधुरेपि काले** = मुसीबत के समय भी धीरज नहीं छोड़ना चाहिये।

१००. **तृषितो जाह्नवीतीरे कूपं खनति दुर्मतिः** = उसे मूर्ख नहीं तो फिर और क्या कहेंगे, जो प्यास लगने पर कुँआ खोदने का उपक्रम करता है और वह भी गंगा-किनारे।

१०१. **तस्य तदेव हि मधुरं यस्य मनो यत्र संलग्नम्** = मन लगा गधी से तो परी की ऐसी-तैसी।

[द]

१०२. **दारिद्र्यदोषो गुणराशिनाशी** = निर्धनता एक ऐसा दोष है जिससे हमारे गुण भी नष्ट हो जाते हैं।

१०३. **दुःखस्य अनन्तरं सुखम्** = दुःख के बाद सुख मिलता है।

१०४. **दुर्लक्ष्यचिह्ना हि महतां वृत्तिः** = बड़े लोगों के कामों से उनके मंसूबों की थाह लगाना कठिन है।

१०५. **दशाननोऽहरत् सीतां बन्धनं च महोदधेः** = सीता चुराई रावण ने, बाँधा गया गया बेचारा समुद्र—अर्थात् करे कोई और, भुगते कोई और।

१०६. **द्विषन्ति मन्दाश्चरितं महात्मनाम्** = ओछे लोग महात्माओं के कार्यों की निन्दा ही किया करते हैं।

१०७. **दुग्धं पश्यति मार्जारो न तथा लगुडाहतिम्** = 'दूध' के बारे में सोचते समय बिल्ली 'डण्डों की मार' के विषय में भूल जाती है। अर्थात् मनुष्य किसी काम के अच्छे पहलू को तो देख लेता है किन्तु उसके बुरे परिणाम की तरफ से आँखें फेर लेता है।

१०८. **दूरस्थोऽपि समीपस्थो यो यस्य हृदि विद्यते** = दूर होने पर भी प्रेमी की याद सदा पास रहती है।

१०९. **दर्दुरा यत्र वक्तारः तत्र मौनं हि शोभनम्**=जहाँ मेढक भाषण दे रहे हों, वहाँ चुप हो जाना ही ठीक है, अर्थात् मूर्खों की सभा में विद्वान् को न बोलना चाहिये।

११०. **दुग्धधौतोऽपि किं याति वायसः कलहंसताम्**=दूध से नहला करके भी कौवे को हंस नहीं बनाया जा सकता।

१११. **दैवे दुर्जनतां गते तृणमपि प्रायेण वज्रायते** = भाग्य ही खोटा होने पर तिनका भी वज्र बन जाता है।

[न]

११२. **न दुःखं पञ्चभिः सह** = दूसरों द्वारा बँटाया गया दुःख जान नहीं पडता ।

११३. **न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्** = रत्न ढूँढ़ता नहीं, बल्कि ढूंढ़ा जाता है ।

११४. **न वृथा शपथं कुर्यात्** = बेकार में कसम नहीं खाना चाहिये ।

११५. **न हि सुखं दुःखैविना लभ्यते** = जोखिम के बिना लाभ नहीं होता ।

११६. **न ह्यमूला जनश्रुतिः** = अफवाह के पीछे भी कुछ न कुछ सचाई होती ही है ।

११७. **न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः** = बिना हाथ चलाये तो कौर भी मुँह मे नहीं चला जाता ।

११८. **न हि कस्तूरिकामोदः शपथेन विभाव्यते** = कस्तूरी की सुगन्ध खाने से तो प्रमाणित नहीं हो जाती ।

११९. **निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते** = वृक्षरहित देश में एरण्ड भी वृक्ष बन जाता है, अर्थात् अन्धों में काना राजा ।

१२०. **न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः** = सेवकों को चाहिये कि अपने स्वामी से छल न करें ।

१२१. **नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमि क्रमेण** = जिस प्रकार पहिये के आरे ऊपर और नीचे क्रमशः आते-जाते रहते हैं, उसी प्रकार भाग्य की धूप-छाँह भी देखने को मिलती है ।

१२२. **न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते** = धर्म के मामलें में छोटा या बड़ापन नहीं देखा जाता ।

१२३. **नक्षत्रताराग्रहसंकुलापि ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रिः** = हजारों ही तारे क्यों न हों किन्तु चाँदनी रात तो चन्द्रमा के कारण ही सम्भव होती है ।

१२४. **न कामवृत्तिः वचनीयमीक्षते** = कामान्ध मनुष्य बदनामी की परवाह नहीं करता ।

१२५. **न हि सिद्धवाक्यानि अतिक्रम्य गच्छति विधिः** = सिद्ध पुरुषों के वाक्यों का उल्लंघन स्वयं भाग्य भी नहीं कर सकता। वे जो कहते हैं, वही होता है।

१२६. **न तु सद्योऽतिनीचस्य दृश्यते कर्मणः फलम्** = नीच कर्मों का फल भी तुरन्त नहीं मिलता।

१२७. **न जातु कामः कामानां उपभोगेन शाम्यति** = उपभोग करने से इच्छायें शान्त नहीं होतीं, बल्कि और भी बढ़ती हैं।

१२८. **नारिकेलसमाकारा दृश्यन्ते हि साधवः**=सज्जन लोग नारियल के समान ऊपर से कठोर किन्तु अन्दर से मृदु होते हैं।

१२९. **न भवति पुनरुक्तं भाषितं सज्जनानाम्**—सज्जन पुरुष अपनी बात से नहीं पलटते।

१३०. **न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः** = धीर-पुरुष न्याय के पथ से कभी नहीं हटते।

१३१. **न गृहं गृहमित्याहुः गृहिणी गृहमुच्यते** = गृहिणी के कारण ही घर की शोभा है।

१३२. **न विश्वसेत् अविश्वस्ते विश्वस्ते नातिविश्वसेत्** = अविश्वसनीय मनुष्य का विश्वास न करना चाहिये और जो विश्वसनीय भी हैं उनका भी बहुत विश्वास न करना चाहिये।

१३३. **न काचस्य कृते जातु युक्ता मुक्तामणेः क्षतिः** = कांच के लिये मुक्तामणि गँवाना ठीक नहीं।

१३४. **न खलु स उपरतो यस्य वल्लभो जनः स्मरति** = जिसकी याद लोग मरने के बाद भी करते हैं, वह मर कर भी नहीं मरता।

१३५. **न प्राणान्ते प्रकृतिविकृतिर्जायते चोत्तमानाम्** = उत्तम मनुष्यों का स्वभाव मरने तक नहीं बदलता।

१३६. **न सुवर्णे ध्वनिः तादृक् कांस्ये प्रजायते** = सोने में उतनी आवाज नहीं होती जितनी कि कांसे में अर्थात् नीच लोग बहुत बकवाद करते हैं।

१३७. **न स्पृशति पल्वलाम्भः पञ्जरशेषोऽपि कुञ्जरः क्वापि** = प्यास के मारे मरता हुआ भी हाथी कभी गड्ढे के पानी को नहीं पीता अर्थात् मानी मनुष्य अपना मान निभाने के लिये प्राण तक दे सकते हैं।

१३८. **नासमीक्ष्य परं स्थानं पूर्वमायतनं त्यजेत्** = अगला कदम जमा लेने पर पिछला कदम उठाना चाहिये।

१३९. **नीचो वदति न कुरुते, वदति न साधुः करोत्येव** = नीच लोग बकते बहुत हैं, किन्तु करते कुछ नहीं, जबकि उत्तम कोटि कहते कुछ नहीं, किन्तु कर दिखाते हैं।

१४०. **न केवलं यो महतोपभाषते, शृणोति तस्मादपि यः स पापभाक्** = महात्माओं की जो निन्दा करता है, वही नहीं, बल्कि जो सुनता है, उसे भी पाप लगता है।

१४१. **परोपकाराय सतां विभूतयः** = सज्जनों की सम्पति परोपकार के लिये ही होती है।

१४२. **पावको लोहसंगेन मुद्गरैरभिहन्यते** = लोहे की संगति के कारण अग्नि भी हथोड़े से पीटी जाती है, अर्थात्—गेहूँ के साथ घुन भी पिस जाता है।

१४३. **पर्वतखनने मूषकोपलब्धिः** = खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

१४४. **प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता** = स्त्री की सुन्दरता का फल यही है कि उससे उसका पति प्रसन्न हो जाय।

१४५. **प्रियालोकफलो हि वेशः** = स्त्रियों के शृंगारादि को सफल तभी समझो जबकि उसका पति एक बार देख अवश्य ले।

१४६. **परेङ्गितज्ञान फला हि बुद्धयः** = बुद्धि का फल यही है कि वह दूसरे के संकेत का आशय समझ ले।

१४७. **पुष्पं पुष्पं विचिन्वीत मूलच्छेदं न कारयेत्** = फूल-फूल चुन लेना चाहिये। उसकी जड़ नहीं काटनी चाहिये।

१४८. **प्रायेण श्रीमतां लोके भोक्तुं शक्तिर्न विद्यते** = धनी लोगों के मुकद्दर में कुछ खाना-पीना तो है ही नहीं, उन्होंने इधर-उधर की कोई चीज खाई नहीं कि दस्त चालू।

१४९. **परोपदेशे पाण्डित्यं सुकरम्** = पर उपदेश कुशल बहुतेरे ।

१५०. **प्रारब्धमुत्तमजनाः न परित्यजन्ति** = उत्तम कोटि के लोग अपने प्रारम्भ किये हुये कार्य को पूरा करके ही छोड़ते हैं ।

१५१. **प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति मानवाः** = प्रिय वचन बोलने से सभी सन्तुष्ट हो जाते हैं ।

१५२. **पयः पानं भुजंगानां केवलं विषवर्धनम्** = साँप को दूध पिलाने से तो उसका विष ही बढ़ता है ।

१५३. **परसदननिविष्टः को लघुत्वं न याति** = केहि की प्रभुता नहिं घटी पर घर गये रहीम ।

१५४. **परोपदेशवेलायां शिष्टाः सर्वे भवन्ति वै** = दूसरे को उपदेश देते समय सभी दूध के धोये बन जाते हैं ।

१५५. **पाणौ पयसा दग्धे तक्रं फूत्कृत्य पिबति पामरः** = दूध का जला मट्ठा फूंक-फूंक कर पीता है ।

१५६. **प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितः तत्रैव यान्त्यापदः** = जहाँ-जहाँ कबीरदास माठा को जायें, पड़वा भैंस दोनों मरि जायें ।

१५७. **प्रायः समापन्न विपत्तिकाले धियोऽपि पुंसा मलिनीभवन्ति**=मुसीबत आने पर मनुष्यों की मति भी मारी जाती है ।

[ब]

१५८. **बुभुक्षितः किं न करोति पापम्** = मरता क्या न करता ?

१५९. **बलीयसी केवलमीश्वरेच्छा** = ईश्वर का चाहा ही होता है ।

१६०. **बलवति सति देवे बन्धुभिः किं विधेयम्** = भाग्य के प्रबल होने पर बन्धु-बान्धव क्या बना विगाड़ सकते हैं ?

१६१. **बुभुक्षितं न प्रतिभाति किंचित्** = भूखे को कुछ नहीं सूझता ।

१६२. **बुद्धिर्यस्य बलं तस्य** = जिसके पास बुद्धि है, उसी के पास ताकत है ।

[भ]

१६३. **भिन्नरुचिर्हि लोकः** = संसार में अलग-अलग मनुष्यों की अलग-अलग रुचियाँ होती हैं ।

१६४. **भक्षितेऽपि लशुने शान्तो न व्याधिः** = लहसुन खा लेने पर भी रोग न गया।

१६५. **भोजनं कुरु दुर्बुद्धे मा शरीरे दयां कुरु** = शरीर जाय या बना रहे जब भी खाओ बढ़िया खाओ और जम कर खाओ।

१६६. **भवन्ति नम्रास्तरवः फलागमैः** = फलों से लद कर पेड़ झुक जाते हैं।

१६७. **भवितव्यतानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र** = होनहार के लिये सभी जगह द्वार खुल जाते हैं अर्थात् होनहार होकर रहती है।

१६८. **भूयोऽपि सिक्तः पयसा घृतेन न निम्ब वृक्षो मधुरत्वमेति** = निरन्तर घी-दूध से सींचने पर भी नीम का पेड़ कभी मीठा नहीं हो सकता, अर्थात् लाख उपकार करने पर भी दुष्ट मनुष्य अपकार करने से नहीं चूकता।

[म]

१६९. **मनोरथानां अगतिर्न विद्यते** = मन के लिये कोई अगम्य विषय नहीं है।

१७०. **मूढः परप्रत्ययनेय बुद्धिः** = मूर्ख मनुष्य बिना सोचे-समझे ही दूसरे की कही बात पर विश्वास कर लेता है।

१७१. **मधु तिष्ठति जिह्वाग्रे हृदि हालाहलं विषम्** = मुख में राम, बगल मे छुरी।

१७२. **मानो हि महतां धनम्** = मान ही महापुरुषों का धन हुआ करता है।

१७३. **महाजनो येन गतः स पन्थाः** = जो काम बड़े लोग करें, वही हमे भी करना चाहिये।

१७४. **मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्रः** = मन के सन्तुष्ट होने पर क्या धनी और क्या निर्धन ?

१७५. **मुखमस्तीति वक्तव्यं दशहस्ता हरीतकी** = मुँह हमारा है, हम कह सकते हैं कि हरें दस हाथ लम्बी होती है।

१७६. **मनुष्याः स्खलनशीलाः** = मनुष्य से भूल हो ही जाती है।

१७७. मेघालोके भवति सुखिनोऽप्यन्यथावृत्तिचेतः = बादलों को देख कर अच्छे-भले लोगों का मन भी मचलने लगता है।

१७८. मूर्खाः परिभवविधौ नाभिमानं त्यजन्ति = मूर्ख लोग अपमानित होकर भी अभिमान नहीं छोड़ते।

१७९. मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्याः = जिन्होंने मित्र के काम को पूरा करने का बीड़ा उठाया है, वे आलस नहीं किया करते।

१८०. मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयो = मनुष्यों के बन्धन और मोक्ष का कारण मन ही है।

१८१. मन्ये दुर्जनचित्तवृत्तिहरणे धातापि भग्नोद्यमः = दुष्टों के विचार बदलने में स्वयं ब्रह्मा भी समर्थ नहीं।

१८२. मातर्लक्ष्मि तव प्रसादवशतो दोषा अपि स्युर्गुणाः = हे लक्ष्मी मैया! तुम्हारी कृपा से दोष भी गुण बन जाते हैं।

१८३. मितं च सारं च वचो हि वाग्मिता = वाक्पटुता का अर्थ है कम और सारगर्भित बात कहना।

[य]

१८४. यस्तु क्रियावान् पुरुषः स एव = वही मनुष्य है जो कि कर्मठ हो।

१८५. येन साधारणी वृत्तिः स वै शत्रु इति स्मृतः = एक ही धन्धे के दो आदमियों में नहीं पटती।

१८६. यस्य कस्य प्रसूतोऽपि गुणवान् पूज्यते नरः = कुल की नहीं बल्कि गुण की पूजा होती है।

१८७. यत्राकृतिस्तत्र गुणा वसन्ति = सूरत अच्छी है, तो गुण अच्छे होंगे ही।

१८८. यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिवेत् = जब तक सुख से जिये, भले ही उधार घी पीना पड़े।

१८९. याञ्चा लाघवकारी = माँगने से मान घटता है।

१९०. **याञ्चा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा** = बड़े लोगों से की गई याचना यदि अपूर्ण रह जाय तो भी ठीक है; किन्तु नीच मनुष्य से की गई याचना सफल हो जाने पर भी ठीक नहीं।

१९१. **यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः** = जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ देवता भी प्रसन्न रहते हैं।

१९२. **यो अत्युन्नतः प्रपतीतिकिमत्र चित्रम्** = जो अधिक ऊँचाई पर चढ़ता है, वह गिरता ही है।

१९३. **यमस्तु प्राणान् हरति वैद्यः प्राणान् धनानि च** = यमराज तो केवल प्राण ही लेते हैं किन्तु वैद्य जी प्राण भी ले लेते हैं और धन भी।

१९४. **यत्र विद्वज्जनो नास्ति श्लाघ्यस्तत्राल्पधीरपि** = अन्धों में काना राजा।

१९५. **यद्धात्रा निजभालपट्टलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः** = विधि कर लिखा को मेटनहारा ?

१९६. **यद्यपि शुद्धं लोकविरुद्धं नाकरणीयं नाचरणीयम्** = यद्यपि कोई बात ठीक है किन्तु सारा समाज उसके विरोध में है, तो उस काम को न करना चाहिये।

१९७. **यादृशास्तन्तवः कामं तादृशो जायते पटः** = जैसा सूत होगा, वैसा ही कपड़ा बनेगा, अर्थात् जस बाप तस बेटा।

१९८. **यो यद्वपति बीजं लभते सोऽपि तत्फलम्** = जो दूसरों के लिये कुआँ खोदता है, वही उसमें गिरता है।

[र]

१९९. **रत्नं रत्नेन संगच्छते** = रत्न की शोभा रत्न से होती है।

२००. **रिक्तो सर्वो भवति हि पूर्णता गौरवाय** = जो निस्सार होता है उसमें सदा हल्कापन रहता है तथा जो सारवान् होता है, उसमें गुरुता होती है।

[ल]

२०१. **लभेत् वा प्रार्थयिता न वा श्रियं, श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत्** = हो सकता है कि जो लक्ष्मी चाहे, उसे वह न मिले, पर यह कैसे हो सकता है जिसे लक्ष्मी चाहे और वह उसे न मिले।

[व]

२०२. **विद्या धर्मेण शोभते** = विद्या की शोभा धर्म से होती है।

२०३. **विनाशकाले विपरीत बुद्धिः** = विनाश का समय आने पर बुद्धि भी पलट जाती है।

२०४. **विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः** = धीर पुरुष तो वे ही हैं जो कि विकार के विद्यमान रहने पर भी विचलित नहीं होते।

२०५. **विना पुरुषकारेण न च दैवं सुसिध्यति** = ईश्वर उन्हीं की सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं।

२०६. **विलम्बे कार्यहानिः स्यात्** = देर करने से गड़बड़ हो सकती है।

२०७. **विषकुम्भं पयोमुखम्** = मुख में राम बगल में छुरी।

२०८. **विषस्य विषमौषधम्** = जहर की दवा जहर।

२०९. **वीरभोग्या वसुन्धरा** = जाकी लाठी ताकी भैंस।

२१०. **वृद्धस्य वचनं ग्राह्यम्** = बड़े बूढ़ों की बात मान लेना चाहिये।

२११. **विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्** = विद्या रूपी धन सभी धनों से बड़ा है।

२१२. **वचस्तत्र प्रयोक्तव्यं यत्रोक्तं लभते फलम्** = बोलना वहीं मुनासिब है, जहाँ उसका कोई फल मिले।

२१३. **विक्रीयन्ते न घण्टाभिः गावः क्षीरविवर्जिताः** = बिना दूध की गायें घण्टा लटका कर नहीं बिकतीं।

२१४. **वरं मृत्युः न पुनरपमानः** = मौत अच्छी पर अपमान नहीं।

२१५. **वाचः कर्मातिरिच्यते** = वाणी से कर्म बड़ा होता है, अर्थात् कहने से कर दिखाना अधिक अच्छा होता है।

२१६. **विपादनीया हि सतामसाधवः** = सज्जनों को चाहिये कि वे सदा दुर्जनों को दबाते रहें।

२१७. **वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः** = महान् पुरुषों के साथ विरोध रखना भी अच्छा ही है (क्योंकि इसी बहाने अपना उद्धार होगा)।

२१८. **विषमप्यमृतं क्वचिद्भवेत् अमृतं वा विषमीश्वरेच्छया** = ईश्वर की इच्छा से कभी अमृत विष और कभी विष अमृत बन जाता है।

२१९. **विद्याविहीनः पशुः** = विद्या से हीन मनुष्य पशु के समान होता है।

२२०. **वरं भिक्षाशित्वं न च परधनास्वादनसुखं** = भीख माँगकर खा लेना ठीक है परन्तु हरामखोरी ठीक नहीं।

२२१. **विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुम् असाम्प्रतम्** = विष वृक्ष भी स्वयं लगा कर कभी नहीं काटना चाहिये।

२२२. **विगताश्रया न शोभन्ते पण्डिता वनिता लताः** = पण्डित, स्त्री और बेल ये किसी आश्रय के बिना शोभा नहीं पाते।

[श]

२२३. **शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्** = अपने शरीर की रक्षा करना पहला धर्म है।

२२४. **शीलं परं भूषणम्** = शील ही उत्तम आभूषण है।

२२५. **शठेशाठ्यं समाचरेत्** = जैसे को तैसा।

२२६. **शत्रोरपि गुणा वाच्याः** = शत्रु के गुण की भी प्रशंसा करनी चाहिये।

२२७. **शरीरं वा पातयेयं कार्यं वा साधयेयम्** = करो या मरो।

२२८. **श्रेयांसि बहुविघ्नानि** = अच्छे काम में अनेक अड़चनें पड़ती हैं।

२२९. **शूर्पवत् दोषमुत्सृज्य गुणान् गृह्णन्ति साधवः** = सार सार को गहि रहे, थोथा देय उड़ाय।

२३०. **शिरसि फणी दूरे तत्प्रतिकारः** = साँप है सर पर लेकिन इलाज दूर है।

२३१. **श्वा यदि क्रियते राजा स किं नाश्नाति उपानहम्** = कुत्ते को अगर राजा बना दो तो भी क्या वह जूते को नहीं फाड़ खाता ?

२३२. **श्वा भवत्यपकाराय लिहन्नपि दशन्नपि** = काटे-चाटे श्वान के दुहूँ भाँति विपरीत।

२३३. **शूरं कृतज्ञं दृढसौहृदं च लक्ष्मीः स्वयं याति निवासहेतोः** = शूर, कृतज्ञ और सच्ची मित्रता वालों को लक्ष्मी चुन लेती है और उन्हीं के पास रहती है।

२३४. **शत्रोरपि गुणा वाच्या दोषा वाच्या गुरोरपि** = शत्रु के भी गुणों की प्रशंसा करनी चाहिये और गुरु तक के दोषों की निन्दा करनी चाहिये।

२३५. **शान्तिखड्गः करे यस्य किं करिष्यति दुर्जनः** = जिसके हाथ में शान्ति रूपी तलवार है, दुष्ट से दुष्ट मनुष्य भी उसका क्या बिगाड़ सकता है।

[स]

२३६. **सम्पूर्णकुम्भो न करोति शब्दम्** = पूरा भरा हुआ घड़ा शब्द नहीं करता अर्थात् अधिक पढ़े-लिखे लोग गर्वयुक्त बातें नहीं करते।

२३७. **संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति** = अच्छी या बुरी संगति से ही अच्छाइयाँ या बुराइयाँ आती हैं।

२३८. **सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानम्** = सन्तोष ही मनुष्य का उत्तम धन है।

२३९. **सर्वमर्थेन सिध्यति** = पैसे से ही सब कुछ है।

२४०. **संहतिः कार्यसाधिका** = एकता में बल है।

२४१. **सर्वः कान्तं आत्मानं पश्यति** = अपने को सभी हसीन समझते हैं।

२४२. **सर्वः सर्वं न जानाति** = सभी को सभी कुछ नहीं आता।

२४३. **सर्वः स्वार्थं समीहते** = सभी स्वार्थी हैं।

२४४. **साहसे श्रीः प्रतिवसति** = लक्ष्मी साहसी लोगों की चेरी।

२४५. **सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते** = सोने में सभी गुण होते हैं।

२४६. **ससर्पे च गृहे वासो मृत्युरेव न संशयः** = साँप वाले घर में रहने से अवश्य ही मृत्यु होगी।

२४७. **सुतप्तमपि पानीयं शमयत्येव पावकम्** = पानी कितना ही गरम क्यों न हो, वह आग को ठंढा करेगा ही।

२४८. **स्वभावो दुरतिक्रमः** = आदत बदला नहीं करती।

२४९. **सदैव दशभिः पुत्रैः भारं वहति गर्दभी** = गधी दस पुत्रों के साथ-साथ ही बोझा ढोती है।

२५०. **स्निग्धजनसंविभक्तं दुःखं सह्यवेदनं भवति** = दुःख प्रेमीजनों में बंट कर हल्का हो जाता है।

२५१. **सदाभिमानैकधना हि मानिनः** = स्वाभिमानी मनुष्यों के लिये उनका स्वाभिमान ही एकमात्र धन है।

२५२. **सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्** = बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताय।

२५३. **स्त्रीणां आद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु** = स्त्रियों का यह स्वभाव होता है कि वे हावभाव से ही अपने राग का प्रदर्शन करती हैं, मुख से कुछ भी नहीं कहतीं।

२५४. **सतां संगतं साप्तपदीनमुच्यते**=सज्जनों की मित्रता सात शब्द बोलने या सात कदम साथ-साथ चलने से ही हो जाती है।

२५५. **सतां हि संदेहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः** = जहाँ कहीं कोई सन्देह की बात आ जाय, उस समय सज्जन लोग अपने अन्तःकरण के सुझाव को ही प्रमाण मानते हैं।

२५६. **स्त्रियश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं देवो न जानाति कुतो मनुष्यः** = स्त्रियों की लीला और मनुष्य के भाग्य को जब स्वयं ईश्वर ही नहीं जान सकता, तो फिर हम सबकी क्या बिसात है ?

२५७. **स तु भवति दरिद्रः यस्य तृष्णा विशाला** = अधिक धन के प्रति आसक्ति भी दरिद्रता का सूचक है।

२५८. **सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्** = सत्य बोलो, प्रिय बोलो, किन्तु अप्रिय सत्य मत बोलो।

२५९. **सर्वं परवशं दुःखं सर्वं आत्मवशं सुखम्** = परावलम्बन में दुःख और स्वावलम्बन में सुख मिलता है।

२६०. **सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः** = सभी प्राणी सुखी और नीरोग होवें।

२६१. **सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते** = इज्जत वाले के लिये तो बदनामी मौत से भी बढ़कर है।

२६२. **सन्दीप्ते भवने तु कूपखननं प्रत्युद्यमः कीदृशः** = अब तो घर में आग लग चुकी है, अब कुआं खोदने से क्या लाभ ?

२६३. **स्त्री पुंवच्च प्रभवति यदा तद्धि गेहं विनष्टम्** = जिस घर में स्त्री पुरुष की तरह अधिकार जमा ले; तो समझो कि वह घर चौपट हुआ।

२६४. **स्नापितोऽपि बहुशो नदीजलैर्गर्दभः किमु हयो भवेत्कचित्** = कई बार नदी के जल में नहला कर भी क्या गधे को घोड़ा बनाया जा सकता है ?

२६५. **स्वदेशजातस्य नरस्य नूनं गुणाधिकस्यापि भवेदवज्ञा** = घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सन्त, अर्थात् अपने देश में किसी भी गुणी का मान नहीं होता।

[ह]

२६६. **हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः** = सत्य कड़वा होता है।

२६७. **हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्** = सोने के बर्तन से सत्य का मुख ढका हुआ है, अर्थात् सोना सभी का मुंह बन्द कर देता है।

२६८. **ह्रदाः प्रसन्ना इव गूढनक्राः** = वैसे तो तालाब बड़ा सुन्दर है किन्तु उसमें छिपे हैं मगर, अर्थात् मुख में राम बगल में छूरी।

२६९. **हतविधिपरिपाकः केन वा लङ्घनीयः** = तकदीर का लिखा कौन मिटा सकता है ?

२७०. **हतविधिनिहितानां हा विचित्रो विपाकः** = तकदीर के मारों का बड़ा बुरा हाल होता है।

सप्तमोऽध्यायः

हिन्दी में प्रचलित कुछ अशुद्ध प्रयोग

१. (अशुद्ध) मैंने उसे **अनेकों** बार मना किया। (शुद्ध) मैंने उसे **अनेक** बार मना किया।

२. (अशुद्ध) **पूज्यनीय** पिता जी ! सादर प्रणाम। (शुद्ध) **पूज्य** पिता जी अथवा **पूजनीय** पिता जी ! सादर प्रणाम।

३. (अशुद्ध) कृपया, **उपरोक्त** बातों पर ध्यान दें। (शुद्ध) कृपया, **उपर्युक्त** बातों पर ध्यान दें।

४. (अशुद्ध) **श्रीमान्** ! सविनय निवेदन है कि—। (शुद्ध) **श्रीमन्** ! सविनय निवेदन है कि—।

५. (अशुद्ध) **श्रीमान** घनश्याम जी। (शुद्ध) **श्रीमान्** घनश्याम जी। इसी प्रकार—(अशुद्ध) **भगवान**, (शुद्ध) **भगवान्**।

६. (अशुद्ध) **श्रीयुत्** करपात्री जी महाराज। (शुद्ध) **श्रीयुत** करपात्री जी महाराज।

७. (अशुद्ध) **राज्यपरिषद**। (शुद्ध) **राज्यपरिषत्** या राज्यपरिषद्। इसी प्रकार—(अशुद्ध) **उपनिषद-ग्रन्थ**। (शुद्ध) **उपनिषद्-ग्रन्थ**। 'परिषत्' और 'उपनिषत्' दोनों स्त्रीलिंग शब्द हैं।

८. (अशुद्ध) यह **औषधि** (दवा के अर्थ में) गुणकारी है। (शुद्ध) यह **औषध** गुणकारी है। जड़ी-बूटी के अर्थ में 'औषधि' शब्द का प्रयोग किया जा सकता है।

९. शास्त्रविशेष के अर्थ में **'ज्योतिष'** या **'ज्योतिष्'** शब्द अशुद्ध हैं। शुद्ध शब्द है **'ज्यौतिष'**। ज्योतिःशास्त्र' का प्रवेश भी तदर्थ में किया जा सकता है।

१०. (अशुद्ध) मैं **दुविधा** में पड़ा हूँ कि जाऊँ या न जाऊँ। (शुद्ध) मैं **द्विविधा** में पड़ा हूँ कि—।

११. आत्मा, अग्नि और व्याकरण ये तीनों ही शब्द हिन्दी में स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं। यथा—उसकी आत्मा निर्मल है, अग्नि भड़क उठी तथा व्याकरण बड़ी कठिन है। ऐसे प्रयोग अशुद्ध हैं। ये तीनों ही शब्द पुल्लिग हैं।

१२. (अशुद्ध) हम यहाँ किसलिये **एकत्रित** हुये हैं? (शुद्ध) हम यहाँ किसलिये **एकत्र** हुये हैं?

१३. (अशुद्ध) आजकल **क्षात्र** (विद्यार्थी अर्थ में) बड़े उद्दण्ड हो गये हैं। (शुद्ध) आजकल **छात्र** बड़े उद्दण्ड—। 'क्षात्र' का अर्थ 'क्षत्रिय-सम्बन्धी' होता है। यथा—क्षात्र-धर्म (=क्षत्रिय का धर्म)।

१४. (अशुद्ध) उस पर **आपत्ति** आ पड़ी है। (शुद्ध) उस पर **विपत्ति** या **आपत्** आ पड़ी है। 'आपत्ति' का अर्थ 'एतराज' होता है। किन्तु कुछ शब्दकोशों में 'आपत्ति' शब्द को भी विपत्तिवाची बतलाया गया है।

१५. प्रायः लोग संस्कृत के कतिपय शब्दों में प्राप्य अन्त्य मकार के प्रयोग से भ्रान्त होकर 'पञ्चम्, सप्तम्, अष्टम्, नवम् और दशम्' का प्रयोग करते देखे जाते हैं। यह अशुद्ध है। शुद्ध रूप है 'पञ्चम, सप्तम, अष्टम, नवम और दशम'।

१६. (अशुद्ध) सभा की **कारवाई** या **कार्यवाई** प्रारम्भ हुई। (शुद्ध) सभा की **कार्यवाही** प्रारम्भ हुई।

१७. (अशुद्ध) वियतनाम-युद्ध **अन्तर्राष्ट्रीय** विवाद का विषय बन गया है। (शुद्ध) वियतनाम-युद्ध **अन्ताराष्ट्रिय** विवाद—।

१८. (अशुद्ध) यह कह कर ब्रह्मा जी **अन्तर्ध्यान** हो गये। (शुद्ध) यह कह कर ब्रह्मा जी **अन्तर्धान** हो गये।

१९. प्रायः प्रचलित उच्चारण के आधार पर लोग 'ब्रम्हा, ब्राम्हण' आदि शब्द लिख देते हैं जो अशुद्ध है। शुद्ध रूप 'ब्रह्मा, ब्राह्मण' आदि है।

२०. (अशुद्ध) उसकी **दिनोदिन** या **दिनप्रतिदिन** उन्नति होती गई। (शब्द) उसकी **दिनानुदिन** (= दिन-अनु-दिन) उन्नति होती गई। 'वह **प्रतिदिन** सूर्य को प्रणाम करता है' यह प्रयोग शुद्ध है।

२१. हम 'ज्ञान' आदि में स्थित 'ज्ञ' को 'ग्यँ'—कुछ इस प्रकार उच्चारित करते हैं जब कि यह 'ज्' और 'ञ' (= ज्+ञ्+अ) का मिश्रित रूप है।

२२. (अशुद्ध) सोने-चाँदी की **विश्वासनीय** दूकान। (शुद्ध) सोने-चाँदी की **विश्वसनीय** दूकान।

२३. (अशुद्ध) **पक्षीराज** जटायु। (शुद्ध) **पक्षिराज** जटायु।

२४. (अशुद्ध) दुख, (शुद्ध) दुःख।



खण्ड ३

रचना

[निबन्ध और पत्र-लेखन]



[क] निबन्ध

निबन्ध—नि (भली प्रकार) + बन्ध् (बांधना)। किसी विषय पर सुन्दर गठा हुआ सुव्यवस्थित लेख निबन्ध कहलाता है।

निबन्धों के प्रकार—

१. **वर्णन-प्रधान**—किसी मेले का वर्णन, किसी उत्सव की विधि आदि का वर्णन, किसी सुरम्य स्थान का वर्णन, किसी दृश्य का वर्णन, किसी यात्रा का वर्णन।

२. **चरित-प्रधान**—किसी धार्मिक नेता, राजनीतिक नेता, साहित्यस्रष्टा आदि के जीवन की विविध घटनाओं पर प्रकाश डालना और उसके कृत्यों की समालोचना करना।

३. **साहित्यिक**—साहित्य के किसी ग्रन्थ पर, साहित्यकार की सामान्य कृतियों पर, साहित्य की किसी धारा के इतिहास पर, साहित्य सम्बन्धी मान्य परम्पराओं में से किसी एक राह पर और इसी प्रकार अन्य विषयों पर भी निबन्ध लिखे जाते हैं।

४. **भावात्मक**—कुछ निबन्ध ऐसे भी होते हैं जिनमें भाव और विचारों की ही प्रधानता रहती है। यथा—आत्मा का आवागमन, मोक्ष, आस्तिक-नास्तिक वाद आदि, प्रेम, ईर्ष्या, कलह, विराग आदि अनेक विषय।

५. **समस्या-प्रधान**—सामयिक समस्याओं पर लिखे गये निबन्धों का भी अपना विशेष महत्त्व है। यथा—निर्धनता, निष्कर्मण्यता, साम्प्रदायिकता, सामाजिक बन्धन, शिक्षा-चिकित्सा आदि।

६. **उपदेश-प्रधान**—ऐसे निबन्धों की संख्या बहुत है। बच्चों और सामान्य विद्यार्थियों के लिये इनका विशेष महत्त्व है, क्योंकि इनके उनके चरित्र-निर्माण के लिये पर्याप्त प्रेरणा मिलती है। यथा—परोपकार, अहिंसा, सेवा, देश-प्रेम, सत्संगति, उद्योग, धैर्य आदि।

७. **विज्ञान-सम्बन्धी**—विज्ञान के विविध चमत्कार, उनसे प्राप्त सुख-सुविधायें, हानि आदि पर विचार आदि ।

८. **विविध**—ऊपर बताये गये विषयों के अतिरिक्त भी अनेक विषयों पर निबन्ध लिखे जा सकते हैं। यथा—किसी व्यक्ति, किसी परम्परा, किसी वाद, किसी गीत आदि पर व्यंग्य, बच्चों के लालन-पालन सम्बन्धी, गर्भरक्षा आदि, बागवानी, मनबहलाव के साधन, इतिहास या किसी के जीवन की कोई घटना आदि ।

निबन्ध-कला

प्रायः देखा जाता है कि विद्यार्थी अपने निबन्धों में सन्तुलन नहीं रख पाते। अनावश्यक प्रसंगों को खूब बढ़ा कर लिख डालने में और फिर समयाभाव आदि के कारण आवश्यक प्रसंगों को भी छोड़ देते हैं या फिर अत्यन्त संक्षेप कर देते हैं। इस प्रकार निबन्ध सुन्दर नहीं बन पड़ता। अस्तु भली प्रकार विचार करके ही यदीप्सित रूप से कलम चलानी चाहिये। निबन्ध कोई उपन्यास नहीं कि लिखते ही चले जाओ, कविता नहीं कि बहक जाओ, फिलासफी नहीं कि उलझ जाओ।

निबन्ध-लेखन विधि—

१. निबन्ध प्रारम्भ करने के पूर्व सबसे पहले भूमिका लिखो। यह संक्षिप्त होनी चाहिये। संक्षिप्त होने के साथ ही इतनी स्पष्टता भी होनी चाहिये कि इस बात की सूचना मिल जाय कि अमुक विषय पर अमुक प्रकार से निबन्ध लिखा जायगा। यथा—महाकवि कालिदास पर निबन्ध लिखने के पूर्व इस प्रकार भूमिका बाँधो—"अपारे काव्यसंसारे कविः एकः प्रजापतिः। तस्मै यथा रोचते तथैव विश्वं रचयति। अस्माकं देशे अनेके महाकवयः प्रादुरभवन्। तेषु बाल्मीकिः आदिकविः अभूत्। द्वितीयश्च कालिदासः देशप्रसिद्धो महाकविः अभूत्। यस्य काव्यानां तुलनायां लोकस्य कानिचिदपि काव्यानि समानानि न भवन्ति।'

२. इसके पश्चात् प्रस्तुत विषय पर सम्पूर्णता से दृष्टिनिक्षेप करके उसका सम्यक् विभाजन कर लेना चाहिये। किसी विषय पर जितनी भी

सम्भव बातें लिखी जा सकती हैं, उन सब का वर्गीकरण करके प्रमुख शीर्षक बना लेना चाहिये। कोई शीर्षक इतना बड़ा न हो कि उस पर चार पृष्ठ लिख डाला जाय और उसकी तुलना में दूसरे शीर्षक पर आधा पृष्ठ भी न लिखा जा सके।

३. अब एक-एक शीर्षक को लीजिये और उससे सम्बन्धित बातों को लिखते जाइये। ऐसा न हो कि लिखने की झोंक में 'सिर कहाँ और पैर कहाँ' इस बात तक की सुध न रहे।

४. निबन्ध के ताने-बाने को फैलाते समय यह न भूल जाना चाहिये कि उन फैले हुये तन्तुओं को समेटना भी है। निबन्ध जब अपने चरम बिन्दु पर पहुँच जाय तो धीरे-धीरे उतार की दिशा में सचेष्ट हो जाना चाहिये। अन्यथा निबन्ध अनावश्यक रूप में बढ़ता चला जायगा।

५. अन्त में उपसंहृति संक्षेप में लिखनी चाहिये। इस स्थल पर हो सके तो ऊपर कही हुई सभी बातों को सूत्ररूपेण दोहरा देना असंगत न होगा। उसके बाद समाप्तिसूचक कुछ वाक्यों में अपने सम्पूर्ण कथन का निष्कर्ष देकर उपसंहार पूरा कर देना चाहिये। उपसंहार लिखते समय इस बात का ध्यान रहे कि उसे पढ़ने वाले पूर्ण रूप से सन्तुष्ट हो जायँ। उनके तोष और विश्वास में ही निबन्ध की कुशलता निहित है।

अच्छे अंक प्राप्त करने की युक्तियाँ—

१. भाषा कोमल और सुन्दर प्रवाहयुक्त होनी चाहिये।

२. शब्दों की सुन्दरता के साथ ही भावों की सुन्दरता भी हो। भावों की स्पष्टता भी नितान्त आवश्यक है।

३. जो भी लिखा जाय, वह सत्य की नींव पर। हो सके तो अपने कथन की पुष्टि में कोई उद्धरण या सुभाषित पद या उक्ति आदि भी देवें। इस प्रकार पढ़ने वाले पर अच्छा प्रभाव पड़ता है।

४. जहाँ तक हो सके अलंकारों के चक्कर में न पड़ना चाहिये; क्योंकि उनके कारण अस्पृष्टता और दुरूहता आती है।

५. व्यञ्जना और लक्षणा नाम की शब्द और अर्थशक्तियाँ भी निबन्ध की दृष्टि से अनुपादेय-सी हैं। निबन्ध में तो अभिधा शक्ति का ही आश्रय

लेना चाहिये। ताकि जो कुछ कहा या लिखा जाय, उसका वही अर्थ हो, तदन्य कोई अर्थ न निकले। अन्यथा पढ़ने वाले को समझने में कठिनाई होगी।

६. भाषा को कसने के लिये यथासम्भव सन्धि और समास का भी प्रयोग करना चाहिये। किन्तु इनका इतना अधिक प्रयोग न हो कि उच्चारण में, विग्रह करने में या समझने में कठिनाई पड़े।

७. शीर्षकों का चुनाव भी परमावश्यक है। जहाँ जो पाया, उसे वहीं घुसेड़ दिया। जहाँ मस्तिष्क में जो बात आई, उसे वहीं जड़ दिया। इस प्रकार किसी विषय का सम्यक् प्रतिपादन न हो सकेगा, क्योंकि इस प्रकार विषय का एक स्पष्ट चित्र आँखों के समक्ष नहीं खिंच पाता। कञ्जड़ों की तरह इधर-उधर सामान बिखराना ठीक नहीं। किन्तु प्रस्तुत विषय सामग्री को बड़े पूर्ण ढंग से सजा कर प्रस्तुत करना चाहिये।

८. जहाँ तक हो सके व्याकरण की अशुद्धियाँ न आ पावे, अन्यथा प्रथम तो यह समझने में ही दिक्कत होगी कि आप कहना क्या चाहते हैं और फिर विरसता भी आ जाने की सम्भावना है।

९. इस बात का भी ध्यान रहे कि जो कुछ हम लिख रहे हैं, उससे हमारी संस्कृति और मर्यादा आदि का उल्लंघन न होने पावे। अन्यथा प्रशंसा के स्थान पर वचनीयता ही पल्ले पड़ेगी।

१०. विद्यार्थियों का सामान्य ज्ञान इतना परिवर्धित होना चाहिये कि पहले से तैयारी किये बिना भी वे किसी विषय पर निबन्ध लिख सकें। सामान्य ज्ञान अच्छा होने पर विद्यार्थी किसी विषय पर निबन्ध लिखते समय प्रसंग वश कोई मार्के की बाहरी बात कह कर परीक्षक आदि को प्रभावित और चमत्कृत कर सकता है। यथा—कालिदास पर कुछ लिखते समय अंग्रेजी के कवि शेक्सपियर आदि के संगत प्रसंगों का उल्लेख।

११. परीक्षक विद्यार्थी के स्वतन्त्र चिन्तन से सर्वाधिक प्रभावित होता है। इसलिये इस विषय पर कौन क्या कह गया है या किसने क्या लिखा है—इस पचड़े को छोड़ कर अपने स्वतन्त्र चिन्तन के बल पर लिखना चाहिये।

१२. **अन्य बातें**—इसके अतिरिक्त अन्य सामान्य बातों का ध्यान भी रखना चाहिये। जैसे—

(i) निबन्ध न बहुत बड़ा हो, न बहुत छोटा।

(ii) प्रायः ऐसा निबन्ध लिखने में कम अंक मिलते हैं जिसे अधिकतर विद्यार्थियों ने लिखा हो। इसलिये लिखने के लिये दिये गये निबन्धों में ऐसे निबन्ध का चुनाव करना चाहिये जिसे बहुत विद्यार्थी न लिखेंगे—ऐसी सम्भावना हो।

(iii) जो भी लिखिये शुद्ध लिखिये। वर्ण आदि की अशुद्धियाँ न हो पावें।

(vi) एक ही बात को बार-बार दोहरा कर पिष्टपेषण न करना चाहिये।

(v) हस्तलेख सुन्दर और सुस्पष्ट हो।—आदि।

(vi) निबन्ध को शीर्षकों में बाँट कर लिखें।

(vii) यत्र-तत्र प्रासंगिक उद्धरण अवश्य दें।

कुछ निबन्ध

१. गौः

[गो-पालनम् ; गो-सेवा]

संसारेऽस्मिन् बहवः पशवः सन्ति। तेषु केचित् अरण्यचराः केचित् ग्राम्याः पाल्याः च सन्ति। स्वोपकारिणः पशून् जनाः परिपालयन्ति। तेषां सर्वेषां मध्ये गवां महत्त्वपूर्णं स्थानम् अस्ति। गौः अस्मभ्यं दुग्धं ददाति, येन अस्माकं शरीरं पुष्टं भवति। कृषिप्रधाने भारतदेशे गवां अमितं महत्वम् अस्ति। गौः कृषिकरणाय वृषभं ददाति। तस्याः गोमयेन उर्वरकं संजायते, येन अधिकतरं अन्नोत्पादनं भवति।

गवां दुग्धं, मल-मूत्रं, चर्मं, शृङ्गं, शफं अस्थि च सर्वाणि एव मानवोपकारकाणि सन्ति। अत एव देशे विदेशे च गावः परिपाल्यन्ते। अस्माकं देशे 'गौरस्माकं माता', 'गोसेवया पुण्यो भवति', 'गोसंवर्धनं अस्माकं धर्मः' चेति धारणा बद्धमूला वर्तते।

अत एव अस्माभिः गौः यत्नेन परिपालनीया, रक्षणीया, संवर्धनीया च।
उक्तं च—गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे सर्वतः सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

२. अस्माकं विद्यालयः

विद्यायाः आलयः विद्यालयः। यत्र विद्या अधिगम्यते, शिक्षा च दीयते, अस्माकं सर्वांगीणविकासाय सुनिश्चित-पाठ्यक्रमानुसारं विविध-पाठ्यग्रन्थाः च पाठ्यन्ते, स विद्यालयः।

भारतदेशे अनेके लघुतराः सुदीर्घतराः च विद्यालयाः सन्ति। अस्माकं विद्यालयः नातिलघुतरः नापि च दीर्घतरः। 'गुरुनारायण खत्री इण्टर कालेज, कानपुर' इति अस्माकं विद्यालयस्य नाम। अत्र शिक्षकाः अस्माकं स्नेहेन पाठयन्ति। अन्येऽपि कर्मचारिणः सौम्याः सुसंस्कृताः च सन्ति। हरद्वारी लाल टण्डनः अस्माकं प्रधानाचार्यः। सः परमयोग्यः प्रशासन-कुशलः चास्ति।

अस्माकं विद्यालयस्य भवनं अतिमनोहरं, उद्यानं रमणीयं, क्रीडास्थलं च प्रशस्तं अस्ति। चिकित्सा-कक्षं, पुस्तकालयः, छात्रावासः इति बहुविध-सुविधासम्पन्नः अस्माकं विद्यालयः नगरेऽस्मिन् सर्वैः एव प्रशंस्यते।

अस्माकं विद्यालयस्य छात्राः अध्ययनशीलाः, क्रीडाकुशलाः, अनुशासन-प्रियाः, सदाचारिणः, विनयव्यवहारशालिनः च सन्ति। एतत् सर्वं अस्माकं शिक्षकानां प्रभावः। तेऽपि सर्वथा आदर्शभूताः सन्ति। एतादृशस्य विद्यालयस्य छात्रत्वेन वयं गर्वानुभवं कुर्मः।

३. आदर्शभूतः अध्यापकः

यः अस्मान् अध्यापयति ज्ञानं च ददाति सः अध्यापकः इति कथ्यते। अध्यापकः अस्मान् अज्ञानं दूरीकरोति ज्ञानस्य प्रकाशं च ददाति। अत एव सः पूजार्हः भवति।

अस्माकं विद्यालये पञ्चपञ्चाशत् अध्यापकाः सन्ति। सर्वेऽपि सुयोग्य-तराः, शिक्षणकुशलाः, व्यवहारविदः च सन्ति। किन्तु तेषां मध्ये एकः श्रीवन्दकुमार वाजपेयी इति नामधेयः गणिताध्यापकः अस्माकं आदर्शभूतः।

सः गौरवर्णः, विनीतवेशधारी, सौम्यः, प्रकृतिमधुर, सुयोग्यः अध्यापनकुशलः चास्ति। सः अस्मान् पुत्रवत् स्नेहेन पाठयति। सः पाठनावसरे कदाचिदपि क्रुद्धो रुष्टो वा न भवति। तस्य पाठन-शैली अतीव शोभना, हृदयग्राहिका चास्ति। गणितसदृशो विषयः तस्य स्फुटेषु शब्देषु प्रस्फुटीभवति, सद्यः एव हृदयंगमोऽपि जायते। सः अस्माकं स्खलितानि परमस्नेहेन स्मितपूर्वकं च शोधयति। तस्य मधुरव्यवहारेण सरलया पाठनशैल्या च अस्माकं उत्साहो वर्धते। सः नित्यमेव परिश्रमपूर्वकं गणिताभ्यासं कारयति। तत्कारणात् वयमपि गणिते, कुशलाः संजाताः स्मः।

सर्वेऽपि तस्य विद्यार्थिनः तं पितरं इव पूजयन्ति, देवं इव मन्यन्ते। सौभाग्येन एव ईदृशस्य अध्यापकस्य प्राप्तिर्भवति। निम्नस्थे पद्ये एतादृशस्य एव गुरुवर्यस्य प्रशंसा कृता इव—

> गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
> गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

४. छात्र-जीवनम्

जन्मनः पञ्चमे सप्तमे वा वर्षे प्रायः विद्यारम्भः क्रियते। ततः प्रायशः चतुर्दश-षोडश वा वर्षपर्यन्तं विद्याध्ययनं क्रियते। जीवने अवधिरियं छात्र-जीवनं इति कथ्यते। इयं कालावधिः अस्माकं भाविजीवनस्य आधारशिलात्वेन विद्यते।

छात्र-जीवने अस्माभिः पूर्णनिष्ठया विद्याध्ययनं ज्ञानार्जनं च कार्यम्। येन सुयोग्यतां अधिगम्य जीवनयात्रायां वयं उन्नतिशालिनः सुखिनः च भवेम। इयं कालावधिः तपस्याकल्पा वर्तते। नात्र प्रमादः आलस्यं वा कार्यम्। सुखाभिलाषां परित्यज्य वयं अस्मिन् काले अन्वर्थतः विद्यार्थिनः भवेम।

छात्र-जीवनं प्रकारान्तरेण सुखकरं भव भवति। मातापित्रोः आश्रये वसन्तो वयं सर्वविधचिन्ताविनिर्मुक्ताः स्मः। सर्वे एव अस्माकं गुरुजनाः भ्रातृ-भगिनी-पितृव्यादयः अपि अस्मासु स्निह्यन्ति। तथापि वयं परिश्रमेण एव विद्यार्जनं कुर्याम। लालन-पालने स्नेहाधिक्यात् कालातिपातः नोचितः। विद्यार्थिभिः किं करणीयं, किं न करणीयं इति निम्नस्थे पद्ये सम्यक् उप-

लक्षितम् । उक्तं च—

काकचेष्टा बकध्यानं श्वाननिद्रा तथैव च ।
अल्पाहारी गृहत्यागी विद्यार्थिनः पञ्चलक्षणम् ॥

५. विद्या

ज्ञानार्थकाद् विद् धातोः विद्याशब्दः निष्पन्नः । यस्य कस्यचिदपि पदार्थस्य सम्यग् ज्ञानं विद्येति कथ्यते । विद्ययैव कर्त्तव्याकर्त्तव्ययोः, पापपुण्ययोः, पथ्यापथ्ययोश्च परिज्ञानं क्रियते । विद्याविहीनः नरः कर्त्तव्याकर्त्तव्यस्य अज्ञानात् पशुवत् आचरणं करोति । सः आहार-निद्रा-भय-मैथुनादिकं एव जीवनस्य सर्वस्वं मन्यते । अत एवोच्यते—'विद्याहीनः पशुः ।'

विद्या किमपि अपूर्वं धनमिव विद्यते । अन्यानि धनानि सञ्चयाद् वर्धन्ते, व्ययेन क्षीणतां यान्ति । किन्तु विद्याधनस्य इदं किमपि वैशिष्टयं यदिदं सञ्चयात् नाशमायाति, मुहुर्मुहुर्व्ययादपि वर्धते एव । उक्तं च—

अपूर्वः कोपि कोशोऽयं विद्यते तव भारति ।
व्ययतो वृद्धिमायाति क्षयमायाति सञ्चयात् ॥

अत एव 'विद्याधनं सर्वधनप्रधानं' इति यदुक्तं तत्सत्यमेव ।

विद्ययैव मनुष्यः सर्वत्र सर्वदा वा प्रतिष्ठां प्राप्नोति । विद्याबलेन एव जगदीशवसु-वेङ्कटेशरमण-रवीन्द्रनाथठक्कुर-हरगोविन्दखुरानाप्रभृतयः जगत्प्रसिद्धाः संजाताः । प्रायस्तु राजानः अपि विद्वज्जनानां पुरस्तात् नतमस्तकाः भवन्ति । अत एवोक्तम्—

विद्वत्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन ।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥

विद्या परमश्रेयस्करी विद्यते । सा विदेशे बन्धुवत् सहायतां करोति । सा माता इव रक्षां करोति, पिता इव हितकर्मणि नियुङ्क्ते, कान्ता इव—मानसिकं खेदमपनीय मनोरंजनं करोति । विद्यया लक्ष्म्याः अपि प्राप्तिर्भवति । विद्या अस्माकं कीर्ति दिक्षु विस्तारयति । अत एव कल्पलता इव विद्या अस्माकं सर्वार्थसाधिका विद्यते ।

पुरुषार्थचतुष्टयस्य प्राप्तिरपि विद्ययैव सम्भवति । विद्यया विनयो जायते, विनयेन योग्यता समायाति, योग्यतया धनं प्राप्यते, धनाद् दानं क्रियते इच्छाः च पूर्यन्ते, दानेन पुण्यो भवति, पुण्येन धर्मः संचीयते, धर्माद् हि मोक्षः प्राप्यते । उक्तं च—

विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम् ।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद्धर्मः ततः सुखम् ॥

विद्यासम्बन्धीनि कतिपयप्रशंसोक्तिविशेषानि अत्र प्रस्तूयन्ते—

१. न चौरहार्यं न च राजहार्यं
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि ।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् ॥

२. विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं, प्रच्छन्नगुप्तं धनम् ।
विद्या भोग्यकरी, यशः सुखकरी विद्यागुरूणां गुरुः ॥
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने, विद्यापरा देवता ।
विद्या राजसु पूजिता न तु धनं, विद्याविहीनः पशुः ॥

३. जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति ।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं
किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या ॥

४. नक्षत्रभूषणं चन्द्रः नराणां भूषणं गुणः ।
पृथ्वीभूषणं राजा, विद्या सर्वस्य भूषणम् ॥

५. माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः ।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा ॥

६. रूपयौवनसम्पन्ना विशालकुलसम्भवाः ।
विद्याहीनाः न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः ॥

७. मातेव रक्षति पितेव हिते नियुंक्ते
कान्तेव चाभिरमयत्यपनीय खेदम् ।
लक्ष्मीं तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्तिं
किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या ॥

८. वसुमती पतिना नु सरस्वती
बलवता रिपुणामपि न नीयते।
समविभागहरैर्न विभज्यते
विबुधबोधबुधैरपि सेव्यते॥

९. विद्याधनं श्रेष्ठधनं, तन्मूलमितरद्धनम्।
दानेन वर्धते नित्यं, न भाराय च नीयते॥

१०. धनं धनं नैव मतो बुधानां
विद्यैव वित्तं मतमस्ति तेषाम्।
चौरो न यां चोरयितुं समर्थो
भूपोऽपहर्तुं न च यां समर्थः॥

६. गंगानदी

गंगानदी हिमालयपर्वतात् निस्सरति हिन्दमहासागरस्यैकभागे च पतति। अनया नद्या उत्तरप्रदेशीयाः बिहारप्रदेशीयाः बंगप्रदेशीयाश्च जनाः अधिकतरं प्रभाविताः सन्ति। अनया आनीतेन बालुकासंचयेन निर्मितो भूभागः अधिकाधिकः अन्नोत्पादकः वर्तते। अस्याः समुत्थितैः कुसरित्प्रणालादिभिः क्षेत्राणि सिच्यन्ते। अस्याः जलराशिसमुत्पन्ना विद्युत् बहुविधोपयोगिनी विद्यते। अस्याः जलराशौ नौकाः अपि सञ्चार्यन्ते।

गंगानदी-विषयकाः अनेकाः कथाः प्रचलिताः सन्ति। श्रूयते यत् सा विष्णोः पदनखभागाद् निस्सृता। तां स्वकमण्डलौ निधाय ब्रह्मा परमां मुदं आप्तवान्, किन्तु पश्चाद् भगीरथेन विहितात् तपश्चरणात् प्रसन्नो भूत्वा सः तां अवनितले प्रवहितुं मुमोच। स्वर्लोकात्पतन्तीं तां कैलासी शिवशङ्करः स्वजटाजूटपाशे धृतवान्। तस्मात् स्थानादपि विनिर्मुक्ता सा भगीरथस्य रथमनुगच्छन्ती, सगरतनयान् उद्धरन्ती, जह्नुमहर्षेः पूजनपात्राणि स्वजलेन वहन्ती, प्रयागनगरे प्रियया भगिन्या यमुनया सङ्गच्छन्ती, शिवपुरीं काशीनगरीं आश्लेषयन्ती पत्तननगरं (=पटना) च स्पृशन्ती वंगभूमिं सम्यग् अभिसिञ्च्य स्वप्रणयिनः सागरस्य उत्सङ्गे आपतति।

गंगानद्यां स्वजलराशिं अवमुच्य विविधाः सरिद्वराः नूनं तज्जलं न्यासीकुर्वन्ति इव। गंगायाः जले एकं अलौकिकं वैशिष्ट्यं विद्यते यदिदं कदापि न

प्रदुष्यते। गंगास्नानात् स्वास्थ्यलाभो भवति अनेके रोगाश्च विनाश्यन्ते। अत एव गङ्गास्नानं पुण्यकरं इति धारणा धार्मिकैः जनैः प्रचारिता।

गंगातीरे बाल्मीकिः रामायणं प्रणियाय, तुलसीदासः रामचरितमानसं विरचितवान् पण्डितराजः जगन्नाथश्च गंगालहरीं लिलेख। अस्याः तीरे उत्तरभारतस्य प्रमुखाः नगराः स्थिताः सन्ति।

यतः सा अस्माकं कृते परमश्रेयस्करी, अतः 'गङ्गामाता' इत्यभिधीयते। सुरसरित्, देवापगा, त्रिपथगा इत्यादीनि नामानि तस्याः प्रभावातिशयं एव प्रकाशयन्ति।

७. हिमालयः

हिमालयो नाम पर्वतः भारतदेशस्य उत्तरस्यां दिशि वर्तते। अस्य शिखरभागाः सदैव हिमाच्छादिताः सन्ति। अत एव सः हिमस्य आलयः अर्थात् 'हिमालयः' कथ्यते। सः विश्वस्य समस्तेषु पर्वतेषु उन्नततमः। अत एव सः 'नगाधिराजः' इत्यपि ज्ञायते।

पर्वतोऽयं भगवान् शिवस्य क्रीडास्थली, भगवत्याः पार्वत्याः उत्पत्तिस्थलमपि, विविध-किन्नर-गन्धर्व-साध्य-सुरादीनां वसतिरपि। कालिदासेनापि 'अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नागाधिराजः—इत्यादीनि लिखित्वा हिमालयस्य बहुशः प्रशंसा कृता।

हिमालस्य शृङ्गानि प्रायः दुर्लङ्घ्यानि। अत एव उत्तरदिशायां भारतस्य प्रहरी इव विद्यतेऽसौ। प्राचीनकालादेवायं शत्रूणामाक्रमणेभ्यः भारतं तत्रस्थान् जनान् च अभिररक्ष। अयं पर्वतः भारतदेशस्य मणिमुकुट इव विद्यते।

हिमालयात् बहुसंख्यकाः नद्यः निस्सरन्ति भारतस्य भूभागं च सिञ्चन्ति। अस्योत्सङ्गदेशे विविधाः विटपवराः, लता-ओषधयः, फल-फूल-मूलादयः प्राप्यन्ते ये तु अत्यन्तोपयोगिनः सन्ति। अत्र निवसन्तः अनेकवन्यपशवः अपि मानवोपयोगिनः वर्तन्ते। उत्तरभागात् प्रवहमानेभ्यः शीतवायुभ्यः अयं भारतं अभिरक्षति। हिन्दमहासागरात् समुत्थितानां जलगर्भितानां मेघानां मार्गावरोधं कृत्वा अयमेव पर्वतवरः प्रचुरवृष्टिकारकोऽपि अस्ति।

अस्य पर्वतस्योत्सङ्गे अनेकानि सुरम्यस्थनानि विद्यन्ते। अत्र प्राकृतिकी शोभा अतितरां विराजते। शिमला-नैनीताल-मसूरी-दार्जिलिंग-प्रभृतीनि नगराणि अस्योपत्यकायां एव अवस्थिताः सन्ति यत्र धनिकाः जनाः ग्रीष्मात् परित्राणाय, स्वास्थ्यलाभाय, मनोरञ्जनाय च गच्छन्ति।

वस्तुतः स्वकीय-रक्षाकर्मणा, अनेकविधपदार्थसम्भरणकारणेन, बहूपकार-करणेन चायं भारतवासिनामस्माकं पिता एवास्ति।

८. भारतदेशः

[देशभक्तिः, राष्ट्रदेवो भव, देशसेवा, दुर्लभं भारते जन्म, जननीजन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी]

यो यत्र जन्म लभते सैव तस्य जन्मभूमिः। जन्मभूमिं प्रति अस्माकं अनुरागः प्रत्यक्ष एव। विदेशेषु कोपि कियन्तमपि मान-सम्मानं लभेत सुख-सुविधां वा प्राप्नुयात्, किन्तु स्वजन्मभूमिं सः स्मरत्येव। यथा सर्वसम्बन्धिषु जनाः स्वमातरमेव सर्वाधिकं मन्यन्ते, तद्वदेव जगति सर्वेषु देशेषु स्वजन्म-भूमिः स्वदेशो वा प्रियतमः।

भारतं अस्माकं देशः। वयं भारतीयाः। अत्रोत्पन्नाः, अस्य धान्य-जल-वायु-मृत्तिका-सम्भृतदेहाः, अस्य वनोपवनेषु केलिनिरताः, अस्य प्राकृतिकीषु शोभासु रममाणाः वयं स्वर्गमपि अनादृत्य केवलं भारतेऽधिवासं वाञ्छामः। देशानुरागकारणादेव यवनाक्रमणकाले चन्द्रगुप्त-पुरुप्रभृतयः, मोहमदीया-क्रमणकाले पृथ्वीराजसदृशाः, मुगलशासनकाले राणाप्रताप-शिवराज-छत्र-सालादयः आंग्लशासनकाले च लक्ष्मीबाई-भगतसिंह-चन्द्रशेखर-सुभाषचन्द्र-महात्मागान्धि-प्रमुखाः जनाः यानि कर्माणि कृतवन्तः तानि सर्वदैव सश्रद्धं सहर्षं च संस्मरणीयानि सन्ति। पाकिस्तान-चीनदेशाभ्यां युद्धकाले देशस्यास्य सत्पुत्राः स्वप्राणोत्सर्गमपि तथैव देशभक्तिभावनया कृतवन्तः।

अस्माकं देशः, वस्तुतस्तु स्वर्गादपि गरीयान्। नगाधिराज्ये हिमालयः अस्य मुकुटो वर्तते। सागरः अस्य पादं प्रक्षाल्यति। विन्ध्यपर्वतशृङ्खला अस्य कटिमेखला। गंगा-यमुनेऽस्य वक्षसि पुष्पस्रगिव विहरन्ति।

प्रकृतिदेव्यपि देशोऽस्मं अनुगृहीतः गंगा-यमुना-सिन्धु-सतलज-ब्रह्मपुत्र-

नर्मदा-कावेरी-गोदावरी-कृष्णा-कावेरीप्रमुखाः सरिद्वराः देशमिमं अलं कुर्वन्ति। हिमालयस्य उपत्यकायां, विन्ध्यगिरिवर्यस्य अरण्यप्रान्तरे, नीलगिरेः उत्सङ्गदेशे च प्रकृतिनटी सपुलकं इव नृत्यति। पञ्चनदप्रदेशे, ब्रह्मावर्तक्षेत्रे, वंगभूमौ वा शस्यश्यामलता विराजते। षड्ऋतवः अस्माकं देशे एव विलसन्ति। वाणी-वेश-खान-पान-व्यवहारादिषु वैविध्यं अस्य अन्यतरा विशेषता विद्यते। ननु श्रूयतां वैदिक ऋषेरद्घोषः—

'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।'

९. उद्योगः

[उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि, उद्योगिनं सिंहमुपैति लक्ष्मीः, दैवं पुरुषकारश्च]

संसारे सर्वे एव मानवाः सुखं अभिलषन्ति, भूतिं चेच्छन्ति। किन्तु आलस्यं प्रत्यवायरूपेण अन्तराले तिष्ठति। आलस्यकारणादेव जनाः जीवने सफलतां न लभन्ते, अनिष्टं च प्राप्नुवन्ति। अत एव नास्ति आलस्यसमः शत्रु। तमपहाय सर्वैः उद्योगः कार्यः। उक्तं च—

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुर्यं कृत्वा नावसीदति॥

उद्यमशालिनः नियतमेव सिद्धिमधिगच्छन्ति। उद्योगं विना न कोऽपि जगति विद्यां धनं कीर्तिं वा लभते। केवलं मनोरथैः न किमपि सिध्यति—यथा सुखसुप्तस्य सिंहस्य मुखे मृगाः स्वयं तस्य ग्रासीभवितुं न प्रविशति। उक्तं च—

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥

उद्यमेन सर्वमेव सम्भवति। उद्यमं एवाश्रित्य रामः रावणं निहत्य स्वप्रियां सीतां अधिगतवान्, पाण्डवाः कौरवान् विजित्य स्वकीयं भ्रष्टं राज्यं अधिगतवन्तः, देशभक्ताः भारतीयाः वैदिकंपारतन्त्र्यात् स्वमातृभूमिं स्वतन्त्रीं कृतवन्तः। उक्तं हि—

नात्युच्चशिखरो मेरुर्नातिनीचं रसातलम् ।
व्यवसाय-द्वितीयानां नाप्यपारो महोदधिः ॥

प्रायस्तु भाग्यवादिनः कथयन्ति यत् भाग्यमेव सर्वत्र फलति । किन्तु धारणेयं नोचिता । भाग्यं निहत्य सर्वैः स्वशक्त्यनुसारं पौरुषं कर्त्तव्यम् । सफलता विफलता च सर्वदा स्वायत्ता न भवति । गीताकारः कथयति—

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥

अन्ये उद्यमशालिनः दैवं भाग्यादिकं नाद्रियन्ते । तेषां मतानुसारं ईश्वरोऽपि तेषामेव सहायतां करोति ये तु स्वयमुद्योगवन्तः सन्ति । उक्तं च—

पूर्वजन्मकृतं कर्म तद्दैवमिति कथ्यते ।
तस्मात् पुरुषकारेण विना दैवं न सिद्धयति ॥

अन्यदपि—

न दैवमिति संचिन्त्य त्यजेदुद्योगमात्मनः ।
अनुद्योगेन कस्तैलं तिलेभ्यः प्राप्तुमर्हति ॥

केचित्तु मन्यन्ते यत् स्वयं दैवमपि पुरुषकारमेवानुवर्तते । सर्वदा 'दैवं, दैवं, दैवं' इति कापुरुषा एव वदन्ति । वस्तुतस्तु 'विक्लवो वीर्यहीनो यः स दैवमनुवर्तते' ।

तस्मात् सुस्पष्टमिदं यत् सर्वैरेवात्मशक्त्या सर्वदोद्योगः करणीयः । उक्तं च केनापि कविना—

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः
दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति ।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या
यत्ने कृते यदि न सिद्धयति कोऽत्रदोषः ॥

१०. परोपकारः

परेषामुपकारः परोपकारः कथ्यते । यः कोऽपि स्वार्थं परित्यज्य परेषां हिताय यत्किञ्चिद् ददाति यत्किञ्चिद् वा करोति तत्सर्वं परोपकार एवास्ति । शास्त्रपुराणादिषु परोपकारस्य महत्वं बहुधा वर्णितं विद्यते । उक्तं हि—

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम् ।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥

स्वोदरपूरणन्तु सर्वं एव कुर्वन्ति । पशुपक्षिणोऽपि तथाकर्त्तुं समर्थाः सन्ति । 'काकोऽपि न किं कुरुते चञ्च्वा स्वोदरपूरणम्'—इत्युक्तिः सुप्रसिद्धा एव । स्वार्थं परित्यज्य यः परोपकारभावनया वर्तते स एव श्लाघ्यः जगति । उक्तं हि—

पशवोऽपि हि जीवन्ति केवलं स्वोदरम्भराः ।
तस्यैव जीवितं श्लाघ्यं यः परार्थे स जीवति ॥

परोपकारी जनः मृत्युपरान्तमपि यशः शरीरेण जीवत्येव । परोपकार भावनावशादेव राजा शिविः कपोतप्राणपरित्राणाय स्वयं स्वमांसमपि छित्वा श्येनाय ददौ । महातपो दधीचिश्च सुरगणरक्षणार्थं वज्रनिर्माणाय स्वानि अस्थीन्यपि प्रददौ । शंखचूडनामानं नागविशेषं त्रातुं जीमूतवाहनो गरुडाय स्वदेहमपि समर्पितवान् ।

परोपकारी नरः परेषामुपकारं कृत्वा यादृङ्मनः तोषमनुभवति न तादृग् लक्षशतैरपि रूप्यकैः प्राप्तुं शक्यते । एवंविधाः परोपकारिणः स्वकीयानि दुःखानि विस्मृत्य परोपकारकरणे प्रवृत्ताः भवन्ति । ते खलु क्षुधार्तेभ्यः भोजनं, पिपासाकुलेभ्यः जलं, वस्त्रहीनेभ्यः वसनं, विद्याविहीनेभ्यश्च शिक्षां प्रयच्छन्ति, तेषां कष्टानि च स्वकीयकष्टानि मत्वा मद्दूरीकरणाय प्रयतन्ते । तादृशान्नेव पुरुषोत्तमानिव लक्ष्मीकृत्य केनचित् कविना लिखितं यत्—

श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन
दानेन पाणिर्न तु कंकणेन ।
विभाति कायः करुणापराणां
परोपकारेण न चन्दनेन ॥

न केवलं मनुष्येष्वेव परोपकारप्रवृत्तिः प्रवर्तते, अपितु प्रकृत्तौ पशु-पंक्ष्यादिष्वपि तादृशी भावना परिलक्ष्यते । सूर्यः चन्द्रः पवनश्चान्येषामुपकाराय एतेऽनिशं निरताः सन्ति । अधोलिखिते पद्ये एतदेव प्रदर्शितं—

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः
परोपकाराय वहन्ति नद्यः ।
परोपकाराय दुहन्ति गावः
परोपकारार्थमिदं शरीरम् ।

अन्यदपि—

स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः
पिबन्ति नाम्भः स्वयमेव नद्यः ।
धाराधरे वर्षति नात्महेतोः ।
परोपकाराय सतां विभूतय; ।।

अत एवास्माभिः सर्वैः सर्वदा परोपकारो विधेयः ।

११. सत्सङ्गतिः

[सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम्
संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति]

सन्तं सज्जनानां च सङ्गतिः सत्सङ्गतिरुच्यते । मानवजीवने सत्सङ्गत्याः प्रभावः सुप्रवतया परिलक्ष्यते । सद्भिर्जनैः सह निवसन मनुष्यः स्वयं सद्गुणोपेतः प्रकृतिसरलः उसात्तभावभरितश्च भवति । सत्सङ्गत्या मनुष्यः परमोन्नतिं प्राप्नोति, तस्य प्रतिष्ठा, प्रभावः, कीर्तिश्च वर्धते। अतएवोक्तं—

सद्भिरेव सहासीत सद्भिः कुर्वीत संगतिम् ।
सद्भिर्विवादं मैत्रीं च नासद्भिः किञ्चिदाचरेत् ।।

मनुष्यः यादृशानां जनानां सङ्गतौ वसति सः तादृश एव सञ्जायते । सत्सङ्गत्या सः सज्जनः शिष्टः विनीतः व्यवहारकुशलश्च भवति । दुर्जन-सङ्गाच्च मनुष्यः स्वयं दुर्जनः दुर्गुणोपित दुश्चरित्रः दुर्गतिश्च जायते । अतएव—'संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति' इत्याभाणकं प्रसिद्धमेव असतां सङ्गं सर्वथा परित्यज्य वयं सर्वदा सतां सङ्गतिं कुर्याम ।

सत्सङ्गतिप्रभावेण क्षुद्रोऽपि जनः समुन्नतिं याति प्रतिष्ठां च लभते । तथा हि—

काचः काञ्चनसंसर्गाद् धत्तेमारक्तीं द्युतिम् ।
तथा सत्सन्निधानेन मूर्खो याति प्रवीणताम् ॥

अपि च—

यथोदयगिरेर्द्रव्यं सन्निकर्षेण दीप्यते ।
तथा सत्सन्निधानेन हीनवर्णोऽपि दीप्यते ॥

सत्सङ्गतिप्रभावाद् दुष्टोऽपि साधुर्भवति, मूर्खोपि प्रवीणतां याति। वाल्मीकेर्नाम को न जानाति यस्तु ऋषीणां संगत्या स्वकीयां लुण्ठनवृत्तिं परित्यज्य कालान्तरे महर्षिपदवीं प्राप्तवान्। काचः कांचनसंसर्गात् मारक्तीं द्युतिं विभर्ति, कीटोऽपि सुमनसङ्गत् सतां नृपतीनां देवानां वा शिरः आरोहति। अत एवोच्यते—

कीटोऽपि सुमनः सङ्गदारोहति सतांशिरः ।
अश्मापि याति देवत्वं महद्भिः सुप्रतिष्ठितः ॥

सत्सङ्गतिः अस्माकं सर्वार्थसाधिका विद्यते। सा तु दुर्गुणान् पापान् च दूरीकरोति, धियः जडतां कौमत्यंच हरति, चेतः प्रसादयति, अन्तःकरणं विमलीकरोति, वाचि सत्यं सिञ्चति (= जनाः अस्माकं वचने विश्वासं कुर्वन्ति), कीर्तिं च दिक्षु वितनोति। अत एव सत्सङ्गतिः किं भद्रं न वितनुते। उक्तं च—

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यम्
मानोन्नतिं दिशेति पापमपाकरोति ।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिम्
सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ॥

—इत्यहो सत्सङ्गतेर्महिमा ।

१२. सदाचारः

[आचार महत्वम्, आचारः परमो धर्मः]

सतां आचारः सदाचारः। यद्वा—सच्चासौ आचारश्चेति सदाचारः। सज्जनाः यथा आचरन्ति अथवा यदाचरणं सन्मन्यते सः सदाचारः। प्रायः मात्रापित्रोः सुश्रूषा, तेषामाज्ञापालनं, देवानां गुरूणाञ्च वन्दनं, सत्यभाषणं,

अहिंसा भूतेषु दया, क्षमा, अस्तेयं, परोपकारः, धर्माचरणादयः सदाचारस्याङ्गानि मन्यन्ते ।

सदाचारी मनुष्यः सर्वत्र सर्वदा समादरं लभते । सदाचारकारणात् तस्य बुद्धिः प्रखरतां याति, आयुः तेजः ओजश्च प्रवृद्धिं यान्ति, इन्द्रियाणामुपरि संयमो जायते, चेतः विमलीभवति, सद्विचाराणां प्रादुर्भावो भवति, कदापि पापकर्मणि प्रवृत्तिर्न भवति, लोकहितार्थं सः सदैव यतते । अतएव 'आचारः परमो धर्मः' इत्यङ्गीक्रियते । सदाचारः धनादेरपि बहुमन्यते । उक्तं च—

वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमेति च याति च ।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः ॥

सदाचारस्य महिमा विविधधर्मग्रंथेषु वर्णितो विद्यते । महाभारतानुसारम्—

आचाराल्लभते ह्यायुराचाराल्लभते श्रियम् ।
आचारात्कीर्तिमाप्नोति पुरुषः प्रेत्य चेह च ॥

तद्विपरीतं दुराचारिणां जगति यादृशी दुर्दशा भवति तदधोलिखिते पद्ये सम्यगुपलक्षितं—

दुराचारो हि पुरुषो लोके भवति निन्दितः ।
दुःखभागी च सततं व्याधितोऽल्पायुरेव च ॥

आहारनिद्राभयमैथुनादयः भावाः मनुष्ये पशौ वा समानरूपेण प्राप्यन्ते । सदसद्विवेकः तदनुरूपमाचरणमेव मनुष्यं पशोः विशिनष्टि । यस्मिन् कस्मिन् वा जने गुणानामतिशयो भवेत् न वा भवेत् , किन्तु यदि सः सदाचारवान् भवति, तर्हि सः लोके आद्रियते, सुदीर्घजीवनसुखं च भुक्त्वा मृत्यूपरान्तमपि यशश्शरीरेण जीवति । उक्तं हि—

सर्वलक्षणहीनोऽपि यः सदाचारवान्नरः ।
श्रद्दधानोऽनसूयश्च शतं वर्षाणि जीवति ॥

१३. अहिंसा

हिंसायाः परित्यागः नूनमहिंसेति वक्तव्यः । त्रिविधाऽहिंसाऽभिमता शास्त्रेषु—मानसिकी, वाचिकी, कायिकी च । परेषां हितचिन्तनं तेषां

अनिष्टादिकसञ्चिन्तनाभावश्च मानसिकी अहिंसा, बहुवचनैः परेषामुत्पीडनं विहाय मधुरालापादिकैः तेषां—चेतःप्रसादनं वाचिकी अहिंसा, परेषां ताडनं हिंसनं वा परित्यज्य सर्वभूतेषु दयादक्षिण्यादेः व्यवहारः कायिकी अहिंसा भवति। मनसा वाचा कर्मणा यः अहिंसायाः पालनं करोति स कोऽपि विरलो मनुष्यः परमश्लाघनीयो भवति।

अस्माकं धर्मशास्त्रेषु, अहिंसायाः महत्त्वं प्रतिपादितमस्ति। मनुस्मृतौ धर्मस्य दशाङ्गानि परिकीर्तितानि। तेषां मध्ये अहिंसा प्रथमस्थाने परिगणिता।

अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

अहिंसाधर्मपालकाः जनाः प्रायः दयादाक्षिण्यादियुक्ताः भवन्ति। तेषां गुणगणगणनाकारणादन्ये मनुष्याः स्वयमेव नतमस्तकाः जायन्ते। कीट-पतङ्गादिष्वपि दयावन्तः महर्षयः सदा सर्वदैव पूजार्हाः आदरणीयाश्च अभवन्। इदन्तु अस्माकं धर्मस्यैव विलक्षणं वैशिष्ट्यं यज्जनाः सर्पानपि दुग्धं पाययन्ति, क्षीरीवृक्षान् फलदान् वृक्षांश्च छेत्तुं नोत्सहन्ते, शत्रूनपि प्रेम्णा समालिङ्गन्ति। 'अहिंसा परमो धर्मः' इत्यनेकैकरनेकशः शिक्षितम्। भगवान् गौतमो बुद्धः स्वामीमहावीरश्च अहिंसायाः प्रचारं चक्रतुः।

धार्मिकक्षेत्राद् व्यतिरिक्ते राजनीतिकक्षेत्रेऽपि अहिंसायाऽअमितं महत्त्व-मस्ति। महात्मागान्धिमहोदयस्य नेतृत्वेऽस्माकं देशः अहिंसासम्बलेनैव पार-तन्त्र्यपाशान् प्रणोद्य स्वतन्त्रतामधिगतवान् समग्रं विश्वं च विस्मयाविष्टं कृतवानस्ति।

किन्तु दुर्विनीतानाम् आततायिनं वा कृते अहिंसायाः प्रयोगो न कार्यः, इति शास्त्रेष्वेव निगदितं विद्यते। तथाहि—

गुरुं वा बालवृद्धं वा ब्राह्मणं वा विपश्चितम्।
आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन्॥

उपर्युक्तमतानुसारं एव श्रीरामचन्द्रेण हताः बालिरावणादयः, पाण्डवैश्च निहताः अपि दुर्विनीताः कौरवाः। राजनीतिकक्षेत्रे तु सबलस्यैव अहिंसा

भूषणं भवति, निर्बलस्य अहिंसा तु कापुरुषता एव मन्यते। तथापि सामान्य-लोकव्यवहारे अहिंसायाः आवश्यकता को न स्वीकर्त्तुमर्हति।

१४. व्यायामः

अन्नजलादिकस्येव व्यायामस्यापि महती आवश्यकता वर्तते शरीरसंवर्द्धनाय। व्यायामेन शरीरस्थावयवाः पुष्टाः संजायन्ते, रक्तस्य सम्यक् संचारो भवति, स्फूर्तिः प्राप्यते, रोगाः पलायन्ते, जीवनश्चाह्लादमयं भवति। स्वस्थे शरीरे एव स्वस्थं मस्तिष्कं सम्भवेत् इति धारणा सर्वमान्या अस्ति। सुगठितं शरीरं दृष्ट्वा को न प्रभावितो भवति। देहसौभाग्येन अस्माकं व्यक्तित्वमपि परमाकर्षणं सम्पद्यते।

महाराणाप्रतापः, वीरवरः शिवराजः, अप्रतिमो योद्धा छत्रसालः तथा चैवं विधाः अनेके युगपुरुषाः व्यायामस्य परमोपासकाः आसन्। महावीरो हनूमान् सर्वेषामपि व्यायामरसिकानां आदर्शभूतो विद्यते।

व्यायामस्य स्वरूपे वैविध्यं वर्तते। केचिज्जनाः हाकी-फुटबाल-क्रिकेट-टेनिस-आदिकं क्रीडयन्ति, केचिज्जले संतरतं कुर्वन्ति, केचिदश्वारोहणं, केचिद्धावनं केचिच्च परिभ्रमणमेव कुर्वन्ति। अपरे जनाः मल्लयुद्धं, मुद्गर-चालनं, दण्ड-बैठकादिकं च कुर्वन्ति। भवतु नाम, शरीरस्यावयवानां नियमितरूपेण चालनं परमावश्यकमस्ति। उक्तं हि—

व्यायामपुष्टगात्रस्य बुद्धिस्तेजो यशो बलम्।
प्रवर्धन्ते मनुष्यस्य तस्माद् व्यायाममाचरेत्॥

१५. वसन्तर्तुः

[वसन्त + ऋतुः]

देशेऽस्माकं षड्ऋतवः क्रमाद्भवन्ति। ते हि ग्रीष्म-वर्षा-शरद्-शिशिर-हेमन्त-वसन्ताः सन्ति। तेषां मध्ये वसन्तर्तुः सर्वोत्तमः सर्वसुखकरः सर्वस्यार्तिहरः सर्वेभ्यश्च पथ्यकरो वर्तते। अत एव 'ऋतुराजः' इति स जनैर्ज्ञायते। पुराणादिषु वसन्तो कामदेवस्य मित्ररूपेण प्रख्यापितो विद्यते।

वसन्ततौ शीतस्य अपगमनेन ग्रीष्मस्य सम्यग् घनागमेन च शीतोष्णतयोः समवस्था जायते। सर्वे जनाः पशुपक्षिणश्च प्रमुदिताः भवन्ति। प्रकृतिसुन्दरी

अपि नवतृणाङ्कुररूपेण स्वपुलकावलिं प्रकटयति, नवपल्लवरूपिणं महार्हं पट्टवसनं धारयति, कुसुमानां निकरैः स्वात्मानं विभूषयति, पुष्पपरागरूपेण पटवासेन स्वदेहं वासयति, जलाशयरूपिणि आदर्शफलके स्वबिम्बमालोक्य स्वरूपराशिना स्वयमेव सम्मोहिता सती पिककलकण्ठविरुतच्छलेन किमपि मन्दं मन्दं आसक्तियोगाद् गायति इव। तां सुसज्जितां सानुरागां समन्द-स्मितां विलोक्य कामदेवोऽपि बाहू प्रसार्य इवोपधावति।

वसन्तर्तुः परममनोरमः भवति। वृक्षेषु नवकिसलयानि प्रादुर्भवन्ति, लतास्वपि नवोद्गतानि सान्द्रचिक्कणदलानि विलसन्ति, धरित्री नवशाद्वलवती संजायते, विटपपादपेषु लतावलयेषु पुष्पाणां प्राचुर्यं बलान्मनो हरति। रक्त-पुष्पावृताः किंशुकाः पलाशवृक्षाश्च सुरम्ये महीतले शोभार्थं न्यस्ताः प्रसून-गुच्छकाः इव राजन्ते। पुष्पसुरभिभरितः सुशीतलः सुखदः पवनोऽपि कश्चित् पीतासवप्रमत्तो रसिकजन इव मन्दं मन्दं पदसञ्चारं करोति। इतस्ततः प्रचलन्तः मधुरं गुञ्जन्तः पुष्पात् पुष्पान्तरं अनुपतन्तः द्विरेफाः कामिनीनां मदविलासचटुलानि इतस्ततः सम्प्रेरितानि अक्षीणि इव विराजन्ते। आम्र-तरवः समञ्जरीकाः सञ्जायन्ते तेषां सुरभिश्च दिक्षु पवनप्रसङ्गेन प्रसरति कामिनां चेतांसि उद्वेलयति। क्वापि निलीनं पिककुलं पञ्चमस्वरेण कूजति। खगवृन्दानां पशुयूथानां च यादृशी स्फूर्तिः वसन्तर्तौ दृश्यते न तादृशी कस्मिंश्चिदन्ये ऋतुविशेषे। सकलानि मरालसारसादिजलचरसनानि स्वच्छ-जलमयानि सरोवराण्यपि अतितरां राजन्ते।

वसन्तस्य सम्यग् वर्णनं कर्तुं तु कविवराः एव पारयन्ति। महाकविभट्टि-सदृशोऽपि शुष्कवैयाकरणः वासन्तीं शोभां समुपवर्णितवान्—

न तज्जलं यन्न सुचारुपङ्कजं
न पङ्कजं तद्यदलीनषट्पदम्।
न षट्पदोऽसौ न जुगुञ्जयः कलं
न गुञ्जितं तन्न जहार यन्मनः॥

महाकविमाघेनापि यमकालङ्कारखचिता वासन्तीवा वनावलिः उपवर्णिता—

नवपलाशपलाशवनं पुरः
स्फुटपरागपरागतपङ्कजम् ।
मृदुलतान्तलतान्तमलोकयत्
स सुरभिं सुरभिं सुमनोभरैः ॥

कविवरः कालिदासस्तु वसन्तसमये मदमत्तानां प्राणिनां चेतोविकारं प्रदर्शयन्नाह—

पुंस्कोकिलः चूतरसासवेन
मत्तः प्रियां चुम्बति रागहृष्टः ।
कूजद्द्विरेफोऽप्ययमम्बुजस्थः
प्रियं प्रियायाः प्रकरोति चाटुः ॥

अन्ते कालिदासस्यैव शब्दावल्यां वसन्तसुषमां निरूप्यात्र उपसंहरते—

द्रुमाः सपुष्पाः सलिलं सपद्मं
स्त्रियः सकामाः पवनः सुगन्धिः ।
सुखाः प्रदोषा दिवसाश्च रम्याः
सर्वं प्रिये चारुतरं वसन्ते ॥

१६. वर्षर्तुः

[वर्षा-ऋतु]

भारतस्येदं असाधारणं वैशिष्ट्यं यदत्र कालक्रमेण षड्ऋतवः भवन्ति—शरद्-शिशिर-हेमन्त-वसन्त-ग्रीष्म-वर्षाश्चेति । तेषु वर्षाकालः परममनोरमः । अस्मिन् ऋतौ प्रचण्डनिदाघस्य सन्तापः प्रशाम्यति, मेघाकुलितस्य सूर्यस्य रश्मिसञ्चयोऽपि सह्यो जायते, वायुमण्डलेऽवलम्बि रजःप्रसरं च विरमति । दीर्घनिदाघसंप्लुष्टानि वनोपवनानि पुनरपि पूर्वशोभां धारयन्ति, नवशाद्वला मही भूयोऽपि दृशो हरति, सर्वत्र हरीतिमायाः साम्राज्यमिव पुनरपि संस्थाप्यते ।

समन्ततः नभो नीलनीलैः पयोधरैः सम्पूर्यते । इतस्ततः सौदामिनी देदीप्यते । ततोऽविरलं मेघाः जलं कटन्ति । नदीनदप्रणालाः जलपूरिताः भवन्ति उत्तालं च वहन्ति, पर्वतशृङ्गाणि लतावृक्षादयः सर्वे नववारिस्नाताः सन्तः पुनर्नवतां यान्ति ।

ग्रीष्मानन्तरं प्रावृड्ऋतौ सर्वेऽपि चेतनप्राणिनः निर्वृत्तिसुखमिवानुभवन्ति। शुष्कजलाशयेषु क्वापि निलीनाः दादुरवृन्दाः निर्गच्छन्ति आनन्दातिरेकेण शब्दायन्ते च। घनानां गर्जनमुपश्रुत्य प्रमुदिताः मयूराः नृत्यन्ति केकाध्वनिञ्च कुर्वन्ति। गोचरेषु चरन्तः पशवः वर्षाजलेनाभिसिञ्चिताः उत्पुच्छायमानाः सन्तः इतस्ततः पारिप्लुतं धावन्ति स्वाह्लादं च प्रकटयन्ति। नभसि उड्डीयन्ते मालाकरिण्यः बलाका पंक्तयः। वनेषु झिल्लीझङ्कारोऽपि पौनःपुन्येन श्रूयते। स्त्रियः बालकबालिकाश्च वृक्षाग्रशाखासु दोलां संस्थाप्य दोलनसुखमनुभवन्ति मधुरं च गायन्ति।

ग्रामेषु कृषकजनाः क्षेत्रेषु जलक्लिन्नेषु सत्सु हलेन भूमिं कर्षन्ति, बीजानि वपन्ति, शस्याङ्कुराणि वाऽऽरोपयन्ति। इत्थं सर्वेभ्यो जडचेतनेभ्यः सुखकरी कल्याणकरी मोदमयी च वर्षेयं कस्मै न रोचते। कवयो भूयो-भूयोऽस्याः गुणान् गायन्ति स्वरूपचित्रणं च कुर्वन्ति। महाकविकालिदासेन मेघाच्छन्नस्य नभोमण्डलस्य कीदृङ्मनोहारि वर्णनं कृतम्—

नितान्तनीलोत्पलपत्रकान्तिभिः
क्वचित्प्रभिन्नाञ्जनराशिसन्निभैः।
क्वचित्सगर्भप्रमदास्तनप्रभैः
समाचितं व्योमघनैस्समन्ततः॥

महर्षि वाल्मीकिरपि यथासंख्यालंकारमाश्रित्य जडजङ्गमानां युगपदेव वर्षावर्णनप्रसङ्गे निरूपणं कृतवान्—

वहन्ति वर्षन्ति नदन्ति भान्ति
ध्यायन्ति नृत्यन्ति समाश्वसन्ति।
नद्यो घना मत्तगजा वनान्ताः
प्रियाविहीनाः शिखिनः प्लवङ्गमाः॥

ननु सर्वसुखकारी प्रावृट्कालः वृथैव न यापयेत्।

१७. इन्दिरागांधी

अस्मिन् असारे संसारे बहवः जनाः जन्मधारणं कुर्वन्ति तेषु सः एव अमरः भवति यः स्वगुणेन, स्वत्यागेन, स्वप्रतिभया जगतम् आलोकितं करोति।

इन्दिरागांधी महोदया स्वमहनीयगुणैः अस्माकं अत्यन्तश्रद्धास्पदा आसीत् । सा स्वावनरतप्रयासेन, दृढसंकल्पशक्त्या, अदम्योत्साहबलेन, अद्भुत-प्रतिभया च भारतस्य अभ्युत्थानाय प्रयत्नमकरोत् ।

इन्दिरागांधी महोदयायाः जन्म तीर्थराजे प्रयागनगरे १९१७ तमे खृष्टाब्दे पं० जवाहरलालनेहरूमहाभागस्य पैतृके आनन्दभवने अभवत् । तस्याः प्रारम्भिकी शिक्षा प्रयागे देहली नगरे च अभवत् । प्रारम्भिकी शिक्षोपरान्तं तया पूना, शान्तिनिकेतन, स्विटजरलैण्डस्थानेषु शिक्षा गृहीता । अन्ततः इङ्गलैण्डदेशस्य आक्सफोर्डविश्वविद्यालये शिक्षां गृहित्वा सा १९४१ तमे खृष्टाब्दे भारतं प्रत्यागता । प्रयागनगरे १९४२ तमे खृष्टाब्दे तस्या, उद्वाहः फीरोजगांधिना सह अभवत् । तस्मिन्नेव वर्षे कांग्रेसान्दोलने तौ कारागारं गतवन्तौ ।

श्रीलालबहादुरशास्त्रिणः मंत्रिमण्डले सा सूचना-प्रसारणविभागस्य मंत्री अभवत् । शास्त्रिमहोदये स्वर्गं गते इन्दिरागांधी महाभागा प्रधानमन्त्री अभवत् । सा बाल्यकालादेव देशसेवायां संलग्ना अभवत् । अल्पावस्थायां द्वादशवर्षायामेव कांग्रेससहायतार्थम् सा 'वानर-सेना' नामकं बालसंगठनम् अकरोत् ।

प्रधानमन्त्रिपदम् अंगीकृत्य सा सर्वतोभावेन देशसेवायां संलग्ना आसीत् । कोशागाराणां राष्ट्रियकरणं, राज्ञां विशेषाधिकाराणां विशिष्ट-धनादीनां च मूलोच्छेदनम्, भूमिगृहसम्पत्यादीनां सीमानिर्धारणं च कार्याणि तस्याः आर्थिकविषये अभिरुचिं, निर्धनजनान् प्रति अत्यधिकं अनुरागं च प्रकटयन्ति ।

१९७१ तमे खृष्टाब्दे भारत-पाकयुद्धे तया राजनीतिकबुद्धिबलेन स्वकौशलेन च विजय अधिगतः । परिणामस्वरूपेण एशिया नामके महाद्वीपे एकं धर्मनिरपेक्षं गणराज्यं 'बंगलादेशम्' राष्ट्रं दृष्टिपथम् आगच्छति ।

इन्द्रिरागांधी महोदया अतीव शान्तिप्रियासीत् । भारतदेशस्य सर्वतो-मुखी प्रगतिं कर्त्तुम् तया आपातकालिका स्थितिः घोषिता । अनेन भारतीय जनता विक्षुब्धा । १९७७ तमे लोकसभानिर्वाचने सा पराजिता । पुनः सा १९८० तमे संसदनिर्वाचने बहुमतेन विजयं प्राप्तवती । सा देशस्य

उत्थानार्थं प्राणपणेन सन्नद्धा आसीत् । दैवदुर्विपाकात् १९८४ तमे खिष्टाब्दे अक्टूबरमासस्य एकत्रिंशे दिवसे प्रधानमन्त्रिनिवासात् अकबररोडस्थितम् कार्यालयं गच्छन्तीं तां बेअन्तसिंहसतवन्तसिंहनामको दुष्टौ सीसकगुलिका-प्रक्षेपणेन प्राहरताम् । इत्थं सा स्वर्गं गता ।

श्रीमती इन्दिरागान्धिनो जीवनं सर्वेषां कृते आदर्शरूपेण अस्ति । चिरकालादुपेक्षितानां निर्धनजनानामुद्धारः, राष्ट्रिय ऐक्यस्थापनम्, जन-तन्त्रस्य, स्वतंत्रतायाः रक्षार्थं प्रयासः, साम्प्रदायिकसोहार्दं विवर्द्धनम्, गुटनिरपेक्षराष्ट्राध्यक्षत्वं, जनतायां स्वावलम्बनबुद्धेः विवर्द्धनमित्यादीनि कार्याणि तस्याः व्यापकं बुद्धि, दूरदृष्टि च प्रकटयन्ति ।

पार्थिवशरीरदृष्टया चिरनिद्रां गतापि सा भारतीयानां हृदयेषु विराजिता ।

यथा सरदारः वल्लभभाई पटेलः राजनीतिक्षेत्रे 'लोहपुरुषः' मन्यते तथैव प्रियदर्शिनी इन्दिरा गाँधी 'लौहमहिला' मन्यते । कवीन्द्ररवीन्द्रस्य 'एकलाचलोरे' वचनं श्रीमती इन्दिरागांधीहृदये मूलमन्त्रमिव कार्यक्षेत्रे वैयक्तिकजीवने च प्रेरकं आसीत् । 'त्याज्यं न धैर्यं विधुरेऽपि काले' तस्याः जीवने प्रत्यक्षम् आसीत् ।

१८. कश्चन महापुरुषः

[महात्मा बुद्धः]

जन्म—यस्मिन् देशे यस्मिन् काले च धर्मस्य ग्लानिर्भवति, तत्र तदैव जगत्संरक्षिणी महती शक्तिः आविर्भूय विलुप्तं धर्मं पुनः संस्थापयति । सैव शक्तिः एकदा भारतवर्षे कपिलवस्तुनगरे शाक्यवंशे राज्ञः शुद्धोदनस्य महिष्या मायादेव्याः कुक्षौ आगत्य यथाकालं वैशाखमासे पूर्णिमातिथौ लुम्बिनीवने शालतरुतले भूमिष्ठो बभूव । 'सिद्धार्थः' इति नामधेयः सः कालान्तरे 'महात्मा गौतमो बुद्धः' इति लोकविख्यातो बभूव ।

बोधप्राप्तिः—अथ कदाचित् निरंजनातीरे शुचौ प्रदेशे कस्यचिद् अश्वत्थ-वृक्षस्यमूलभागे पूर्णबोधिलाभार्थं नानाप्रकारैः उपवासादिभिः आत्मनः कार्श्यं सम्पादयन् सहसैव परमां सिद्धिं अवाप । सम्यक् सम्बोधिः तेन अधिगता ।

आर्यधर्मप्रचारणम्—सद्धर्मप्रचारणाय सः वाराणसीमेव समागच्छत्। तत्रैव तेन चत्वारि आर्यसत्यानि दिष्टानि। तानि तु—(१) दुःखमस्तीति प्रथममार्यसत्यम्। (२) तस्य हेतुरस्तीति द्वितीयम्। (३) दुःखनिरोधो निर्वाणाख्यः सम्भवतीति तृतीयम्। (४) तद् उपायभूतोऽष्टाङ्गयोगोऽपि चतुर्थम्।

अष्टाङ्गयोगः—ज्ञानसम्पत्तये च अष्टाङ्गयोगमार्गं एव शरणम्। तानि योगाङ्गानि तावत्—(१) सम्यग् दृष्टिः, (२) सम्यक् सङ्कल्पः, (३) सम्यग् वाक्, (४) सम्यग् आचारः, (५) सम्यग् आजीवः, (६) सम्यग् वीर्यम्, (७) सम्यग् स्मृतिः, (८) सम्यग् समाधिश्च।

धर्मप्रचारः—गौतमो बुद्धस्तु तस्मिन् काले बद्धमूले ब्राह्मणधर्मे अनेकान् दोषान् उपलक्ष्य स्वयमपि एकं निर्दोषं धर्मविशेषं प्रवर्तितवान् तस्य प्रचारं प्रसारं च यावज्जीवनं कृतवान्। बहवोऽपि राजानः प्राज्ञजनाश्च तस्य शिष्यतां अङ्गीकृतवन्तः बौद्धधर्मस्य प्रचाराय स्वजीवनं च अर्पितवन्तः।

निधनम्—इत्थं चत्वारिंशदधिकवर्षकालं धर्ममुपदिशन् जीवमुद्धरन् सः कृतकृत्यः पश्चिमे वयसि कुशीनगराख्ये स्थाने देवरियाजनपदान्तर्गते देहं मुमोच। तेन प्रचारितो धर्मः देशे विदेशेष्वपि समादृतोऽभवत्।

१९. कश्चन संस्कृतकविः

[कालिदासः]

कालिदासः न केवलं भारतदेशस्यापितु विश्वस्याखिलस्य कवीनां मध्ये प्रथमश्रेणीभाक्। संस्कृतसाहित्यकाशे तु कविनक्षत्राणां मध्ये तस्य प्रकाशोऽनुत्तमः सर्वप्रकाशातिशायी वा विद्यते। उक्तं केनापि कविना—

पुरा कवीनां गणनाप्रसङ्गे कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासः।
अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावादनामिकासार्थवती बभूव॥

महाकविजयदेवेन—'भासो हासः कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः—इत्येतद् कथयित्वा तस्मै कविकुलगुरोः, वाग्देव्यः सरस्वत्याः विलासस्य च पदवी एव प्रदत्ता। अन्यैरपि बाणभट्टः, गोवर्धनाचार्य प्रभृतिभिः प्राज्ञजनैः सः प्रशंसितो वर्तते।

अथ प्रश्नमिदं परिस्फुटितो भवति यत् को विशेषो नाम कालिदासे आसीत् येन सः देशे विदेशेऽपि चेत्थं सम्पूज्यते। तस्य सूक्तयः नगरे-नगरे जने-जनेप्रललिताः सन्तिः, तस्य लोकप्रियतायाः आख्यानं च कुर्वन्ति। एतन्निर्धारणात्पूर्वं तस्य कृतित्वमालोचनीयं विद्यते। सप्तग्रन्थरत्नानि तस्य लेखिनीप्रसूतानि मन्यन्ते। तत्र मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्, अभिज्ञानशाकुन्तलञ्चेति ग्रन्थत्रयं नाटककोटयाम्, कुमारसम्भवः रघुवंशञ्चेति ग्रन्थद्वयं महाकाव्यश्रेण्यां, ऋतुसंहारम् मेघदूतञ्चेति ग्रन्थद्वयं खण्डकाव्यमिति काव्यसरणौ आकलिताः सन्ति। अन्यान्यपि कतिपयग्रन्थजातानि कालिदासप्रणीतानि श्रूयन्ते। किन्तु नैतत् प्रामाणिकम्।

कालिदासः ईसवीयाब्दपूर्वं प्रथमशताब्द्यामभूत् इत्यधिकतराः विद्वान्सः मन्यन्ते। तस्य जन्मस्थली प्रियभूता वासस्थली वा अवन्तिकेति नाम्नी नगरी—इत्येतस्मिन्न संशयः।

कालिदासस्य पूर्वंमौर्ख्यं राजतनया विद्योत्तमया सार्धं तस्य विवाहः, कालीदेव्याः प्रसादेन कवित्वशक्तेर्प्राप्तिः इत्यादयः अनेकाः जनश्रुतयः लोके प्रचलिताः सन्ति।

कालिदासस्य काव्यशैली वैदर्भी रीतिसंजुष्टा, प्रसादगुणयुक्ता, प्राञ्जलपरिष्कृतसुमधुर-भाषान्विता, यथास्थानं समुचित-अलंकारालंकृता, उत्तमोत्तमभावभरिता, प्रायस्तु शृङ्गाररससम्पृक्ता, छन्दोचित्यगर्भिता, किं बहुना सर्वथा जगन्मनोहारिणी वर्तते। न तत्समः कोऽप्यपरः कविः सरसरचनोद्भावने। पश्चाद्वर्तिनः अनेके कवयः तस्य शैलीं भावसरणिं वाऽनुकृतवन्तः। इत्थं तस्य कविकुलगुरुत्वं सर्वथा सुसङ्गतमेव।

उपमायाः क्षेत्रे सोऽनुत्तमः। राज्ञः दिलीपस्य तद्धर्मपत्न्याश्चान्तरे नन्दिनी नाम्नी धेनुः दिनक्षणामध्यगता सन्ध्या इव रराज—

पुरस्कृता वर्त्मनि पार्थिवेन
प्रत्युद्गता पार्थिवधर्मपत्न्या।
तदन्तरे सा विरराज धेनुः
दिनक्षपामध्यगतेव सन्ध्या॥

'अमोघराघव'-कारस्य दिवाकरस्य मतौ—

'भाति श्रीमति कालिदास-कविता कान्तेव कान्ते रता।'

२०. संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्

सर्वभाषाजननी—अस्ति खलु संस्कृतभाषा हिन्दयूरोपीयभाषाणां जननी ज्येष्ठा भगिनी वा। काचिद् भाषा संस्कृतभाषोत्पन्ना, काचित्तु बहुलसंस्कृत-शब्दगर्भा चास्ति। उदाहरणरूपेण संस्कृतशब्दः 'पितृ' हिन्दीभाषायाम् पिता, पंजाबीभाषायाम् 'पिउ', फारसीभाषायाम् 'पिदर', ग्रीकभाषायाम् 'पैटर', फ्रेञ्चभाषायाम् 'पेरे', स्पैनिशभाषायाम् 'पेट्रो', आंग्लभाषायाम् 'फादर', जर्मनभाषायाम् च 'फाटेर' भवति।

प्राचीनतमं साहित्यम्—संस्कृतवाङ्मयं विश्वेऽस्मिन् प्राचीनतमं विशालतमञ्चास्ति। संस्कृतं हि पराऽपराभेदेन द्विविधं वर्तते। तत्र परा आत्मानं परमात्मानं च बोधयति। अपरा च वार्तां दण्डनीतिं विज्ञानादिकं प्रकाशयति। सोऽयं महद्ज्ञानराशिः राशीभूतोऽस्ति अस्यामेव देववाचि। एतत् वैशिष्टयमन्यासु भाषासु न दृश्यते।

विशालशब्दकोशः—सुविशालशब्दकोशो विद्यतेऽत्र। यथा हि—पञ्चविंशतिः पृथिव्यः, सप्तविंशतिः निशायाः, एकविंशतिः उषायाः, पञ्चाशच्च संग्रामस्य नामानि (=पर्यायाः)—संस्कृतभाषायां प्रचलितानि सन्ति। वर्णिकामात्रं दीयतेऽत्र—आमलिकी आमलकः तिष्यफला अमृता वयःस्था कायसंस्था धात्रीफलं इत्यादयः शब्दाः समानार्थकाः सन्ति।

मानवजातेरितिहासः—संस्कृतशब्दानां सूक्ष्मपर्यालोचनेन मानवजातेः क्रमिकविकासोपलभ्यतेऽत्र। विचार्यतां तावत्वचनानुबन्धः जन-लोक-मनुष्य-पुरुष-नरप्रभृतीनां शब्दविशेषाणाम्। यथाहि—जननात् **'जनः'** इति मानव-विकारस्य प्राथमिकी स्थितिः सूचिता भवति। यः लोकते पश्यति विचारं वा करोति स **'लोकः'** द्वितीया स्थितिः। मननात् **'मनुष्यः'** इति तस्य पथ्यापथ्यनिर्णशक्तेः सूचनां ददाति। यः पुरि नगर्यां वसति सः **'पुरुषः'** इति तस्य तस्मादप्यधिकसमुन्नतिसूचकः। यः नरति नयति सञ्चालयति वा जनान्, यस्तेषां नेतृत्वं करोति, अन्यान् अनुगमयति, तान्सन्मार्गेण नयति, आदर्शावस्थां प्रापयति सो **'नरः'** इति तस्य पर्याप्तसमुन्नतिप्रकाशकः शब्दः।

माधुर्यगुणः—संस्कृतभाषायां किमपि लोकोत्तरः चमत्कारकारी शब्द-सन्निवेशः प्राप्यते यः श्रोतृणां कर्णकुहरेषु मधुधारां वसति। संस्कृतशब्देषु

काप्यपूर्वा रहस्यमयीव शक्तिः सन्निहितास्ति, या तु अर्थावबोधं विनापि श्रुतमात्रं ब्रह्मानन्दसहोदरमानन्दं उपजनयति। यथा हि—

लताकुञ्जं गुञ्जन् मदवदलिपुञ्जं चपलयन्
मरुन्मन्दं मन्दं दलितमरविन्दं तरलयन्।
रजोवृन्दं विन्दन् किरति मकरन्दं दिशिदिशि ॥

बह्वर्थप्रकाशनक्षमता—श्लेषानुप्राणिता यादृशीप्रकाशनक्षमता संस्कृत-भाषायां दृश्यते न तादृशी कुत्राप्यन्यत्र प्राप्तुं शक्यते। 'राघवपाण्डवीयम्।' इत्येकस्मिन् महाकाव्ये एकेनैव वचोविन्यासेन युगपद् राघवपाण्डवचरितयो-रेकत्र समावेशः कृतो विद्यते।

अत एवेयं भाषा देशे विदेशेषु चात्यधिकं समाद्रियते। संस्कृतप्रेमीजनाः एनां देववाणी, सुरभारती, देवभाषा—इति सादरं व्याहरन्ति।

२१. संस्कृतस्यावनतेः कारणानि

अभ्युदयोपायाश्च

संस्कृतं कदाचिल्लोकभाषाऽऽसीत् इति प्राचीनप्रबन्धेषु पठ्यते। शिबिका-वाहकाः अपि 'बाधति' इत्यशुद्धं, 'बाधते' इति चेति शुद्धं रूपमजानन्। न केवलं भारते, कम्बोजादिषु देशेष्वपि व्यवहृतेयमासीत्। किन्तु देशस्यास्य दौर्भाग्येण साऽद्य परमां दुर्दशामापन्ना। खेदविषयोऽयं यत्साऽद्य कैश्चिज्जनैः मृतभाषेति निन्द्यते।

अवनतेः कारणानि—कानिचित्कारणानि त्वेतादृशानि सन्ति येषां विषये वयं चिरकालादेव निरुपायाः स्मः। यथा हि—

१. **विदेशीय-राजशासनम्**—येन हि संस्कृतभाषा संरक्षणाभावात् क्षीणतामधिगता।

२. **विदेशीयसभ्यताप्रचारः**—यस्माद्वयमपि स्वयं संस्कृतमुपेक्षितवन्तः आंग्लभाषायाः विधेयत्वं स्वीकृतवन्तः।

३. **विभिन्नधर्माणामभ्युदये धर्माणां धर्मिणां वा संघर्षः**—येन संस्कृतस्य तस्य वाङ्मयस्य च प्रभुता क्षतिंगता।

४. **ग्रन्थानां दाहकाः विश्वविद्यालयानां विध्वंसकाः मोहमदीयाः—** ये तु वैमनस्यकारणादेव विविधानत्याचारान्कृतवन्तः ।

कानिचित्तु कारणान्येतादृशानि सन्ति येषां विषये वयं सर्वथैव स्वाधीनाः स्मः । यथा हि—

क— **लेखनशैल्याः काठिन्यम्—** येन हि अर्थाववोधे कठिनतानुभूयते ।

ख— **अर्थगौरवमन्तरेण शब्दाडम्बरेऽत्यादरः—** येन हि काव्यस्य आत्मन एव क्षतिरभूत् ।

ग— **विचाराणामनुदारता संकीर्णता च—** यया हि नूतनशब्दानां विचाराणां वा क्रोडीकरणे संस्कृतज्ञाः नोत्सहन्ते ।

घ— **व्याकरणस्य काठिन्यम्—** येन हि पदे पदे अशुद्धतायाः शङ्का जायते । अशुद्धिभयादेव जनाः प्रायः संस्कृते वाग्व्यवहारं न कुर्वन्ति ।

अभ्युदयोपायाः—

१. **अध्यापनप्रणाली-परिष्कारः—** दक्षानां शिक्षकानां नियुक्तिः, रटनं अवहेल्य मननं कार्यम् ।

२. **पाठ्यक्रम-सन्नियमः—** पाठ्यक्रमो न तु वाराणसी-गत-पाठ्यक्रम-व्यवस्था इव भवितव्यः, नापि पञ्चाम्बुनद इव । वाराणस्यान्तु एकस्यामेव आचार्यपरीक्षायां अनेकप्रश्नपत्राणि भवन्ति । इत्थञ्च अन्यविषयपरिज्ञानं न भवति । पञ्चाम्बुनदप्रदेशे हि अनेकविषयाणां एकपदेवाध्ययनं क्रियते । इत्थमपि दोषमेवं यत् कस्मिंश्चिदपि विषये विद्यार्थिनः पूर्णाधिकारो न भवति । अत एव मध्यमसरणिः सर्वथाऽवलम्बनीया ।

३. **उपयोगिग्रन्थसञ्चारः—** संस्कृतवाङ्मये बालोपयोगिग्रन्थानां सर्वथाऽभावः परिलक्ष्यते, तद्दूरीकरणीयः । मौलिकग्रन्थानामप्यभावो दृष्टिपथमायाति । संस्कृते यावन्तः टीकाग्रन्थाः सन्ति न तावन्तः मौलिकाः । संस्कृतज्ञास्तु प्राचीनग्रन्थानां टीकाटिप्पणादिकं कृत्वा पिष्टपेषणमेव कुर्वन्ति ।

४. **प्राचीनग्रन्थोद्धारः**—लुप्तग्रन्थराशेरुद्धाराय गवेषणा कार्या । शोधकार्यस्यापि महती आवश्यकता विद्यते ।

५. **व्याकरण-परिष्कारः**—संस्कृत-व्याकरणस्य क्लिष्टता दुरूहता दुरवबोधता जटिलता च दूरीकरणीया । आधुनिकीं नूतनप्रणालीं समाश्रित्य संस्कृतसूत्राणि बोधगम्यतां नेतव्यानि ।

६. **संस्कृतशिक्षाऽर्थकरी कार्या**—स्वल्पवृत्तिकानां शिक्षकानां वेतनवृद्धिर्विधेया । अर्थाभावादेव संस्कृतशिक्षकाः शिक्षणकार्यमुपेक्ष्य गृहे-गृहे कथावाचनं पौरोहित्यं च कुर्वन्ति ।

७. **संस्कृतभाषाप्रचारः**—(क) संस्कृतभाषायाः अध्ययनं पाठचक्रमेषु अनिवार्यं कार्यम् । (ख) आकाशवाण्याः माध्यमेन समाचाराणाम्, निबन्धानाम् , संस्कृतकविगुणानुवादानाम् , विविधश्लोकानाम् ; प्रहेलिकानाम् , संलापानाञ्च संस्कृते प्रसारणं अतितरां कार्यम् , (ग) सरलसंस्कृतभाषायामेव कतिपयसमाचारपत्राणां प्रकाशनमपि कार्यम् । (घ) संस्कृते वादविवादानां लेखानां वा प्रतियोगिताः कार्याः । (ङ) विभिन्नस्थानेषु संस्कृतपरिषदां स्थापना विधेया ।

इत्थन्तु लुप्तगौरवा ह्रासमुपगता विगलितप्रभावा मरणासन्नापि अस्माकं देववाणी पुनःस्फूर्तिं पुनर्जीवनं च प्राप्स्यति, पुनरप्यतीतगौरवञ्चाधिगमिष्यति ।

अब ग्रन्थ-विस्तार-भय से यहाँ कुछ आवश्यक अन्य निबन्धों की रूपरेखा, उनमें उल्लेख्य मुख्य-मुख्य बातें, अपेक्षित उद्धरण मात्र देकर हम सन्तोष करेंगे ।

२२. भवितव्यता

[बलीयसी केवलमीश्वरेच्छा]

१. अवश्यं भाविनो भावा भवन्ति महतामपि ।
नग्नत्वं नीलकण्ठस्य महाहिशयनं हरेः ॥

२. अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितम् ।
सुरक्षितं दैवहतं विनश्यति ॥

३. पुरुषः पौरुषं तावद् यावद्दैवं तु सम्मुखम् ।
विपरीतगते दैवे न च पुरुषो न पौरुषम् ॥

४. प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ
विफलत्वमेति बहुसाधनता ।
अवलम्बनाय दिनभर्तुरभून्
न पतिष्यतः करसहस्रमपि ॥

४. स्वयं महेशः श्वसुरो नगेशः
सखा धनेशः तनयो गणेशः ।
तथापि भिक्षाटनमेव शम्भो-
र्बलीयसी केवलमीश्वरेच्छा ॥

२३. सत्यम्

१. स ते हिताय सत्यम् । यद् लोकहिताय भवति तत् सत्यम् ।

२. अश्वमेधसहस्रं च सत्यं च तुलया धृतम् ।
अश्वमेधसहस्राद् हि सत्यमेव विशिष्यते ॥

३. सत्याभावे न कोपि कस्यापि विश्वासं करिष्यति ।

४. दशरथः सत्यस्य पालनाय स्वपुत्रमपि वनं प्रेषयामास स्वप्राणान् च तत्याज ।

५. सत्यवादी हरिश्चन्द्रः सत्यपालनाय विविधान् कष्टान् सेहे ।

६. न हि सत्यात् परोधर्मो, नानृतात् पातकं महत् ।

७. सत्यमेव जयते नानृतम् ।

८. सत्यहीना वृथा पूजा, सत्यहीनो जपो वृथा ।
सत्यहीनं तपो व्यर्थमूषरे वपनं यथा ॥

९. सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः ।
सत्येन वायवो वान्ति सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ॥

१०. गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च सतीभिः सत्यवादिभिः ।
अलुब्धैर्दानशूरैश्च सप्तभिर्धार्यते मही ॥

११. नहि सत्यात् परोधर्मस्त्रिषु लोकेषु विद्यते ।
पापं मिथ्यासमं नास्ति तस्मात् सत्यं सदा वद ॥

२४. सन्तोषः

१. सन्तोष = सम् + तुष् + घञ् । अस्य विपर्ययः लोभः लिप्सा वा ।

२. लोभाविष्टो नरो हन्ति मातरं वा सहोदरम् ।

३. 'सन्तोषमूलं हि सुखं, दुःखमूलं विपर्ययः ।'—इति मनुः ।

४. सन्तोषामृततृप्तानां यत्सुखं शान्तचेतसाम् ।
कुतस्तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम् ॥

५. आवश्यकतानाम् आनन्त्यं विद्यते, अतः सन्तोषं विना न कोऽपि कदापि सुखं लभते ।

६. सर्पाः पिबन्ति पवनं न च दुर्बलास्ते
शुष्कैस्तृणैर्वनगजा बलिनो भवन्ति ।
कन्दैः फलैर्मुनिवरा गमयन्ति कालं
सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानम् ॥

७. अकृत्वा परसन्तापमगत्वा खलनम्रताम् ।
अनुत्सृज्य सतां वर्त्म यत्स्वल्पमेव तद्बहु ॥

८. 'सन्तोषं विना पराभवपदं प्राप्नोति सर्वो जनः ।'

२५. सन्मित्रम्

१. पापान्निवारयति योजयते हिताय
गुह्यं च गूहति गुणान् प्रकटीकरोति ।
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः ॥

२. कराविव शरीरस्य नेत्रयोरिव पक्ष्मणी ।
अविचार्य प्रियं कुर्यात् तन्मित्रं मित्रमुच्यते ॥

३. मित्रं प्रीतिरसायनं नयनयोरानन्दनं चेतसः ।
पात्रं यत्सुखदुःखयोः सह भवेन्मित्रेण तद्दुर्लभम् ।
ये चान्ये सुहृदः समृद्धिसमये द्रव्याभिलाषाकुलाः
ते सर्वत्र मिलन्ति तत्त्वनिकषग्रावा तु तेषां विपत् ॥

४. औरसं कृतसम्बन्धं तथा वंशक्रमागतम् ।
रक्षितं व्यसनेभ्यश्च मित्रं ज्ञेयं चतुर्विधम् ॥
५. परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम् ।
वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम् ॥
६. शोकारातिभयत्राणं प्रीतिविश्रम्भभाजनम् ।
केन रत्नमिदं सृष्टं मित्रमित्यक्षरद्वयम् ॥
७. राम-सुग्रीवयोर्मैत्री (अनन्योपकारिका),
सुदामाकृष्णयोर्मैत्री (एकनिष्ठा) ।

२६. धनम्

[सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति]

१. यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः
स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः ।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः
सर्वे गुणा काञ्चनमाश्रयन्ति ॥—भर्तृहरिः
२. यस्यार्थास्तस्य मित्राणि यस्यार्थास्तस्य बान्धवाः ।
यस्यार्थाः स पुमांल्लोके यस्यार्थाः स हि पण्डितः ॥
३. बुभुक्षितैर्व्याकरणं न भुज्यते
पिपासितैः काव्यरसो न पीयते ।
न विद्यया केनचिदुद्धृतं कुलं
हिरण्यमेवार्जय निष्फला गुणाः ॥
४. धनं दानेन शोभते ।
५. हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्य पिहितं मुखम् ।
६. तानिन्द्रियाण्यविकलानि तदेव नाम
सा बुद्धिरप्रतिहता वचनं तदेव ॥
अर्थोष्मणा विरहितः पुरुषः स एव
ह्यन्यः क्षणेन भवतीति विचित्रमेतत् ॥
७. टका धर्मः टका कर्म टका हि परमं तपः ।
यस्य गेहे टका नास्ति स नरः टकटकायते ॥

२७. गीता-उपदेशामृतम्

१. युद्धक्षेत्रे कृष्णेनार्जुनं प्रति कर्त्तव्यपालनार्थं प्रदत्त उपदेशो 'श्रीमद्-भगवद्गीता' इति ख्यातोऽस्ति ।

२. न जायते म्रियते वा कदाचित्
नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ (गी० २।२०)

३. नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥ (गी० २।२३)

४. सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ।
सर्वं धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ॥

५. कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥ (गी० २।४७)

६. जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥

७. वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥ (गी० २।२२)

८. चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः ।
तेषां तु नामानि च कर्माणि च पृथक् पृथक् ॥

९. नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः ।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः ॥ (गी० ३।८)

१०. श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात् स्वनुष्ठितात् ।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ॥ (गी० ३।३५)

११. गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः ।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद् विनिःसृता ॥

१२. सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः ।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत् ॥

२८. एकता

[संघे शक्तिः कलौ युगे]

१. वेदेष्वपि ह्येकतायाः महत्त्वं प्रतिपादितं समुपदिष्टं चास्ति ।
सङ्गच्छध्वं संवदध्वं स वो मनांसि जानताम् ॥ १ ॥
समानो मन्त्रः समितिः समानी
समानं मनः सह चित्तमेषाम् ।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः
समानेन वो हविषा जुहोमि ॥ २ ॥

२. अल्पानामपि वस्तूनां संहतिः कार्यसाधिका ।
तृणैर्गुणत्वमापन्नैर्बध्यन्ते मत्तदन्तिनः ॥

३. न वै भिन्ना जातु चरन्ति धर्मम्
न वै सुखं प्राप्नुवन्तीह भिन्नाः ।
न वै भिन्ना गौरवं प्राप्नुवन्ति
न वै भिन्नाः प्रशमं रोचयन्ति ॥

४. एकतायाः बलेनैव भारतः पारतन्त्र्यपाशान् छित्वा स्वातन्त्र्यमलभत ।

२९. उपमा कालिदासस्य

१. 'साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्य उपमाद्वयोः ।' (साहित्यदर्पण) । अर्थात् यत्र एकस्मिन् वाक्ये वस्तुद्वयस्य वैधर्म्यं विहाय साम्यमात्रं चेद् उच्यते, तर्हि उपमा भवति ।

२. 'पतिंवरा इन्दुमती दीपशिखा इव व्यराजत ।'—इत्युपमा-प्रयोग-कारणात् 'दीपशिखा-कालिदासः' इति प्रसिद्धिः । तद्धि पद्यम्—
सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ
यं यं व्यतीयाय पतिंवरा सा ।
नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे
विवर्णभावं स स भूमिपालः ॥ (रघु० ६।६७)